समर्पणपत्रम् ।

स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराज प्रबलप्रतापी गुणज्ञाननिधान
न्यायपरायण धर्मधुरीण क्षत्रवंशावतंस लोकमान्य
गुणिजनमंडलीमण्डन सज्जनमनरंजन सना-
तनधर्मप्रतिपालक नरेन्द्र वीरेन्द्र महेन्द्र
टिहरी गढवाल नरेश श्रीयुत श्री १०८
श्रीमहाराजा कीर्तिशाहजू महोदय
(G. C. S. I.) के करकमलमें
यह
"अष्टादशपुराण ग्रंथ" सादर समर्पित है।

दिनदारपुरा
मुरादाबाद.
१६।१२।१९०५.

निवेदक·
ज्वालाप्रसादमिश्र.

भूमिका ।

भारतवर्षमें चारों वर्ण और चारों आश्रमोंकी रीति नीति विचार आचारकी सामग्री अष्टादश पुराण ही हैं । प्रायः इन्हींके द्वारा पुरातन वृत्त, सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरितका बोध होता है । इन पुराणोंके आख्यानोंसेही वेदार्थ भलीभाँतिसे जाना जाताहै लिखाभी है—"इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्। बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति॥" इतिहास और पुराणोंसे वेदार्थका विस्तार करे, अल्पश्रुतसे वेद भय पाता है कि, यह मुझपर प्रहार करेगा,पुराणोंसे ही अपने पिता पितामह आदिका निर्मल मार्ग जाना जाता है,अनेक जातियोंकी उत्पत्ति, देशभेद, ज्ञान, विज्ञान, जगत्के भिन्न भिन्न विभागोंके भिन्न २ नियम यह सब पुराणोंसे ही जाने जाते हैं, पुराण इतिहासके न होनेसे एक प्रकार जगत् अंधकारमय समझा जासकता है,भारतवासियोंका तो इतिहास पुराणही परम धन है,उपासनाका भण्डार मुक्तिका द्वार पुराण ही है । पञ्चदेव उपासनाका विस्तार भगवदवतारकी विशेषता पुराण ही प्रतिपादन करते हैं । नवधा भक्ति ईश्वरके चरणोंमें प्रीति पुराणकथासे ही प्राप्त होसकती है । बहुत क्या, दोनों लोकोंका साधक पुराण ही है, संसारमें जिन २ विषयोंकी आप खोज करना चाहें, वह विषय एकमात्र पुराणोंमें ही मिल सकता है, जब ऐसा है तो ऐसा कौन पुरुष है जो पुराणोंपर श्रद्धा न करेगा ।

परन्तु कालक्रमसे संस्कृतविद्याका पठन पाठन न्यून होजानेसे उन पुराणोंका पठन पाठन श्रवण मनन बहुत न्यून होगया है, न्यूनही नहीं बरन् एक प्रकारसे अन्य विद्याओंके ज्ञाता संस्कृतविद्याशून्य अश्रद्धालु कुतर्की, पुराणोंके मर्म न जाननेवाले, असंस्कृतज्ञ पुरुषोंके अनुवाद देखकर पुराणोंमें अश्रद्धा और अनेक प्रकारकी शंका करने लगे हैं पुराणोंमें शंका और अश्रद्धा करानेमें दयानंदियोंने प्रथमकक्षाका पुरुषार्थ किया है,और करते जाते हैं परन्तु आश्चर्य है कि जब किसी समाजीको अपनी जातिकी खोज होती है तब पुराणोंकीही शरणमें आना पडता है।

उपनिषदोंने पुराणको भी विद्यानिर्देश किया है, यह विद्या भी विना गुरुके पढे नहीं आसकती।गुरुद्वारा ही इस विद्याकी शंकाओंका समाधान होसकता है,गुरुद्वारा ही पुराणोंका रहस्य जाना जाता है, मर्मज्ञ पुरुषोंको ही शंकाका अवकाश नहीं रहता. उनके द्वारा पुराणविद्या जानकर अनुवाद करनेसे पढनेवाले निश्शंक होसकते हैं. यही विचारकर शंकासमाधान सहित मैंने अनेक पुराणोंकी भाषाटीका की है जिनसे पाठकोंको पुराणविद्या जाननेमें बहुत लाभ हुआ है ।

इसमें सन्देह नहीं कि अष्टादशपुराण कई लक्ष श्लोकोंमें पूर्ण हुए हैं, जिनका पठन पाठन अल्पायास और अल्प समयमें नहीं होसकता और सहसा कोई अष्टादशपुराणका विषय जाननेमें भी समर्थ नहीं होसकता, इसीसे बहुतसे पुरुष इस विचारसे रहित होगये, और इस विषयमें नित नई कुतर्कना उनके हृदयमें स्थान पाती जाती है ।

मेरा बहुत समयसे ऐसा विचार था कि, पुराणविद्याका एक ऐसा ग्रन्थ निर्माण किया जाय, जिसमें पुराणोंके सम्पूर्ण विषय आजाँय तथा जो आधुनिक विदेशी और उनके अनुयायी स्वदेशी पुरुष हों उनके भ्रमकी निवृत्ति होकर पुराणोंकी प्राचीनता सबको सहेतुक विदित होजाय, एवं पुराणोंके स्कंद खण्ड पर्व पूर्वोत्तरभाग अध्यायक्रमसे कथा सरलता पूर्वक सबके हृदयंगम होकर, पुरातन और अर्वाचीन समयमें पुराणोंकी स्थितिका प्रकार विदित होकर उस विषयमें किसीको शंका न रहे और सर्वसाधारणका उपकार हो ।

यही विचार कर मैंने इस प्रकारसे इस ग्रन्थकी रचना की है कि, प्रथम उपोद्घात प्रकरणमें पुराणोंकी उत्पत्तिका निर्णय, उनका वेदोंसे सम्बन्ध, विरोध परिहार, सम्प्रदाय भेद, अवतार प्रसंग, कल्पभेदानुसार पुराण वर्णन, पुराणोंके विषयमें पाश्चात्य विद्वानोंका मत और उनके मतका खण्डन, पुराणोंमें ऐतिहासिक दृष्टि, पुराणोंकी श्लोकसंख्या, ग्रंथारंभ, पुराणोंके अध्यायक्रमसे कथासूची, उनकी प्राचीनता पर विचार, उनके संस्कार और स्थितिपर विचार किया है, जिसके अवलोकनसे पुराणविषयकी सम्पूर्ण कथा पाठकोंके हृदयंगम होजायगी ।

इसमें सन्देह नहीं कि बहुत कुछ राज्यविप्लव और उलट पुलट होनेसे पुराणोंकी स्थितिमें थोड़ा बहुत अन्तर आगया है, यहांतक कि पुराण तो पूरे नहीं मिलते, कुछने अपनी संख्यासे कुछ अधिक रूप धारण किया है, इसमें यही सम्भव है कि, एक पुराणका विषय कहीं कहीं दूसरेमें सन्निविष्ट होगया है, जहां कहीं प्रक्षिप्त अंश मिलाया गया है वह भी सहजमें ही बुद्धिमानोंको विदित होसकता है और जहांतक संभव है वह प्रक्षिप्त अंश सम्प्रदायके द्वेषके कारणही पीछे मिला दिये गये हैं। उदाहरण [यथा-विष्णुदर्शनमात्रेण शिवद्रोहः प्रजायते] और "शिवद्विषिनरपातक" इत्यादि जहां कहीं ऐसे श्लोक कण्ठी माला तिलक सम्बन्धी विरोधके शिवादि तथा देवताओंकी सम्प्रदाय सम्बन्धी निन्दा हो वह अंश सम्प्रदायके आग्रही पुरुषोंके मिलाये हुए जानने, पर एक दो पुराणके सिवाय और पुराणोंमें ऐसा प्रक्षिप्त अंश नहीं है । इस सम्प्रदायके आग्रहका उदाहरण इस समय भी हमारे सामने उपस्थित है । स्मार्तधर्म-

भूमिका ।

गुणजनमंडलीमंडन सज्जनमनरंजन "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजीके ज्येष्ठ पुत्र चिरंजीव रंगनाथजीके विवाहोत्सवमें मेरा राज्य जावरेमें आना हुआ था, बूँदीनिवासी 'श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार' के पूर्व सफल सम्पादक पंडित लज्जारामजी-शर्मा तथा मेरे कनिष्ठ भ्राता हिन्दी-साहित्यके अपूर्व सुप्रसिद्ध सुलेखक पं० कन्हैयालालमिश्र, माननीय पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठी, तथा पंडित बाबूरामजीशर्मा भी इस अवसरमें मेरे संग उपस्थित हैं, मैंने इस भूमिकाको इस विवाहोत्सवके स्मरणमें लिखा है इस कारण इसकी तिथि और स्थान जावरा लिखा है।

शेषमें विज्ञपुरुषोंसे सानुनय विज्ञप्ति है कि, इस ग्रंथमें कथा अध्याय हस्तलिखित और मुद्रित दोनों प्रकारकी पुस्तकोंसे लिखे गयेहैं,यदि वे लिखित पुराण मुद्रित हों और उनमें एक दो अध्यायोंका फेरफार दीखे तो पाठकगण इस बातको क्षमाकरेंगे कारण कि उसमें मेरा वश नहीं है पर उसमें कोई क्षति नहीं पडेगी, इस समय जिस प्रकारके ग्रंथ मिले हैं वैसा लिखा गया है, मुझे यह भी आशा है कि इस ग्रंथके बन जानेसे आगेको पुराणविषयकी एक प्रकारसे रक्षा भी रहेगी।

जैसा होसका वैसा यह ग्रंथ आप महानुभावोंके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है इसका आदर आप ही विज्ञपुरुषोंके हाथ है।

शास्त्रप्रचारनिरत सनातनधर्मपरायण"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाधिप सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महोदयको विशेष धन्यवाद है जो इस प्रकारके ग्रंथ प्रकाश करके सनातन-धर्मका उपकार कर रहे हैं।

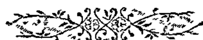
जावरा राज्य (मालवा)
पौष कृ० ५ संवत् १९६२.

सज्जनोंका अनुगृहीत—
ज्वालाप्रसादमिश्र.
दीनदारपुरा—मुरादाबाद.

श्रीः ।

अष्टादशपुराणदर्पणकी विषयानुक्रमणिका

ग्रंथपूर्ति।



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अष्टादशपुराणदर्पण ।

उपोद्घात.

श्रीभगवान् वेदव्यासजीको प्रणाम करके और महर्षियोंका ध्यान करके पुराणविषयकी आलोचना करते हैं कि, पुराण क्या वस्तु है और उसमें क्या विषय है तथा उन पुराणोंका मत क्या है सो सम्पूर्ण बातें अर्वाचीन और प्राचीन मतोंके निरूपण सहित वर्णन करते हैं। प्रथम पुराण शब्दकी उपपत्ति लिखते हैं; पुराण यह शब्द नपुंसक है "पुराभवमिति पुरा ट्यु [सायं चिरं प्राह्णे प्रगेऽव्ययेभ्यष्टयुटयुलौ तुट् च पाणि० ४।३।२३ इससे ट्यु प्रत्यय] अथवा [पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन पा० २।१।४९] इति निपातनात् तुडभावः यद्वा [पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु पा० ४।३।१०५] इति निपातितः अथवा पुरा नीयते नी+ड+" णत्वञ्च " इस प्रकार निपातनसे वा ऊपर लिखे प्रत्ययोंसे पुराण शब्दकी व्युत्पत्ति है। जब कि, पाणिनीय अष्टाध्यायीमें पुराण शब्दकी व्युत्पत्ति लिखी है तब इसमें नूतनताका भाव नहीं रहता तथापि हम वैदिक ग्रंथोंसे भी पुराणकी प्राचीनता दिखावेंगे, पुराण शब्दका अर्थ पूर्वतन है इसके अनुसार प्रथम पुराण कहनेसे प्राचीन आख्यायिकादियुक्त ग्रंथविशेष समझा जाता है। अथर्ववेद, शतपथ ब्राह्मण, बृहदारण्यक, छान्दोग्य, तैत्तिरीयारण्यक, महाभाष्य, आश्वलायनगृह्यसूत्र, आपस्तम्बधर्मसूत्र, मनुसंहिता, रामायण, महाभारत इत्यादि सनातन आर्यजातिके ग्रन्थोंमें पुराण प्रसंग है ।

उपपत्ति-निर्णयः ।

ऋचः सामानि छंदांसि पुराणयजुषा सह । उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिवि श्रिताः ॥ अथर्व० ११।७।२४।

तथा स बृहतीं दिशिमनुव्यचलत्। तमितिहासश्च पुराणं च गाथाश्च नाराशंसीश्चानुव्यचलन् ॥ ११ ॥ इतिहासस्य च वै स पुराणस्य च गाथानां च नाराशंसीनाञ्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद। अथर्वका० १५ अनु० १ प्र० ६ मं १२.

इसका अर्थ यह है कि, यज्ञके उच्छिष्टद्वारा ईश्वरसे यजुर्वेदके सहित ऋक् साम छन्द और पुराण प्रगट हुए हैं ११।७।२४ वह बडी दिशाको गया, इतिहास पुराण गाथा नाराशंसी उसके पीछे गईं, वह निश्चय इतिहास पुराण गाथा और नाराशंसीका प्रिय धाम होता है, जो इस बातको जानता है और गोपथब्राह्मणमें इसका लेख भी है,

एवमिमे सर्वे वेदा निर्मितास्सकल्पाः सरहस्याः सब्राह्मणाः सोपनिषत्काः सेतिहासाः सान्वयाख्याताः सपुराणाः सस्वराः इत्यादि गोपथपूर्व भा० २ प्र० ।

अर्थात् इस प्रकार सम्पूर्ण वेद कल्प रहस्य ब्राह्मण उपनिषद् इतिहास वंश पुराण सहित प्रगट हुए हैं, इसमें ब्राह्मणभागसे पुराण पृथक् ग्रहण किया है, शतपथ ब्राह्मणमें भी लिखा है कि–

अध्वर्यविति हवै होतरित्येवाध्वर्युस्ताक्ष्र्यो वै पश्यतो राजेत्याह+++तानुपदिशति पुराणं वेदः सोयमिति किञ्चित् पुराणमाचक्षीतैवमेवाध्वर्युः सम्प्रेष्यति न प्रक्रमान् जुहोति । अथदशमहन् श० १३ । ४ । ३ । १३ ।

अर्थात् पुराण वेद है, यह यही वेद है इस प्रकार कहकर अध्वर्यु पुराणकीर्तन करते रहते हैं, दशवें दिन कुछ पुराण सुने.

बृहदारण्यक तथा शतपथके अन्य स्थानमें लिखा है कि–

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः इत्यादि श० १४ । ६ । १०० बृहदा० २ । ४ । ११ ।

अर्थात् गीले काष्ठसे उत्पन्न अग्निसे जिसप्रकार पृथक् २ धुआं निकलता है ऐसेही इस महाभूतके निश्वाससे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वाङ्गिरस इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषदादि प्रगट हुए हैं यह सबही निश्वासभूत हैं। बृहदारण्यकभाष्यमें शंकराचार्य लिखते हैं कि 'निश्वासमप्रयत्नतःनिश्वासवत्' यह कि श्वास विनायत्न ही पुरुषसे जैसे प्रगट होता है वैसे विना यत्न वेदादि उससे प्रगट हुए हैं छान्दोग्यमेंभी.

स्होवाच ऋग्वेदं भगवोध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पंचमं वेदानां वेदमिति० छा० प्र० ७ खं० १ ।

अर्थात् इतिहास और पुराण वेदोंका पंचम वेद हैं फिर शतपथब्राह्मणमें इतिहास पुराणका स्वाध्याय लिखा है—

एवं विद्वान् वाकोवाक्यमितिहासपुराणमित्यहरहः स्वाध्यायमधीते त एनन्तृप्तास्तर्पयन्ति सर्वैः कामैः सर्वैर्भोगैः शत० ११ । ५ । ७ । ९ ।

जो विद्वान् वाकोवाक्य इतिहास पुराणका प्रतिदिन पाठ करते हैं, वे देवता तृप्त होकर इन पाठ करनेवालोंकी सब कामना पूरी करते हैं.

इन वैदिक प्रमाणोंके देखनेसे यह बात स्पष्ट जानी जाती है कि पुराणभी सनातन और नित्य तथा अपौरुषेय माने जासकते हैं और इस समय पुराणोंकी रचना तथा उनके लेखसे पुराणोंकी रचना व्यासादि महर्षियोंकी विदित होती है तब क्या जिनका उल्लेख वेदादि ग्रंथोंमें है, वे पुराण इन पुराणोंसे कोई भिन्न थे, वेद जिनको पुराण कहता है पुरातनकालमें वेदहीके समान उनका आदर था इसीसे पुराण पचमवेद, स्वरूपमें गिना गया है । बृहदारण्यक और शंकरभाष्यकी आलोचना करनेमे कि, भगवान्के अयत्नसे जिस प्रकार चार वेद प्रगट हुए हैं उसी प्रकार पुराणभी प्रगट हुए हैं "निश्वसितमिव निश्वसितम् यथा अप्रयत्नेनेव पुरुषनिश्वासो भवत्येवं वा० पुराणम् असद्वा इदमग्र आसीदित्यादि

शंकरभा०" फिर ब्रह्मसूत्रभाष्यमें मीमांसाके मुख पूर्वपक्षमें शंकराचार्य लिखते हैं कि–

"इतिहासपुराणमपि पौरुषेयत्वात्प्रमाणान्तरमूलतामाकांक्षते"

आशय यह है कि,इतिहास पुराण पौरुषेय मानकर प्रमाणान्तरमूलता अर्थात् वेदके पीछे गौण प्रमाण कहकर स्वीकार करने पडेंगे सायनाचार्यने ऐतरेय ब्राह्मणके उपक्रममें लिखाहै कि–

"देवासुराः संयत्ता आसन्नित्यादय इतिहासाः इदं वा अग्रे नैव किञ्चिदासीदित्यादिकं जगतः प्रागवस्थानुपक्रम्य सर्ग-प्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम्"

अर्थात् वेदके अन्तर्गत देवासुरके युद्धवर्णनका नाम इतिहास है और पहले यह असत् था और कुछ नहीं था इत्यादि जगत्की प्रथम अवस्था आरंभ करके सृष्टिप्रक्रिया विवरणका नाम पुराण है।

श्रीशंकराचार्य बृहदारण्यकके भाष्यमें लिखते हैं " इतिहास इत्युर्वशी-पुरूरवसोः सम्वादादिरुर्व्वशीहाप्सरा इत्यादि ब्राह्मणमेव पुराणमसद्वा इदमग्र आसीदित्यादि " अर्थात् उर्वशी अप्सराके कथोपकथनादिस्वरूप ब्राह्मण वाक्य इतिहास और सबसे प्रथम एकमात्र असत् था इत्यादि सृष्टि-प्रक्रिया घटित विवरणका नाम पुराण है.

इससे यह विदित होता है कि, सृष्टिप्रक्रियासंयुक्त विवरणमूलक पुराण वैदिकयुगमें प्रचलित था, महाभाष्यभी 'वाकोवाक्यमितिहासः पुराणम्' ऐसा कहकर पुराणमें पृथक् शब्द प्रयोग ग्रहण किया है। न्याय-दर्शनके 'समारोपणादात्मन्यप्रतिषेधः' अ० ४ आ० १ सू० ६२ में वात्स्यायनऋषिने भाष्यमें कहा है " य एव मंत्रब्राह्मणस्य द्रष्टारः प्रवक्तारश्च ते खल्वितिहासपुराणस्य धर्मशास्त्रस्य चेति विषयव्यवस्था-पनाच्च यथाविषयं प्रामाण्यम्। यज्ञो मंत्रब्राह्मणस्य, लोकवृत्तमिति-हासपुराणस्य लोकव्यवहारव्यवस्थापनं धर्मशास्त्रस्य विषयः " अर्थात् प्रमाणभूत वेदादि इतिहास पुराणके प्रमाणकी आज्ञा देते हैं जो ऋषि

मंत्र ब्राह्मणके देखने और बोलनेवाले हैं वेही धर्मशास्त्र इतिहास पुराणके कथनादि करनेवाले हैं, भिन्न २ विषयोंके स्थापन करनेसे यथाविषय इनका प्रमाण है । यज्ञ मंत्र ब्राह्मणका लोकवृत्तांत इतिहासपुराणका लोकव्यवहार स्थापन धर्मशास्त्रका विषय है ।

इन समस्त वाक्योंसे निश्चित हुआ कि सृष्टि आदि कथन पुराणोंका लक्षण है । विष्णु,ब्रह्माण्ड आदि पुराणोंमें लिखा है कि,जिसमें पुराणोंके लक्षण पाये जाते हैं–

"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ॥
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ "

सर्ग–या सृष्टितत्त्व, प्रतिसर्ग–पुनः सृष्टि और लय, देवता और पितरोंकी वंशावली–सब मन्वन्तर–अर्थात् किस २ मनुका कितने समयतक अधिकार और वंशानुचरित–सूर्यचंद्रवंशी राजाओंके वंशका वर्णन पुराणके यह पांच लक्षण हैं । उपनिषद्भाष्यमें श्रीशंकराचार्यने एक सृष्टितत्त्व मुख्य निरूपण किया था इससे वह नहीं समझना कि चार लक्षण विद्यमान न थे, अवश्य थे पुराणमें सृष्टितत्त्वको छोड़कर अन्य विषयभी वर्णित था । यह महाभारत, रामायण तथा अन्य पुराणोंसे भी जाना जाता है । वाल्मीकिके बालकाण्डमें सुमन्त राजा दशरथसे कहते हैं कि–

"एतच्छ्रुत्वा रहः सूतो राजानमिदमब्रवीत् ।
श्रूयतां यत्पुरावृत्तं पुराणेषु मया श्रुतम् ॥ "

हे महाराज ! जो आपके विषयमें पुराणोंमें पहलेसे सुन रखा है सो आप सुनिये इत्यादि किस प्रकारसे तुम्हारे पुत्र होंगे, वह सब कथा पुराणमें प्रथम वर्णन की हुई सुनाई । महाभारतके आदिपर्वमें लिखा है शौनक कहते हैं–

"पुराणे हि कथा दिव्या आदिवंशाश्च धीमताम् ॥ कथ्यन्ते ये पुरास्माभिः श्रुतपूर्वाः पितुस्तव॥"भारत आदि०अ०५।२।

पुराणोंमें दिव्य कथा तथा बुद्धिमान् पुरुषोंके आदि वंशका वर्णन है पहले तुम्हारे पिताजीसे सब कथा सुनी थी उग्रश्रवा कहते हैं—

"इमं वंशमहं पूर्व्वं भार्गवं ते महामुने । निगदामि यथा युक्तं पुराणाश्रयसंयुतम् ॥" अ० ५ । श्लो० ६–७ ।

हे महामुनि ! यह उत्तम भार्गववंश है, तुम्हारे निमित्त प्रथम इस भार्गववंशकी पुराणाश्रय संयुक्त कथा कहता हूँ, यहीं आदिपर्वमें और भी स्पष्टतासे लिखा है—

पुरुः कुरुर्यदुः शूरो विश्वगश्वो महाद्युतिः ॥
अणुहो युवनाश्वश्च ककुत्स्थो विक्रमी रघुः ॥ २२० ॥
विजयो वीतिहोत्रोऽङ्गो भवः श्वेतो बृहद्गुरुः ॥
उशीनरः शतरथः कङ्को दुलिदुहो द्रुमः ॥ २१ ॥
दम्भोद्भवः परो वेनः सगरः संकृतिर्निमिः ॥
अजेयः परशुः पुण्ड्रः शम्भुर्देवावृधोनघः ॥ २२ ॥
देवाह्वयः सुप्रतिमः सुप्रतीको बृहद्रथः ॥
महोत्साहो विनीतात्मा सुक्रतुर्नैषधो नलः ॥ २३ ॥
सत्यव्रतः शान्तभयः सुमित्रः सुबलः प्रभुः ॥
जानुजंघोऽनरण्योर्कः प्रियभृत्यः शुचिव्रतः ॥ २४ ॥
बलबन्धुर्निरामर्दः केतुशृङ्गो बृहद्बलः ॥
धृष्टकेतुर्बृहत्केतुर्दीप्तकेतुर्निरामयः ॥ २५ ॥
अविक्षिच्चपलो धूर्तः कृतबन्धुर्दृढेषुधिः ॥
महापुराणसंभाव्यः प्रत्यङ्गः परहा श्रुतिः ॥ २६ ॥
एते चान्ये च राजानः शतशोथ सहस्रशः ॥
श्रूयन्ते शतशश्चान्येसंख्याताश्चैव पद्मशः ॥ २७ ॥
हित्वा सुविपुलान् भोगान् बुद्धिमन्तो महाबलाः ॥

राजानो निधनं प्राप्तास्तव पुत्रा इव प्रभो ॥ २८ ॥
येषां दिव्यानि कर्माणि विक्रमस्त्याग एव च ॥
माहात्म्यमपि चास्तिक्यं सत्यं शौचं दयार्जवम् ॥ २९ ॥
विद्वद्भिः कथ्यते लोके पुराणे कविसत्तमैः ॥ २४० ॥
आदिपर्व अ० १.

अर्थात् पुरु, कुरु, यदु, शूर, विश्वगश्व, अणुह, युवनाश्व, ककुत्स्थ, रघु, विजय, वीतिहोत्र, अङ्ग, भव, श्वेत, बृहद्गुरु, उशीनर, शतरथ, कंक, दुलिदुह, द्रुम, दम्भोद्भव, पर, वेन, सगर, सङ्कृति, निमि, अजेय, परशु, पुण्ड्र, शम्भु, देवावृध, देवनाम, सुप्रतिम, सुप्रतीक, बृहद्रथ, सुक्रतु, निषधाधिपति, नल, सत्यव्रत, शान्तमय, सुमित्र, सुबल, जानुजंघ, अनरण्य, अर्क, प्रियभृत्य, शुचिव्रत, बलबंधु, निरामर्द, केतुशृङ्ग, बृहद्बल, धृष्टकेतु, बृहत्केतु, दीप्तकेतु, अविक्षित, चपल, धूर्त, कृतबन्धु, दृढेषुधि, महापुराणसंभाव्य, प्रत्यङ्ग, परहा, श्रुति हे महाराज! इतने यह सब और अन्यभी सैकडों तथा सहस्रों सुननेमें आते हैं तथा असंख्य पद्मों संख्यावाले हैं, यद्यपि यह सब महाबलवान् और बुद्धिमान् थे, तथापि सब प्रकारसे सुन्दर और भोगोंको छोड तुम्हारे पुत्रोंकी समान नाशको प्राप्त होगये। हे महाराज ! जिन लोगोंके दिव्य कर्म और पराक्रम, दातृशक्ति, महत्त्व, आस्तिक्यबुद्धि, सत्य, निर्वैरत्व, शुद्धता, शौच विधिका जानना और दयाभाव इत्यादि गुणोंकी प्रशंसा इस लोकमें बुद्धिमान् और पुराणोंमें उत्तम कवि करते हैं।

इन वचनोंसे स्पष्ट जानाजाता है कि, महाभारत निर्माण होनेसे पहलेभी भिन्न लक्षणसम्पन्न, भिन्न कविरचित पुराण विद्यमान थे सो आगे दिखावेंगे, इस समय जो पुराण प्रचलित हैं वे उन प्राचीनतम पुराणोंके आशयको लेकर निर्मित हुए हैं, मनुस्मृतिमें लिखा है—

"स्वाध्यायं श्रावयेत्पित्रे धर्मशास्त्राणि चैवहि ॥ आख्यानानीतिहासांश्च पुराणान्य खिलानि च" ॥ मनु० अ० ३।२३२।

श्राद्धमें वेद, धर्मशास्त्र, आख्यान, इतिहास, पुराण सुनाने चाहिये । आश्वलायन गृह्यसूत्रमेंभी यही बात लिखी है—

" आयुष्मतां कथाः कीर्तयन्तो माङ्गल्यानीतिहास-
पुराणानीत्याख्यापयमानाः " आश्वला० ४ । ६ ।

अर्थात् इतिहास पुराणोंमें मंगल करनी महात्माओंकी कथा लिखी है अब यदि यह विचार किया जाय कि,पुराण प्राचीनतम होनेसेभी किसके निर्माण किये हुए हैं तब बृहदारण्यक शतपथ आदि तथा मंत्रभागका अनुसरण करनेसे तो स्पष्ट यह जाना जाता है कि, जिस प्रकार ब्रह्माको आदि लेकर महर्षियोंके हृदयमें वेदोंका आविर्भाव हुआ है इस प्रकार पुराणोंकाभी उन्हीं महर्षियोंके हृदयमें ईश्वरके अनुग्रहसे आविर्भाव हुआ है और महाभारत, मनु, महाभाष्य, वाल्मीकि,आश्वलायनके देखनेसे विदित होता है कि, पुराण कितने ही हैं.

"पुराणमकमेवासीदस्मिन्कल्पान्तरे नृप ।
त्रिवर्गसाधनं पुण्यं शतकोटिप्रविस्तरम् ॥
स्मृत्वा जगाद च मुनीन्प्रति देवश्चतुर्मुखः ।
प्रवृत्तिः सर्वशास्त्राणां पुराणस्याभवत्ततः ॥
कालेनाग्रहणं दृष्ट्वा पुराणस्य ततो नृप ।
व्यासरूपं विभुं कृत्वा संहरेत्स युगेयुगे ॥
चतुर्लक्षप्रमाणेन द्वापरे द्वापरे सदा ।
तदष्टादशधा कृत्वा भूर्लोकेऽस्मिन्प्रभाषते ॥
अद्यापि देवलोके तच्छतकोटिप्रविस्तरम् ।
तदर्थोत्र चतुर्लक्षः संक्षेपेण निवेशितः ॥
पुराणानि दशाष्टौ च साम्प्रतं तदिहोच्यते ।
१ । [रेवामाहात्म्य १ । २३ । ३०]

हे राजन् ! कल्पान्तरमें पहले एकही पुराण था और अर्थ,धर्म कामका साधक वह सौ कोटि श्लोकोंमें विस्तारवाला था, उसको स्मरण करके

ब्रह्माजीने मुनियोंके प्रति कथन किया,तब सब शास्त्रों और पुराणोंकी प्रवृत्ति हुई; जब समयपर पुराणोंका अग्रहण देखकर कि, इतना बड़ा ग्रंथ सब कैसे ग्रहण करसकेंगे तब व्यासरूप धारण कर प्रभु, प्रति द्वापर-युगमें उसको संक्षेप करते हैं, प्रतिद्वापरयुगमें वह चार लाख प्रमाणके पुराण करके उनके अठारह भेद करते हैं। देवलोकमें अब भी सौ कोटि श्लोकोंमें इनका विस्तार है सो इसी निमित्त चार लक्ष श्लोकवाले १८ पुराण इस समय कहे जाते हैं तथा च रेवाखण्डसे स्पष्ट है कि—

"अष्टादशपुराणानां वक्ता सत्यवतीसुतः॥"

कि सत्यवतीनन्दन व्यासजी अठारह पुराणोंके वक्ता हैं, पद्मपुराणके सृष्टिखंडमें भी यही बात समर्थित हुई है कि—

"प्रवृत्तिः सर्वशास्त्राणां पुराणस्याभवत्तदा।
कलिना ग्रहणं दृष्ट्वा पुराणस्य तदा विभुः॥
व्यासरूपी तदा ब्रह्मा संग्रहार्थं युगेयुगे।
चतुर्लक्षप्रमाणेन द्वापरे द्वापरे प्रभुः॥
तदष्टादशधा कृत्वा भूर्लोकेऽस्मिन्प्रकाश्यते॥"
सृष्टिखण्ड अ० ॥ १ ॥

अर्थात् पहले पुराणोंसे सब शास्त्रोंकी प्रवृत्ति हुई है और समयानुसार, समस्त पुराणके ग्रहणमें असमर्थ देखकर वह व्यासरूपी भगवान् ब्रह्मा युगयुगमें संग्रहके निमित्त चार लक्ष श्लोकके पुराण प्रत्येक द्वापरयुगमें करते हैं वह अठारह प्रकारके करके इस भूलोकमें प्रकाशित होते हैं।

इन प्रमाणोंसे बोध होता है कि, व्यासजीही अठारह पुराणोंके कर्त्ता वक्ता हैं परन्तु बहुतसे आधुनिक पाश्चात्यविद्यासम्पन्न विद्वान् कहते हैं कि, पुराणोंकी रचना परस्पर इतनी भिन्न है कि, एक कविके बनाये किसी प्रकार भी नहीं कहे जासकते। विष्णु, भागवत, ब्रह्मवैवर्त इनकी रचना परस्पर इतनी भिन्न है कि,यह एक लेखनीके निर्गत नहीं होसक्ते

इस कथनपर हम यह दिखलाते हैं कि, व्यासजी इस प्रकार अठारह पुराणोंके वक्ता हैं। मत्स्यपुराणके ५३ अध्यायमें लिखा है कि–

"पुराणमेकमेवासीत्तदा कल्पान्तरेऽनघ ॥
त्रिवर्गसाधनं पुण्यं शतकोटिप्रविस्तरम् ॥ ४ ॥
निर्दग्धेषु च लोकेषु वाजिरूपेण वै मया ॥
अङ्गानि चतुरो वेदाः पुराणं न्यायविस्तरम् ॥ ५ ॥
मीमांसा धर्मशास्त्रं च परिगृह्य मया कृतम् ॥
मत्स्यरूपेण च पुनः कल्पादावुदकार्णवे ॥ ६ ॥
अशेषमेतत्कथितमुदकान्तर्गतेन च ॥
श्रुत्वा जगाद च मुनीन्प्रति देवान् चतुर्मुखः ॥ ७ ॥

इसके आगे पीछे लिखे पद्मपुराणके श्लोकभी इस पुराणमें मिलते हैं अर्थात् हे पापरहित ! पहले एकही पुराण था जो त्रिवर्गसाधन और पुण्यस्वरूप शतकोटि श्लोकोंके विस्तारसहित था, जब सब लोक दग्ध होगये तब मैंने वाजिरूपसे अंगोंसहित चारों वेद, पुराण, न्याय विस्तर मीमांसा धर्मशास्त्रका ग्रहण किया और कल्पकी आदिमें मत्स्यरूपसे जलके अन्तर्गत यह सब वर्णन किया और इस पुराणको सुनकर ब्रह्माजीनें दूसरे मुनियोंके प्रति वर्णन किया। इसी अध्यायमें और भी लिखा है कि–

"ब्रह्मणाभिहितं पूर्वं यावन्मात्रं मरीचये ॥
ब्राह्मं त्रिदशसाहस्रं पुराणं परिकीर्त्यते ॥ १२ ॥
वाराहकल्पवृत्तान्तमधिकृत्य पराशरः ॥
यत्प्राह धर्मनिखिलान् तद्युक्तं वैष्णवं विदुः ॥ १६ ॥
श्वेतकल्पप्रसंगेन धर्मान् वायुरिहाब्रवीत् ॥
यत्र तद्वायवीयं स्याद्रुद्रमाहात्म्यसंयुतम् ॥ १८ ॥
यत्राह नारदो धर्मान् बृहत्कल्पाश्रयाणि च ॥
पंचविंशत्सहस्राणि नारदीयं तदुच्यते ॥ २२ ॥
मार्कण्डेयेन कथितं तत्सर्वं विस्तरेण तु ॥

पुराणं नवसाहस्रं मार्कण्डेयमिहोच्यते ॥ २६ ॥
वशिष्ठायाग्निना प्रोक्तमाग्नेयं तत्प्रचक्षते ॥ २८ ॥

अर्थात् जो ब्रह्माने मरीचिसे कहा है वह १३००० ब्राह्मपुराण है॥१३॥ पराशरने वाराहकल्पका वृत्तान्त संग्रह कर जो धर्मवर्णन किये हैं वह विष्णुपुराण है ॥१६॥ श्वेतकल्पके प्रसंगमें जो वायुने रुद्रका माहात्म्य वर्णन किया है वह वायुपुराण है॥१८॥ जिसमें नारदजीने अनेक धर्म वर्णन किये हैं। बृहत्कल्पका आश्रय करके वह २५००० श्लोकका नारदपुराण है॥२३॥ मार्कण्डेय कथित मार्कण्डेय पुराण ९००० श्लोकमें है ॥ २६ ॥ वशिष्ठके प्रति अग्निका कहा हुआ अग्निपुराण है इसी प्रकार इस पुराणमें अघोर कल्पका ब्रह्माका आदित्यके प्रति कहा हुआ भविष्य, रथन्तरकल्पका सावर्णिकथित ब्रह्मवैवर्त महेश्वरकथित लिंग आदि पुराणोंका वर्णन किया गया है जो विस्तारसे ५३ अध्यायमें लिखा है इसी अध्यायके ३ श्लोक तथा ब्रह्माण्डपुराणमें भी इस प्रकार लिखा है कि—

पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम् ॥
अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः ॥"

ब्रह्माजीने सब शास्त्रोंसे प्रथम पुराण प्रगट किये; पीछे उनके मुखसे वेद प्रगट हुए.

अब यह भलीभांति विदित होगया कि, पुराण अनादि कालके हैं और ब्रह्माजीने सबसे प्रथम इनको प्रगट किया है। उनसे मुनियोंने सुना और प्रत्येक कल्पमें उन उन देवता ऋषिमुनियोंने पृथक् २ उनकी संहिता निर्माण की हैं जब कि भिन्न २ ऋषिमुनियोंने भिन्न कल्पोंमें पुराण संहिता निर्माण की हैं और व्यासजीने उन्हीं ऋषिमुनियोंके वाक्योंका संक्षेप करके ऋषिमुनियोंका मत जैसेका तैसा रहने दिया है तथा कहीं प्रसंग मिलानेको अपनी रचनाभी की है तब यह पुराण एक लेखनीके निर्गत किस प्रकार कहे जासकते हैं और भिन्न २ कल्पोंके धर्म तथा कथानक

होनेसे वे पुराणोंकी कथाएं एक दूसरेसे मेल नहीं खातीं और भेदवालीसी दीखती हैं, व्यासजीने जिस ऋषिसे जैसा जो कहा वह वैसाही रहने दिया है जिससे यहभी विदित होता है कि यह अमुक ऋषिका कथन किया है यह सब पुराण व्यासजीसे पहलेकेही हैं । प्रत्येक द्वापरयुगमें यह संक्षिप्त होते हैं और इसीसे अठारह पुराणोंमें अठारह पुराणोंके नाम पाये जातेहैं और जिन कल्पोंमें जो १८ पुराण थे यदि कहीं पुराणनाम या संख्यामें भेद पड़ता है तो वह पुराण दूसरे कल्पका जानना चाहिये मत्स्यपुराणमें इसका सब खुलासा लिखा है.

"इहलोकहितार्थाय संक्षिप्तं परमर्षिणा"

मत्स्य ० अ० ५३ श्लो० ५८ ।

इस लोकके हित करनेके निमित्त व्यासजीने इनको संक्षिप्त किया है अब यह तो स्पष्ट होचुका कि व्यासजी किस प्रकार अठारह पुराणोंके कर्ता वा वक्ता हैं और क्यों इनकी शैलीमें भेद है, और भी एक बात है कि, सब पुराण जो इस समय पाये जाते हैं यह सब इसी द्वापरयुगके हों ऐसा नहीं कहसकते प्रतिद्वापरमें भिन्न२व्यास होते हैं उनकी रचना भी व्यासजी-ने जब ग्रहण की है तब २८वार व्यास इस कल्पके होचुके हैं सबने ही यह कार्य किया है द्वैपायन-व्यासजीनेभी वह सब रचना रहने दी है तब रचनामें भेद होना कोई आश्चर्य नहीं है और न यह शंका ठहर सकती है विष्णु पुराणमें लिखा है–

आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः ।
पुराणसंहितां चक्रे पुराणार्थविशारदः ॥
प्रख्यातो व्यासशिष्योऽभूत्सूतो वै रोमहर्षणः ।
पुराणसंहितां तस्मै ददौ व्यासो महामुनिः ॥
सुमतिश्चाग्निवर्चश्च मित्रायुः शांशपायनः ।
अकृतव्रणोथ सावर्णिः पट्शिष्यास्तस्य चाभवन् ॥

काश्यपः संहिताकर्ता सावर्णिः शांशपायनः।
रोमहर्षणिकाश्चान्यास्तिसृणां मूलसंहिताः॥
चतुष्टयेनाप्येतेन संचितानामिदं मुने।
आद्यं सर्वपुराणानां पुराणं ब्राह्ममुच्यते॥
अष्टादशपुराणानि पुराणज्ञाः प्रचक्षते॥"

विष्णु० पर्व० ३। ६। अ० १६—२१।

अर्थात् इसके पीछे पुराणार्थ विशारद भगवान् वेदव्यासने आख्यान उपाख्यान गाथा और कल्पशुद्धिके सहित पुराण संहिताकी रचना की। इनका सूतजातीय लोमहर्षणनामक एक शिष्य था, महामुनि व्यासजीने उसको वह पुराण संहिता अर्पण की, लोमहर्षणके सुमति, अग्निवर्चा, मित्रायु, शांशपायन, अकृतव्रण और सावर्णि यह छः शिष्य हुए इनमें कश्यपवंशीय अकृतव्रण,सावर्णि और शांशपायन इन तीन जनोंने रोमहर्षणसे पढीहुई मूलसंहिताके अवलम्बनसे प्रत्येकने अपनी एक २ संहिता की उक्त चार संहिताका सार संग्रह करके यह पुराण संहिता रचीगई है,❀ ब्राह्मपुराणही सब पुराणोंमें आदि कहा गया है इन विष्णुपुराणके श्लोकोंसे कोई यह शंका करते हैं कि, पहले यही चार संहिता थीं पीछे इनको शिष्य प्रशिष्योंके भेदसे १८ पुराण निर्मित हुए हैं। विष्णु और ब्रह्माण्ड पुराणकी रचना अति प्राचीन बोध होती है इनमें अठारह-

❀ब्रह्माण्डपुराणमें भी इन चार संहिताका मूल है पर अष्टादश पुराणका प्रसंग नहीं है विष्णुपुराणके टीकाकार श्रीधरस्वामी कहते हैं "एतेषां संहितानां चतुष्टयेन सारोद्धाररूपमिदं, विष्णुपुराणं+केचित्तु संहितानां चतुष्टयेन इदमाद्यं ब्राह्ममुच्यते इति वदन्ति" अर्थात् इन चार संहिताओंका सारोद्धाररूप यह विष्णुपुराण है और कोई कहते हैं इन चार संहिताओंकी सहायतासे आदि ब्रह्मपुराण हुआ है। आगे लिखते हैं स्वयं दृष्टार्थकथनं प्राहुराख्यानकं बुधाः॥ श्रुतस्यार्थस्य कथनमुपाख्यानं प्रचक्षते॥ गाथास्तु पितृपृथिवीप्रभृति गीतयः। कल्पशुद्धिः श्राद्धकल्पादिनिर्णयः" अर्थात् स्वयं देखकर जो विषय कहागया हो उसका नाम आख्यान है परस्पर सुनी हुई कथाका नाम उपाख्यान है पितृविषयक और परलोक विषयक गीत तथा कुलकर्म अन्यान्य किसी २ गीतिका नाम गाथा है और श्राद्धकथादि निर्णयका नाम कल्पशुद्धिके स्थानमें पाठ है॥

पुराणका व्यासजीने प्रचार किया ऐसा बोध नहीं होता वरन व्यासजी-के शिष्योंद्वारा पुराण विभाग पाया जाता है, इसमें सन्देह नहीं कि, जो सम्पूर्ण वेदोंका विभाग करते हैं उनकी पुराण और इतिहासकी संकलनमें इच्छा होसकती है जानपडता है कि, सूत जो सब पुराण कहते व्यास-जी उसकोही संकलित और शृंखलाबद्ध करके इनके पठन पाठनमें उत्साह प्रदान करते थे.

इस शंकाके उत्तरमें हम इतनाही कहना बहुत समझते हैं कि जहां यह लिखा है कि पहले एक मात्र ऋक् था। व्यासजीने उसके चार विभाग किये कुछ नये नहीं किये किन्तु उसके मिश्रित भागको पृथक् २ कर दिया। साम पृथक् किये, यजु पृथक् किये इत्यादि इसी प्रकार पुराणसंहि-तामें १८ अठारहों भाग विद्यमान थे जैसा लिखा है कि—प्रत्येक द्वापर युगमें व्यासजी पुराणविभाग करते हैं यदि ऐसा न होता तो विष्णुपुराणमें अठारह पुराणोंका नाम नहीं पाया जाता। विष्णुपुराणके क्रमानुसार अठा-रहपुराणोंके नाम यह हैं—ब्राह्म १, पद्म २, विष्णु ३, शैव, ४, भागवत ५, नारदीय ६, मार्कण्डेय ७, अग्नि ८, भविष्य ९, ब्रह्मवैवर्त १०, लिङ्ग ११, वाराह १२, स्कन्द १३, वामन १४, कूर्म १५, मत्स्य १६, गरुड १७, ब्रह्माण्ड १८, इन सब पुराणोंमेंही सर्ग प्रतिसर्ग वंश मन्वन्तर और वंशा-नुचरित कहे गये हैं। हे मैत्रेय तुमसे जिस पुराणका वर्णन करता हूं यह विष्णु-पुराण है इत्यादि व्यासजीकी अठारह पुराण समन्वितही उपसंहिताके पुराणसंहिता कहना विष्णुपुराणका उद्देश्य है, अथवा वह पुराणसंहिता केवल विष्णुतत्त्वसमन्वित बृहत् विष्णुपुराण रूपसे थी जिससे यह विष्णु-पुराण प्रचालित हुआ है। यह श्रीधरका मत पुष्ट होता है, जो कुछ भी हो पर विष्णुपुराणमें ही जब १८ पुराणोंका नाम पाया जाता है तब व्यासजीने एकही संहिता की थी यह बात ठीक नहीं पडती, हां जिस समय ब्रह्मासे पुराण संहिता निर्गत हुई थी वह एकही थी और व्यासजीने संक्षेपसे अठारह भाग समन्वित की और पीछे सूत और उनके शिष्योंद्वारा उन-

के विभाग और कई प्रकारसे संस्कार हुएहैं,ब्रह्माकी कथन की हुई और व्यासद्वारा संक्षेप की हुई उस आदि पुराणसंहिता से जो सब पुराण संकलित हुएहैं प्रत्येक पुराण मन लगाकर पढनेसे उसका स्पष्ट प्रमाण पायाजाता है, विष्णु, मत्स्य, ब्रह्माण्ड,पद्म,इत्यादि पुराणोंकी सृष्टि प्रक्रिया पढनेसे जाना जाता है कि; सब पुराणोंमें बहुतसी एकही कथा एकही विषय वरन् श्लोक श्लोकोंमें मिले हुए हैं किसी पुराणमें दो चार श्लोक अधिक और किसीमें दो चार श्लोक कम, केवल इतनाही भेद है सब पुराणोंकाही आदर्श एक है इसका कारण यह है एकही संहिताके विभागसे श्लोक सादृश्य दीखता है यदि यह पुराण कोई प्रथमहीके भिन्न होते वो ऐसा श्लोक-सादृश्य नहीं होता। आदिसंहितासेही एक २ के पीछे भिन्न २ उपासकोंके निमित्त अष्टादशभेदसे पुराणोंका प्रादुर्भाव हुआ है जैसा विष्णुपुराणका पुराणानुक्रममें कथन है सब पुराणोंमें ऐसाही क्रम नहीं है किन्तु भिन्न है जिससे यह जानना कठिन पड़ जाता है कि किस पुराणके पीछे किस पुराणकी रचना हुई, किन्तु विष्णुपुराणके सहित बहुतसे पुराणोंका मेलहै [जिनमें क्रम आगे पीछे है उसका उत्तर यही होसक्ता है कि इसपुराणमें पहले द्वापरयुगके विभागका क्रम है इस द्वापरका विष्णुआदिका क्रम है] परन्तु पुराणोंका क्रम देखनेसे यह भेद औरही प्रकारसे खुलता है।श्रीमद्भागवत और मार्कण्डेय दोनोंमें यही लिखा है कि यह सब पुराणोंके पीछे निर्मित हुए पर क्रममें पांचवें और सातवें हैं और केवल नामोंकाही उल्लेख नहीं है। एक पुराणमें दूसरे पुराणका विषय उद्धृत देखा जाता है जैसा वामनपुराणमें लिखा है—

"शृणुष्वावहितो भूत्वा कथामेतां पुरातनीम् ।
प्रोक्तामादिपुराणे च ब्रह्मणाव्यक्तरूपिणा ॥" अ० २ ।

आप इस कथाको मन लगाकर सुनो जो अव्यक्त ब्रह्माने आदि पुराणमें कही है यहां वामनपुराणमें आदिपुराणका संग्रह है वाराहपुराणमें इसी प्रकार है.

"रविं पप्रच्छ धर्मात्मा पुराणं सूर्यभाषितम्।
भविष्यपुराणमिति ख्यातं कृत्वा पुनर्नवम्॥" १७७।९१॥

धर्मात्माने सूर्य भाषित पुराणकी कथा सूर्यसे पूछी थी जो भविष्यपुराणके नामसे विख्यात है मत्स्यमें ५३ अध्यायमें अठारहों पुराणोंका विषय सहित वर्णन है इससे विदित है कि लोमहर्षणके समयमें तथा उनके पाठमें अठारहों पुराणोंका विषय आजानेसे अठारह पुराण पहले ही अपने विषयासहित विद्यमान थे ऐसा बोध होता है और व्यासजीने अपनी पुराणसंहितामें वह सब विषय यथायोग्य निरूपण किये पीछे शिष्योंने जहां २ सुनाये और उनमें कुछ प्रश्नोत्तर बढे और वह भी उन्होंने अपनी संहितामें एकत्रित करालिये, परन्तु व्यासजीने नैमिषारण्यवासी महर्षि और सूतका सम्वाद अपने प्रबन्धमेंही बांधा है कारण कि वह इस बातको जानते थे कि, सूतके द्वारा पुराणोंका प्रचार होगा। इस समय यहां पाश्चात्य विद्वानोंकाभी थोडा मत दिखाना उचित है कि वह लोग पुराणादिके विषयमें क्या बोध रखते हैं और कितने दिनोंके बताते हैं अध्यापक तथा विष्णुपुराणके टीकाकार विलसनसाहबने अठारह पुराणोंके विषयमें जो लिखा है और उनकी टीकाको देख जो उनके अनुयायी दत्त आदिभी वैसाही ठीक समझते हैं, उनके लेखको लिखकर फिर हम इस लेखका खण्डन करेंगे जिससे ऐसे सब आधुनिक मतोंके प्रतिपादक दयानंदियोंका लेखरानादि. कभी खण्डन होजायगा.

१ ब्रह्मपुराण—उत्कलका जगन्नाथमाहात्म्य कीर्तन करना उद्देश्य है पांच लक्षण इसमें नहीं, उत्कलके मन्दिरादिका विवरण होनेसे सन् १३०० या १४०० के पहले नहीं लिखा गयाहै।

२ पद्मपुराण—इसमें बौद्ध जैनियोंका वर्णन वैष्णवोंके चिह्नादिधारणकी कथा होनेसे १२ शताब्दीका बोध होता है। शेष पिछले खण्ड १५ या १६ शताब्दीके रचित हैं।

३ विष्णुपुराण—बौद्ध जन प्रसंग होनेसे और भविष्यराज्यवंश कलिके ४२४६ वर्षतक कहनेसे १०४५ सन्का निर्माणकाल विदित होता है.

४ वायुपुराण—सब पुराणोंमें यही प्राचीन और मूल पुराणोंके सब लक्षणयुक्त है.

५ श्रीमद्भागवत—इसे बोपदेवकृत कोई २ कहते हैं यह १२ शताब्दीकी रचनाका बोध होता है.

६ नारदीयपुराण—इसमें पुराणके लक्षण नहीं यह आधुनिक भक्ति-ग्रंथ है; इसमें लिखा है कि गोघातक देवनिन्दकके निकट कोई यह पुराण न कहे इससे यह १६ या १७ शताब्दीका संगृहीत है. बृहन्नारदीयपुराण भी इसी प्रकार विष्णुकी स्तुति और वैष्णवोंके कर्तव्यसे पूर्ण है और आधुनिक है.

७ मार्कण्डेयपुराण—ब्रह्म पद्म नारदीयकी अपेक्षा अति प्राचीन है; यह ९ या दशमी शताब्दीका संग्रह है पूरा भी नहीं है.

८ अग्निपुराण—इतिहास छन्द व्याकरण तांत्रिक पूजा होनेके पीछे यह बना है आधुनिक होनेसे भी यह ग्रंथ मूल्यवान् है.

९ भविष्यपुराण—इस समय जो भविष्यपुराण पाया जाता है वह भविष्य नहा कहा जाता इसमें प्रथम अंशमें संक्षेपसे सृष्टितत्त्व कथन कर शेष समस्तमें व्रत पूजा कही है.

१० ब्रह्मवैवर्त—मत्स्यपुराणके कहे लक्षण इसमें न होनेसे यह पुराण नहीं समझाजाना.

११ लिङ्गपुराण—यहभी एक कर्म ग्रंथ समझना चाहिये पौराणिकताकी रक्षाके लिये इसमें पुराणकथा जोडी है पुरातन शैवाख्यान होनेपर भी इसका बहुत अंश आधुनिक है.

१२ वाराहपुराण—इसको भी कर्मग्रंथ कहसकते हैं. १२ शताब्दीके प्रसिद्ध वैष्णव रामानुजका इसमें आभास है.

१३ स्कन्दपुराण—इसके बहुत खण्ड हैं जगन्नाथमाहात्म्य वर्णित होनेसे ब्रह्मपुराणके समान समय विदित होता है.

१४ वामनपुराण—यहभी पुराण कहने योग्य नहीं.तीन चार सौ वर्षका है.

१५ कूर्मपुराण—इसमें भैरव वाम यामळ तन्त्रशास्त्रका उल्लेख होनेसे यह पुराण तान्त्रिकोंसे पीछेका बहुत आधुनिक है.

१६ मत्स्यपुराण—इसमें पुराणाके पांच लक्षण हैं उपपुराणोंका वर्णन करनेसे इसकी रचना अधिक पुरातन नहीं है.

१७ गरुडपुराण—मत्स्यपुराणके कहे लक्षण इसमें न होनेसे तथा गरुड का विषय कुछ न होनेसे नाममात्रका गरुडपुराण है.

१८ ब्रह्माण्डमहापुराण—इस पुराणकी श्लोकश्रेणी अतिप्राचीन और यह साक्षात् व्यासप्रोक्त माना जाता है उसमें बहुतसे महात्म्यभी है. इसका मिलनभी इस समय कठिन होरहा है इसके नामसे वायुपुराणकी पुस्तक मिलती है. कारण कि, उसका शेष खण्ड ब्रह्माण्डखण्ड कहाता है, सम्भव है कि, अज्ञात सम्पूर्ण वायुपुराण ब्रह्माण्ड समझ लियाहो, पर ब्रह्माण्डपुराण दाक्षिणात्योंमें पाया जाता है.

इस प्रकार विलसन साहबके अनुसरणमें इधरके कई एक देशीभी चेले है।

अब यहां इस बातका विचार किया जाता है कि, क्या इन लोगोंका कथन सत्य है, वास्तवमें क्या पुराण आधुनिक हैं वैदिकग्रंथ और प्राचीन स्मार्त ग्रंथोंमें जो पुराणप्रसंग है वह सब पुराण क्या लुप्तही होगये हैं इस समय जो पुराण पाये जाते हैं वह क्या सब ऐसेही आधुनिक हैं. ब्राह्मण, आरण्यक, गृह्य और धर्मशास्त्रके पुराण प्रचलित थे श्राद्धादि धर्मकार्यमें उनका आयोजन होता था शतपथमें लेख है दशवें दिन किंचित् पुराण श्रवण करे, और वेदव्यासजी पुराणोंके विभागकर्ता सब पुराणोंमें इतिहासोंमें प्रसिद्ध हैं, तब अध्यापक विलसन, दक्ष तथा समाजी आदिकोंका इनको आधुनिक समझना भूलकी बात है, यदि किसी पुराणमें आधुनिक

अंश प्रक्षिप्त हो तो क्या पूर्वकालसे भारतमें अठारह पुराण प्रचलित नहीं थे ऐसा कहा जासकता है। कभी नहीं। इसमें दो एक उदाहरण देनेसेही सन्देह दूर होजायगा। आपस्तम्बधर्मसूत्रमें इस प्रकार पुराणोंके वचन उद्धृत हुए हैं.

अथ पुराणे श्लोकावुदाहरन्ति—

"अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजामीषिरर्षयः।
दक्षिणेनार्यम्णः पन्थानं ये श्मशानानि भेजिरे॥
अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजेनोषिरर्षयः।
उत्तरेणार्यम्णः पन्थानंतेऽमृतत्वं हि कल्प्यते॥"

आपस्तम्बधर्मसूत्र २। २६। ३५।

पुराणोंसे उन्होंने इनही दो श्लोकोंका उदाहरण दिया है कि ८८००० अट्ठासी हजार ऋषि जो प्रजाकी कामना करते थे अर्यमाके दक्षिणपथमें जाकर श्मशानको प्राप्त हुए, और जिन अट्ठासी सहस्र ऋषियोंने प्रजाकी कामना नहीं की उन्होंने अर्यमाके उत्तरमें जाकर अमरत्व लाभ किया.

आपस्तम्बमें जो पुराणवचन उद्धृत हुए हैं पुराणोंमें भी वैसेही वचन पाये जाते हैं जैसा कि, ब्रह्माण्डपुराणमें लेख है—

"अष्टाशीतिसहस्राणि मुनीनां गृहमेधिनाम्।
सवितुर्दक्षिणं मार्गं श्रिता ह्याचन्द्रतारकम्॥
क्रियावतां प्रसंख्यैषा ये श्मशानानि भेजिरे।
लोकसंव्यवहारेण भूतारम्भकृतेन च॥
इच्छाद्वेषरताच्चैव मैथुनोपगमाच्च वै।
तथा कामकृतेनेह सेवनाद्विषयस्य च॥
इत्येतैः कारणैः सिद्धाः श्मशानानीह भेजिरे।
प्रजैषिणस्ते मुनयो द्वापरेष्विह जज्ञिरे॥

"नागवीथ्युत्तरे यच्च सप्तर्षिभ्यश्च दक्षिणम् ।
उत्तरः सवितुः पन्था देवयानस्तु स स्मृतः ॥
यत्र ते विशिनः सिद्धा विमला ब्रह्मचारिणः ।
सन्ततिं ये जुगुप्सन्ते तस्मान्मृत्युर्जितस्तु तैः ॥
अष्टाशीतिसहस्राणि तेषामप्यूर्ध्वरेतसाम् ।
उदक्पन्थानमर्यम्णः श्रिता ह्याभूतसंप्लवात् ॥
इत्येतैः कारणैः शुद्धैस्तेऽमृतत्वं हि भेजिरे ।
आभूतसंप्लवस्थानममृतत्वं विभाव्यते ॥"

ब्रह्माण्डपुराण अनुषङ्गपाद अ० ५४ श्लो० १५९–१६६ ।

अर्थात् जबतक चन्द्र तारा हैं तबतक अट्ठासीहजार गृहमेधी मुनिगण सूर्यके दक्षिणपथका आश्रय करते हैं इन्होंने क्रियावान् होनेके कारण श्मशान लाभ किया है, लोकव्यवहार तथा भूत आरम्भक क्रिया इच्छा द्वेषमें प्रीति मैथुनोपयोग काम और विषयसेवा इन सब कारणोंसे उन्होंने सिद्ध होकर श्मशानलाभ किया है उन प्रजाभिलाषी मुनियोंने द्वापरमें जन्मग्रहण कियाथा, नागवीथीकी उत्तर दिशामें और सप्तर्षिमण्डलकी दक्षिण दिशाओं में जो पथ है वही देवयान नामक सूर्यका उत्तरपथ कहा गया है वहां जितेन्द्रिय निर्मल स्वभाव सिद्ध ब्रह्मचारीगण वास करते हैं *उन्होंने सन्तानकी कामना न करकेभी मृत्युको जीत लिया है* वह अट्ठासी सहस्र ऊर्ध्वरेता मुनिगण प्रलयकालपर्यन्त अर्यमाके उत्तरपथमें रहते हैं उन्होंने ऊर्ध्वरेत होनेसे पवित्र होकर अमरत्व लाभ किया है.

विष्णुपुराण अ० ३ । ८ और मत्स्यपुराण अध्याय १२४ श्लोक १०२ से ११० तक ठीक इसी प्रकारके श्लोक हैं.

अब आपस्तम्बधर्मसूत्रके द्वारा वह विदित होगया कि इस सूत्ररचनासे प्रथमभी पुराण प्रचलित थे ब्रह्माण्डपुराणके अन्यत्र स्थलमेंभी इसी प्रकारके श्लोक पाये जाते हैं यथा—

अष्टाशीतिसहस्राणि प्रोक्तानि गृहमेधिनाम् ।
अर्यम्णो दक्षिणा ये तु पितृयानं समाश्रिताः ॥
गृहमेधिनां तु संख्येयाः श्मशानान्याश्रयन्ति च ।
अष्टाशीतिसहस्राणि निहिता ह्युत्तरायणे ॥
ये श्रूयन्ते दिवं प्राप्ता ऋषयश्चोर्ध्वरेतसः॥६९।१०३–१०४

इन श्लोकोंका धर्मसूत्रके साथमें पूरा मेल पाया जाता है । पद्मपुराणके सृष्टिखण्डमें भी इसी प्रकारका श्लोक है–

"अष्टाशीतिसहस्राणां यतीनामूर्ध्वरेतसाम् ।
स्मृतं येषां तु तत्स्थानं तदेव गुरुवासिनाम्॥"

यदि कोई कहे पहले एकही पुराण संहिता प्रचलित थी संभव है उसीसे धर्मसूत्रकारने यह श्लोक लिये हो तब अठारह पुराणोंका उल्लेख तो सिद्ध नहीं हो सकता एकाधपुराण प्रचलित होगा यह बातभी नहीं सूत्रकारने सूत्रमें स्पष्ट भविष्यपुराणसे प्रमाण लिया है.

"आभूतसंप्लवास्ते स्वर्गजितः पुनः सर्गे बीजार्था भवन्तीति"
भविष्यत् पुराणे आपस्तम्बधर्मसूत्र २ । २४ । ५ । ६ ।

अर्थात् उन पितृगणोंने प्रलयपर्यन्त स्वर्गजय किया है अर्थात् स्वर्गमें वास करतेहैं और सृष्टिकालमें बीजार्थ होते हैं भविष्यत्पुराणमें यह कथा है । ब्रह्माण्डपुराणमें इसका विस्तृत प्रसंग देखाजाता है यथाहि–

कल्पस्यादौ कृतयुगे प्रथमे सोऽसृजत्प्रजाः ।
प्रागुक्ता या मया तुभ्यं पूर्वकालं प्रजास्तु ताः ॥
तस्मिन् संवर्तमाने तु कल्पे जग्धास्तदाग्निना ।
अप्राप्तायास्तपोलोकं जनलोकं समाश्रिताः ॥
प्रवर्तन्ते पुनः सर्वे बीजार्थं ता भवन्ति हि ।
बीजार्थेन स्थितास्तत्र पुनः सर्गस्य कारणात् ।
ततस्ताः सृज्यमानास्तु सन्तानार्थं भवन्ति हि ॥

अर्थात् कल्पके आदि सत्ययुगमें प्रजापतिने प्रथम प्रजा रचनेकी इच्छा की तब पूर्वमें जिस प्रजाकी कथा कही है वही सत्य युगकी प्रजा प्रजापतिने रची है इस युगके समय कल्पके वर्तमानमें जो तपोलोकमें गमन न करनेसे जनलोकमें वास करते थे वही सम्वर्तक अग्निमें दग्ध होकर बीजके लिये फिर उत्पन्न होते हैं और संतानादिके द्वारा सृष्टि बढाते हैं। इस आपस्तम्बधर्मसूत्रके अब यह बात भलीभांति प्रमाणित होगई कि आपस्तम्बधर्मसूत्रके समय नाम निर्दिष्ट अनेक पुराण विद्यमान थे विष्णुपुराणमें भविष्यपुराण नौमा पुराण प्रमाण कोटिमें धरा है तो आगेकेभी प्रमाण और प्रचलित होंगे इसमें सन्देह क्या ? जब कि, इनमें अठारह पुराणोंके नाम विद्यमान हैं भविष्यमें भी हैं तब अष्टादश पुराण धर्मसूत्रकारके समय विद्यमान थे इसमें कुछ संशय नहीं है.

आपस्तम्ब धर्मसूत्रको डाक्टर बुलर DR. BULAR साहबने कहा है कि, यह धर्मसूत्र ईसवी सन तीनसे इधर नहीं रचा गया है यही क्या पाणिनीयसे भी पहलेका रचित जान पडता है और इसमें बौद्ध जैनका वर्णन होनेसे इसको ५। ६ शताब्दीके पूर्वमें प्रचलित होना मानसकते हैं जब कि एक अंगरेज विद्वान्ने ही ऐसा निर्णय किया है तब अध्यापक विलसन महोदय और उनके अनुयायियोंकी वह समस्त बात कट जाती हैं जब कि आपस्तम्बसेभी बहुत पहले यही पुराण विद्यमान थे और आपस्तम्बसे यह बातभी जानीजातीहै कि,सर्ग और प्रतिसर्ग वर्णन करना पुराणका मुख्य उद्देश्य है यह पुराण लौकिक और वैदिक भाषामिश्रित रचेगये हैं शंकराचार्यने भी छान्दोग्य उपनिषद्के भाष्यमें ३ । ९ पुराण वचन उद्धृत कियेहैं.

"ये प्रजामीपिरे धीरास्ते श्मशानानि भजिरे।
ये प्रजां नेपिरे धीरास्तेऽमृतत्वं हि भेजिरे ॥ "

इससेही जानाजाता है कि सब पुराणोंमें आर्ष प्रयोगोंकी छेडाछेडी है भविष्य पुराणसे इतना कोई सन्तुष्ट न हो कि यही क्या एकही पुराण है

तब हम ऊपर विष्णु और मत्स्यपुराणकेभी प्रमाण देचुके हैं और यहभी विदित होता है कि, सब पुराणोंसे अधिकतर प्राचीन शैलीसम्पन्न वा आदिसंहिताका सारभूत ब्रह्माण्डपुराण है.

पाश्चात्य विद्यासम्पन्न पुरुषोंका मत है कि पंचम ईसवीमें जब भारतीय हिन्दूगणोंने यवद्वीपमें पदार्पण किया तब वह ब्रह्माण्डपुराण महाभारत रामायण इत्यादि संस्कृतग्रंथ अपने साथमें लाये थे यह द्वीपसे वालिद्वीपमें यह सब ग्रन्थ प्रचलित हुए हैं । इस ब्रह्माण्डपुराणका वालिद्वीपके शैव ब्राह्मणोंमें वेदके समान आदर है और यवद्वीपकी कितनीही भाषाओंमें इसका अनुवादभी होचुका है । डाक्टर फ्रेडरिक साहबने ओलन्दाज भाषामें सबसे पहले इस ब्रह्माण्डपुराणका विस्तृत विवरण प्रकाशित किया है और कितनेही श्लोकभी इसके प्रकाशित किये हैं यथा—

"अग्रे ससर्ज भगवान्मानसानात्मनः समान् ॥"

यह श्लोक ब्रह्माण्डपुराणमें ६ । ६७ तथा दूसरे स्थानमें

"ततो देवासुरपितॄन् मनुष्याख्योऽसृजत्प्रभुः ॥"

यह श्लोक ब्रह्माण्डपुराणके ९ । २ में है.

फ्रेडरिकसाहबने ब्रह्माण्डपुराणके सृष्टि वर्णन प्रसंग जगत्की उत्पत्ति ब्रह्माकी तपस्यासे सनक सनन्दनादि मानसप्रजाकी सृष्टि, माहेश्वर प्रादुर्भाव, कल्पवर्णन, देवता असुरोंकी उत्पत्ति, मन्वन्तर युगादि निर्णय, सप्तद्वीपका विवरण इत्यादि जो कथा लिखी हैं वह सबही इस समय ब्रह्माण्डपुराणमें मिलती हैं इससे इस समयके ब्रह्माण्डपुराणकी उस समयके ब्रह्माण्डपुराणसे अभिन्नता है. अध्यापक विलसन आदिने जो इस ग्रंथको, जिस प्रकार आधुनिक कहा था वह बात ऐतिहासिक निरीक्षणसेभी ठीक नहीं ठहरती ॥ दो हजार वर्षसे कुछ अधिक चलता हुआ यह ग्रंथ यवद्वीपमें गया था तब इससेभी पहले यह पुराण विद्यमान था इसमें सन्देह नहीं, और विष्णु-

पुराणादिके मतसे ब्रह्माण्डपुराण अठारहवां है तो जब अठारहवां ही कई सहस्रवर्षका विदेशीय मतसेभी , विदित होता है तब शेष सत्रहकी आधुनिकता कैसे होसकती है.

विलसन और वेवर आदि पण्डितगण स्कन्दपुराणको खण्डात्मक और बहुत आधुनिक कहतेहैं पर यह बातभी ठीक नही है।महामहोपाध्याय श्रीहरप्रसाद शास्त्रीजीको नेपालसे सन् सातवी ईसवीकी लिखी स्कन्दपुराणीय नन्दिकेश्वरमाहात्म्यकी पोथी मिली है विश्वकोषकार्यालयमें शाके नौसे तेंतीस ९३३ की लिखी स्कन्दपुराणीय काशीखण्डकी पोथी विद्यमान है तब उनका १३ । १४ सौके मध्यमें कथन सर्वथाही असंभव और भ्रमकारक है.

इसके अतिरिक्त स्वामी शंकराचार्यने मार्कण्यपुराणसे और सन् सातवीं शताब्दीमें बाणने मार्कण्डेय पुराणके देवीमाहात्म्यसे विषय संग्रह किया है तथा पवनप्रोक्त पुराणका उल्लेख किया है, तथा बाणके सामयिक मयूरभट्टद्वारा सौरपुराणसे सूर्यशतकका विषय संग्रह, तथा ब्रह्मगुप्तद्वारा विष्णुधर्मोत्तरपुराणके अवलम्बसे ब्रह्मसिद्धान्त रचना और खृष्टीय एकादश शताब्दीमें आलवेसणी द्वारा आदित्य वायु मत्स्य और विष्णु तथा विष्णुधर्मोत्तर पुराणसे प्रमाण उद्धार खृष्टीय १२ शताब्दीमें गौडाधिप बल्लालसेनद्वारा उनके दान मारमें ब्रह्म,मत्स्य, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य,वाराह, कूर्म और विष्णुधर्मोत्तरपुराण और आद्य कालिका नन्दी नारसिंह और साम्ब उपपुराणोंसे अनेक वचन उद्धृत किये हैं तथा हेमाद्रिमें समस्त पुराणोंके वचन सगृहीत हुए हैं इन प्रमाणोंसे अवश्यही स्वीकार करना पड़ेगा कि,विलसन अक्षयकुमार और नवीन पंथाई दयानन्दी लोगोंका मत ग्राह्य नहीं है जब कि, अष्टादशपुराण शंकराचार्यके समयमें विद्यमान थे जिनको २२०० बाईस सौसे अधिक वर्ष होते हैं तथा बाणभट्टसेभी पहलेके हैं कारण कि, इन्होंने प्रमाण दिया है तथा विष्णुपुराणोंमें अठारह पुराणोंका नाम

विद्यमान है, और धर्मसूत्रमें विद्यमान है तब पुराणोंको आधुनिक समझना सर्वथा भ्रमकी बात है. जगन्नाथमाहात्म्य होनेसे क्या थोडे दिनोंका पुराण गिना जायगा कभी नहीं,यह मन्दिर चाहे अर्वाचीन हो यह दूसरी बात है परन्तु क्या वहां भगवत्पूजन आधुनिक है ? नहीं,ऋक् परिशिष्टमें जगन्नाथजीका वर्णन आताहै"यत्र देवो जगन्नाथः परं पारं महोदधेः । बलभद्रः सुभद्रा च तत्र मामेमृतं कृधि ॥ " और 'आर्यावाचो म्लेच्छवाचः मनुः ' और अण्ड्र कंक यवन आदिका वर्णन होनेसे यह ग्रंथ आधुनिक नहीं कह सकते, किन्तु इनमें कलिलक्षण निरूपणमें भविष्यरूपसे और किसीमें प्रत्यक्षरूपसे वर्णन किया गया है।रहा तंत्र शास्त्रका उल्लेख सो मारण मोहनादिका मूल अथर्ववेदमें विद्यमान है । जैन बौद्धादिका निरूपण जहां कहीं किसी पुराणमें आया है,वहां इस प्रकारसे नही लिखा है कि, इसके उपरान्त इस प्रकार जैनधर्म चला किन्तु लक्षणपरक जैनधम बौद्धधर्म कलिमें प्रवृत्त होगा इस प्रकारका उल्लेख है.

अब यह विचार किया जाता है कि, जिस प्रकारसे इस समय पुराण मिलते हैं यह सब आद्योपान्त देखनेसे किसी किसी भविष्य मत्स्यादिपुराणमें गुप्तवंशका वर्णन है जो छठी शताब्दीके समकालमें हुए थे और यह बात मिलनेसे आधुनिकता होसकती है,यह बातभी ठीक नहीं है कारण कि जब होनहार भविष्य वर्णन है तौ इससे उसके पीछे पुराण कहे जायँ तौ पुराणोंमें आगे होनेवाले सात मन्वन्तरोंका उनके ऋषि देवता सहित वर्णन होनेसे इस हिसाबसे पुराण इस कल्पके पीछेही कहीं होने चाहिये और कलिका वर्णन करनेसे कलिके पीछे होने चाहिये, इस हिसाबसे तो लाखों वर्ष तक अभी पुराणोंका नामभी न आना चाहिये, भविष्य प्रसंग होनेपर आगे होनेवाला लिखाजाता है,और एक२पुराण कई बार सुनाया गया है । कहीं सूतने उस समयका राजवंश अपनी उक्तिमें कहा है यथा ब्रह्माण्डपुराणे—

तस्य पुत्रः शतानीको बलवान् सत्यविक्रमः।
ततः सुतं शतानीकं विप्रास्तमभ्यषेचयन्॥
पुत्रोऽश्वमेधदत्तोऽभूत् शतानीकस्य वीर्यवान्।
अधिसीमकृष्णो धर्मात्मा साम्प्रतोऽयं महायशाः॥
यस्मिन्प्रशासति महीं युष्माभिरिदमाहृतम्।
दुरापं दीर्घसत्रं वै त्रीणि वर्षाणि पुष्करम्॥
वर्षद्वयं कुरुक्षेत्रे दृषद्वत्यां द्विजोत्तमाः॥

[ब्रह्मा०उपसंहारपाद]

जन्मेजयका पुत्र सत्यविक्रमी शतानीक हुआ ब्राह्मणोंने इसके पुत्रको राज्यमें अभिषेक कियाथा,इसके अश्वमेधदत्त नाम वीर्यवान् पुत्रने जन्म ग्रहण कियाथा इनके पुत्र परपुरंजय नामक धर्मात्मा अधिसीमकृष्ण हैं, यही महायशस्वी इस समय पृथिवीका पालन करते हैं, आपने इनकेही शासनकालमें त्रिवर्षव्यापी पुष्करमें और दृषद्वतीके तटपर कुरुक्षेत्रमें दीर्घ यज्ञका अनुष्ठान किया है,यह अधिसीम जन्मेजयके प्रपौत्र हैं जिनको इस समय ४८०६ के लगभग वर्ष होते हैं जब कि यह पुराण इतने समयका निरूपण कररहा है फिर आधुनिक कैसे होसकते हैं ? उस पुराण सुनानेके समय यह सूतका कथन है तो इससेभी पहले पुराणकी विद्यमानतामें क्या सन्देह है.

संस्कृत आलोचक मुइरसाहब कहते हैं इतिहास पुराणको प्राचीनतम संस्कृत पुस्तकमें गणना नहीं कर सकते, इनसे पहलेभी अनेक गाथा विद्यमान थीं, इतिहासपुराणमें प्रकृत प्राचीन प्रवादमाला और ऐतिहासिक तत्त्व निहित होनेपरभी आधुनिक लेखकोंकी इच्छासे अनेक कथा कल्पित मिश्रित हुएहैं किन्तु वेदमें ऐसा नहीं हुआ है, अतिप्राचीन कालसेभी वेदमें अबतक कुछ परिवर्तन नहीं हुआ है.

तो क्या विदेशियोंकी बातसे हम जानलें कि, पुराण प्रमाण-कोटिमें नहीं गिने जासकते,यथार्थमें क्या पुराण उपदेशकमूल ग्रंथ नहीं हैं

प्राचीनतम पुराण क्या धर्मग्रन्थोंमें परिगणित नहीं हैं ब्रूहदारण्यक छान्दोग्य इत्यादि उपनिषदोंमें पुराण पंचमवेद गिने गये हैं. मनुमें स्पष्ट लिखा है श्राद्धमें ब्राह्मणोंको पुराण सुनावे, यदि पुराण धर्म वा उपदेशमूलक ग्रंथोंमें नहीं गिने जाते तो ऐसा प्रसंग क्यों होता. पुराण सूतके मुखसे निर्गत होनेपरभी प्रामाणिक और अठारह विद्याके अन्तर्गत हैं. भट्टकुमारिलने पुराणोंकी प्रामाणिकता स्वीकार की है, भगवान् शंकराचार्यने इस सम्बन्धमें इस प्रकार आलोचना की है ।

"इतिहासपुराणमपि व्याख्यातेन मार्गेण सम्भवन्मंत्रार्थवादमूलत्वात् प्रभवति देवताविग्रहादि साधयितुम् प्रत्यक्षामूलमपि सम्भवति भवति हि अस्माकमप्रत्यक्षमपि चिरन्तनानां प्रत्यक्षम् तथा च व्यासादयो देवताभिः प्रत्यक्षं व्यवहरन्तीति स्मर्यते । यस्तु ब्रूयादिदानीन्तनानामिव पूर्वेषामपि नास्ति देवादिभिर्व्यवहर्तुं सामर्थ्यमिति सजगद्वैचित्र्यं प्रतिषेधेत् । इदानीमिव च नान्यदपि सार्व्वभौमक्षत्रियोऽस्तीति ब्रूयात् ततश्च राजसूयादिचोदना उपरुन्ध्यात् इदानीमिव च कालान्तरेऽप्यव्यवस्थितप्रायान् वर्णाश्रमधर्मान् प्रतिजानीत । ततश्च व्यवस्थाविधायिशास्त्रमनर्थकं स्यात् तस्माद्धर्मोत्कर्षवशात् चिरन्तनादेवादिभिः प्रत्यक्षं व्यवजहुरिति श्लिष्यते, अपि च स्मरन्ति स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोग इत्यादि । योगोप्यणिमाद्यैश्वर्यप्राप्तिफलकः स्मर्य्यमाणो न शक्यते साहसमात्रेण प्रत्याख्यातुम् श्रुतिश्च योगमाहात्म्यं प्रत्याख्यापयति पृथिव्यप्तेजोऽनिलखे समुत्थिते पञ्चात्मके योगगुणे प्रवृत्ते न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरमिति ऋषीणामपि मंत्रब्राह्मणदर्शिनां सामर्थ्यं नास्मदीयेन सामर्थ्येनोपमातुं युक्तं तस्मात् समूलमितिहासपुराणमिति" शारीरकभाष्यम् ९।१।३।३३ अर्थात् इतिहासपुराणभी जैसे भावसे व्याख्यात हुए हैं मंत्रभी अर्थवादमूलक होनेसे वैसेही देवताविग्रहादिके प्रपंचनिर्णयमें समर्थ है इसकाभी प्रत्यक्ष होना संभवपर है, हमारे पक्षमें अप्रत्यक्ष होनेपरभी प्राचीन

पुरुषोंको प्रत्यक्ष हुआ था इसी कारण स्मृतिमें कहा है व्यास इत्यादिने देवताओंके सहित प्रत्यक्षरूपसे व्यवहार किया था, जो कहते हैं कि यहांके लोगोंके समान प्राचीनपुरुष भी देवताओंके संग व्यवहारमें समर्थ नहीं थे,वह जगत्के वैचित्र्यका प्रतिषेध करते और कहते हैं कि,इस समय जिस प्रकार कोई क्षत्रिय सार्वभौम नहीं है इसी प्रकार अन्य समयमेंभी कोई सार्वभौम राजा नहीं था, ऐसा होनेसे राजसूय यज्ञादिका शास्त्र कि चक्रवर्ती राजसूय करसकता है, स्वीकार न होगा, और इस समय जैसे वर्णाश्रमकी अव्यवस्था है पहलेभी इसी प्रकार अव्यवस्था थी, ऐसा समझकर वह व्यवस्थाविधायि शास्त्रकोभी अनर्थक जान सकते हैं यथार्थमें तौ धर्मकी उत्कृष्टताके कारण पूर्वपुरुष देवताओंके संग प्रत्यक्ष व्यवहार करते थे और इसी कारण स्मृतियोंमें कहा गया है कि,स्वाध्यायादि द्वारा ही देवताओंके संग सम्प्रयोग होता है, इत्यादि इसी प्रकार योग भी जब अणिमादिक ऐश्वर्य्य फलप्राप्तिवाला कहा गया है तब यह उक्ति साहस मात्रसे प्रतिषेधके योग्य नहीं है, कारण कि श्रुतिभी जीव योगका महात्म्यनिर्देश करती है--पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाशसे प्रादुर्भूत पंचात्मकयोग गुणप्रवृत्त हैं और योग प्राप्त पुरुषका शरीर योगाग्नियुक्त होनेसे रोग जरा और मृत्युवाला नहीं होता, इसी प्रकार अपनी सामर्थ्यसे देखकर मंत्र ब्राह्मण द्रष्टा ऋषियोंकी सामर्थ्यको अपनी सामर्थ्यसे उपमा करना युक्तिसंगत नहीं है इसीसे ग्रंथ इतिहास पुराण समूलक अर्थात् प्रामाणिक हैं.

अब क्रमप्राप्त संक्षेपसे यह बातभी यहां लिखनी उचित है कि भाष्यकारका समय क्या है शंकरस्वामीने भाष्यकी प्राप्तिमें अपनेको गौडपादाचार्यका पदानुयायी माना है, बौद्धमत ईसासे ५५० वर्ष पहले आरंभ हुआ और २०० वर्ष पहले मुरियाखान्दानकी अवनतिके साथ इसकी अवनति होने लगी, यों तो यह १२०० शताब्दीतक रहा

परन्तु मसीहसे २०० वर्ष पहलेही इसकी अवनति होने लगी और फिर ब्राह्मणों तथा दूसरे लोगोंने अपने धर्मकी ओर झुकना आरंभ किया संक्षिप्त इतिहास हिन्द पृ० ३७ इससे अनुमान है कि, इसी समयके निकटवर्ति भाष्यकारका समय होगा यह बात प्रसिद्ध है कि, बौद्धमतके हानि पहुँचानेवाले सबसे पहले यही हुए हैं.

दूसरे दशोपनिषद् शारीरक और गीताभाष्यमें कहीं यवनोंका किंचित् भी उल्लेख नहीं है सम्वत् ६९३ अर्थात् ६३६ सन्‌से यवनोंका आक्रमण देशमें होनेलगा था उस समय इस प्रकारसे कोई हिन्दू धर्म-रक्षक स्वतंत्रतासे उपदेश नहीं देसकता था इससे शंकरस्वामीका समय सन् संवत् दोनोंसे पूर्वका है.

पार्सियोंके धर्मपुस्तकोंमें सिकन्दर यूनानीके वृत्तांतमें लिखा है कि जब सिकन्दर भारतवर्षमें आया तब शंकराचार्यनामी एक साधु धर्मोप-देशमें कटिबद्ध थे इनका समय सबको मालूम है कि, ३३१ वर्ष पहले इससे यह भारतवर्षमें आये.

शंकराचार्यके एक योग्य शिष्यने इस प्रकार लिखा है कि–

"ऋषिर्वीरास्तथा भूमिर्मर्त्याक्षौ व्याममेलनात् ।
एकत्वेन लभेदङ्कस्ताम्राक्षस्तर्हि वत्सरः ॥
विश्वजिच्च पिता यस्य निर्यातश्च चिदम्बरे ।
तस्य भार्याम्बिका देवी शंकरं लोकशंकरम् ॥
प्रसूता सर्वलोकस्य तारणाय जगद्गुरुम् ॥

अर्थात् २१५७ युधिष्ठिरी सम्वत्में विश्वजित् पिता और अम्बिका देवी माताके घर संसारका कल्याण करनेवाले शंकरस्वामी प्रगट हुए और पीछे जगद्गुरु कहलाये अब युधिष्ठिरी सम्वत् ४३३७ हैं राजत-रंगिणीके अनुसार और दूसरे ग्रंथोंके अनुसार कलियुगके प्रारंभसे युधि-ष्ठिरका सम्वत् है.

इस प्रमाणसे शंकरस्वामी २२०० सौ वर्षसे अधिकके पाये जाते हैं जब इतना समय शंकरस्वामीको बीता है और इन्होंनेभी पुराणोंका प्रमाण माना है तब पुराण इनसे बहुत पहलके सिद्ध होचुके दूसरे लोग अंग्रेज आदि जो इनका समय आठवीं शताब्दी आदिमें बताते हैं उनको भ्रम हुआ है कारण कि, शंकरस्वामीकी गद्दीवालेभी शंकराचार्य कहाते हैं जैसा अभी द्वारकापीठके शंकराचार्यने भ्रमण किया था और अबभी चार वर्तमान हैं अन्तिम विख्यात शंकराचार्यने यवनोंके आनेसे १०० वर्ष पहले बौद्धमात्रको भारतवर्षसे निकाल दिया था, एक शंकराचार्य ईसासे ५७ वर्ष पहले हुए जिनके शिष्य भर्तृहारि हैं तीसरे ४५७ सम्वत्में चौथे सं० ५२५ में ऐसेही अनेक होते रहे.

प्रसिद्ध विद्वान् सेण्टसाहब लिखते हैं कि, स्वामी शंकराचार्य गौतम बुद्धकी मृत्युके ६० वर्ष पीछे उत्पन्न हुए.

Shankrachary appears in India apout sixty years after Gotam Budh death.

ए. बी. सेण्टसाहबकी ईशूटेडिक हेनरम् पृष्ठ १४९ अनुवाद ऊपर लिख चुके हैं गौतमबुद्ध इन्हींके हिसाबसे ईसासे ५०० वर्ष पहले हुए हैं तो ५५० मेंसे ६० निकालकर ४९० बचे इसमें सन् १९०४ जोड-२३९४ वर्ष शंकराचार्यको हुए बीतते है, जब शंकरस्वामी पुराणोंका प्रमाण कहते हैं तब आधुनिक अंग्रेज तथा विद्वान् उनके अनुयायीदत्त महाशय दयानन्दी लेखरामादि जो पुराणोंको आधुनिक कहते हैं यह उनकी बडी भूल है.

पुराणोंमें सम्प्रदायिकता ।

आदिपुराणसंहिता सार्वजनिक ग्रंथ होनेपरभी वर्तमान पुराण पाठ करनसे सर्वथा वैसा बोध नहीं होता । प्रत्येक पुराणही मानो किसी विशेष उद्देश्य साधनके लिये संकलन किया गया है । नहीं तो जब हम देखते हैं एक

पुराणका मूल विषय सब पुराणोंमें पाया जाता है जब प्रत्येक मूलपुराणका ही उद्देश्य पंचप्रकार विषय वर्णन करना है तब इतने पुराण संकलित होनेका क्या कारण है.

हम इसका उत्तर विश्वासके साथ यह देते हैं कि पंचलक्षण सब पुराणोंका मुख्य उद्देश्य होनेपरभी एक २ पुराणमें एक एक विषय विस्तारसहित वर्णन करनाही प्रथम सब पुराणोंका उद्देश्य है,इतनाही नहीं वरन् विभिन्न पुराणोंमें भिन्न उपास्य सम्प्रदायोंका प्रभावभी लक्षित होता है, किस २ संप्रदायका उद्देश्य साधन करनेके लिये कौन २ पुराण रचा गया है,बहुधा पुराणके नाम मात्रसेही इसका यथेष्ट प्रमाण मिलजाता है.

यह पहलेही कहचुके हैं कि, धर्मसूत्रके पहले तथा वैदिक युगके अवसानमें अष्टादशपुराण संकलित हुए थे ब्राह्म,शैव, भागवत,वैष्णव इत्यादि पुराणोंके नाम पढनेसे यह सब पुराण शिवादि उपासना प्रधान सम्प्रदायके ग्रंथ समझे जाते हैं अब यह विचार है कि उस समय क्या यह अनेक सम्प्रदाय प्रधान थीं और क्या इनके मन्तव्यकी घोषणाके निमित्तही पुराणोंकी सृष्टि हुई है.

यद्यपि धर्मसूत्रकाभी ठीक समय ज्ञात नहीं है तथापि जैन बौद्धसे बहुत पहले यह ग्रंथ विद्यमान थे इसमें सन्देह नहीं है इसीसे ७७० वर्ष पहले जैन धर्मके प्रचारक स्वामी पार्श्वनाथका निर्वाण हुआ है [अंग्रेजीमत] इनकी जीवनीमें ब्रह्मा, शिव, विष्णु इत्यादि देवताओंकी उपासना करनेवालोंके नाम पाये जाते हैं । इसी प्रकार बौद्ध धर्मके प्रवर्तक शाक्यबुद्धकी जीवनीमें भी शिव, ब्रह्मा, नारायण इत्यादिके उपासकोंका प्रसंग है खृष्ट तीनसौ वर्ष पहलेके निर्मित ललित विस्तर और इसके बहुत पहलेके निर्मित पालि बौद्ध ग्रंथोंमें भी शिव ब्रह्मादि देवताओंका नामोल्लेख है इसी प्रकार जैनियोंके भी प्राचीन ग्रंथोंमें पाया जाता है इन सब प्रमाणोंके द्वारा कह सकतेहैं कि जैन और बुद्ध धर्मकी उत्पत्तिकेभी सैकडों

वर्ष पहले शिव–ब्रह्मा आदि देवताओंकी उपासना विद्यमान थी यही क्या आनाम और कम्बोडियासे जो प्राचीन हिन्दू शिलालिपि आविष्कृत हुई हैं उनके द्वाराभी स्पष्ट पाया जाता है कि खृष्टीवर्ष प्रथम शताब्दीके भी बहुत पहले इस देशमें शिव ब्रह्मादिकी उपासना विद्यमान थी और जब ईसवी सन्से आठ सौ नौ सौ वर्ष पूर्व यह उपासना विद्यमान थी तब प्रत्येक देवताकी उपासनाका पोषक एक २ पुराण संकलित हुआ है इसमें कहनाही क्या है और निश्चयही पुराण इन देवोपासनाकी पुष्टिका मुख्य उद्देश्य लेकर संकलित हुए हैं;

पुराणोंमें अवतारवाद।

अवतार वाद पुराणोंका एक मुख्य अंग है प्रायः सब पुराणोंमेंही अवतार प्रसंग है शैवमत परिपोषक पुराणोंमें शिवके अनेक अवतार कहे गये हैं; इसी प्रकार वैष्णव पुराणोंमें विष्णुके अनेक अवतार कीर्तित हुए हैं कोई कहते हैं कि, अवतार वाद अधिकतर पुरातन नहीं है जब बुद्ध भगवान् देव कहाये तबसे अवतार वाद प्रवर्तित हुआ है पर यह बात किसी प्रकारभी ठीक नहीं है कारण कि वैदिक ग्रंथोंमें इसकी सूचना पाई जाती है.

शतपथ ब्राह्मण मनवे हैव प्रातः+++मत्स्यः पाणी आपेदे सहास्मै वाचमुवाद बिभृहि मा पारयिष्यामि त्वेति कस्मान्मा पारयिष्यसीति औघ इमाः सर्वाःप्रजा निर्वोढास्ततस्त्वापारयितास्मीति कथन्ते मृतिरिति १+८ । १२ । १० इत्यादि।

अर्थात एक समय मनुजीने नदीके तटपर अपने जनके लिये जल हाथमें लिया तब एक मछलीका बच्चा हाथमें अकस्मात् आगया तब मनुजी शोचने लगे, उसी समय वह मत्स्य बोला हे मनु ! तू मुझे पोषणकर तो मैं तुझे पालन करूंगा। तब मनुने आश्चर्यमें होकर कहा तुम काहेसे मेरी पालना करोगे ? मत्स्यने कहा यह सम्पूर्ण प्रजा जो तुम्हारे देखनेमें

आती है जलोंमे डूब जायगी, उस महाप्रलयके जलमें मैं तेरी पालना करूंगा। आगे मत्स्यका नदीमें बढ़ना और सागरतक पहुँचना, प्रलय होनेकी कथा दशकण्डिकातक लिखी है यह मत्स्यावतार है।

कूर्मावतार तैत्तिरीयारण्यक १।२३।३ अन्तरतः कूर्मभूत-पर्यन्तं तमब्रवीत् मम वै त्वङ्मांसात्समभूत्नेत्यब्रवीत पूर्वमे-वाहमिहासमिति तत्पुरुषस्य पुरुषत्वम् स सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् भूत्त्वोदतिष्ठत इत्यादि ॥

अर्थात् प्रजापतिके शरीरसे रस कम्पायमान हुआ उससे जलोंके भीतर कूर्मरूप होकर इधर उधर विचरते हुए देखकर प्रजापतिने कहा हे कूर्म ! तुम मेरी त्वचा मांससे उत्पन्न हुए हो, कूर्मने कहा नहीं मैं तुमसे पहले यहां था इसीसे उस कूर्म रूपको (पुरस्तिष्ठतीति पुरुषः) इस व्यु-त्पत्तिसे पुरुषत्वकथन किया है वह कूर्मरूपी परमात्मा ऐसा कहकर सहस्र-शीर्ष इत्यादि विराट् रूप होकर स्थित हुए। यहां सायनाचार्यने भी (सर्वगतनित्यचैतन्यस्वरूपत्वात्। सः कूर्मशरीरवर्ती परमात्मा) इत्यादि अपने भाष्यमें प्रयोग दिये हैं;

स यत्कूर्मो नाम एतद्वै रूपं कृत्वा प्रजापतिः प्रजा असृजत। शत० ७।५।१।५।

जो कूर्म नामसे प्रसिद्ध है इसी रूपको करके प्रजापतिने प्रजा रची है इत्यादि।

वाराह अवतार का प्रसंग।

आपो वा इदमग्रे सलिलमासीत् तस्मिन् प्रजापतिर्वायुर्भूत्वा-चरत्स इमामपश्यत् तं वराहो भूत्वाहरत् तैत्तिरीयसंहिता७। १।५।१। स वराहो रूपं कृत्वोपन्यमज्जत स पृथिवीमध आ-र्छत तैत्तिरीयब्राह्मण १।१।६ इतीयतीहवा इयमग्रे पृथि-

व्यासप्रादेशमात्रीतामेमूप इति वाराह उज्जघान सोऽस्याः पतिरिति श० १४।१।२।११।

अर्थ—पहले जलही था, प्रजापति वायुरूप होकर उसमें विचरने लगे सो इस पृथिवीको देखा उसको वराह होकर पृथिवीको ऊपर लाये।कृष्ण यजुः १। वह प्रजापति वराहरूप होकर नीचे जाकर देखा इत्यादि। २। प्रथम यह इतनी बडी पृथिवी प्रादेशमात्र थी, प्रजापतिने इसको वाराहरूपसे उद्धार किया ३ ऋग्वेद मं० ९ सू० ९८ में लिखा है कि "महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदावरोहो अभ्येतिरेभन्।" अर्थात् पृथ्वीके उद्धारके नियमवाला परम पवित्र सम्पूर्ण जगत्का बन्धु सम्पूर्ण पापोंका शोधक वाराह उच्चस्वरसे शब्द करते गमन करते हैं और "वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात्" तैत्तिरीयारण्यक प्र० १० अनु० १ इसमें प्रत्यक्षही नृसिंहावतारका वर्णन है, आगे यजुः और ऋग्वेदमें वामनावतार देखो इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पा ९७ सुरे। ऋ० १।२२।१७ वामनो ह विष्णुरासीत् श० १। २।५।१।७। अर्थात् वामनरूपधारी विष्णुने तीन चरणसे जगत्में आक्रमण कर पद धरे हैं और इनके पदम यह भूमि आदि लोक सब अन्तर्हित होगये थे ऋ०। और विष्णुही वामनरूप हुए थे, शतपथके ऊपर लिखे पत्रमें यह कथा पूर्ण रूपसे विद्यमान है; परशुरामावतार ऐतरेय ब्राह्मणमें लिखा है,

प्रोवाच रामो भार्गवेयो विश्वान्तराय ऐत० ७।५।२४।

भृगुकुलमें प्रगट हुए परशुराम विश्वान्तरको कथन करते हुए। तथा छान्दोग्य उपनिषद्में (कृष्णाय देवकीपुत्राय छान्दो० १।१७)देवकीपुत्र कृष्ण और तैत्तिरीयारण्यक प्र० १०। अनु० १।६।

नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।तन्नो विष्णुःप्रचोदयात॥

इसमें वसुदेवपुत्रकृष्णको नारायण कहा है इत्यादि मंत्र ब्राह्मण

आरण्यक ग्रन्थोंमें जब अवतारकथा विद्यमान है तब पुराणोंमें वही कथा विस्तारके साथ लिखी गई हैं। कहीं यही वैदिक ग्रंथोंमें ब्रह्माके और कहीं विष्णुके अवतार हैं इसी प्रकार ब्रह्माण्डादि शैवपुराणोंमें शिवके भी अनेक अवतार कहे गये हैं अर्थात् भविष्यमें सूर्यके और मार्कण्डेयपुराणमें शक्तिके अनेक अवतार लिखे हैं अर्थात् प्रत्येक पुराणमें स्वस्व उपास्य देवताकी महिमा पोषण करनेके निमित्त उनके अवतारोंका चारित्र विस्तारसे वर्णन किया है, पुराणोंने वेदके संक्षिप्त अर्थको बडी सजावटके साथ लिखा है.

कोई २ पाश्चात्य पंडित और इस देशमें उनके अनुयायी कहते हैं कि वैदिक ब्रह्मोपासना ही सबसे प्राचीन है, विष्णु शिवादिकी उपासना वैसी प्राचीन नहीं है इससे वेदोंमें यह उपासना वैसी वर्णित नहीं हुई। वेदमें ब्रह्माही नारायण नामसे कहे गये हैं पीछे ग्रंथोंमें वही विष्णु कहाये हैं। हम इस शंकाके दूर करनेके निमित्त वेदोंसे उस प्रसंगको दिखाते हैं इसमें सन्देह नहीं कि ब्रह्मही आर्यजातिके उपास्य देव हैं परन्तु उसके सगुण रूपमें यह विष्णु आदिकी उपासना विद्यमान है.

वेदमें विष्णुका प्रसंग।

विष्णोर्नुकंवीर्याणि प्रवोचंयः पार्थिवानि विममे रजांसि यो- अस्कभायदुत्तरमधस्थंविचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः १। प्रतद्विष्णुः स्तवतेवीर्येणमृगोनभीमःकुचरोगरिष्ठः २।

अ० १ मं० सू० १५४ १५५। १५६ में इसी प्रकार विष्णुकी स्तुति है।

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्॥ समूढमस्यपांसुरे। ऋ० १।५।२२। १७विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे इन्द्रस्ययुज्यः सखा १९ त्रीणि पदाविचक्रमे विष्णुर्गो-

पाअदाभ्यःअतो धर्माणिधारयन्१८तद्विष्णोः परमं पदॅसदा पश्यन्ति सूरयः२० इत्यादि ॥

इसी प्रकार मं० १ सूक्त ८५ ऋ०७ । तथा १ । १० । ५ । तथा १ । १६४ । ३६ । और १ । १८६ । १० तथा २ । १ । ३ । तथा २ । २२ । १ । तथा ३ । ५४ । १४ । तथा ४ । २ । ४ । और ४ । ३ । ७ । तथा ४ । १८ । ११ । इत्यादि सैकडों मंत्रोंमें विष्णुका प्रसंग है. सामवेद यजुर्वेद और अथर्ववेदमें भी विष्णुका माहात्म्य प्रकाश करनेवाले मंत्रोंका अभाव नहीं है केवल चार संहितासे ही प्रमाण किया जाता है कि विष्णु चातुर्वर्ण्यके उपास्य देवता सनातन हैं । वेदके आरण्य ब्राह्मण भाग आदिमें यह उपासना और भी विशेषतासे जागरूक है.

भावार्थ—विष्णुभगवान्के किन २ कर्मोंको मैं कहूँ उनकी महिमा असीम है।जिसने पृथ्वी अन्तरिक्ष द्युलोकादिस्थान सम्पूर्ण पार्थिव परमाणुतक निर्माण किये हैं । वा सब परमाणुतक गणित किये हैं अग्नि वायु सूर्य त्रिलोकमें स्थापित किया है तीन लोकमें जिसने तीन पदधारण किये हैं बहुत अर्थोंको वेदद्वारा उपदेश करनेवाला उरुगमन करनेवाला महात्माओंसे स्तुतिको प्राप्त जिसने देवताओंके स्थानरूप द्युलोकको ऊपर स्तम्भित किया है उसकी प्रार्थना करते हैं, वह भीम चराचरको भीत करनेवाला मृग शुद्ध करनेवाला पृथिवीमें अनेक रूपोंसे विचरनेवाला गिरि वेदवाणी वा देहमें अन्तर्यामी रूपसे रहनेवाला सिंहके समान विष्णु अपने पराक्रमसे स्तुतिको प्राप्त होता है । २ इदं विष्णुका अर्थ लिख चुके हैं । विष्णोः कर्माणि विष्णुके सृष्टि पालनादि कर्मोंको देखो जिससे तुम्हार लौकिक वैदिक कर्मोंको निर्माण किया है । यह वृत्रवधमें इन्द्रके अनुरूप सखा है । १९ जगत्के रक्षक अविनाशी विष्णुने तीन पदोंको विक्रमण किया इन्हीं पदसे पुण्योंको धारण करते हुए यह अपने तेजसे त्रिलोकीको व्याप्त करके प्राणिगणको निज २ कार्यमें नियुक्त करते विचरते हैं १९ वेदान्त पारगामी विद्वान् सर्व-

व्यापी विष्णुके उस मोक्षस्वरूप परंपदको सदा देखते हैं जो आकाशमें चक्षुके समान व्याप्त है वा आकाशमें चक्षुरूप आदित्यमण्डल जिसने विस्तार किया है.

वेदमें महादेवका प्रसंग।

ऋक् संहितामें महादेव रुद्रनामसे प्रसिद्ध हुए हैं चारों वेदोंमें रुद्रकी स्तुति पाई जाती है इनमें यजुर्वेदका १६ सोहलवां अध्याय रुद्री विशेष प्रसिद्ध है, तैत्तिरीय कृष्णयजुःमें भी रुद्राध्याय है यदि कोई वैदिक रुद्रसे महादेवकी अभिन्नता स्वीकार करनेमें आनाकानी करे तो वाजसनेय-संहिताके रुद्राध्यायपर उनको दृष्टि करनी चाहिये उसमें शिव गिरिश पशुपति नीलग्रीव शितिकंठ भव शर्व महादेव इत्यादि पाठ दिखाई देते हैं फिर रुद्रमहादेवमें अभिन्नता है यह बात निश्चय है रुद्रीमें.

"नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवेनमः बाहुभ्यामुततेनमः" इत्यादि ६६ मंत्रअथर्ववेदे ११ काण्ड २ प्रपाठकमें रुद्रस्तुति है.

भवाशर्वौ मृडतं माभियातं भूतपती नमो पशुपती वाम्।
प्रणिहितामायसाविस्राष्टं मानोहिंसिष्टं द्विपदोमाचतुष्पदः १।
नमस्ते रुद्र कृण्मः सहस्राक्षायामर्त्य २।
चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दशकृत्वापशुपते नमस्ते ९

इत्यादि ३१ मंत्र शिवस्तुतिके एक ही प्रपाठकमें विद्यमान हैं तथा अथर्व ९। ७। ७ में महादेवका नाम आता है इत्यादि अनेक मंत्र हैं। इनके संक्षेपसे यह अर्थ हैं हे रुद्र! आपके मन्यु वाण और भुजाओंको नमस्कार है १ भव शर्व मृड (सुखकारी) भवपति पशुपति आपको प्रणाम है आप हमारे द्विपद चतुष्पदको न मारें १ हे सहस्रलोचन! हे अमर्त्य! (अविनाशी) आपको प्रणाम है, ३ चारों ओरसे आठों दिशाओंमें भवको और दशों अंगुली जोडकर पशुपतिको प्रणाम करते हैं फिर 'यजुर्वेदमें' त्र्यम्बकं यजामहे; यह मृत्युंजय महादेवका मंत्र प्रसिद्ध ही है तैत्तिरीयारण्यकमें अनु० १८।

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये ऽम्बिकापतयउमापतये पशुपतये नमो नमः ॥ १८ ॥

इसमें अम्बिकापति उमापति प्रसिद्धही है.

वेदोंमें सूर्यप्रसंग।

विष्णु और रुद्रकी उपासना जिस प्रकार सनातनी है.सूर्य वा आदित्यकी उपासनाभी उसी प्रकार प्राचीन है.चारों संहिताओंमें स्थान स्थानपर आदित्यकी स्तुति दिखाई देती है इससे इसके संबन्धमें विशेष आलोचनाकी आवश्यकता नहीं। यजुर्वेद अ० ४० मं०।

योऽसावादित्येपुरुषः सोऽसावहम्। यजु ४०। १७ और हिरण्ययेनसविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्। यजु०३३। १७ जो यह आदित्यमें पुरुष है सो मैं हूं और सविता देवता सुवर्णमय रथपर स्थित हुए गमन करते हैं इत्यादि अनेक मंत्र हैं। चित्रं देवानाम्०उदुत्यं जातवेदसमित्यादि मंत्र हैं जो संध्यामें सूर्य उपस्थानमें आते हैं। यजु०७।४१।४२।.

वेदमें शक्तिका प्रसंग।

जो शिवा दुर्गा नाम श्रवण करते ही आधुनिक देवता समझे जाते हैं. उनको जानना चाहिये कि यह दुर्गा वा शक्तिकी उपासनाभी वैदिक है वाजसनेयिसंहिता "अम्बिका" तलवकार उपनिषद्में उ० ११—१२। ४—१—२ब्रह्मविद्या स्वरूपिणी उमा हैमवती आदि पद आये हैं तैत्तिरीयारण्यक प्रपाठक १० कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि ॥ तन्नोदुर्गिः प्रचोदयात्। यह दुर्गा गायत्री विद्यमान है। अथर्ववेदमें का० ४ अ० ७ अनु०,प्र० ३०।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुतविश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणोभाविभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा १
अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषेशरवे हन्तवाउ.। अहंजनाय-

समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आविवेश २ यं कामयेतन्तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तं ऋषिं सुमेधम् ॥

इत्यादि आठ मंत्र हैं अर्थ यह कि आद्या शक्ति कहती है मैंही रुद्र वसु आदित्य मरुत् विश्वेदेवा मित्रावरुण इन्द्र अग्नि दोनों अश्विनीकुमारोंको पोषण करती हूं १ । मैं रुद्रके निमित्त धनुका विस्तार करती हूं ब्रह्मद्वेषी पर बाणप्रहार करती हूं, मैंही जनोंको समद करती और मैं हीं द्यावापृथिवीमें प्रविष्ट हूं २ । जो कामना करता है मैं उसको उग्र करती हूं उसको ब्रह्मा बुद्धिमान् ऋषि करती हूं.

इसी प्रकार ऋग्वेदमें लक्ष्मीसूक्त विद्यमान है.

वेदमें गणेशप्रसंग ।

यजुर्वेदमें गणानां त्वा गणपतिᳬहवामहे २३।१९ ऋग्वेद २।६।२९ में गणानां त्वा गणपतिम् । और तैत्तिरीयारण्यक अनु० १० में तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् । यह गणेश गायत्री विद्यमान है इस प्रकार वेदोंमें पंचदेव उपासना पाई जाती है पुराणोंमें उपासनाके भेदोंका विस्तार इसही देवताओंको देखकर किया है और इन्हीं देवताओंके विग्रह भेदसे एक पुराण इनकी भक्ति प्रगट करनेमें अतिशय यत्नवान् है ।

वेद और पुराणमें देवत्व ।

वैदिक ग्रंथोंमें जिस बातकी सूचना मात्र है पुराणोंमें उसका विस्तार और परिणति दिखाई देती है उपाख्यानोंकी इस प्रकार विस्तृति और परिणति देखकर अनेक जन पुराणोंको आधुनिक कहते हैं वह ऐसा विश्वास करते हैं कि वैदिक ग्रंथोंमें देवत्वका जिस प्रकार आभास है पुराणोंमें उसीने भली भाँति विस्तृत होकर बहुत स्थान लाभ किया है यहाँ तक कि पूर्वतन देवताविशेषोंके अनेकानेक उपाख्यान पीछे रूपान्तरित और परिवर्द्धित करके पौराणिक विष्णुकी महिमा प्रकाशके उद्देश्यसे नियोजित

हुए हैं यह हिन्दूशास्त्रके अनेक ग्रंथोंमें प्रत्यक्ष पाया जाता है भक्तजनोंने दूसरे शोभायमान अलंकार अपहरण करके अपने २ इष्टदेवके निमित्त अभीष्ट शय्या बनाई है इस प्रकारसे पुराणोंमें उन गाथाओंने नवीन रूप धारण किया है और विस्तार पाया है ।

हम उनके इस कथनका सर्वथा अनुमोदन नहीं करते कारण कि हम वैदिक ग्रंथोंमें इस परिवर्द्धन और परिवर्तनके अनेक प्रमाण पाते थे उनमें एकही प्रमाणसे ठीक होजायगा ।

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम् । समूढमस्यपा᳚सुरे ऋ० १ ।२२। १७। त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् १ । २२ । १८ ।

अर्थात् विष्णुने इस जगत्में तीन पद निक्षेप किये संपूर्ण जगत् उनके धूरियुक्त पदद्वारा व्याप्त होरहा है । दुर्धर्ष और समस्तजगत्के रक्षाकारी विष्णुने धर्मकी रक्षाके लिये पृथिवी आदिस्थानोंमें तीन पद निक्षेप किये हैं निरुक्तकारके इन दोनों ऋचाओंकी सूर्यकीर्तिरूपककी व्याख्या करने पर भी शतपथमें इस प्रकार इसका स्पष्ट उपाख्यान वर्णित है ।

देवाश्च वा असुराश्च । उभये प्राजापत्याः पस्पृधिरे ततो देवा अनुव्यामिवासुरथहासुरा मेनिरे अस्माकमेवेदं खलु भुवनमिति १ ।

तेहोचुः हन्तेमां पृथिवीं विभजामहै तां विभज्योपजीवामेति तामौक्ष्णैश्चर्मभिः पश्चात्प्राञ्चो विभजमाना अभीयुः२।

तद्वै देवाः शुश्रुवुः विभजन्ते हवाऽइमामसुराः पृथिवीं प्रेतनदेष्यामो यत्रेमामसुरा विभजन्ते के ततः श्याम यदस्यैनभजमहीति ते यज्ञमेव विष्णुं पुरस्कृत्येयुः ३ ।

त होचुः अनु नोऽस्यां पृथिव्यामाभजतास्त्वेव नोऽप्यस्यां भाग इति ते हासुरा असूयन्त इवोचुर्यावदेवैष विष्णुरभिशेते तावद्वो दद्म इति ४ ।

वामनो ह विष्णुराम तद्देमा न जिहीडिरे, महद्वै नोऽदुर्ये नो यज्ञसम्मितमदुरिति ५ ।
ते प्राञ्च विष्णुं निपाद्य छन्दोभिरभितः पर्यगृह्णन् गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामीति दक्षिणतस्त्रैष्टुभेनत्वा छंदसा परिगृह्णामीति पश्चाज्जागतेनत्वा छन्दसा परिगृह्णामीत्युत्तरतः६ तं छन्दोभिरभितः परिगृह्य अग्निं पुरस्तात् समाधाय तेनार्चन्त अभ्यन्तश्चेरुस्तेनेमा सर्वां पृथिवी समविन्दन्त० शं० १।२।५-७।

भाषार्थ–देवता और असुर दोनोंही प्रजापतिकी सन्तान हैं ये दोनों परस्पर विवाद करने लगे उनमें तीक्ष्ण स्वभाववाले असुरोंसे देवता परास्त होकर असुरोंके अधीन हुए, जब असुरोंने जाना कि सत्त्वगुणके अंशी-देवता हमसे डरते हैं तब निर्भय हो उन्होंने यह बात मानली कि यह सब जगत् हमारा है ॥ १ ॥ तब उन असुरोंने कहा कि हम इस पृथ्वीके हिस्से बांटकर उसके द्वारा आजीविका निर्वाह करैं तब उन्होंने वृषचर्मकी बहुत बारीक तांत बनाय पश्चिमसे पूर्वतक पृथिवीको नाप और विभागकरके अपनी करने लगे ॥ ३ ॥ जब देवताओंने यह बात सुनी कि असुर इस पृथ्वीका विभाग करते हैं तब इंद्रादि देवता बोले जहां असुर विभाग कर रहे हैं वहां चलो यदि हमको उसका अंश नहीं मिलेगा तो हमारा क्या होगा ? तब देवता यज्ञरूप विष्णुको आगे करके वहां गये और बोले हमारे पीछे इस पृथ्वीका विभाग मत करो कारण कि हमारा भी इसमें भाग होना चाहिये। देवताओंके यह वचन सुनकर वे सम्पूर्ण असुर खुनसाकर बोले अभी शीघ्रता न करो, कि जबतक विष्णुजी सोवें तबतक हम सम्पूर्ण भूमि तुमको देदेंगे अर्थात् जितने स्थानमें विष्णु व्याप्तकर रहसकते हैं उतनी पृथिवी तुमको देंगे ॥ ४ ॥ विष्णुजीही वामन थे देवताओंने यह बात स्वीकार नहीं की परस्पर कहने लगे, असुरोंने हमको

यज्ञपरिमित स्थान दिया है सो ठीकही दिया है ॥ ५ ॥ फिर उन्होंने विष्णुको पूर्वदिशामें स्थापन करके छन्दोंसे परिवृत किया और कहा तुमको दक्षिण दिशामें गायत्रीछन्दसे पश्चिमदिशामें त्रिष्टुप्छन्दसे उत्तरदिशामें जगती छन्दोंसे परिवृत करते हैं ॥६॥ इस प्रकार उनको चारो दिशाओंमें छन्दसे परिवेष्टित करके अग्निको पूर्वदिशामें प्रतिष्ठित किया और पूजा और काम करते चलने लगे फिर विष्णुके द्वारा समस्तभुवन लाभ किया । ७ श० १ । २ । ५-७ ।

इस बातको प्रायः सब स्वीकार करते हैं कि पुराणोंमें अधिकांश उपाख्यान रूपक है ऊपर जो वैदिक प्रसंग उद्धृत हुआ है वामनपुराणमें यही उपाख्यान त्रिविक्रम नामक वामनावतारके प्रसंगमें विस्तृतभावसे वर्णित हुआ है वामनपुराणमें जाना जाता है कि भगवान् विष्णुने एकसे अधिकवार वामनरूप धारण किया था । त्रिविक्रम नामक वामनावतारमें उन्होंने धुन्धुनामक महाअसुरको वंचित कर तीन पादसे समस्त भुवनोंपर अधिकार किया था, विस्तारसहित किसी आख्यायिकाको वर्णन करना वेदका उद्देश्य नहीं है । वेदमें जो कथा अत्यन्त संक्षेपसे किसी विशेष उद्देश्यमें वर्णित हुई है पुराणमें वही विस्तृत आख्यायिकारूपसे वर्णित हुई है । पौराणिक कविवरद्वारा साधारणमनुष्योंको कौतूहलके साथ हरिभक्ति उत्पन्न करानेके निमित्त थोड़ा विषय बृहद्आख्यायिकामें परिणत होना विचित्र नहीं है और उसमें जो अनेक अवान्तर कथा आवेगी यह भी कुछ असंभव नहीं है,वेदव्यासके द्वारा वेदविभाग और पुराणसंकलित होनेसे पहलेभी अनेक उपाख्यान ऋषियोंमें मौखिक चले आते थे पुराणोंका भी मूल वेदमें दिखाई देता है, राजा पृथुका पृथिवीदुहन अथर्ववेदके कां० ८ सू० प्र० ३ । ४ । ५ में स्पष्टरूपसे विद्यमान है वेद उपाख्यान मूलक ग्रंथ नहीं है, हां उसके स्थलविशेषमें उदाहरणस्वरूप उपाख्यान वर्णित हुए हैं किन्तु पुराणोंमें यह सब उपाख्यान एकत्र समावेश हुए हैं इसीसे पुराणोंमें उपाख्यानकी बाहुल्यता और विस्तार दिखाई

देता है वेदके संक्षिप्तप्रसंगने पुराणोंमें विपुलकाया धारण करके एक प्रकार स्वतंत्ररूप धारण किया है इतना वेद और पुराणमें वैलक्षण्य देखा जाता है और इसी कारण पुराणोंका प्रमाण कभी त्यागा नहीं जाता, केवल इतनाही अंश पुराणोंमें नहीं है। उनमें कर्मउपासना और ज्ञानकाण्डभी वेदानुकूल बहुत स्पष्टताके साथ लिखा गया है जिसमें चातुर्वर्ण्यका उपकार होता है और धर्मके सदुपदेश प्राप्त होते हैं.

जो पाश्चात्यपंडित कहते हैं कि सौ कीर्ति और यशमहिमा प्रतिपादक वैदिक उपाख्यानसे वैकुण्ठवासी विष्णुका बलि छलना और वामनावतार विषयक अद्भुत उपाख्यानकी सृष्टि हुई है उनको यह जानना चाहिये कि यह आख्यान निरी कल्पना नहीं है ऐसा हुआ भी है निरे रूपक नहीं हैं। वेदके तीन प्रकारके कार्य नित्यासिद्ध हैं; आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक निरुक्तने अधिभौतिक और शतपथमें आधिदैविक उपाख्यान वर्णन किया है इससे कोई नवीनकल्पना नहीं कही जाती,विभिन्न उपासनाके विभिन्न पुराण जब कि यह बात सिद्ध होचुकी है कि सनातनसे जब अनेक उपासक भिन्न भिन्न देवताओंके भक्त हैं और वह एक ब्रह्मकेही रूपान्तर हैं प्रायः यह देखा जाता है कि हम जिससे प्राणके समान हित करते हैं उससे सबही इसी प्रकार हित करैं यह किसकी इच्छा नहीं है जिस ऋषिने जिस देवताकी आराधनासे अभीष्ट लाभ किया है वह जो उसकी भक्ति करेगा प्राणके समान उसका हित करेगा यह स्वभावसिद्ध है, दूसरेभी उसके इष्टदेवकी श्रद्धाभक्ति करैं, अपनी समान देखैं यह भक्तमात्रकेही हृदयकी अभिलाषा है, इस प्रकार भक्ति वा प्रेमसे एक ऋषि वा उसके अनुवर्ती शिष्य सम्प्रदायसे एक २ देवताकी उपासनाका प्रचार दृढ किया गया है वह उस उस देवताकी उपासनाके फलप्रतिपादक उपाख्यान एकही पुराणमें संकलित कर रखदिये हैं कर्म और ज्ञानके साथ सबका अभद रहता है, जैसे शिवमहिमाके शिवपुराणमें विष्णुकी महिमाके विष्णुपुराणमें

देवीकी महिमाके देवीभागवतमें इत्यादि वेद सर्व साधारणकी सम्पत्ति नहीं है ऋत्विक् होता उद्गाता इत्यादि विभिन्न याज्ञिकगणोंकी उपजीव्य सम्पत्ति हैं, किन्तु इतिहास और पुराण साधारण नरनारियोंकी सम्पत्ति है प्राचीन आख्यान उपाख्यानादि वर्णनके बहानेसे नानाविधि उपदेश देने और परमेश्वरमें प्रीति उत्पन्न करनेके निमित्त पुराणोंकी सृष्टि है ब्रह्माण्डपुराण तथा मत्स्यादिमें लिखा है,

यो विद्याच्चतुरो वेदान् साङ्गोपनिषदो द्विजः ॥
न चेत्पुराणं संविद्यान्नैव स स्याद्विचक्षणः ॥ १ ॥
इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत् ॥
बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति ॥ २ ॥
यस्मात्पुरा ह्यनक्तीदं पुराणं तेन तत्स्मृतम् ॥
निरुक्तमस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥

ब्रह्माण्डपुराण प्रक्रियापाद १ अध्याय ।

जिस ब्राह्मणने अंगऔर उपनिषद् सहितभी चार वेद अध्ययन करके कभी पुराण अध्ययन नहीं किये वह पंडित नहीं होसकता कारण कि, इतिहास और पुराणोंमेंही वेद उपबृंहित हैं अर्थात् इतिहास और पुराणोंमें ही अर्थसहित वेदका विस्तार किया है अधिक क्या पुराणादि ज्ञानविहीन अल्पज्ञ पुरुषसेही वेद भय करता है कारण कि ऐसाही पुरुष वेदका अपमान करता है यह अत्यंत प्राचीन और वेदका निरुक्तस्वरूप होनेसे इसका नाम पुराण हुआ है जो इसको जानते हैं वह सब पापोंसे छूट जाते हैं,

उपासकोंने अपने २ इष्टदेवकी पूजा और माहात्म्य वृद्धिके उद्देश्यसे वेदसंबन्धी तथा दूसरे प्राचीन उपाख्यानोंको जो अपने इष्टदेवपर आरोपकरके प्रचार किया है इसी कारण प्राचीन आख्यान सब पुराणोंमें एकसे नहीं पाये जाते ।

जो जिस देवताके भक्त हैं वह अपने देवताके माहात्म्यप्रकाशक पुराणका विशेष आदर करते हैं, वलिद्वीपके ब्राह्मण विशेषकर शैव हैं वह शिवमाहात्म्यप्रकाशक ब्रह्माण्डपुराणको अति गुह्यशास्त्र जानकर उसकी रक्षा करते हैं। वह ब्राह्मणेतरोंको यह पुराण नहीं दिखाते, वह दूसरे पुराणकी बातही नहीं करते इसहीको मुख्य एक पुराण मानते हैं पूर्वकालमें कुछ ऐसा नियम था कि लोग अपनीही उपासना और संप्रदायके ग्रंथ देखा करते थे इससे दूसरी उपासनासे उनका कुछ प्रयोजन न था और इसी कारण वे इसको सर्वोत्कृष्ट समझते थे, भिन्न भिन्न उपासकोंके सम्प्रदायकी जो वस्तु हैं भविष्यपुराणमें उसका कुछ आभास पाया जाताहै. यथा–

> जयोपजीवो यो विप्रः स महागुरुरुच्यते।
> विष्णुधर्मादित्यधर्माः शिवधर्माश्च भारत॥
> कार्ष्ण्यं वेदं पञ्चमं तु यन्महाभारतं स्मृतम्।
> सौराश्च धर्मा राजेन्द्र नारदोक्ता महीपते॥
> जयेति नाम एतेषां प्रवदन्ति मनीषिणः॥ भविष्य अ०–२।

जय जिसकी उपजीविका है वह ब्राह्मण महागुरु कहाजाता है हे भारत ! अष्टादश पुराण रामचरित विष्णुधर्म आदित्यधर्म शिवधर्म वा पंचमवेद स्वरूप महाभारत और नारद कथित और गणोंका धर्म यह भविष्यपुराणमें कीर्तित हुआ है, बुद्धिमान इतने ग्रंथोंका जयनामसे निर्देश करते हैं.

इस प्रसंगसे यह भलीभांति विदित होता है उपासकोंके भेदसे पुराणभी भिन्न २ देवताओंकी भक्तिके पोषक हैं। स्कन्दपुराणके केदारखण्डमें स्पष्ट लिखा है कि,

> अष्टादशपुराणेषु दशभिर्गीयते शिवः।
> चतुर्भिर्भगवान् ब्रह्मा द्वाभ्यां देवी तथा हरिः अ० १।

अठारहपुराणोंमें दशमें शिव ४ चारमें भगवान् ब्रह्मा दोमें देवी और दोमें हरिके गुण कथन किये गये हैं.

इस सम्बन्धमें स्कन्दपुराणके शिवरहस्य खण्डान्तर्गत सम्भवकाण्डमें लिख है.

तत्र शैवानि शैवं च भविष्यं च द्विजोत्तमाः ।
मार्कण्डेयं तथा लैङ्गं वाराहं स्कान्दमेवच ॥
मात्स्यमन्यत्तथा कौर्मं वामनं च मुनीश्वराः ।
ब्रह्माण्डं च दशेमानि त्रीणि लक्षानि संख्यया ॥
ग्रन्थानां महिमा सर्वैः शिवस्यैव प्रकाश्यते ।
असाधारणया मूर्त्या नाम्ना साधारणो न च ॥
वदन्ति शिवमेतानि शिवस्तेषु प्रकाश्यते ।
विष्णोर्हि वैष्णवं तच्च तथा भागवतं तथा ॥
नारदीयं पुराणं च गारुडं वैष्णवं विदुः ।
ब्राह्मं पाद्मं ब्रह्मणो द्वे अग्नेराग्नेयमेककम् ॥
सवितुर्ब्रह्मवैवर्तमेवमष्टादश स्मृतम् ।
चत्वारि वैष्णवानीश विष्णोः साम्यपराणि वै ॥
ब्रह्मादिभ्योऽधिकं विष्णुं प्रवदन्ति जगत्पतिम् ।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां साम्यं ब्राह्मे पुराणके ॥
अन्येषामधिकं देवं ब्रह्माणं जगतां पतिम् ।
प्रवदन्ति दिनाधीशं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥
सम्भवकाण्ड २ । ३०–३८ ।

शिव, भविष्य, मार्कण्डेय, लिंग, वाराह, स्कन्द, मत्स्य, कूर्म, वामन और ब्रह्माण्ड यह दशपुराण शैव हैं इन दशोंकी श्लोकसंख्या तीन लाख है इन सभी ग्रंथोंमें शिवकी महिमा प्रकाशित हुई है. विष्णुपुराण, भागवत, नारदपुराण, गरुडपुराण यह चार पुराण वैष्णव हैं इस कारण यह विष्णुकी महिमा कहते हैं ब्राह्म और पाद्म यह दो पुराण

ब्रह्माकी महिमा कहते हैं केवल एक अग्निपुराण अग्निकी और ब्रह्मवैवर्तपुराण सविताकी महिमाका प्रकाश करनेवाला है इस प्रकार यह अठारह पुराण हैं चार वैष्णवपुराणोंमें महादेव और विष्णुकी साम्यता कही है, इससे विदित है कि ब्रह्मादिकी अपेक्षा जगत्पति विष्णुभगवान्‌को अधिक माना है ब्रह्मपुराणमें ब्रह्मा विष्णु और शिव इन तीनोंका एक साथ वर्णन होनेसे सबकी अपेक्षा ब्रह्माजीको श्रेष्ठ कहा है और सूर्य भगवानको ब्रह्माविष्णुशिवात्मक कहा है.

भिन्न २ पुराणोंमें भिन्न २ संप्रदायोंकी सामग्री होनेपरभी वैष्णव, शैव शाक्त पुराणोंमें अठारह पुराणोंके पाठश्रवण करनेका फल वर्णन हुआ है यथा.

अष्टादशपुराणानां नामधेयानि यः पठेत् ।
त्रिसंध्यं जपते नित्यं सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥ १ ॥ मार्कण्डे०।
ये त्वेतानि समस्तानि पुराणानि च जानते ॥
भारतं च महाबाहो ते सर्वज्ञा मता नृणाम् ॥२॥ भविष्य०पु०अ०२।

अठारह पुराणोंके जो नाम पढते हैं और तीनों संध्याओंमें जो नित्य जप करते हैं वह अश्वमेधके फलको पाते हैं। १। हे महाबाहो ! जो इन सम्पूर्ण पुराण और महाभारतको जानते हैं वह सर्वज्ञ हैं । २ ।

जो कुछभी हो एक पुराणमें दूसरेकी प्रशंसा होनेपरभी प्रत्येक पुराणमें जिस किसी उद्देश्यकी रचना हुई है उसमें किसी विशेष सांप्रदायिकभावका वर्णन हुआ है इसमें कुछ सन्देह नहीं इसी कारण शिवपुराणमें शिवजीको ब्रह्मा और विष्णुका स्रष्टा, विष्णुपुराणमें विष्णुको ब्रह्मा और शिवका निर्माता देवीभागवतमें भगवतीको ब्रह्मा विष्णु और शिवकी प्रसवकारिणी, आर सूर्यपुराणमें सूर्यकोही सबका सविता कहा है । यथा लिंगपुराण १७ अ० श्लो० १–३ ।

अथोवाच महादेवः प्रीतोऽहं सुरसत्तमौ ।
पश्यतं मां महादेवं भयं सर्वं विमुञ्चतम् ॥

युवां प्रसूतौ गात्राभ्यां मम पूर्वं महाबलौ ।
अयं मे दक्षिणे पार्श्वे ब्रह्मा लोकपितामहः ॥
वामे पार्श्वे च मे विष्णुर्विश्वात्मा हृदयोद्भवः ॥

तब महादेवजी बोले हे दोनों देवताओ ! मैं तुमसे प्रसन्न हुआ, मैं महादेव हूं तुम निर्भय होकर मेरा दर्शन करो तुम महाबलवान् दोनों मेरे शरीरसे उत्पन्न हुए हो यह पितामह ब्रह्माजी मेरे दक्षिण पार्श्वसे और जगत् के आत्मा स्वरूप हृदयोद्भव विष्णु मेरे वामपार्श्वसे प्रगट हुए हैं और भी—

वत्स वत्स हरे विष्णो पालयेस्तच्चराचरम् । लिंगपु० १७।११।

हे वत्स विष्णु ! तुम इस चर अचरकी पालना करो । अब विष्णुकी अधिकाईमें भागवतमें लिखा है.

सृजामि तन्नियुक्तोऽहं हरो हरति तद्वशः ॥ २ । ६ । ३० ।

मैं ब्रह्माही विष्णुद्वारा नियुक्त होकर सृष्टि करता हूं और महादेव उनके वशीभूत होकर संहार करते हैं अब आगे देवीमाहात्म्यमें मार्कण्डेय पुराणमें लिखा है,

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ दुर्गा अ० ।

हे देवि ! तुम मुझ ब्रह्मा विष्णु और ईशके शरीर प्रगट करनेवाली हो इस कारण तुम्हारी स्तुति करनेमें कौन समर्थ है । भविष्यपुराणमें लिखा है—

भूतग्रामस्य सर्वस्य सर्वहेतुर्दिवाकरः ।
अस्येच्छया जगत्सर्वमुत्पन्नं सचराचरम् ॥ भवि० अ० ४७ ।

इस सम्पूर्ण भूतका कारण सूर्य है, इन्हींकी इच्छासे चराचर जगत् उत्पन्न हुआ है । इत्यादि वचनोंका आशय यह है कि नाममात्रमें भेद है केवल भक्तोंकी उपासना दृढ करनेके निमित्तही अपने इष्टदेवको सर्वोत्तम प्रतिपादन किया है त्रिगुणोंके परस्पर संपर्कसे १८ भेद होते हैं उनकी

वैसीही प्रकृति मनुष्योंके अन्तःकरणमें प्रभाव डालती है तो वह वैसेही देवताके आश्रयकी इच्छा करते हैं इस लिये अठारह पुराण निर्माण किये गये हैं.

यदि कहीं पुराणोंमें स्वामी शंकराचार्यके परवर्तीकालकी कथा पाई या आधुनिक प्रसंग पाये जांय, जो पुराण कर्ताके समयमें न हों यदि वह भविष्य रूपसे न हों तो उसके प्रक्षिप्त होनेमें सन्देह नहीं है कारण कि इस समय एक तो पुराण पूर्णस्थितिमें नहीं मिलते, दूसरे किसी २ स्थलमें सम्प्रदायके पक्षपातियोंने अनुचित मेल कर निष्पक्षपात महात्माओंकी बुद्धियोंमें पुराणोंके गौरवमें बडा विघ्न उपस्थित करदिया अस्तु। उन प्रक्षिप्त चर्चाओंको छोडकर इतिवृत्त निर्णयमें अब भी पुराण बडे आदरकी सामग्री है.

अष्टादश पुराणोंका मुख्य उद्देश्य ।

ब्रह्मा विष्णु शिव इस त्रिमूर्तिकी उपासनाका प्रचार विशेषतः शिव विष्णु और उनकी शक्तियोंकी महिमाका संकीर्त्तन और उनकी पूजाका प्रचार यह वर्तमान पुराणसमूहका प्रधान उद्देश्य है। पुराणोंके लक्षण मत्स्य और नारदीय पुराणमें वर्णन किये हैं जो प्रत्येक पुराणकी आलोचनाके प्रसंगमें उस उस पुराणका विशेपत्व, ऐतिहासिकता और सम्प्रदायिकता निर्णीत होगी कथाके मिससे वेद वेदान्तके कर्म ज्ञान और उपासनाकाण्डको मनुष्योंके हृदयंगम करके चारों वर्णोंको सुमार्गपर चलाकर मोक्षका भागी बनाना पुराणोंका मुख्य लक्ष्य है.

पुराणोंमें विरोध ।

यह कहाजाता है कि पुराणोंमें विरोध है पर वास्तवमें वह विरोध नहीं एकही जगदीश्वरके बहुत विग्रह हैं "नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये" और "सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधिभूम्याम्" इत्यादि श्रुति स्मृति प्रसिद्ध एकही परमात्माके अनेक रूपसे चरित्र वर्णित हैं वह वास्तवमें एकही हैं 'एको देवः

सर्वभूतेषु गूढः ' [श्वेताश्वतर] तथा 'इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्य स सुपर्णो गरुत्मान् । एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः । ऋग्वेद मं० । १ । १२२ सं० २६४ मं ४६ ' उस एककेही अनेक नाम हैं शब्दभेदमात्र है, वस्तु भेद नहीं और–

क्वचित्क्वचित्पुराणेषु विरोधो यदि लभ्यते ।
कल्पभेदादिभिस्तत्र व्यवस्था सद्भिरिष्यते ॥

जहां कहीं कथाका भेद पडै वहां कल्पभेदसे व्यवस्था लगाई जाती है निन्दा, निन्दा करनेको प्रवृत्त नहीं हुई है किन्तु स्तुतियोग्यकी स्तुति करनेको प्रवृत्त हुई है । उपासकभेदसे वही ईश्वर शिव ब्रह्मा विष्णु नामवाला वैसेही शक्ति और वैसेही लोकवाला निरूपण कियागया है कारण कि बहुत ईश्वर नहीं होसकते और न यह बात वेदशास्त्रसम्मत है जो भेद मानते हैं वे विचारवान् नहीं हैं.

ब्रह्माणं केशवं रुद्रं भेदभावेन मोहिताः ।
पश्यन्त्येकं न जानन्ति पाखण्डोपहता जनाः ॥

भेदभावसे मोहित और पाखण्डसे उपहत हुए मनुष्य ब्रह्मा, विष्णु, महादेवको पृथक् २ जानते हैं एक नहीं जानते वास्तवमें एकही है सबही पुराणोंका प्रमाण होगा । एकका हो एकका नहीं सो नहीं, कारण कि इनके संकलन कर्ता भगवान् वेदव्यास कहे जाते हैं इस लिये पुराणोंमें पंच देव तथा सभी सम्प्रदायोंकी उत्कृष्टता दिखाई देती है यह बात नहीं कि एक ही अपनेको उत्कृष्ट और दूसरेको निकृष्ट कहा हो ।

अस्तु । अब हम क्रमसे अठारहों पुराणोंका विवरण अध्याय कथा और प्रत्येक अध्यायके विषयका वर्णन करते हैं जिससे पाठकोंको भली प्रकार विदित होजायगा कि प्रत्येक पुराणमें कितने खण्ड और अध्याय हैं और प्रत्येक अध्यायमें क्या २ कथा है.

भिन्न २ पुराणोंके मतसे १८ पुराणोंका क्रम और श्लोक संख्या.

	विष्णु पुराण मते	शिवपु. रेवा-माहा० मते	देवी भागवत मते	श्रीमद्भागवतमते	नारदीय मते	मार्कंडेयमते	ब्रह्मवैवर्तमते	लिंग पुराण मते	वाराह मते	कौर्म मते	मात्स्य-मते	पाद्म-मते
१	ब्राह्म	ब्राह्म १००००	मात्स्य १८०००	ब्राह्म १००००	ब्राह्म १००००	ब्राह्म	ब्रह्मपु. १००००	ब्राह्म	ब्राह्म	ब्राह्म	ब्राह्म १३०००	ब्राह्म
२	पाद्म	पाद्म २५००	मार्कं. ६०००	पाद्म ५५०००	पाद्म ५५०००	पाद्म	पाद्म ५६०००	पाद्म	पाद्म	पाद्म	पाद्म ५५०००	पाद्म
३	वैष्णव	वैष्णव २३००	भविष्य १८५००	विष्णु २३०००	विष्णु २३०००	वैष्णव	वैष्णव २३०००	वैष्णव.	वैष्णव	वैष्णव	वैष्णव २३०००	वैष्णव
४	शैव	शैववायू २४००	भाग. १८०००	शैव २४०००	वायु २४०००	शैव	शैव २४०००	शैव	शैव	शैव	वायवीय २४०००	शैव
५	भागवत	भविष्य १८५००	ब्रह्म. १०७००	भागवत १८०००	भागवत १८०००	भागवत	भागवत १८०००	भागवत	भागवत	भागवत	भागवत १८०००	भागवत
६	नारदी.	मार्कण्डेय ९०००	ब्रह्मा. १२१००	नारदी. १५०००	नारदी. २५०००	नारदी.	नारदी. २५०००	भवि.	नार.	भवि.	नारदीय २५०००	नार.
७	मार्कंडे.	अग्नि १६००	ब्रह्मवै. १८०००	मार्कं. ६०००	मार्कं. ९०००	मार्कं.	मार्कं ६०००	नार.	मार्कं	नार.	मार्कं ६००००	मार्कं.
८	आग्ने.	नारदी. २५००	वामन. १००००	अग्नि. १५४००	अग्नि. १५०००	आग्नेय	अग्निपु. १५४००	मार्कं	आग्ने.	मार्कं	आग्ने १६०००	आग्नेय
९	भविष्य	भागवत १८००	वायु. १०६००	ब्रह्मवै. १८०००	भविष्य १४०००	भवि	भविष्य १४५००	आग्ने	भवि.	ब्रह्म.	भविष्य १८५००	भवि.
१०	ब्रह्मवै.	ब्रह्मवै. १८००	वैष्णव. २३०००	भविष्य. १८५००	ब्रह्मवै. १८५००	ब्रह्मवै.	ब्रह्मवै. १८०००	ब्रह्मवै.	ब्रह्म.	लिंग	ब्रह्मवै १८०००	ब्रह्म.
११	लिंग	लिंग ११००	वाराह. २४०००	लिंग ११०००	लिंग ११०००	नृसिंह	लिंग ११०००	लिंग	लिंग	वाराह	लिंग ११०००	लिंग
१२	वाराह	वाराह २८००	अग्नि १६०००	वाराह २४०००	वाराह २४०००	वाराह	वाराह २४०००	वाराह	वाराह	स्कन्द	वाराह २४०००	वाराह
१३	स्कन्द	स्कान्द ८४००	नारदी. २५०००	स्कान्द ८११००	स्कान्द ८१०००	स्कन्द	स्कान्द ८१०००	वामन	स्का.	वामन	स्कान्द ८११००	स्का.
१४	वामन	वामन १००००	पद्म. ५५०००	वामन ११०००	वामन १००००	वामन	वामन १००००	कौर्म	वामन	कौर्म	वामन १०७००	वामन
१५	कौर्म	कौर्म १३००	लिंग ११०००	कौर्म १७०००	कूर्म १७०००	कौर्म	कौर्म १७०००	मा.	कौर्म	मा.	कूर्म १८०००	कौर्म
१६	मात्स्य	मात्स्य १८००	गारुड १९०००	मात्स्य १४०००	मात्स्य १४०००	मात्स्य	मात्स्य १८०००	गारुड	मा.	गरुड	मात्स्य १४०००	मा.
१७	गारुड	गारुड १९०००	कूर्म १७०००	गारुड १९०००	गारुड १९०००	गारुड	गारुड १९०००	स्का.	गरुड	वाय.	गरुड १८०००	गारुड
१८	ब्रह्माण्ड	ब्रह्माण्ड १२२००	स्कन्द ८१०००	ब्रह्माण्ड १२०००	ब्रह्माण्ड १२०००	ब्रह्माण्ड	ब्रह्माण्ड १२०००	ब्रह्मा.	ब्रह्मा.	ब्रह्मा.	ब्रह्माण्ड	ब्रह्मा.

ब्रह्मपुराण १।

※ १ मंगलाचरण, नैमिषारण्य वर्णन, लोमहर्षणका पुराण, कथनोपक्रम सृष्टि कथनारंभ, २ स्वायंभुवमनुके साथ शतरूपाका व्याह, प्रियव्रत उत्तानपादकी उत्पत्ति, कामाख्यकन्यामें जन्म, उत्तानपादका वंश, पृथुजन्म, प्रचेता गणकी उत्पत्ति, दक्षका जन्म और दक्षकी सृष्टि, ३ देवादिकी उत्पत्ति, हर्यश्व, शबलाश्वजन्म, दक्षद्वारा साठ कन्याओंकी सृष्टि, उनकी सन्तान और मरुत्गणोंकी उत्पत्ति, ४ ब्रह्मा द्वारा देवगणका निजदेशमें अभिषेक और पृथुचरित्र, ५ मन्वन्तर कथारंभ, महाप्रलय, अल्पप्रलय, कथन, ६ सूर्यवंशकथन, छाया और संज्ञाका चारित्र, यमुनादि सूर्यकन्या गणोंका वर्णन, ७ वैवस्वतमनुवंश, कुवलयाश्वचारित्र, धुन्धुमार और उसके वंशके राजोंका वर्णन, सत्यव्रत और गालवचरित्र वर्णन, ८ सत्यव्रतका त्रिशंकुनाम होनेका कारण, हरिश्चन्द्र, सगर और भगीरथका विवरण, गंगाका भागीरथी नामकरण, ९ सोम और बुध चरित्र, १० पुरूरवाका चारित्र और वंश, गाधि चारित्र, जमदग्नि, परशुराम और विश्वामित्रोत्पत्ति कथन, ११ आयुके पांचपुत्रोंकी उत्पत्ति, राजेश्वर चारित्र, अनेनाका वंश, धन्वन्तरि जन्म, आयुर्वेद विभाग, १२ ययाति वंश, १३ पुरुवंश कार्तवीर्यार्जुनका विवरण और उसको आपवमुनिका शाप, १४ वसुदेव जन्म और उनकी स्त्रियोंके नाम, १५ ज्यामघचारित्र, बभ्रु और देवावृधकी महिमा, देवकको सप्तकुमारी लाभ, कंसजन्म कथन, १६ सत्राजित चारित्र, स्यमन्तकोपाख्यान, कृष्णका जाम्बवती और सत्यभामासे विवाह, १७ शतधन्वाका सत्राजितको मारना और अक्रूरके निकट स्यमन्तक मणि रखना, १९ भूगोल और सप्तद्वीप वर्णन, १९ भारतवर्ष वर्णन, २० प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक पुष्करद्वीप तथा लोकालोक वर्णन, २१ पातालादि सप्तलोकवर्णन,

---

※ सुभीतेके निमित्त प्रत्येक विषयके पूर्वमें अध्याय न लिखकर केवल अध्याय संख्याके अंक लिख दिये हैं।

२२ रौरवादि नरक, स्वर्ग नरक व्याख्या, २३ आकाश और पृथिवीका प्रमाण, सौरादि मण्डल और भूरादि सप्त लोकका प्रमाण, महदादिकी उत्पत्ति, २४ शिशुमारचक्र और ध्रुवसंस्थान निरूपण, २५ शरीरतीर्थ कथन, २६ कृष्ण द्वैपायन सम्वाद, २७ भरतखण्ड और उसके अन्तर्गत गिरि नदी देशादिका वर्णन, २८ औण्ड्रदेशके रहनेवाले ब्राह्मणोंकी प्रशंसा, कोणादित्य और रामेश्वर लिंगवर्णन, २९ सूर्यपूजामाहात्म्य, ३० सूर्यसे सब जगत्की उत्पत्ति कथन, द्वादशादित्य मूर्ति कथन, मित्र नामक सूर्य और नारद सम्वाद वर्णन, ३१ चैत्रादि क्रमसे द्वादशादित्यके नाम कथन, ३२ अदिति सूर्य्याराधना, अदितिका सूर्य्य दर्शन, आदितिके गर्भसे सूर्य्यका जन्म, इत्यादि सूर्य्य चारित्र वर्णन, ३३ ब्रह्मादि देवगणका सूर्यको वरदान और सूर्य्यके अष्टोत्तरशत नाम, ३४ रुद्रमहिमा, दाक्षायणी सम्वाद, पार्वतीका आख्यान, ३५ उमा मित्र सम्वाद, शिव पार्वती सम्वाद, ३६ पार्वती स्वयम्वर कथन, स्वयम्वरमें देवादिकोंका आगमन, शिव पार्वती विवाह, ३७ देवकृत महेश्वरस्तव, महेश्वरका अपने स्थानमें वास, ३८ हरनेत्रानलमें मदन दाह, रतिका शिव वरसे इष्ट देशमें गमन, पार्वतीका क्रोध शान्त करनेके निमित्त महेश्वरका नर्मसे भाषण, ३९ दक्ष यज्ञारम्भमें दधीचि दक्ष सम्वाद, उमा महेश्वर सम्वाद, वीरभद्रोत्पत्ति और उसका दक्ष यज्ञ भङ्ग, क्रुद्ध गणेशके ललाट स्वेदबिन्दुसे अग्न्युत्पत्ति उससे यज्ञ विध्वंस, शिवको यज्ञभाग दान और शिवसे दक्षको वरलाभ, दक्षकृत शिवाष्टसहस्रनाम, ४० शिवकृत ज्वर विभाग, ४१ एकाम्र क्षेत्र वर्णन, ४२ विरजा क्षेत्र और तदन्तर्गत दूसरे तीर्थ तथा पुरुषोत्तमादि तीर्थ वर्णन, ४३ अवन्तिमाहात्म्य, ४४ इन्द्रद्युम्नाख्यान, ४५ विष्णुकृत सृष्टि वर्णन, पुरुषोत्तम क्षेत्रस्थ न्यग्रोध और उसके दक्षिण पार्श्वस्थ विष्णु मूर्ति वर्णन, ४६ पुरुषोत्तम क्षेत्र, उसकी चित्रोत्पला नदी और दोनों नदियोंके तटके ग्राम और ग्रामवासी जनोंका वर्णन, ४७ इन्द्र-

द्युम्नकृत प्रसादारम्भ, यज्ञकार्य्य और प्रसाद निर्म्माण, ४८ प्रतिमा प्राप्तिकी आशासे इन्द्रद्युम्नका सर्वभोग त्याग, ४९ उनके द्वारा विष्णुस्तव, ५० चिन्तातुर राजाका स्वप्नमें भगवद्दर्शन और प्रतिमा प्राप्त्युपाय कथन, ५१ विश्वकर्म्म द्वारा मूर्तित्रयका लाना, ५२राजाको विष्णुपद लाभ, ब्रह्मकर्तृक पुरुषोत्तमान्तर्गत पञ्चतीर्थ वर्णन, ५३ मार्कण्डेयाख्यान और कल्पवट दर्शन, मार्कण्डेयको भगवद्दर्शन और उनके प्रति भगवानूका आश्वासन, ५४ भगवानूके उदरमें मार्कण्डेयका प्रवेश और उदरमें स्थित पृथिवी दर्शन, ५५ मार्कण्डेयका बाहर आना और उनके द्वारा बालमुकुन्द स्तुति, ५६ भगवानूका अन्तर्धान वर्णन, ५७ मार्कण्डेय ह्रद प्रशंसा और पञ्चतीर्थ वर्णन, ५८ नरसिंग पूजा विधि, ५९ कपाल गौतम ऋषिका मृत पुत्र बचानेके निमित्त श्वेत नृपकी प्रतिज्ञा, श्वेतमाधव स्थान प्रसङ्ग और श्वेतके प्रति विष्णुका वरदान, ६० नारायण कवच और समुद्र स्नान विधि, ६१ काय शुद्धि और पूजा विधि कथन, ६२ समुद्रस्नान माहात्म्य, ६३ पञ्चतीर्थ माहात्म्य, ६४ महाज्यैष्ठी प्रशंसा, ६५ कृष्णकी स्नानविधि और स्नानमाहात्म्य, ६६ गुण्डियात्रा माहात्म्य, ६७ प्रतियात्रा और द्वादश यात्रा फल निरूपण, ६८ विष्णुलोक वर्णन ६९. पुरुषोत्तम माहात्म्य, ७० चौबीस तीर्थ लक्षण और गौतमी माहात्म्य, ७१ गङ्गोत्पत्ति कथोपकथन, तारकासुरका प्रसङ्ग, मदन भस्म, ७२ हिमवद्वर्णन, शम्भु विवाह, गौरीके रूपदर्शनसे ब्रह्माका वीर्य्यपात,उस वीर्य्यसे बालखिल्यगणकी उत्पत्ति, शिवके निकट ब्रह्माको कमण्डलु प्राप्ति,७३ बलि और वामनावतार प्रसंग और गंगाका महेशकी जटामें गमन, ७४ गंगाका द्वैरूप्य कथन, गौतमको गोवध पाप और उस पापसे मुक्तिलाभ गौतमका कैलास गमन, ७५ गौतमकृत उमा महेश्वर स्तव, गौतमकी गंगा प्रार्थना, ७६ पञ्चदशाकृतिमें गंगाका निर्गमन और गोदावरी स्नान विधि कथन, ७७ गौतमीकी श्रेष्ठता कथन,७८ वसिष्ठको पुत्रप्राप्ति सगरका अश्वमेध, कपिल कोपसे सगरपुत्र नाश, असमञ्जसका देश-

त्याग, भगीरथका जन्म और गंगा लाना, ७९ वाराह तीर्थ वर्णन, ८० लुब्धक चारित्र, ८१ स्कन्दकी विषयासक्ति और भोगार्थ बुलाई हुई स्त्रियोंके मातृरूप दर्शनसे विषय निवृत्ति, कुमार तीर्थ कथन, ८४ केशरि वानरका दक्षिण समुद्रमें गमन, अञ्जना और आद्रिकाका पुत्र जन्म कथन और पैशाचतीर्थ कथन, ७५ क्षुधा तीर्थ उत्पत्ति कथन, ८६ विश्वधर वैश्य कथा और चक्रतीर्थोत्पत्ति कीर्त्तन, ८७ अहल्या, प्राप्तिके निमित्त गौतमकी पृथिवी प्रदक्षिणा, अहल्या और इन्द्र सम्वाद गौतमका अभिशाप, अहल्याको पूर्वरूप प्राप्ति, इंद्र तीर्थाख्यायिका, ८७ वरुण याज्ञवल्क्य सम्वाद और जन स्थान तीर्थ कीर्त्तन, ऊषा सूर्य्य समागम और दोनोंके वीर्य्यसे गंगामें अश्विनीकुमारोत्पत्ति, त्वष्टाके प्रति सूर्य्य सम्भाषण, ८९ शेषपुत्र मणिनाग द्वारा शिवस्तुति. ९० विष्णुद्वारा गरुडका दर्पचूर्ण, गरुडकी विष्णु स्तुति, गंगास्नानसे गरुडको वज्र देह-प्राप्ति और विष्णु प्राप्ति, ९१ गोवधन तीर्थाख्यायिका, ९२ धौतपाप तीर्थोत्पत्ति, ९३ विश्वामित्र वा कौशिकतीर्थस्वरूप कथन, ९४ श्वेता-ख्यान और यमको पुनर्जीवन प्राप्ति कथन, ९५ शुक्रद्वारा शिवस्तुति और शिवके निकट उनको मृतसञ्जीवनी विद्या प्राप्ति, ९६ मालव देश-विधान हेतु कथन, ९७ वारुणसे कुबेर पराभव और कुबेरकी शिव-स्तुति, ९८ अग्नि तीर्थोत्पत्ति कथन, ९९ कक्षीवानके पुत्रगणके प्रति तीन ऋण छुडानेके निमित्त दारसंग्रहमें उपदेश, उनकी उपेक्षा, उनके प्रति पितृगणकी गौतमी स्नानमें आदेश १०० वालखिल्यगणकी काश्यप प्रति पुत्रोत्पादन कथा, सुपर्णका जन्म; ऋषि सत्रमें कद्रु और सुपर्णका गमन. उसके प्रति 'नदी होजा' कहकर ऋषिगणका अभिशाप, १०१ पुरूरवा उर्वशी सम्वाद, सरस्वतीके प्रति ब्रह्माका अभिशाप और स्त्री स्वभाव वर्णन, १०२ मृग रूपधारी ब्रह्माके प्रति मृगव्याधरूपधारी शिवकी उक्ति सावित्र्यादि पांचनदीका ब्रह्मसमीपमें गमन, २०३ शम्यादि तीर्थ

वर्णन, १०४ हरिश्चन्द्राख्यान वरुणप्रसादसे हरिश्चन्द्रको पुत्रप्राप्ति, उसके पुत्र रोहितके लेनेके निमित्त वरुणकी प्रार्थना, रोहितका वनमें जाना, अजीगर्त्तका पुत्र विक्रय, अजीगर्त्तके पुत्र शुनःशेपका विश्वामित्रानुग्रह लाभ और विश्वामित्रके द्वारा शुनःशेपको ज्येष्ठ पुत्रत्व कथन, १०५ गंगा संगत नद नदी वर्णन, १०६ देव दानवकी मंत्रणा, समुद्र मन्थन; अमृतोत्पत्ति, विष्णु द्वारा राहुका शिरश्छेद, राहुका अभिषेक, १०७ वृद्धा गौतम सम्वाद, गंगाके वरसे वृद्धाको यौवन प्राप्ति और वृद्धा गौतम सहवास, १०८ इलातीर्थ वर्णन और उसके प्रसंगमें इलाचरित कीर्तन, १०९ चक्रतीर्थ वर्णन और उस प्रसंगमें दक्ष यज्ञ कथन, ११० दधीचि लोपामुद्रा और दधीचि पुत्र, पिप्पलाद चरित और पिप्पलेश्वर तीर्थवर्णन, १११ नाग तीर्थकथन और उस प्रसंगमें दक्ष सोमवंशीय शूरसेनराजाका आख्यान, ११२ मातृतीर्थवर्णन, ११३ ब्रह्मतीर्थवर्णन उस प्रसंगमें ब्रह्माके पञ्चमुखविदारण और शिवका ब्रह्म शिरोधारण वृत्तान्त, ११४ अविघ्न-तीर्थवर्णन, ११५ शेषतीर्थवर्णन ११६ वडवादि तीर्थवर्णन, ११७आत्म-तीर्थवर्णन और उसके उपलक्षमें दत्ताख्यान, ११८ अश्वत्थादितीर्थकीर्तन और उसके उपलक्षमें अश्वत्थ और पिप्पल नामक राक्षसाख्यान, ११९ सोम-तीर्थवर्णन और तदुपलक्षमें गंगा द्वारा सोम और औषधीगणका विवाह वृत्तान्त, १२० धान्य तीर्थवर्णन, १२१ भरद्वाज द्वारा रेवतीके साथ कठका विवाह, १२२ पूर्णतीर्थ वर्णन उसमें धन्वन्तरि सम्वाद और बृहस्पति कृत इन्द्राभिषेक १२३ राम तीर्थवर्णन इस विषयमें रामचरित प्रसंग, १२४ पुत्र तीर्थवर्णन और उसमें परमेष्टि पुत्राख्यान, १२५ यमतीर्थ और अग्निकुततीर्थ वर्णन, १२६ तपस्तीर्थ वर्णन; १२७ देवतीर्थ वर्णन और तदनुसार आर्ष्टिषेणनृपाख्यान, १२८ तपोवनादि तीर्थ वर्णन और संक्षेपसे कार्तिकेयाख्यान, १२९ गंगाफेना संगमवर्णन और तदुपलक्षमें

इन्द्रमाहात्म्य प्रसंगमें फेननामक नमुचिवध, हिरण्यदैत्यपुत्र महाशनि वध और इन्द्रवर्णित वृषाकप्यादिका माहात्म्य, १३० आपस्तम्ब तीर्थ और उसमें आपस्तम्ब चरित कीर्तन, १३१ यमतीर्थ वर्णन और उसमें सरमा-रुयान, १३२ यक्षिणी संगम माहात्म्य और तदुपलक्षमें विश्वावसु भार्य्या-ख्यान और दुर्गातीर्थ वर्णन, १३३ शुक्रतीर्थाख्यायिका और भारद्वाज-यज्ञवर्णन, १३४ चक्रतीर्थाख्यान और उसमें वसिष्ठ प्रमुख मुनिगणोंसे यज्ञ विवरण, १३५ वाणी संगमाख्यान ज्योतिर्लिङ्ग प्रसंग, १३६ विष्णु-तीर्थवर्णन और तदुपलक्षमें मौद्गल्याख्यान, १३७ लक्ष्मीतीर्थादि षट्सह-स्रतीर्थाख्यान तदुपलक्षमें लक्ष्मी और दरिकाआख्यान, १३८ भानुतीर्थ-वर्णन, और उस प्रसंगमें शर्य्याति राजचरित, १३९ खड्गतीर्थवर्णन और तत् प्रसंगमें कवषसुत ऐलुषमुनिचरित, १४० आत्रेयतीर्थवर्णन और उस प्रसंगमें आत्रेय ऋषिका आख्यान १४१ कपिला संगमतीर्थवर्णन और तत्प्रसं-गमें कपिल मुनि और पृथुराजाका संक्षेप चरित कथन, १४२ देवस्थान नामक तीर्थ और तत्प्रसंगमें सैंहिकेय राहुपुत्र मेघहास दैत्यका चरित वर्णन १४३ सिद्धतीर्थ और तत्प्रसंगमे रावणतपः प्रभाव वर्णन, १४४ परुष्णी संगम तीर्थ और उस अत्रिऋषि और उसकी कन्या आत्रेयीका चरित-वर्णन, १४५ मार्कण्डेय तीर्थ और उस प्रसंगमें मार्कण्डेय प्रभाववर्णन, १४६ कालञ्जर तीर्थ और उस प्रसंगमें ययाति चरित, १४७ अप्सरोयुग संगम तीर्थ और उस प्रसंगमें दो अप्सराओंका विश्वामित्रका तपोभंग और विश्वा-मित्र शापसे नदीरूप प्राप्ति १४८ कोटितीर्थ और उस प्रसंगमें कण्वसुत बाह्लीक चरित, १४९ नारसिंह तीर्थ और तत्प्रसंगमें नारसिंहसे हिरण्यकशि-पुका बधाख्यान, १५० पैशाच तीर्थ और उस प्रसंगमें शुनःशेपके जन्मदाता अजीगर्तका आख्यान, १५१ उर्वशीत्यक्त पुरूरवाके प्रति वसिष्ठका उपदेश, १५२ चन्द्रकर्तृक ताराहरण और तारा उद्धार, १५३ भावतीर्थादि सप्ततीर्थ

वर्णन १५४ सहस्र कुण्डआदि तीर्थप्रसंगमें रावण वधकरके सपरिवार रामका अयोध्यामें गमन सीताका वनवास और रामाश्वमेध लवकुश वृत्तान्त, १५५ कपिलासगंमादि दशतीर्थ और उस प्रसंगमें अंगिराको आदित्यका भूमिदान वर्णन, १५६ शंखतीर्थादि अयुत (दशहजार) तीर्थ उस प्रसंगमें ब्रह्मभक्षणको आये हुए राक्षसोंका विष्णुचक्रसे हनन वर्णन, १५७किष्किन्धा तीर्थ महिमा और उस प्रसंगमें रावण वधोत्तर सीताजीके साथ रामका गौतमी प्रत्यागमनवर्णन, १५८व्यासतीर्थ और तत्प्रसंगमें आंगिरसाख्यायिका, १५९ वञ्जरासंगम और उस प्रसंगमें गरुडाख्यान वर्णन, १६०देवागम तीर्थ और उस प्रसंगमें देवासुरयुद्धवर्णम, १६१ कुशतर्पण, तीर्थ तत्प्रसंगमें विराडोत्पत्यादि वर्णन, १६२ मन्युपुरुषाख्यान. १६३ब्रह्मरूपधारी परशुनामक राक्षस और शाकल्य मुनिप्रसंग, १६४पवमान नृप और चिचिकपक्षिसम्वाद, १६५ भद्र तीर्थ और उस प्रसंगमें कन्या विवाह विषयक सूर्य्य विकार और हर्षणका यमालय गमन इत्यादि वर्णन, १६६ पतत्रितीर्थ; १६७ भानु आदि शततीर्थ, १६८और उस प्रसंगमे अभिष्टुतराजाका हयमेधाख्यान, १६९वेदनामक द्विज और शिवपूजकव्याध प्रसंग, १७०चक्षुतीर्थ और उस प्रसंगमें गौतम और कुण्डलक नामक वैश्याख्यान, १७१उर्वशीतीर्थ और उस प्रसंगमें इंद प्रमति वृत्तांत, १७२सामुद्र तीर्थ और उस प्रसंगमें गंगासागर सम्वाद, १७३ भीमेश्वरतीर्थ और उस प्रसंगमें सात प्रकारसे वहनेवाली गंगा और ऋषियज्ञमें देवरिपु विश्वरूप वृत्तांत, १७४ गंगासागर संगम सोमतीर्थ और बार्हस्पत्यादि तीर्थ वर्णन, १७५ गौतमी माहात्म्य समाप्ति प्रसंगमें गंगावतारवर्णन, १७६ अनंत वासुदेव माहात्म्य और उस प्रसंगमें देवगणके साथ रावण संग्राम और रामरावण युद्ध वर्णन, १७७ पुरुषोत्तम माहात्म्य कीर्तन, १७८कण्डुमुनिका चरित, १७९बादरायण प्रति श्रीकृष्णावतार प्रश्न, १८०कृष्णचरितारंभ, १८१अवतार प्रयोजन और कंसद्वारा देवकीका कारागार प्रसंग, १८२भग-

वान्‌की आज्ञासे देवकीका गर्भ आकर्षणपूर्वक रोहिणीके उदरमें मायाका गर्भस्थापन देवकीके उदरमें भगवत्प्रवेश देवकीके प्रति भगवद्वाक्य वसुदेवका गोकुलमें आकर पुत्रस्थापन, मायाका स्वरूप धारण पूर्वक स्वर्ग गमन और कंसकी भर्त्सना, देवगणसे माया स्तुति, १८३ कंसका बालविनाशमें दैत्योंके प्रति आदेश और वसुदेव देवकीका कारागार मोचन, १८४ वसुदेव और नन्दका आलाप, पूतनावध, शकटपातन, गर्गद्वारा बालकका नाम करण, यमलार्जुन भंग, कृष्णकी बाल्यलीला वर्णन, १८५ कालिय दमन, १८६ धेनुक वध, १८७ राम कृष्णकी बहु लीलाकीर्त्तन, प्रलम्बासुर वध, गोवर्द्ध-नाख्यायिका प्रारंभ, १८८ इन्द्रका गोकुल नाशार्थ मेघप्रेरण, भक्तोंके दुःख नाशार्थ कृष्णका गोवर्द्धन धारण, इन्द्रकी कृष्णस्तुति, इन्द्रके प्रति कृष्णकी भूभार हरणकथा, गोवर्द्धन याग समाप्ति, १८९ रासक्रीडा वर्णन और कृष्णसे अरिष्टासुरवध, १९० कंस नारद संवाद, अक्रूर प्रेरण; केशिवध वर्णन १९१ नन्द गोकुलमें अक्रूरागमन, १९२ कृष्णाक्रूर सम्वाद, मथुरामें रामकृष्णका गमन, १९३ कुब्जाके साथ कृष्णका आलाप, चाणूर मुष्टिक वध, कंसवध, वसुदेवकृत भगवत्स्तुति, १९४ देवकी वसुदेवके निकट कृष्णका आगमन, उग्रसेनका राज्याभिषेक, रामकृष्णको सान्दीपनिके निकट अस्त्रप्राप्ति और सान्दीपनिको पुत्रप्राप्ति, १९५ राम कृष्णका जरासन्धके साथ युद्ध और जरासन्धकी पराजय, १९६ कालयवनोत्पत्ति, मुचुकुन्दद्वारा कालयवन वध और मुचुकुन्दकृत भगवद्गुणन, १९७ मुचुकुन्दको भगवान्‌का वरदान, गोकु-लमें बलदेवगमन, १९८ वरुण वारुणी और यमुनाबलदेव सम्वाद, मथुरामें बलदेवकागमन, १९९ कृष्णका रुक्मिणी हरण, प्रद्युम्नोत्पत्ति, २०० शम्ब-रासुर द्वारा प्रद्युम्नहरण, शम्बरासुर वध, प्रद्युम्नका द्वारका आगमन, श्रीकृष्ण नारद सम्वाद, २०१ रुक्मिणी पुत्रगणके नाम और कृष्णकी स्त्रियोंके नाम, बलदेव द्वारा रुक्मिवध, २०२ कृष्णका प्राग्ज्योतिषपुरमें गमन और नरका-सुरवध, २०३ कृष्णादितिसम्वाद, पारिजात हरण, २०४ इन्द्रकृष्णसम्वाद,

उपानिरुद्ध विवाह कथन, चित्रलेखाका चित्रनिर्माण कौशल, २०५ बाणपुरमें अनिरुद्धको लाना, २०६ कृष्णबलदेवका युद्धार्थ आगममन, २०७ पौंड्रक वासुदेव वृत्तांत, पौंड्रक और काशिराजवध, कृष्णचक्रसे वाराणसी दाह, फिर कृष्णहस्तमें चक्रागमन, २०८ साम्बद्वारा दुर्योधनकन्या हरण, दुर्योधनादि द्वारा साम्बनिग्रह, बलदेवके साथ कौरवोंका युद्ध और बलदेवका हस्तिनापुर अधिकार, कौरवोंकी प्रार्थना, २०९ बलदेव कर्तृक द्विविदवानरवध, २१० कृष्णका द्वारकात्याग, प्रभासमें यदुवंशध्वंस, २११ कृष्णके प्रसादसे लुब्धकका स्वर्गगमन, २१२ रुक्मिणी आदिका अवसान, आभीरगणके साथ अर्जुनका युद्ध, म्लेच्छोंसे यादव स्त्रीहरण, अर्जुन विषाद और व्यासार्जुनसम्वाद, अष्टावक्रचरित कीर्तन, अर्जुनके मुखसे समस्तवृत्तांतसुननेके अनन्तर युधिष्ठिरका बान्धव सहित प्रस्थानोपक्रम, परीक्षितको राज्य देकर युधिष्ठिरादिका वनगमन, कृष्णचरित समाप्ति, २१३ बराहावतार, नृसिंहावतार, वामनावतार, दत्तात्रेयावतार, जामदग्न्यावतार, दाशरथिरामावतार, श्रीकृष्णावतार और कल्क्यवतार, २१४ नरक और यमलोकवर्णन, २१५ दक्षिणमार्गमें गमनकारी प्राणियोंका क्लेशवर्णन, चित्रगुप्तकृत पापवर्णन, पातकानुसार नरकप्राप्ति कथन, २१६ व्यासकथित धर्म्माचरण और सुगति प्राप्ति वर्णन, २१७ नानायोनिमें जन्मप्रसंग, २१८ अन्नदानसे शुभ प्राप्तिकथा, २१९ श्राद्धविधि निरूपण, २२० प्रतिपदादि श्राद्धकल्प और पिण्डदान कथन, २२१ सदाचरण और विप्रके वास करने योग्य देशसमूहकथन, सूतकविचार, २२२ वर्णधर्म्मकथन, २२३ ब्राह्मणको शूद्रत्व प्राप्ति और शूद्रादिको उत्तमगति प्राप्ति कथन, संकर जाति लक्षण, २२४ मानव धर्म्मफल और कर्म्मफलकथन, २२५ देवलोकप्राप्ति और निरयप्राप्तिकारण, २२६ वासुदेवमहिमा, मनुवंश और वासुदेव पूजा कथन, २२७ विष्णुपूजा कथन, प्रसंगमें उर्वशी मूर्ख ब्राह्मणसम्वाद,

और शकटदान कथन, २२८ कपालमोचनतीर्थ और तत्प्रसंगमें सूर्य्यादिकी आराधना, कामदेव समाख्यान और मायाप्रादुर्भाव, २२९ महाप्रलयवर्णन, और कलिगतभविष्यकथन, २३० द्वापरयुगान्त और भविष्य कथन, २३१ प्राकृतसर्ग कल्पमान और नैमित्तिकलय स्वरूप कथन, २३२प्राकृतलयस्वरूपकथन; २३३आत्यन्तिकलय,आध्यात्मिक तीन ताप, आधिभौतिकताप और आधिदैविकतापवर्णन, मुक्ति ज्ञान महिमा, २३४ योगाभ्यास फल, २३५योग और सांख्यनिरूपण, २३६ मोक्षप्राप्ति और पञ्चमहाभूतकथन, २३७ सर्व धर्म्मका विशिष्टधर्म्मनिरूपण, २३८क्षराक्षर विचारनिरूपण और चौबीस तत्त्व प्रतिपादन, २४८ अभिमानियोंके अनेक साधन कथन; २३९ सांख्यज्ञान और क्षेत्रक्षेत्रज्ञलक्षणकथन, २४१ अभेदमें सांख्ययोग कथन, २४२ जनकप्रति वसिष्ठका ब्रह्मासे महाज्ञानप्राप्ति और ज्ञानप्राप्ति परम्पराकथन, २४३ व्यास प्रशंसा ब्रह्मपुराण श्रवणफल और धर्म्म प्रशंसा.

जो कि विलसनआदि पाश्चात्य पण्डितोंने उक्त ब्रह्मपुराणको ही पांच लक्षण युक्त पुराण अथवा मत्स्यपुराणवर्णित ब्रह्मपुराण कहकर भी स्वीकार नहीं किया है। अब देखना चाहिये कि मत्स्यपुराणमें ब्राह्मका कैसा लक्षण किया है—

"ब्रह्मणाभिहितं पूर्वं यावन्मात्रं मरीचये।
ब्राह्मं त्रिदशसाहस्रं पुराणं परिकीर्त्यते॥" (५३। १२)

पूर्वकालमें ब्रह्माने मरीचिसे यह पुराण कहा था, वही यह ब्राह्म नामसे कीर्तित है। इसकी श्लोकसंख्या १३००० है.

इधर प्रचलित ब्रह्मपुराणके प्रथम अध्यायमें ही लिखा है—

"कथयामि यथापूर्वं दक्षाद्यैर्मुनिसत्तमैः।
पृष्टः प्रोवाच भगवानब्जयोनिः पितामहः॥" (१। ३३)

इस वचनके अनुसार विलसन साहबने समझा था कि, ब्रह्माने दक्षको जब यह पुराण सुनाया था तब मरीच श्रुत ब्राह्म और दक्षश्रुत ब्राह्म एक नहीं हो सकता, किन्तु अब प्रचलित ब्रह्मपुराणका (२६ । ३६) श्लोक पाठकरनेसे फिर सन्देह नहीं रहता,—

" मरीच्याद्यांस्तदा देवं प्रणिपत्य पितामहम् ।
इममर्थमृषिवराः पप्रच्छुः पितरं द्विजाः ॥ " (२६ । ३६)

उक्त श्लोकसे जाना जाता है कि, मरीचि आदिने ब्रह्माके निकट पुराणाख्यान सुना था । आगेका श्लोक देखनेसे फिर कुछ इस विषयमें सन्देह नहीं रहता—" ब्रह्मोवाच.

शृणुध्वं मुनयः सर्वे यद्वो वक्ष्यामि साम्प्रतम् ।
पुराणं वेदसंबद्धं भक्तिमुक्तिप्रदं शुभम् ॥ "

वास्तवमें प्रचलित ब्राह्मपुराणके २७ अध्यायसे शेष पर्य्यन्त ब्रह्मा वक्ता और मरीच्यादि मुनिगण श्रोता है । इस कारण मत्स्यवर्णित ब्राह्मके साथ प्रचलित ब्रह्मपुराणकी सम्पूर्ण पृथक्ता ज्ञात नहीं होती । नारदपुराणके पूर्व भागमें ब्रह्मपुराणका जो विषयानुक्रम दियागया है, उसके पाठ करनेसे प्राचीन ब्रह्मपुराण और प्रचलित ब्रह्मपुराणका सादृश्य प्राप्त होगा.

"ब्राह्मं पुराणं तत्रादौ सर्वलोकहिताय च ।
व्यासेन वेदविदुषा समाख्यातं महात्मना ॥
तद्वै सर्वपुराणाग्र्यं धर्म्मकामार्थमोक्षदम् ।
नानाख्यानेतिहासाढ्यं दशसाहस्रमुच्यते ॥
(तत्पूर्वभागे)
देवानामसुराणां च यत्रोत्पत्तिः प्रकीर्त्तिता ।

(१) पूनासे प्रकाशित ब्रह्मपुराणमें ' भृग्वाद्यास्तं ' ऐसा पाठ है. किन्तु हस्त लिखित पोथीमें उक्त पाठ नहीं देखाजाता ।

प्रजापतीनां च तथा दक्षादीनां मुनीश्वर ।
ततो लोकेश्वरस्यात्र सूर्य्यस्य परमात्मनः ॥
वंशानुकीर्तनं ब्रह्मन्महापातकनाशनम् ।
यत्रावतारः कथितः परमानन्दरूपिणः ॥
श्रीमतो रामचन्द्रस्य चतुर्व्यूहावतारिणः ।
ततश्च सोमवंशस्य कीर्त्तनं यत्र वर्णितम् ॥
कृष्णस्य जगदीशस्य चरितं कल्मषापहम् ।
द्वीपानां चैव सिन्धूनां वर्षाणां वाप्यशेषतः ॥
वर्णनं यत्र पातालस्वर्गाणां च प्रदृश्यते ।
नरकानां समाख्यानं सूर्य्यस्तुतिकथानकम् ॥
पार्वत्याश्च तथा जन्म विवाहश्च निगद्यते ।
दक्षाख्यानं ततः प्रोक्तमेकाम्रक्षेत्रवर्णनम् ॥
पूर्वभागोऽयमुदितः पुराणस्यास्य मानद ।
(तदुत्तरभागे)
अस्योत्तरविभागे तु पुरुषोत्तमवर्णनम् ॥
योगानां च समाख्यानं सांख्यानां चापि वर्णनम् ।
ब्रह्मवादसमुद्देशः पुराणस्य च शासनम् ॥
एतद्ब्रह्मपुराणं तु भागद्वयसमाचितम् ।
वर्णितं सर्वपापघ्नं सर्वसौख्यप्रदायकम् ॥" नारदपु.४र्थ.२अ.

महात्मा वेदवित् व्यास द्वारा प्रथमतः सर्वलोकके हितके निमित्त (यह) पवित्र पुराण समाख्यात हुआ है, यह सब पुराणोंसे श्रेष्ठ, धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष अनेक प्रकारके आख्यान और इतिहास युक्त तथा दशसहस्र श्लोकपूर्ण है। हे मुनीश्वर! आगे जिसमें देवासुर गण प्रजापतिगण और दक्षादिकी उत्पत्ति हुई है और पश्चात् लोकेश्वर परमात्मा सूर्य्य देवका महापातक नाशन वंशानुकीर्त्तन हुआ है। जिसमें परमानन्दरूपी चतुर्व्यू-

हावतार श्रीमान् रामचन्द्रका अवतार कहा है पश्चात् सोमवंशका कीर्त्तन और जगदीश्वर श्रीकृष्णका पापहरचारित्र वर्णित हुआ है, जिसमें सम्पूर्ण प्रकारसे समस्तद्वीप, सिन्धु, वर्ष, पाताल और स्वर्गका वर्णन पाया जाता है, तथा सम्पूर्ण नरकोंके नाम सूर्य्यकी स्तुति पार्वतीका जन्म और विवाह कहा गया है। पश्चात् दक्षका आख्यान और एकाम्रक्षेत्र वर्णित है। हे मानद ! इस पुराणका यह पूर्व भाग वर्णित हुआ। इसके उत्तर भागमें विस्तृत रूपसे तीर्थ यात्राविधान क्रममें पुरुषोत्तम वर्णना कही है। पश्चात् यम-लोक वर्णन, पितृश्राद्धविधि और वर्ण काम धर्म्म विस्तारसे कहे हैं, और विष्णु धर्म्म, युगाख्यान, प्रलय वर्णन, ब्रह्मवाद समुद्देश और पुराण शासन कथित हुआ है। यह ब्रह्मपुराण दो भागमें विभक्त, सर्वपापहर और सर्वसौख्यदायक है.

नारद पुराणमें ब्रह्मपुराणकी जो सूची दी गई है, प्रचलित ब्रह्मपुराणमें उसके किसी विषयका भी अभाव नही है, ऐसे स्थलमे वर्त्तमान आकारका ब्रह्मपुराण नारदीय पुराण सकलित होनेसे पहिले प्रचलित हुआ था यह सह-जमेंही स्वीकार किया जासकता है.

पाश्चात्य पण्डितलोग कहते है, प्रचलित ब्रह्मपुराणमें पुराणके पांच लक्षण नहीं हैं। वास्तवमें क्या यही बात है? नहीं, प्रचलित ब्रह्मपुराण मन लगा-कर आलोचना करनेसे पाँचलक्षण सम्बन्धमें फिर कोई सन्देह नहीं रहता। प्रथम चार अध्यायमें सर्ग और प्रतिसर्ग वर्णन पंचम अध्यायमें मन्वन्तर कथा उसके आगे सौसे अधिक अध्यायमें वंश और वंशानुचरित कीर्तित हुआ है.

पाश्चात्य अंग्रेज और उनके अनुयायी इस पुराणको १३ शताब्दीका सकलित कहते हैं पर यह बात बहुतही हास्यास्पद है ११शताब्दीके रचित दानसागरमें तथा उसी समयके हलायुधकृत ब्राह्मण सर्वस्वमें और हेमाद्रि परिशेष खण्डमें जो उससे कुछ समय पहलेका है ब्रह्मपुराणके श्लोक पाये जाते हैं तब उनका यह कथन कैसे प्रमाण होसक्ता है कि १३शताब्दीका

इस पुराणके १७६ अध्यायमें अनन्त वासुदेवका माहात्म्य वर्णित है उत्कलके प्रसिद्ध भुवनेश्वर क्षेत्रमें अनन्त वासुदेवका मन्दिर विद्यमान है उस देशके सामवेदिगणके पद्धतिकार अद्वितीय पण्डित भवदेवभट्टने इन पूर्वसे विद्यमान अनन्त वासुदेवका मन्दिर ११शताब्दीमें निर्माण कियाथा, ब्रह्मपुराणमें अनन्त वासुदेवकी मूर्तिकी उत्पत्ति और माहात्म्य वर्णित होने-पर मन्दिरका कुछ प्रसंग नहीं है यदि उस मन्दिर निर्माण समय माहात्म्य बनता तो मन्दिरका भी प्रसंग होता इस प्रमाणसे पाश्चात्य पंडितोंका मत असंगत प्रतीत होता है पुरुषोत्तम माहात्म्यमें जो प्रासादका वर्णन है वह वर्तमान प्रासाद नहीं है वहां गांगेय पद है वर्तमान पुरुषोत्तम मन्दिर गंगेश्वर चौडद्वारा निर्मित हुआ है चौडगंग १०७७ खृष्टाब्दमें कलिंगदेशके सिंहासनपर आरूढ थे इसके३० । ३५ वर्ष पीछे उन्होंने उत्कल आक्रमण किया तो ११०७—से १११२ तक पुरुषोत्तम प्रासाद निर्मित हुआ होगा यह चौडगंग और बल्लालसेन दोनों एकही समयके हैं बल्लाल-सेनने दानसागरमें प्रचलित ब्रह्मपुराणसे श्लोक उद्धृत किये हैं अब यह निश्चयही होगया कि वर्तमान प्रासादसे ब्रह्मपुराण बहुत प्रथमका है सेन-राज लक्ष्मणकी शिलालिपिमें भी पुरुषोत्तम क्षेत्रका उल्लेख है ईस्वी सप्तम शताब्दीमें चीनपारिव्राजक हिउएनसियाने आकर चि. लि, ति, लो चित्रोत्पल वर्त्तमान पुरीमें आकर पांच प्रासादका उच्च चूडादर्शन कियाथा यहभी कोई पुरुषोत्तम प्रासाद होगा इसमें सन्देह क्या, यह बात सिद्ध है कि देवमूर्तिक्षेत्र माहात्म्य प्राचीन समयके हैं मंदिर नित नये बनतेही रहते हैं देशीय और विदेशीय प्रायः सबही पण्डित कहते हैं कि इस समय जो विष्णु पुराण प्रचलित है वह ब्रह्म आदि सब पुराणोंकी अपेक्षाही प्राचीन है । प्रमाणको ब्रह्मपुराणका कृष्णचरित और विष्णुपुराणका कृष्णचरित दोनोंका पाठ मिलाकर देखो इसी प्रकार ब्रह्मपुराणका पुरुषोत्तममाहात्म्य और

२ हिउएनसियाके भ्रमण वृत्तान्तके अनुवादकने चि, लि, ति, लो, को चरित्र पुस्तकमें लिखा है ब्रह्मपुराणके ४६ अध्यायमें उसको चित्रोत्पल वा चित्रोत्पुर कहा है.

नारदीयमहापुराणका पुरुषोत्तममाहात्म्य, मिलाकर देखनेसे ज्ञात होगा कि ब्रह्मपुराणके श्लोकही अविकल परिवर्द्धित आकारमें विष्णु और नारद पुराणमें गृहीत हुए हैं (१) वास्तवमें यह पुराण कृष्णजीके गोलोकप-धारनेपर व्यास द्वारा निर्मित हुआ है.

---

(१) ब्रह्मपुराणके १८ अध्यायमें—

" गोपीपरिवृतो रात्रिं शरच्चन्द्रमनोरमाम् ।
मानयामास गोविन्दो रासारम्भरसोत्सुकः ॥ २१ ॥
गोप्यश्च वृन्दशः कृष्णचेष्टाभ्यायतमूर्त्तयः ।
अन्यदेशं गते कृष्णे चेरुर्वृन्दावनान्तरम् ॥ २२ ॥
(बभ्रमुस्तास्ततो गोप्यो निराशाः कृष्णदर्शने ।
कृष्णस्य चरणं रात्रौ दृष्टा वृन्दावने द्विजाः ॥ २३ ॥
एवं नानाप्रकारासु कृष्णचेष्टासु ता^ च ।

A विष्णुपुराणमें (५ । १३ अध्यायमें)

" गोपीपरिवृतो रात्रिं शरच्चन्द्रमनोरमाम् ।
मानयामास गोविन्दो रासारम्भरसोत्सुकः ॥ २३ ॥
गोप्यश्च वृन्दशः कृष्णचेष्टास्वायतमूर्त्तयः ।
अन्यदेशं गते कृष्णे चेरुर्वृन्दावनान्तरम् ॥ २४ ॥
कृष्णे निरुद्धहृदया इदमूचुः परस्परम् ।
कृष्णोऽहमत्तलळितां मजाम्यालोक्यतां गतिम् ।
अन्या ब्रवीति कृष्णस्य मम गीतिर्निशम्यताम् ॥ २५ ॥
दुष्टकालिय तिष्ठात्र कृष्णोऽहमिति चापरा ।
बाहुमास्फोट्य कृष्णस्य लीलासर्वस्वमाददे ॥ २६ ॥
अन्या ब्रवीति भो गोपा निःशंकः स्थीयतामिह ।
अलं वृष्टिभयेनात्र धृतो गोवर्धनो मया ॥ २७ ॥
धेनुकोऽयं मयाक्षिप्तो विचरन्तु यथेच्छया ।
गोपी ब्रवीति वै चान्या कृष्णलीलानुकारिणी ॥ २८ ॥
एवं नानाप्रकारासु कृष्णचेष्टासु तास्तदा ।
गोप्यो व्यग्राः समञ्चेरु रम्यं वृन्दावनं वनम् ॥ " ॥ ८२ ॥ इत्यादि ॥

ऐसे स्थलमें ब्रह्मा,विष्णु और नारद इन तीन पुराणोंमें ब्रह्मपुराणको ही आदि और सबसे प्राचीन कहकर स्वीकार करसकते हैं, ब्रह्मपुराण अठा- रह पुराणोंमेंसे सबसे पहिला है सो विष्णुपुराणमें ही वर्णितहै,ब्रह्मपुराण देखकर विष्णुपुराणमें कृष्णचरित्र और नारद पुराणमें पुरुषोत्तम माहात्म्य वर्णित हुआ है यह बात लिखही चुके हैं.

ब्रह्मपुराणमें (५० । ४८–५६ ॥ अध्यायमें–)
श्रुत्वैतद्वचनं तस्य विश्वकर्म्मा सुकर्मकृत् ।
तत्क्षणात्कारयामास प्रतिमाः शुभलक्षणाः ॥ ४८ ॥
प्रथमं शुक्लवर्णाभं शारदेन्दुसमप्रभम् ।
आरक्ताक्षं महाकायं जटाविकटमस्तकम् ॥ ४९ ॥
नीलाम्बरधरं चोग्रं बलं बलमदोद्धतम् ।
कुण्डलैकधरं दिव्यं गदामुसलधारिणम् ॥ ५० ॥
द्वितीयं पुण्डरीकाक्षं नीलजीमूतसन्निभम् ।
अतसीपुष्पसङ्काशं पद्मपत्रायतेक्षणम् ॥ ५१ ॥
पीतवाससमत्युग्रं शुभं श्रीवत्सलक्षणम् ।
चक्रपूर्णकरं दिव्यं सर्वपापहरं हरिम् ॥ ५२ ॥
तृतीयां स्वर्णवर्णाभां पद्मपत्रायतेक्षणाम् ।
विचित्रवस्त्रसंछन्नां हारकेयूरभूषिताम् ॥ ५३ ॥
विचित्राभरणोपेतां रत्नहारविलम्बिताम् ।
पीनोन्नतकुचां रम्यां विश्वकर्म्मा विनिर्म्ममे ॥ ५४ ॥
B. नारदपुराणके पूर्वभागमें (५४ अध्यायमें)
श्रुत्वैतद् वचनं तस्य विश्वकर्म्मा सुकर्म्मकृत् ।
तत्क्षणात् कारयामास प्रतिमाः शुभलक्षणाः ॥ ५८ ॥
कुण्डलाभ्यां विचित्राभ्यां कर्णाभ्यां सुविराजिताः ।
चक्रलाङ्गलविन्यासहस्ताभ्यां साधुसम्मताः ॥ ५९ ॥
प्रथमं शुभ्रवर्णाभं शारदेन्दुसमप्रभम् ।
सुरक्ताक्षं महाकायं जटाविकटमस्तकम् ॥ ६० ॥
नीलाम्बरधरं चोग्रं बलं बलमदोद्धतम् ।
कुण्डलैकधरं दिव्यं महामुसलधारिणम् ॥ ६१ ॥
द्वितीयं पुण्डरीकाक्षं नीलजीमूतसन्निभम् ।

केवल इतनाही नहीं, इस ब्रह्मपुराणके अनेक प्रसंग महाभारतके अनुशासन पर्वमें अविकल उद्धृत हुए हैं । इस ब्रह्मपुराणके, २२३ से, २२५ अध्याय और अनुशासन-पर्वके, १४३ से,१४५ अध्यायके साथ और ब्राह्मके, २२६ अध्याय तथा अनुशासन पर्वके १४६, अध्यायमें श्लोक २ में अविकल मेल है। इन उद्धृत श्लोकोंको देखकर कोई २ कहसकतेहैं कि महाभारतसे ही ब्रह्मपुराणमें यह श्लोक सन्निवेशित हुएहैं । किन्तु अनुशासनोक्त–" इदं चैवापरं देवि ब्रह्मण्यं समुदाहृतम् ।" (१४३ । १६) और " पितामहमुखोत्सृष्टं प्रमाणमिति मे मतिः । (१४३ । १८) इत्यादि महाभारतीय श्लोक देखनेसे ब्रह्मका वचन महाभारतमें उद्धृत हुआहै, इस विषयमें कुछ सन्देह नहीं रहता । वेदका आशय प्रगट करनाही पुराणका उद्देश्य है। इस ब्रह्मपुराणमेंभी लिखाहै–

" प्रादुर्भावाः पुराणेषु गीयन्ते ब्रह्मवादिभिः ।
यत्र देवा विमुह्यन्ति प्रादुर्भावानुकीर्तने ॥
पुराणं वर्त्तते यत्र वेदश्रुतिसमाहितम् ।
एतदुद्देशमात्रेण प्रादुर्भावानुकीर्त्तनम् ॥" (२१३ । १६६।१६७)

वास्तविक इस ब्रह्मपुराणमें तीर्थ वर्णना प्रसंगमें सैकडों वैदिक उपाख्यान वा वंशानुचरित कीर्तित हुए हैं । । ऋक् संहिता, ऐतरेयब्राह्मण, शांखायनब्राह्मण आदि ब्राह्मण और बृहद्देवतामें जो वैदिक उपाख्यानहैं उनकेही अनेक उपाख्यान इस ब्राह्मणमें वा परिवर्द्धिताकारमें लिपि बद्ध

अतसीपुष्पसंकाशं पद्मपत्रायतेक्षणम् ॥ ६२ ॥
श्रीवत्सवक्षसं भ्राजत्पीनबाहुसमच्युतम् ।
चक्रपूर्णकरं दिव्यं सर्वपापहरं हरिम् ॥ ६३ ॥
तृतीया स्वर्णवर्णाभा पद्मपत्रायतेक्षणाम् ।
विचित्रवस्त्रसंच्छन्ना हारकेयूरभूषिताम् ॥ ६४ ॥
विचित्राभरणोपेता रत्नमाल्यविलम्बिताम् ।
पीनोन्नतकुचां रम्यां विश्वकर्मा विनिर्ममे ॥ ६५ ॥

हुए हैं। उनमें बलि और वामनाख्यान; अहल्या सम्वाद, पुरूरवा उर्वशी सम्वाद, हरिश्चन्द्र और शुनःशेपउपाख्यान, कठोपाख्यान, आर्ष्टिषेण और देवापि उपाख्यान, वृषाकपिका वृत्तान्त, सरमाख्यान, शर्य्यातिराजचरित, कवष, ऐलूषचरित, आत्रेय और उनकी कन्या आत्रेयीकी कथा, आजीगर्त्ताख्यान, आंगिरस, शाकल्य, अभिप्लुत आदिके आख्यान पाठ करनेसे ज्ञात होजायगा कि समस्तही वैदिक ग्रन्थोंसे संग्रहीत और पश्चात् पुराणोंमें विस्तृत हुए हैं.

ऐतरेय ब्राह्मणमें (७ । ३अ०) औ शांकायन ब्राह्मणमें (१५ । १७) जिस प्रकार राजा हरिश्चन्द्र, तत्पुत्र रोहित और शुनःशेपकी कथा वर्णित हुई है वही विस्तृतभावसे ब्रह्मपुराणमें वर्णित देखी जाती है। वास्तवमें ऐतरेय ब्राह्मण और ब्रह्मपुराणके विवरणमें जैसी एकता है, दूसरे किसी ग्रन्थमें ऐसा मेल नहीं। अधिक क्या ब्रह्मपुराणमें इसी प्रकार उपाख्यान भागमें ऐसी अनेक वैदिक कथा हैं, जिनका अर्थ करनेमें साधारण पौराणिक लोग अटक जाते हैं * । जिन्होंने सभाष्य मंत्र ब्राह्मणभागका पाठ नहीं किया है, वह इन उपाख्यानोंको भलीभांति नहीं जानसकते.

इन प्रमाणोंसे यह बात भलीभांति स्पष्ट होती है कि वेदव्यासने सबसे प्रथम इसी पुराणकी रचना की है धर्मसूत्रसे भी इसका समय बहुत प्राचीन है इसीसे इसमें बहुतसे प्राचीन वैदिक आख्यान और बहुतसे आर्ष प्रयोग प्राचीन संस्कृतके हैं.

---

* ब्रह्मपुराणके हरिश्चन्द्र वरुण सम्वादमें लिखा है कि–निर्दशे पुनरभ्येत्य यजस्वेत्याहतं नृपम् १०४–२६ ऐतरेय ब्राह्मण ७ । ३२ में ऐसा है तं होवाच निर्दशोन्वभूद् यजस्वमानेनेति, सायनाचार्यने अपने भाष्यमें निर्दश शब्दका यह अर्थ कियाहै कि निर्गतानि अशौचदिनानि दशसंख्यकानि यस्मात्पशोः सोयं निर्दशः। बात यहहै कि जिन्होंने ब्राह्मण और भाष्य नहीं देखा वे केवल पुराणकी उक्ति देखकर वैसा अर्थ नहीं करसकते ब्रह्मपुराणके उपाख्यान भागमें ऐसे अनेक प्रयोग हैं।

बहुतसे आधुनिक पुरुषोंका यह विचार है कि समयके उलट फेरसे पुराणोंमें भी बहुत कुछ फेरफार हुआ है बौद्ध धर्मके ह्रास होनेपर बहुतसे तीर्थोंके माहात्म्य प्रचलित हुए हैं बौद्धोंका धर्मभी एक समय हिमालयसे कन्याकुमारीतक विस्तृत होगया था सब क्षेत्र नगरोंमेंसे पुरातन देवस्थान हटाकर शाक्य बुद्ध और बोधिसत्त्व गणका आविर्भाव प्रसंग उठाकर सब स्थानोंको ही एक प्रकारसे बौद्ध पुण्यक्षेत्र बना लिया था जब उस धर्मका ह्रास हुआ तब बौद्धक्षेत्र हटाकर अपने तीर्थ ब्राह्मणोंने स्थापन कर उनके माहात्म्य बनाये, वह अंश पुराणोंमें नवीन है पर यह उनका कथन ठीक नहीं है । बात यह है कि बौद्ध धर्मके ह्रासहेनेपर जिन क्षेत्रों और तीर्थोंको बौद्धोंने लुप्तकर दिया था पुराणानुसार महात्मा ब्राह्मणोंने फिर उनको विख्यात किया और पुराणोंमें लिखे उन क्षेत्रतीर्थोंके माहात्म्यको सर्वसाधारणके सम्मुख प्रगट किया हां जो नवीन माहात्म्य बनायेगये वह अबभी पुराणोंमें नहीं पाये जाते और उनकी रचना भी पुराणोंसे नहीं मिलती पुराणोंमें कहीं २ कुछ प्रक्षिप्त अंश मिलता है पर सबमें नहीं कहीं किसीमें ऐसा अंश है सो स्पष्ट दिखाई देता है सो कहीं हम लिखेंगे.

मत्स्यपुराणके मतसे ब्रह्मपुराण १३००० तेरह सहस्र है और किसी पुराणके मतसे १०००० है जिसकी पहले सूची दी है वह १३ तेरह सहस्रसे कुछ विशेष है एक आदि ब्रह्मपुराण है वह आठ सहस्रके लगभग है और इस ब्रह्मपुराणसे बहुत मिलता है और आर्षभी विदित होता है उस आदि ब्रह्म पुराणकी सूची इस प्रकार है १ आदि सर्ग वर्णन २ सृष्टिकथन, ३ देवता और असुरोंकी उत्पत्ति, ४ पृथुउपाख्यान, ५ मन्वन्तरोंका कीर्तन, ६ आदित्यकी उत्पत्ति, ७ सूर्यवंश वणन, ८ आदित्यवंशकीर्तन, ९ सोमकी उत्पत्ति १० अमावसवंशवर्णन, ११ सोमवंशके क्षत्रियोंकी उत्पत्ति, १२ ययातिचारित्र, १३ ययातिवंशकीर्तन, १४ कृष्णवंशका चारित्र, १५ वृष्णिवंशकीर्तन, १६ स्यमन्तकका प्रत्यानयन,

१७ स्यमंतकका उपाख्यान, १८ भुवनकोषवर्णन १९ समुद्र और द्वीपोंका वर्णन, २० पातालवर्णन, २१ नरकोंका वर्णन २२ भूर्भुवः-स्वरादिकीर्तन, २३ ध्रुवस्थितिवर्णन, २४ तीर्थमाहात्म्यवर्णन, २५ मुनियोंका प्रश्न, २६ भारतगुणकीर्तन, २७ कोणादित्यका माहात्म्य, २८ सूर्यकी भक्ति तथा पूजाका माहात्म्य;२९ सूर्यकी प्रधानताका वर्णन, ३० सूर्यके चौबीसनामोंका वर्णन, ३१ सूर्यजन्मकथन,३२ सूर्यमाहात्म्य में १०८ नामोंका कीर्तन, ३३ सतीका दक्षयज्ञमें देहत्याग, हिमालयके यहां जन्म और तपस्या, ३४ पार्वती और शंकरसम्वाद, ३५ पार्वतीका शिवजीसे विवाह, ३६ इन्द्रादिकृत शिवस्तुति, ३७ शिवपार्वतीका कैलासगमन, ३८ दक्षयज्ञविध्वंस, ३९ दक्षकृतसहस्रनामस्तुति, ४० एकाम्रक्षेत्रका माहात्म्य, ४१ उत्कलक्षेत्रवर्णन, ४२ अवन्तिकापुरी वर्णन,४३ क्षेत्रदर्शन, ४४ पूर्ववृत्तांत कथन, ४५ पुनः क्षेत्रदर्शन, ४६ इंद्रद्युम्नराजाका प्रासादकरण, ४७ कारुण्यस्तववर्णन, ४८ इंद्रद्युम्नराजाको भगवानका दर्शनहोना, ४९ ज्येष्ठशुक्लाद्वादशीमें भगव-द्दर्शनका माहात्म्य, ५० मार्कण्डेय दर्शन, ५१ मार्कण्डेयका जलमें भ्रमण, ५२ मार्कण्डेयका विष्णुके उदरमें गमन, ५३ मार्कण्डेयकृत भगवत्स्तुति, ६४ मार्कण्डेयको भगवद्दर्शन होना, ५५ कृष्ण बलदेव और सुभद्राके दर्शनका फल, ५६ नृसिंह माहात्म्य, ५७ श्वेतमाधव माहात्म्य, ५८ समुद्रस्नानविधि, ५९ पूजाविधिवर्णन, ६० समुद्रस्नान माहात्म्य, ६१ पंचतीर्थ माहात्म्य, ६२ महाज्येष्ठीप्रशंसा, ६३ कृष्णास्नान माहात्म्य, ६४ गुण्डिचाक्षेत्रमाहात्म्य; ६५ यात्राफलमा-हात्म्य, ६६ विष्णुलोकवर्णन, ६७ क्षेत्रमाहात्म्यवर्णन, ६८ अनंतवा-सुदेवमाहात्म्य, ६९ पुनः क्षेत्रमाहात्म्य, ७० कंडुउपाख्यान, ७१ स्वयम्भुऋषि संवादमें ऋषिप्रश्न, ७२ विष्णुका चतुर्व्यूहत्व, ७३ व्यास और दूसरे ऋषियोंका संवाद, ७४ अंशावतारकी योगनिद्राको

आज्ञा, ७५ श्रीकृष्णजन्मवर्णन, ७६ कृष्णबालचरित्रवर्णन, ७७ श्रीकृष्णबालक्रीडा, ७८ कालीनागदमन, ७९ गोवर्द्धन गिरि-माहात्म्य, ८० श्रीकृष्णका गोवर्द्धनधारण, ८१ श्रीकृष्णका बालच-रित्र, ८२ केशीवध, ८३ अक्रूरका मथुरागमन, ८४ श्रीकृष्णका धोबीको मारकर मालीको वरदेना, ८५ श्रीकृष्णका कुबडीको सँभा-रना, धनुष तोडना, कुवलियापीड हाथी चाणूर मुष्टिकादिका वध करके कंसको मारना, ८६ श्रीकृष्णका कंसकी रानियोंको समुझाना, पीछे मातापिताके बन्धन छुडाय उग्रसेनको राज्य दे गुरुके पास पढने जाना, गुरुपुत्रको लाना तथा जरासंध युद्ध वर्णन, ८७ बलदेवजी का गोपियोंके संग विहार, ८८ बलरामका यमुनाका आकर्षण, ८९ रुक्मिणीका हरण, प्रद्युम्न उत्पत्ति, ९० बलदेवद्वारा रुक्मीवध, ९१ श्रीकृ-ष्णका नरकासुरको मारना, ९२ श्रीकृष्णका इन्द्रलोकसे कल्पवृक्ष लाना, ९३ उषाका स्वप्नमें अनिरुद्धको देखना और चित्ररेखासे बुल-वाना, ९४ उषा और अनिरुद्धका विवाह, ९५ श्रीकृष्णद्वारा पौंड्रक वासुदेववध, ९६ बलदेव माहात्म्य, ९७ बलदेवजीका द्विविदको मारना, ९८ श्रीकृष्णका स्वर्लोकगमन, ९९ श्रीकृष्णकी रानियोंका देह त्याग और आभीरोंसे अर्जुनका परास्त होना, १०० यमलोकके स्वरूपका वर्णन, १०१ पापियोंको यमराजद्वारा दण्डविधान, १०२ धार्मिक पुरुषोंकी सुगति वर्णन, १०३ संसारचक्रवर्णन १०४ संसार चक्र कथा, १०५ । १०६ श्राद्धविधान, १०७ गृहस्थाश्रममें सदाचार १०८ व्याससंवादमें वर्णाश्रम वर्णन, १०९ उमामहेश्वर सम्वाद, ११०, १११ उमामहेश्वर सम्वाद; ११२ शिवजीका मुनियोंको श्रीकृष्ण पूजन कथन, ११३ विष्णुभक्तोंकी गति, ११४ विष्णुके जागरणमें गीताकी प्रशंसा, ११५ विष्णुके धर्मोंका वर्णन, ११६ कलियुगके नियम, ११७ कलि-युगके होनेवाले धर्मोंका वर्णन ११८ ब्राह्मनैमित्तिक वर्णन, ११९ भगवानके

प्राकृतलयका वर्णन, १२० आत्यन्तिकलयका वर्णन, १२१ योगाध्यायका वर्णन, १२२ सांख्ययोगका वर्णन १२३ आत्मविद्या और कर्मोंका वर्णन, १२४ सांख्यसम्वाद वर्णन, १२५ पुराणप्रशंसा यह ग्रंथ आठ सहस्रसे अधिक है संभवहै कि १०००० दशसहस्रवाला यह ग्रंथ हो और दश सहस्र संख्या कहनेवाले पुराणाके समय उस द्वापर युगका यह हो। पूनाके छपे ब्रह्मपुराणमें १३७८३ श्लोक पाये जाते हैं, जिससे विदित होता है कि यह मत्स्यपुराण प्रतिपादित ब्रह्मपुराण है तब.७८३ श्लोकोंका इसमें फेरफार है वे लेखकप्रमादसे या माहात्म्यरूपसे बढे सो जानना कठिन है.

इसके २१ वें अध्यायमें रामकृष्ण आदि अवतारोंके साथ कल्कि अवतारकी गणना की है पर बौद्ध अवतारका इसमें प्रसंग नहीं है किन्हीं का मत है ८०० ईसवीके समय बुद्ध देव अवतार गिने गये यह पुराण उससे पहलेका है पर यह भी ठीक नहीं जब कि भविष्य कल्कि अवतारतकका वर्णन है तब बुद्धकी क्या बात है इसमें केवल साधारण अवतार समझ करही बुद्धका नाम छोडदिया गया है.

किन्हींका मत है कि पहली शताब्दीमें दाक्षिणात्यमें सातवाहन वंशीय राजा राज्यकरते थे महाराष्ट्रसे मदरासतक इनका राज्य था इस वंशके पूर्ववर्त्ती राजा अधिकांश बौद्ध-धर्मावलम्बी थे किन्तु सातवाहन वंशके समय दक्षिण देशमें बौद्ध प्रभाव ह्रास न होने परभी इन्होंने जैसा ब्राह्मणसेवा धर्ममें प्रेम प्रकाश किया, वह कहा नहीं जाता, सैकडा ब्राह्मणोंको वृत्ति दीगई, सैकडों देवालय बनाये गये.

उस समय पुडमायी, अवदातु, गौतमीपुत्र, शातकर्ण आदि बहुतसे राजा ब्राह्मणोंके कुटुम्ब बढानेवाले ब्रह्मण्य आदि विशेषणोंसे विशेषित हुए थे, इन्होंने ब्राह्मणोंको सहस्रों गोदान,सकैडा ग्राम और मंदिर दान-

करके बडी कीर्ति पाई थी, यद्यपि यह बौद्ध संन्यासियोंको भी भली भांति मानतेथे तथापि देव ब्राह्मणोंपर उनका बडा अनुराग और दृढ भक्ति थी । अधिक क्या राजा उपवदानने प्रभासक्षेत्रमें ब्राह्मणोंको आठ कन्यादान की थीं इसी समयसे वैदिक धर्मका पुनरुत्थान माना गया है उस समय रामतीर्थादि किसी २ तीर्थकी ख्याति होचुकी थी, जिसका प्रमाण शिलालेखसे स्पष्ट पायाजाता है, अनुमान है उस समय बहुतसे तीर्थोंका माहात्म्य लिखा गया है, सातवाहन वंशकी एक प्रधान रानी गौतमी थी इस वंशके कई राजा गौरवके कारण गौतमीपुत्र कहाते थे सम्भव है उस समय गोदावरीमाहात्म्य गौतमी माहात्म्यसे परिचित किया हो और आगे पीछे चतुर्थ शताब्दीतक इसमें माहात्म्य प्रविष्ट हुए हों.

परन्तु बुद्धिमान् इस सर्वथा बातको स्वीकार नहीं करेंगे कारण कि तीर्थमाहात्म्य अतिपुरातन वेदप्रतिपादित है और तीर्थादि माहात्म्यके सहस्रों श्लोक हैं तब यह ग्रंथ ऐसा होनेसे बीस सहस्र होजाता सो यह वैसा न होकर अपने लक्षणोंसे सम्पन्न होनेसे सर्वथा मान्य और प्रमाणीभूत है, स्कन्दपुराणमे यह ब्रह्म माहात्म्य सूचक पुराण है पर इसके मतसे "पुराणं वैष्णवं त्वेतत्सर्वकिल्बिषनाशनम्" २४५ । २० यह वैष्णव पुराण है.

ऋषिपंचमी व्रत, कर्मविपाक संहिता, कालहस्ती माहात्म्य, चम्पाषष्ठी व्रत, नासिकेतो पाख्यान, प्रयागमाहात्म्य, क्षेत्रखण्ड, मल्लारिमाहात्म्य, मार्तण्डमाहात्म्य, मायापुरीमाहात्म्य, ललिताखण्ड, वेंकटगिरिमाहात्म्य, श्रीरंगमाहात्म्य, श्वेतगिरिमाहात्म्य,हस्तगिरिमाहात्म्य इत्यादि ब्राह्मपुराणके अनन्तर लिखगये हैं परन्तु मूल ब्रह्मपुराणमें इन्होंने स्थान नहीं पाया, एकादि ब्रह्मपुराण लखीमपुर और लखनऊमें छपाहै इसमें १२५ अध्याय हैं उसमें ब्रह्मपुराणकी बहुतसी कथा हैं उसकी सूची भी पीछे दे चुके हैं.

द्वितीय पद्मपुराण २।

. प्रचलित पद्मपुराण सृष्टि आदि पांच खण्डोंमें विभक्त है उसकी सूची यह है प्रथम सृष्टि खण्डमें १ सूतके प्रति ऋषियोंकी पुराण कथनाज्ञा, २ नैमिषारण्य व्याख्यान, ३ सूतशौनक सम्वाद, सूतव्यासादिकी उत्पत्ति, ४ इन्द्रके प्रति दुर्वासाका शाप, समुद्रमथन, भृगुसे शापपाये विष्णुके साथ ब्रह्माका कथोपकथन, नारदका ब्रह्मस्तोत्र और वरप्राप्ति, दक्षयज्ञविनाश, दक्षकी शिवस्तुति और वरलाभ, ६ देव दानवगन्धर्व राक्षस उरग आदिकी सृष्टि, प्रचेता दक्षसम्वादमें पूर्व सृष्टिका हेतु पूछना, देवता, वसु, रुद्र, वाराह, आदित्य, इन्द्र और हिरण्यकशिपु आदिकी उत्पत्ति कथा, बाणासुर चरित्र, विनताके गर्भसे गरुडकी उत्पत्ति, सम्पाति और जटायुकी उत्पत्ति, मुनि अप्सरा किन्नर गन्धर्वादि की उत्पत्ति, ७ ज्येष्ठ पूर्णिमाव्रत, इन्द्रका दितिका गर्भ छेदन, मरुतकी उत्पत्ति, प्रतिसर्गकथन, मन्वन्तर कथन, ८ पृथूपाख्यान, आदित्यवंश, सावर्णिमनुकी उत्पत्ति, छायाका उपाख्यान, सूर्यतेज हरण, अश्विनीकुमारकी उत्पत्ति, शनिका ग्रह होना. इलाका उपाख्यान, इलाका स्त्रीहोकर बुधके आश्रममें गमन, ऐलकी उत्पत्ति, इक्ष्वाकु, भगीरथ, दिलीप वंश कथन, ९ पितृवंश कथा, अग्निकरण वर्णन, श्राद्धप्रशंसा, निषिद्ध वस्तु वर्णन, श्राद्धकाल निर्णय, विषुव अयन दिनमें साधारण श्राद्धविधि, १० एकोद्दिष्ट विधि, सापिण्ड विधान, अशौचादि निर्णय, कृतश्राद्धका फलाफल कथन, ११ श्राद्धप्राशस्त देशकालकथा नैमिष, गया और तीर्थ क्षेत्रादिमें श्राद्धप्राशस्त्य, विष्णुदेहसे कुशतिलादिकी उत्पत्ति कथा, १२ सोमोपाख्यान बुधकी जन्मकथा इलाके गर्भसे पुरूरवाका जन्म और चरिताख्यान, उसका वंशकथन कार्तवीर्य्योपाख्यान और उसका कीर्तन, १३ क्रोष्टुवंशकथा, स्यमन्तोपाख्यान और कुन्त्याख्यान, त्रिपुरुषसे अर्जुनकी उत्पत्ति, माद्रवतीके गर्भसे नकुल सहदेवकी उत्पत्ति, रामकृष्णका उपाख्यान, कृष्णकी जन्मकथा, वसुदेव, देवकी

नंद और यशोदाका पूर्व जन्म वृत्तांत, कृष्णवंशचरित, दशावताररूप-धारणका कारण निर्देश, शुक्रकृत तपश्चर्य्या, देवपराजित दैत्योंका काव्य-माताके निकट गमन, शुक्रमातासे देवताओंका भागना विष्णुद्वारा शुक्र-माताका वध वर्णन; भृगुदत्त विष्णुशाप वर्णन, भृगुद्वारा मातृसञ्जीवन वर्णन, शुक्रकी तपश्चर्य्याभंगके निमित्त इंद्रका जयन्ती कन्याको भेजना शुक्रका शिववर लाभ जयन्तीके साथ शुक्रको शतवर्ष रति वर्णन, शुक्र, वेषमें बृहस्पतिका दानवोंके निकट गमन, नास्तिक मत प्रचार और दीक्षादान,दानवोंके प्रति शुक्रका अभिशाप, १४ शिवद्वारा शिरश्छेदसे रुष्ट हुए ब्रह्माके स्वेदसे पुरुषकी उत्पत्ति स्वेदभयसे भीत शंकरका विष्णुसमीपमें गमन, और विष्णुका दक्षिणभुज त्रिशूलद्वारा छेदन भुजोत्पन्नरक्तसे दूसरे पुरुषकी उत्पत्ति दोनोंका युद्ध, स्वेदका पराभव, दोनोंका अनुक्रमसे सुग्रीव और वालिरूपमें जन्म, उक्त दोनों पुरुषोंका कर्णार्थुनरूपसे पुन-र्जन्म वृत्तांत, शिवकृतब्रह्मशिरश्छेद कारण वर्णन, शंकरकृत ब्रह्मस्तोत्र, ब्रह्महत्याक्षालनके निमित्त शंकरके प्रति विष्णुका उपदेश, रुद्रकृत सकल तीर्थ गमन, पुष्करमें रुद्रकृत कापालिक व्रतकथा और ब्रह्मवरप्राप्ति, कपालमोचन तीर्थोत्पत्ति, वाराणसी माहात्म्य वर्णन और ब्रह्माकी आज्ञासे शिवका काशीधाममें गमन, १५ मेरु शिखरस्थित कान्तिमती सभामें ब्रह्माकी चिन्ता वर्णन, ब्रह्माका वनगमन, पुष्करोत्पत्ति कथन,इस स्थान-में देवता सम्मिलन पुष्कर तीर्थ वासियोंका धर्म्माचार, चान्द्रायण और मृत्युफल कथन, ब्राह्मण लक्षण, वर्णन और भिक्षुधर्म्म कथन, १६ ब्रह्म-कृत यज्ञानुष्ठान और तत्कृत गोपकन्याका पाणिग्रहण, १७ ब्रह्मयज्ञमें रुद्रका भिक्षार्थ आगमन, ब्रह्मरुद्र संवाद, गोपकन्याके साथ यज्ञमें प्रवृत्त ब्रह्माके प्रति सावित्रीका शापदान; विष्णुकृत सावित्रीस्तोत्र, विष्णुको सावित्री वरलाभ, कार्तिक पौर्णमासीमें गायत्रीके उपदेशसे ब्रह्माका व्रत, रुद्रकृत गायत्रीस्तव और वरलाभ १८ ब्रह्मयज्ञ कथा, दानवोंके साथ विष्णुका कलह, पुष्करस्नानसे मुख विरूप ऋषिको सुरूपता प्राप्ति

प्राचीन सरस्वती चरित्र मंकणक, ब्राह्मणका उपाख्यान, सरस्वतीमाहात्म्य कथन, प्रसंगक्रमसे उतंकाश्रममें आगमन, गंगा सम्वाद, समुद्रगमन और वडवानल ग्रहवर्णन, सरस्वतीको नंदानाम प्राप्ति, प्रभञ्जनराजाका उपाख्यान और नन्दाका प्रसंग, १९ तीर्थ विभाग वर्णन, वृत्रासुरोपाख्यान, दधीचिका आख्यान, वृत्रवध वर्णन, कालकेयगणकी समुद्रस्थिति, अगस्त्याख्यान, विन्ध्य पर्वतकी मस्तक नति, अगस्त्यकृत समुद्रनाशन, कालेयवधवृत्तान्त, पुष्कर माहात्म्य ज्ञापक आख्यायिकारम्भ, अन्नदानादि प्रशंसा, मध्य पुष्कर प्रशंसा, २० दान प्रशंसा प्रसंगमें पुष्पवाहन राजादिका आख्यान, २१ धर्म्म मूर्ति नामक राजाख्यान, सौर धर्म्म कथन, विशोकादि सप्तमीव्रत कथा, २२ अगस्त्य चरित, गौरीव्रत और सारस्वतव्रत विधि, २३ भीमद्वादशीव्रतकथनमें कृष्णपत्नियोंके साथ दालभ्यसम्वाद, दालभ्यद्वारा वैश्यधर्म्म कथन, २४ अशून्यशयनव्रतविधि उस प्रसंगमें वीरभद्रोत्पत्ति कथन, आदित्यरोहिणी ललिता और सौभाग्यशयनव्रत विधि, २५ वामनावतार कथन, २६ नाग तीर्थोत्पत्ति, तत्प्रसंगमें शिवदूतका आख्यान, २७ प्रेतपञ्चकका आख्यान, सुधावटतीर्थवर्णन, २८ मार्कण्डेयोत्पत्ति कथन रामका रेवागमनादिवर्णन, २९ ब्रह्मनतयज्ञकालवर्णन, ऋत्विक् परिमाण कथन, पुष्कर माहात्म्य, ३० क्षेमंकरीका उपाख्यान, क्षेमंकरी स्तोत्र, ब्रह्मविष्णुरुद्रशक्तिसमूहके बहुभेद कथन, ३१ वैष्णवी और चामुण्डारूपी शक्तिका दैत्यवध वर्णन, महिपासुरवध, नवग्रहव्रत और ब्रह्माण्डदानविधि, ३२ रामकृत शूद्रकवधाख्यान, ३३ रामअगस्त्यसम्वादमें क्षत्रियका प्रतिग्रहाधिकार और श्वेतनामक राजाका उपाख्यान, ३४ गृध्रोलूकाख्यान, ३५ कान्यकुब्ज रामद्वारा वामनप्रतिष्ठादि कथा, विष्णुकी नाभिसे हिरण्मय पद्मोत्पत्ति कथा, ३७ मधुकैटभवध, प्राजापत्य सृष्टि, तारकामय संग्राम, ३८ विष्णुद्वारा इन्द्रादिको अधिकार प्रदान, ३९ तारकासुरकथा, ४० हिमालयमें पार्वत्युत्पत्तिकथा, पार्वतीका विवाह वर्णन, ४१ कार्तिकेयोत्पत्ति और तारकासुरवधकथा, ४२

हिरण्यकशिपु वधाख्यान, ४३ अन्धकासुरका आख्यान, गायत्रीजपविधि ४४ अधम ब्राह्मणलक्षण, उस प्रसंगमें गरुडोत्पत्ति कथन, ४५ अग्निद गरदादि ब्राह्मणवधमें पापाभाव कथन, सत्य और गोमाहात्म्य ४६ सदाचार कथा, ४७ पितृसेवाप्रशंसाकथनमें मूक पतिव्रता, तुलाधार और मद्रोहक उपाख्यान, श्राद्धप्रशंसा, ४८ पतिव्रताकथनमें माण्डव्यचरित, ४९ सहगमन विधि और स्त्रीधर्म्म, ५० तुलाधार चरित अलोभ प्रशंसामें शूद्राका आख्यान, ५१ अहल्याधर्षण, ५२ परमहंसाख्यान और लौहित्यमाहात्म्य, ५३ पद्माख्यान, ५४ जलदान प्रशंसा, ५५ अश्वत्थादिदान विधि, ५६ सेतुबन्धकथा, श्रोत्रियगृहकरणफल, ५७ रुद्राक्षमाहात्म्य और उसकी आख्यायिका, ५८ धात्रीफल और तुलसीमाहात्म्य, ५९ तुलसीस्तव, ६० गंगामाहात्म्य, ६१ गणेशकी प्रथमपूजाकथा ६२ गणेशस्तोत्र ६३ नान्दीमुखादि गणेशपूजा करनेसे फल और देवासुरसंग्राममें चित्ररथद्वारा कालेयकवधवृत्तान्त, ६४ कालेय वध–कथा ६५ बलनमुनि वध, ६६ नमुचिवध (१) ६७ कार्तिक हस्तसे तारेयवध, ६८ दुर्मुखवध, ६९ द्वितीयनमुचिवध, ७० मधुदैत्यवध, ७१ वृत्रासुरवध, ७२ गणेशकर्तृक त्रैपुरीवध, ७३ वराहरूपधारी विष्णुका हिरण्याक्षवध, ७४ दैत्यस्वभाववर्णन, प्रह्लादादिको सुरत्व प्राप्ति, भीष्मकर्णद्रोणादिको देवत्वकथन, ७५ सूर्य्यचरित बहुविध, ७६ सूर्य्यव्रतकथा, ७७ सूर्य्यमाहात्म्यमें भद्रेश्वरराजाख्यान, ७८ भौम (मंगल) की उत्पत्ति और पूजाकथन, ७९ चण्डिका माहात्म्य, ८० दुर्गापूजा विधि, ८१ बुध गुरुशुक्रादिकी पूजाविधि नवग्रह मंत्र, ८२ पद्मपुराणपठन फल, सृष्टिखण्डका श्रवण, श्रवण पठनफल.

द्वितीयभूमिखण्डमें—१ प्रह्लादका जन्मान्तर, २ शिवशर्म्म पुत्र विष्णुशर्म्मादिका आख्यान, ३–४ धर्म्म धर्म्मगर्म्मसम्वाद, ५ मेनका और विष्णुशर्मसम्वाद, ६ सोमशर्म्मादिकी पितृभक्ति और शिव शर्म्माको गोलोक

प्राप्ति,७ इन्द्रको इन्द्रत्वलाभप्रसंग,८ कश्यपभार्यादिति और दनुकी कथा, ९दितिके प्रति कश्यपका आत्मज्ञान कथन, १० कश्यप और हिरण्यकशिपुसम्वाद,११सुव्रतोपाख्यान,१२ ऋण सम्बँधी पुत्र और पुण्यधर्म्मादिकथन, १३ ब्रह्मचर्य्यलक्षण,१४धर्म्माख्यान,१५ पापियोंका मरण वृत्तान्त, १६ वशिष्ठके निकट सोमशर्म्माका विभिन्न पुत्रलक्षण श्रवणफल,१७विप्रत्व प्राप्तिका कारण,१८सोमशर्म्माको विष्णुदर्शन, १९सोमशर्म्मा और सुमना संवाद, सोमशर्म्माको सुपुत्रलाभ, २० सुव्रतचरित,२१ सुव्रतका पूर्वजन्म, रुक्मभूषणाख्यान, २२ सृष्टि तत्त्वकथन, २३ वृत्राख्यान, २४ इन्द्रत्वलाभ, सुरापानसे वृत्रका पतन और उस अवसरमें वज्रप्रहारसे इंद्रद्वारा वृत्र संहार, २५ दितिका शाप और मरुत उत्पत्ति, २६ पृथु चरितारंभ, २७ पृथुका जन्मादिकथन,२८ पृथुधरित्रीसम्वाद, २९ वैष्णवचरित ३० अत्रिपुत्र अंगदसम्वाद, ३१ अंगका वासुदेवदर्शन, ३२ सुसंघगंधर्व और सुनीथा चरित, ३३ सुसंघके प्रति शापवर्णन, ३४ इन्द्रसम्पद देखकर उसके सदृश पुत्रलाभके निमित्त अंगकी तपस्या, ३५ अंशका सुनीथाका पाणिग्रहण, ३६ वेणका पापप्रसंग और उसके साथ जैनधर्म्मकथन,३७ ऋपियोंद्वारा पृथुका दक्षिणहस्तमन्थन और पृथुका जन्म, ३८ वेणको स्वर्गप्राप्ति कथन, ३९ दानकाल कथन, ४० नैमित्तिकदान कथन,४१पुत्र भार्य्यादिरूपतीर्थप्रसंगमें कुकलनामक वैश्योपाख्यान, ४२ सदाचार प्रसंगमें उसकी स्त्री सुदेवाकी कथा, ४३–४५ शूकरोपाख्यान, ४६ शूकरके जीवनलाभप्रसंगमें गीत विद्याधर कथा, ४७ श्रीपुरस्थ वसुदत्त द्विजकथा, ४८–४९ उग्रसेनाख्यान,५० पद्मावती गोभिलसम्वाद, ५१ पद्मावतीका गर्भ और कंसजन्म कथन, ५२ शिवधर्म्म,द्विजसम्वाद, ५३–५६ सुकला विष्णुसम्वाद,५७ सुकला काम सम्वाद,५८सुकलाका निज गृहमें आगमन और पतिलाभ, ५९ धर्म्मद्वारा पतिका कर्त्तव्याकर्त्तव्यनिर्णय, ६० धर्म्मादेशसे कुकलनामक वैश्यका स्वगृहमें आगमन और भार्यातीर्थलाभ, ६१ पितृतीर्थप्रसङ्गमें कुण्डलपुत्र,

सुकर्म्मा और कश्यप कुलोद्भव पिप्पलकी कथा, ६२ सुकर्म्माके बालकके निकट पिप्पलको ज्ञान लाभ, ६३ सुकर्म्माद्वारा पितृमातृ सेवामें अशेषपुण्य कथन, ६४ नहुप आर ययातिका आख्यान, ६५-६६ ययाति और मातलिसम्वाद, मातलिद्वारा गर्भवासादि काय दुःख कथन, ६७ मातलिद्वारा कर्मविपाकवर्णन, ६८ दानफल, ६९ शिवधर्म्मकथन, ७० यमपीडा कथन, ७१ शिव, विष्णु और ब्रह्मा इन तीनका अभेदकथन, ७२ ययातिका शरीर त्यागपूर्वक इन्द्रपुरमें जाना अस्वीकार, ७३ नामामृत कथन, ७४ हरिनाम प्रचार, ७५ विष्णुनाम कथन, ७६ ययाति चरितमें ययातिकी वैष्णवधर्म्मप्रचारकथा, ७७ विशाला ययाति सम्वाद वृत्तांत, ७८ पुत्रगणके प्रति ययातिका जराग्रहणमें आदेश, पुरुका पितृजरा ग्रहण, ७९ कामकन्याके साथ ययातिका विवाह और विहार, ८० ययातिद्वारा यदुके प्रति मातृशिरश्छेदन आदेश, ८१ ययातिकी कृष्णभक्ति, ८२ पुरुके निकटसे ययातिका फिर जराग्रहण और पुरुका राज्याभिषेक, ८३ ययातिका स्वर्गारोहण, ८४ गुरुतीर्थप्रसङ्गमें च्यवनचरितमें कुञ्जलनामक शुकाख्यान और प्लक्षद्वीपराजकन्या दिव्यादेवीकथा, ८५ दिव्यादेवीका पूर्वजन्माख्यान, ८६ जयादि व्रतभेद कथन, ८७ उज्ज्वलपक्षी और दिव्यादेवी सम्वाद, ८८ दिव्यादेवीको विष्णुदर्शन ८९ समुज्ज्वलपक्षीद्वारा हिमालयका हंसाख्यान, ९० इन्द्रनारदसम्वादमें तीर्थप्रशंसा, ९१ पाञ्चालदेशवासी विदुर नामक क्षत्रियकथा, ९२ वाराणस्यादि तीर्थस्नान माहात्म्य, ९३ विज्वलपक्षीद्वारा आनन्दकाननम स्थितदम्पती वर्णन, ९४ कुञ्जल पक्षीसे कर्म्मफल और जैमिनिद्वारा अन्नदानफल कथन, ९५ स्वर्गगुणवर्णन, ९६ कर्म्मफलसे सुगति और दुर्गति कथन, ९७ धर्म्माधर्म्म गति वर्णन, ९८ वासुदेवस्तोत्र, ९९ स्तोत्रपाठफल, १०० कुञ्जलाख्यानसमाप्त १०१ कपिञ्जलपक्षी कर्तृक. रत्नेश्वरप्रसंग, १०२ शिव-

पार्वतीसम्वादमें अशोकसुंदरीकथा, १०३ अशोकसुंदरीका उपाख्यान, १०४ इन्दुमतीदत्तात्रेयसम्वाद, १०५ इन्दुमतीके गर्भसे नहुषजन्म और नहुषकी अस्त्रशिक्षादि कथन, १०६ इन्दुमती और आयुका शोक-सम्वाद, १०७ आयुके प्रति नारदका आश्वासन, १०८ वसिष्ठनहुष-सम्वाद, १०९ नहुषकी मृगया, ११० हुण्डदानवनिधनार्थ नहुषकी यात्रा, १११ नहुषका नन्दनगमन, ११२ नहुषके निमित्त अशोक-सुंदरीका विवाह, ११३ नहुषके निकट अशोक सुंदरीका गमन, ११४ नहुषके साथ दानवोंका युद्ध, ११५ नहुषद्वारा हुण्डदानववध, ११६ इन्दुमतीको नहुषपुत्रलाभ, ११७ अशोकसुंदरीके साथ नहुषका विवाह, ११८ हुण्डपुत्रविहुण्डाख्यान, ११९ कामोदोत्पत्तिकथन, १२० कामोदाख्यपुर वर्णन, १२१ विहुण्डवध, १२१ कुञ्जलपक्षी च्यवन सम्वाद, १२३ वेणाख्यानमें वेणको ज्ञानप्राप्ति, १२४ पृथुके प्रति वेणका आदेश, १२५ वेणका स्वर्गलाभ और भूमिखण्डपाठफल.

३ ये स्वर्गखण्ड—१ स्वर्गखण्ड विषयानुक्रम, शेषवात्स्यायन सम्वादमें दुष्यन्तचरित, शकुन्तलाका उपाख्यान, २ कण्व शकुन्तला सम्वाद, शकुन्तलाका दुष्यन्तपुरमें आगमन, ३ दुष्यन्तका शकुन्तलाके ग्रहणमें अस्वीकार, शकुन्तलाका दुष्यन्तपुरत्याग, मेनका शकुन्तला सम्वाद, ४ मेनका सहित शकुन्तलाका स्वर्गगमन, ५ धीवरके निकटसे दुष्यन्तको अँगुरीप्राप्ति, अँगुरीदर्शनसे दुष्यन्तको पूर्वकथा स्मरण, और शकुन्तलाके निमित्त दारुणमनस्ताप, भरत दुष्यन्त सम्वाद, शकुन्तला समागम, ६ सपरिवार दुष्यन्तका निजस्थानमें गमन, भरतका अभिषेक, भरताख्यान, चन्द्र सूर्य्यादिक मण्डल परिमाण और दूरत्वादि कथन, ७ भूलोकादि परिमाण, भूत पिशाच गन्धर्वादि लोक वर्णन, अप्सरा लोक वर्णनमें उर्वशी पुरूरवाका आख्यान, ८ सूर्य्य लोक वर्णन, परमेष्ठि ब्रह्माका शम्भु पुत्ररूपमें प्रादुर्भावाख्यान, ९ रुद्रसर्गवर्णन, संयमनीपुरी

वरुणोपाख्यान, १९ गन्धवती पुरी और वायुका आख्यान, कुबेर और रावणोत्पत्ति वर्णन, ११ नक्षत्रतारा और ग्रहलोकादि वर्णन, १२ ध्रुवलोकवर्णनमें ध्रुवचरित्रोल्लेख, १३ ध्रुवचरित्र, १४ स्वर्लोक और महर्लोक वर्णन, १५ वैकुण्ठलोक वर्णन, सगराख्यान, कपिलशापसे सगरपुत्र नाशवृत्तान्त, अंशुमान्‌की उत्पत्ति, असमञ्जसका अभिषेक, १६ भगीरथजन्म और गंगा लाना, १७ धुन्धुमार चरित, १८ शिव और उशीनराख्यान, १९ मरुत चरित, २० मरुत सम्वर्त्त सम्वाद, मरुत-राजका यज्ञारम्भ, २१–२२ मरुतके यज्ञमें देवगणका आगमन और मरुतको स्वर्गप्राप्ति, २३ दिवोदास चरित, २४ हरिश्चन्द्र चरित, २५ मान्धाताका उपाख्यान, २६ नारदमान्धातृसम्वादमें ब्राह्मणादि वर्णोत्पत्ति और वर्णधर्म्मकथन, २७आश्रमधर्म्म निरूपण और योग कथन, २८ चातुर्वर्ण्यकी धर्मप्रशंसा, २९ चातुर्वर्ण्यका आह्निककृत्य वर्णन, शालग्रामशिला माहात्म्य,३० परलोक साधन सदाचार, ३१ ब्राह्मणोंका भक्ष्याभक्ष्यसदाचार निर्णय, ३२ ब्रह्मकेतुका उपाख्यान, ३३ दक्षयज्ञमें सतीका देहत्याग, दक्षशाप वर्णन,३४ परलोक वर्णन, ३५ श्राद्धपात्र निर्णय, ३६ राजाका कर्तव्य,३७ राजधर्म्म निरूपण,३८ राजसाधारण धर्म्मकथन, ३९ प्रलय लक्षण, सौभरिप्रोक्त विवाह, मान्धाताका स्वर्गगमन, स्वर्गखण्डका अनुक्रम वर्णन.

'४ र्थ पातालखण्डमें—१ सूत शौनक सम्वाद, शेषके प्रति वात्स्यायनका रामचरित्र प्रश्न, २ रावणवधके अनन्तर रामका अयोध्यामें आगमन, सीताके साथ रामका अयोध्यामें आगमन, ३ रामका मातृदर्शन और पौरांगना सम्वाद, ४ रामका राज्याभिषेक, रामद्वारा सीता-निर्वासन और रामके निकट अगस्त्यका आगमन, ५–६ अगस्त्य रावण कुम्भकर्ण विभीषणादिका जन्मकथन, रावणकी मातृसमीपमें प्रतिज्ञा,७–८ रावणादिका उग्रतप; ब्रह्माका वरदान, रावणाक्रान्त देवगणका ब्रह्मलोकमें गमन, देवगणके साथ ब्रह्मा और शिवका वैकुंठ गमन, विष्णुकी

स्तुति, विष्णुका रामरूपमें अवतार, ८ रावणवधजनित ब्रह्महत्यासे निष्कृति पानेके निमित्त रामको अश्वमेधयज्ञ, ९ अश्वमेधयाग, १० रामकी यज्ञ-दीक्षा, सुवर्णसीतासहित रामका कुण्डमण्डपादि करण, अश्वरक्षार्थ शत्रुघ्नका गमन, ११ पुष्कलागमन और अश्वनिर्गम, १२ अहिच्छत्रामें अश्वागमन, कामाक्षा चरित उस प्रसंगमें सुमदराजचरित, १३ सुमदका कामाक्षादर्शन, सुमद शत्रुघ्न समागम, शत्रुघ्नका अहिच्छत्रापुरीप्रवेश, १४ अश्वके साथ शत्रुघ्नका च्यवनाश्रममें गमन, च्यवन सुकन्या चरित, १५ सुकन्याके साथ च्यवनका तपोभोगवर्णन, १६ शर्य्याति सुकन्याचरित, च्यवनका रामयज्ञ दर्शनमें गमन, १७ अश्वका वाजीपुरमें गमन, वाजीपुराधिप विमलराजका शत्रुघ्नको सर्वस्वप्रदान, नीलगिरि माहात्म्य और उस प्रसंगमें रत्नग्रीवराजचरित, १८ नीलगिरि वासपुण्यसे चतु-र्भुजत्वप्राप्तिकथन, १९ नीलगिरि यात्राविधि, २० गण्डकीमाहात्म्यमें शालग्राम शिलामाहात्म्य, और पुल्कसनामक शबर, चरित्र २१ रत्नग्रीवकृत पुरुषोत्तम स्तोत्र २२ रत्नग्रीवको चतुर्भुजप्राप्ति, नीलपर्वतके निकट अश्वागमन, २३ पीछे सुबाहुराजाका चक्रांकनगर गमन, सुबाहुपुत्रदमन द्वारा प्रतापाग्रवध, २४ पुष्कलविजय, २५ सुबाहुसेनापतिका क्राञ्चव्यूह निर्माण, २६ लक्ष्मीविधिके साथ सुकेतुका युद्ध, सुकेतुवध, २७ पुष्कलके साथ चित्रांगका युद्ध, चित्रांगवध, २८ सुबाहुके साथ हनुमानका युद्ध; सुबा-हुकी मूर्च्छा और स्वप्नमें रामदर्शन, २९ शत्रुघ्नविजय, ३० अश्व सहित श-त्रुघ्नका तेजपुरमें आगमन, ऋतम्भरनामक नृपका आख्यान, जनकोपाख्या-न, ३१ जनकका नरकदर्शन कारण, ऋतम्भर ऋतुपर्ण समागम, ३२ सत्य-वानका आख्यान, शत्रुघ्न सत्यवान् सम्वाद, ३३ रावण सुहृद विद्युन्मालीका अश्व हरण, ३४ विद्युन्मालीवध, ३५ अश्वका आरण्यकऋषिके आश्रममें गमन, आरण्यक ऋषिका आख्यान, ३६ लोमशसे आरण्यकप्रति रामचरित्र निरूपण, ३७ आरण्यक मुनिको सायुज्यप्राप्ति, ३८ नर्म्मदा-सरोवरमें अश्वनिमज्जन, यमुनासरोवरमें शत्रुघ्नको मोहनास्त्रप्राप्ति, ३९

अश्वका देवपुरनामक वीरमणिनगरमें प्रत्यागमन, वीरमणिपुत्रद्वारा अश्वग्रहण; शिववीरमणि सम्वाद, ४० सुमतिके निकट शत्रुघ्नका वीरमणिचारितश्रवण, उभयपक्षमें युद्धोपक्रम, ४१ रुक्मांगद और पुष्कलका युद्ध, ४२ पुष्कलविजय, ४३ वीरभद्रके साथ पुष्कलका युद्ध पुष्कलवध, वीरभद्र शत्रुघ्न युद्ध, शत्रुघ्नपराजय, ४४ हनूमानके साथ शिवका युद्ध, हनूमानके प्रति शिवका वरदान, हनूमानका द्रोणाचल लाना, मृतसञ्जीवनी औषधके प्रभावसे सबको जीवन लाभ, शिवके निकट शत्रुघ्नकी पराजय, युद्धमें श्रीरामका आगमन, ४५-४६ श्रीराम शिवसमागम, रामदर्शनसे सबको आनन्द, हयप्रस्थान, ४७ घोडेका हेमकूटमें गमन और गात्रस्तम्भ, शौनककर्तृक हयस्तम्भकारण निवेदन, ४८, शौनक द्वारा विविध कर्म्म विपाक कथन, घोडेकी स्तम्भनसे मुक्ति, ४९ सुरथके, कुण्डलनामक घोडेका गमन, सुरथ चारित्र, ५० सुरथ अंगसम्वाद, ५१ चम्पकके साथ पुष्कलका युद्ध, पुष्कलबन्धन, चम्पकपराजय, पुष्कल मोचन, ५२ सुरथ हनुमत् सम्वाद, सुरथके युद्धमें शत्रुघ्नकी पराजय, ५३ सुग्रीवके साथ सुरथका तुमुलयुद्ध, रामास्त्रसे सुरथका राम पक्षीय सबको बांधकर निजपुरमें लाना, सुरथरामसमागम, सबकी मुक्ति, कल्की आश्रममें अश्वागमन, ५४ लवकर्तृक अश्वबन्धन, ५५ वात्स्यायन द्वारा सीता त्यागाख्यान-कथनमें रामकीर्ति श्रवणार्थ नगरमें दूतोंका गमन, ५६ रामके निकट दूतोंद्वारा रजकदुरुक्ति निवेदन, राम भरत संवाद, ५७ रजकका पूर्वजन्म चारित, ५८ सीता त्यागार्थ शत्रुघ्नके प्रति रामाज्ञा, शत्रुघ्न रामसंवाद, लक्ष्मणके प्रति सीता त्यागार्थ आदेश, सीताका वनगमन, गंगादर्शन, ५९ वाल्मीकि आश्रममें सीताका गमन, वाल्मीकिकर्तृक सीतासान्त्वन, कुश लवकी जन्मकथा, ६० शत्रुघ्न सेनापति कालजितके साथ लवका युद्ध, कालजितका मरण, ६१ हनूमानके साथ लवका युद्ध, संग्राममें हनूमानकी मूर्च्छा, ६२ शत्रुघ्नके साथ लवका तुमुल युद्ध, लवकी मूर्छा, ६३ लवके गिरने-

से शोक, कुशका आगमन, कुशके साथ युद्धमें शत्रुघ्नको मूर्च्छा, ६४ हनूमान और सुग्रीवके साथ लवका युद्ध, दोनोंको बांधना, कुशलवका सीताके निकट युद्ध वृत्तांत कथन और बद्धकपि प्रदर्शन, सीताकर्तृक रामसैन्यसञ्जीवन, कुशलवका शत्रुघ्नके निकट अश्वत्याग, ६५ शत्रुघ्नादिका अश्वसहित अयोध्यामें आगमन और सुमतिका रामके निकट संपूर्ण वृत्तांत कथन, ६६ राम वाल्मीकि संवाद, सीता लानेके निमित्त लक्ष्मणका गमन, सीताकी आज्ञासे लक्ष्मणके साथ कुशलवका अयोध्यामें गमन, वाल्मीकिकी आज्ञासे कुशलवका रामचरित गान, रामद्वारा दोनों पुत्रोंको अंकमें आरोप, रामायण रचना कारण और वाल्मीकिका पूर्वचरित वर्णन, ६७ सीतालानेके निमित्त वनमें लक्ष्मणका पुनर्गमन, राम सीता समागम, यज्ञारम्भ, रामाश्वमेध यज्ञ वर्णन, ६८ रामाश्वमेध समाप्ति और रामाश्वमेध श्रवणफल, ६९ श्रीकृष्ण चरितारंभ, वृन्दावनादि कृष्णक्रीडा, स्थल वर्णन, वृन्दावन माहात्म्य, ७० श्रीकृष्णपार्षदगण निरूपण, राधामाहात्म्य, गोपिका; मध्यस्थ परब्रह्म कृष्णस्वरूप वर्णन, ७१ वृन्दावन मथुरादिक्षेत्र महिमा, गोपियोंकी उत्पत्ति, ७२ प्रधानकृष्णवल्लभोंका वर्णन, ७३ मथुरावृन्दावन महिमा, ७४ अर्जुनका राधालोक दर्शन, स्त्रीत्वप्राप्ति, ७५ नारदका राधालोकदर्शन, स्त्रीत्वप्राप्ति, ७६ सक्षेपसे कृष्णचरित्रकीर्त्तन, ७७ कृष्णतीर्थ और कृष्णरूपगुण वर्णन, ७८ शालग्राम निर्णय, ७९ शालग्राम महिमा, वैष्णवोंकी तिलक विधि और वैष्णवोंके विविध नियमनिरूपण, ८० कलिसन्तारक हरिनाम महिमा और हरि पूजा विधि, ८१ कृष्णमंत्र दीक्षा विधान और मन्त्र शब्दार्थ निरूपण, ८२ मन्त्र दीक्षा विधि, ८३ कृष्णको वृन्दावनसे दैनन्दिनचर्य्यानिरूपण, उस प्रसंगमें राधाविलासादि वर्णन, वृन्दावनमाहात्म्य समाप्ति, ८४ वैशाखमाहात्म्यप्रारंभ, वैष्णव धर्म्म कथन, ८५ अम्बरीष नारद सम्वादमें भक्तिलक्षण और माधवमास महिमा, ८६—८७ माधवमासव्रतविधि, वैशाखस्नान माहात्म्य,

८८ पापप्रशमनार्थस्तोत्र, उस प्रसंगमें मुनिशर्म्म चरित, ८९ वैशाख मासमें विविध व्रतनियम कथन, ९० विष्णुपूजा विधि, ९१ माधव मासमें माधव पूजाजनितपुण्य महिमा उस प्रसंगमें ब्राह्मण यमसम्वाद, ९२–९३ नारकियोंका पाप और स्वर्गियोंका पुण्य निरूपण, वैष्णवोंके विविध नियम निर्णय, ९४ माधवमास स्नान प्रसंगमें धनधर्म्म विप्रचरित, ९५–९६ महीरथराजचरित, वैशाख स्नान पुण्यादि वर्णन, ९७ विविध पाप पुण्यकथन, ९८ महीधर दत्त पुण्यफलसे नारकियोंकी मुक्ति, ९९ विष्णु ध्यान निरूपण, वैशाख माहात्म्य समाप्ति, १०० रामचरित निरूपणमें शिवका राममन्दिरागमन, रामका विभीषण बन्धन वार्त्ता श्रवण, अष्टादश पुराण निवेदन, पुराण श्रवण विधि, विभीषणमोचन, विप्रावज्ञाजनित पापज दुःख कथन, १०१ श्रीरामका पुष्पकारोहणमें श्रीरंगनगर गमन, रामका वैकुण्ठ गमन, रामलक्ष्मी सम्वाद श्राद्धकाल निर्णय, शिवलिंग स्थापन पूजन विधि, भस्ममहिमा भस्ममाहात्म्य, प्रसंगमें धनञ्जयका विप्रचरित भस्मस्नान, १०२ भस्म महिमामें कुक्कुरकी मुक्ति, सहगामिनीस्त्रीमाहात्म्य वर्णन, प्रसंगमें अन्ययाचरित, १०३ त्र्यायुष मन्त्राख्यान, १०४ भस्मोत्पत्ति, भस्मादान धारण पुण्य कथन, १०५ शिवलिंगार्चननियम, १०६ अग्निमुखनामक शिवगण कथन प्रसंगमें कारांकिका नामक वेश्या चरित, १०७ हरनाम माहात्म्य प्रसंगमें विधृतराजचरित, १०८ शिवनामप्रसंगमें देवरात सुताकलाका चरित, १०९ पुराण श्रवण महिमा और पौराणिक पूजा विधि, ११०–१११ शिवपूजा वर्णन, पुराण, श्रवण, पठन क्रममें भारत श्रवण विधि, महापुराण और उपपुराणकी संख्या कथन, ११२ राम जामवन्त सम्वादमें पुराकल्पीय रामायणकथन, ११३ देवपूजादि धर्म्म पुण्यप्रसंगमें मङ्कण पुत्र अकथका चरित, रामकृत कौशल्याकी श्राद्ध विधि, रूपक राक्षसचरित, उपहृत द्रव्य पूजा कथनमें चोकितानि ब्राह्मण और मन्द

चरित पातालखण्ड, श्रवणफल, पुराणवक्ताका सत्कार कथन, बम्बईके छेपे पातालखण्डमें ११७ अध्याय हैं कथा यही हैं.

५ म—उत्तर खण्डमें—१ नारद माहेश्वर सम्वाद, उत्तर खंडोक्त विषयानुक्रम, २ बदरिकाश्रम वर्णन, ३ जालन्धर उपाख्यान, जालन्धरको ब्रह्मके निकट वर प्राप्ति, जालन्धरका विवाहादि वर्णन, ४ इन्द्रके निकट जालन्धरका दूतप्रेरण, ६ जालन्धरपक्षीय दैत्योंके साथ देवगणका युद्ध, ७ बलसे हीरकादि नाना धातुकी उत्पत्ति, ८जालन्धरके निकट इन्द्रका पराभव, विष्णुकी मूर्च्छा और विष्णुका जालन्धर-गृहवास वर्णन, ९ जालन्धरका राज्य वर्णन, १० शंकरकृत सकल तेजोमय चक्रविधान निर्म्माण, ११ कीर्तिमुखोत्पत्ति वर्णन, १२ जालन्धर सैन्य पराभव, १३ शंकर युद्धमें दैत्योंकी पराजय, १४ माया शंकर और पार्वतीसम्वाद, १५ जालन्धरपत्नी वृन्दाका स्वम वर्णन, वृन्दाका राक्षस हस्तमें पतन, १६ तापस वेपधारी विष्णुद्वारा वृन्दाका मोचन, मायाजालन्धररूपमें विष्णुका वृन्दाके साथ संगम, वृन्दाका देहत्याग और वृन्दावन नाम कथन, १७ भार्य्याके पातिव्रत्यभंग-श्रवणान्तम जालन्धरका युद्धमें गमन, १८ जालन्धरके साथ शंकरका युद्ध, शुक्रकर्तृक मृतदैत्योंको पुनर्जीवन प्राप्ति, १९ जालन्धरको शिव-सायुज्य प्राप्ति और तुलसी माहात्म्य वर्णन, २० श्रीशैल माहात्म्य, २१–२२ हरिद्वार माहात्म्य, २३ गंगा माहात्म्य और गया माहात्म्य, २४ तुलसी माहात्म्य, २५ प्रयाग माहात्म्य, २६ तुलसी त्रिरात्रव्रत, २७ अन्नदान माहात्म्य, २८ इतिहास पुराणादिकी पठन विधि, २९ इतिहास और पुराण पठनमें महाफल प्राप्ति, ३० गोपीचन्दन माहात्म्य, ३१ दीप व्रत विधान, ३२ जन्माष्टमी व्रत, ३३ दान प्रशंसा, ३४ दशरथकृत शनिस्तोत्र, ३५ त्रिस्पृशैकादशी व्रत ३६ ग्राह्यैकादशी और त्याज्यैकादशी, ३७ उन्मीलन्येकादशी व्रत, ३८ पक्षवर्धिन्ये-

कादशी व्रत, ३९ एकादशी माहात्म्य, ४० जया विजया और जयन्त्येकादशी, ४१ अग्रहायणमासकी शुक्लपक्षीय मोक्षी नामक एकादशी माहात्म्य, ४२ पौषकृष्ण सफलानामक एकादशी माहात्म्य, ४३–४४ माघकृष्णषट्तिला एकादशी माहात्म्य, ४५ माघशुक्ल जया एकादशी माहात्म्य, ४६ फाल्गुन कृष्ण विजया एकादशी माहात्म्य, ४७ फाल्गुन शुक्ल आमलकी एकादशी माहात्म्य, ४८ चैत्रकृष्ण पापमोचनी एकादशी माहात्म्य, ४९ चैत्र शुक्ल कामदा एकादशी माहात्म्य, वैशाख कृष्णा वरूथिनी एकादशी माहात्म्य, ५०–५१ वैशाख शुक्ला मोहिनी एकादशी माहात्म्य, ५२ ज्येष्ठकृष्णा परा एकादशी माहात्म्य, ५३ ज्येष्ठ शुक्ला निर्जला एकादशी माहात्म्य, ५४ आषाढ कृष्णा योगिनी एकादशी माहात्म्य; ५५आषाढ शुक्ला शयनी एकादशी माहात्म्य, ५६ श्रावण कृष्णा कामिका एकादशी माहात्म्य, ५७श्रावण शुक्ला पुत्रदा एकादशी माहात्म्य, ५८भाद्रपद कृष्णा अजा एकादशी माहात्म्य, ५९भाद्रपद शुक्ला पद्मनाभ एकादशी माहात्म्य ६०आश्विन कृष्णा इंदिरा एकादशी माहात्म्य, ६१ आश्विन शुक्ला पापांकुशा एकादशी माहात्म्य, ६२ कार्त्तिक कृष्णा रमा एकादशी माहात्म्य, ६३ कार्त्तिक शुक्ला प्रबोधिनी एकादशी माहात्म्य, ६४ पुरुषोत्तम मासकी कृष्ण कमला एकादशी माहात्म्य और ६५ एकादशी माहात्म्य समाप्ति, ६६ चातुर्मास्य व्रत विधि, ६७चातुर्मास्य व्रतोद्यापन विधि ६८ मुद्गल मुनिका आख्यान, वैतरणी व्रतविधि और गोपीचन्दन माहात्म्य ६९वैष्णवलक्षण और प्रशंसा, ७० श्रवण द्वादशी व्रत विधि, और उसकी प्रशंसा बोधक आख्यायिका, ७१ नदी त्रिरात्रव्रत विधान, ७२ भगवान्का नाम माहात्म्य कथन, पार्वती और महेश्वर संवादमें विष्णुका सहस्रनाम स्तोत्र कथन, और राम सहस्र नामके साथ तुल्यता, ७३ विष्णु सहस्रनामकी प्रशंसा, ७४ पार्वती महेश्वर संवादमें रामरक्षा स्तोत्र कथन, ७५ धर्म्म प्रशंसा, और अधर्म्म हेतु अधोगति वर्णन, ७६ गण्डिका नदी माहात्म्य और वसु स्नान प्रशंसा, ७७ आयुद–

यिक स्तोत्र, पाठ विधि और फलकथन, ७८ ऋषिपञ्चमी—व्रत-फल और आख्यायिका, ७९ अपामार्जन स्तोत्र, ८०अपामाजन स्तोत्र पठन फल और धारण प्रणाली तथा बालकोंके जीवन रक्षा हेतु स्तोत्रपाठका विधान, ८१ विष्णु माहात्म्य, विष्णुके महामंत्रकी प्रशंसा, विष्णु, माहात्म्य ज्ञापक पुण्डरीकाख्यान, नारदद्वारा पुण्डरीकके प्रति शास्त्ररहस्य उपदेश, ८२ संक्षेपसे गङ्गा माहात्म्य, ८३ वैष्णव लक्षण विष्णु मूर्ति और शालग्राम पूजा फल कथन ८४ दास, वैष्णव और भक्तका लक्षण, शूद्रादिको दासत्व, नारदादिको वैष्णवत्व और प्रह्लाद आदिकी भक्ति वर्णन, ८५ चैत्रशुक्ला एकादशीमें दोलोत्सव विधि, ८६ चैत्रशुक्ला द्वादशीको दमनोत्सव विधि, ८७ देवशयनी उत्सव, ८८ श्रावणमें पवित्रारोपण विधि, प्रसंगक्रमसे पवित्र करनेका प्रकारवर्णन ८९ चैत्रादि मासमें चम्पकादि पुष्पद्वारा विष्णु पूजाविधि और फल, ९० कार्त्तिकेय माहात्म्यारंभ, नारदके लाए कल्पवृक्षके अप्रदानसे क्रुद्ध सत्यभामाको कृष्णद्वारा स्वर्गस्थ कल्प-वृक्ष प्रदान, सत्यभामा कृत तुला पुरुषदान और कार्तिक प्रशंसा बोधक सत्यभामाका पूर्वजन्म वर्णन, ९१ सत्यभामाका पूर्व जन्म वृत्तान्तकथन, ९२ शंखासुराख्यान, प्रसंगमें शंखासुरकर्तृक वेदहरण और देवगणके प्रति विष्णुकृत कार्तिक प्रशंसा वर्णन, ९३मत्स्यरूप धारी विष्णु द्वारा शंखासुर वध, प्रयागोत्पत्ति वर्णन, ९४ कार्तिक व्रतियोंका शौच प्रत्याचार कथन, ९५ कार्तिक स्नान विधिकथन, ९६ कार्तिक व्रतियोंका नियम कथन और प्रशंसा वर्णन, ९७ कार्तिक व्रतका उद्यापन, ९८ तुलसी माहात्म्य, जालन्धराख्यायिका, शंकरको नीलकण्ठत्व प्राप्ति, जलन्धरोत्पत्ति वर्णन, ९९ जलन्धरद्वारा देवगणकी पराजय, १०० देवकृत विष्णुस्तोत्र, विष्णु-जलन्धर युद्ध, स्त्रीसहित जलन्धर गृहमें वासांगीकार, १०१ नारदके मुखसे पार्वतीका रूपातिशय सुनकर जलन्धर द्वारा शंकरके निकट राहुको

दूतरूपसे प्रेरण, कीर्तिमुखोत्पत्ति, उसकी पूजाको न करनेको शिवपूजाको निष्फलत्व, राहुका बर्बदेशोत्पत्ति वर्णन, १०२ समस्त देवगणके तेजसे शंकरद्वारा सुदर्शन निर्माण और दैत्योंके साथ शिवसेनाका युद्ध, १०३ नन्दी आदिका कालनेमि असुरोंके साथ द्वन्द्वयुद्ध, १०४ शिवकृत दैत्यपराजय, शिव और जलन्धरका युद्ध, गान्धर्व मायामें शिवको मुग्धकरके शिवरूपमें जलन्धरका पार्वतीके निकट गमन; पार्वतीका अन्तर्द्धान और स्मरणमात्रसे विष्णुका पार्वतीके निकट आना, इस वृत्तान्तके श्रवणसे वृन्दाका सतीत्व नष्ट करनेके निमित्त विष्णुका संकल्प, १०५ विष्णु कर्तृक जलन्धर रूपमें वृन्दाका सतीत्व नाश, रतिके अंतमें विष्णुरूपदर्शनसे क्रुद्धवृन्दद्वारा विष्णुके प्रति राक्षसकृत भार्य्याहरणरूप अभिशाप और वृन्दाका अग्निप्रवेश, चिताभस्म लगाकर विष्णुका चितामें वास, १०६ शंकरद्वारा जलन्धरवध, शंकरकी आज्ञासे विष्णुका मोह दूर करनेके निमित्त देवकृत आदिमाया स्तोत्र, १०७ स्त्रीरूपधारी धात्री आदि दर्शनसे विष्णुको भ्रम, मालतीको वर्वरी आख्या प्राप्ति निर्देश, धात्री और तुलसी माहात्म्य, जलन्धराख्यान समाप्ति, १०८ कार्तिक प्रशंसा, बोधककलहोपाख्यानारंभ, १०९ धर्म्मदत्त द्वारा द्वादशाक्षर मंत्र पाठन अनन्तर तुलसीयुक्त जलाभिषेचनमें राक्षसीको दिव्यदेह प्राप्ति, ११० विष्णुदास ब्राह्मण और चोलराजाका आख्यान १११ विष्णुदास और चोल राजाका वैकुंठ गमन, और मुद्गल गोत्रियोंको शिखाशून्यत्वका कारण कथन, ११२ कार्तिक प्रशंसा बोधक जय और विजयका पूर्वजन्म वृत्तांत, कलहार वैकुंठ प्राप्ति, ११३ कृष्णावेण्यादि नदीकी उत्पत्ति कथनमें ब्रह्माद्वारा यज्ञाख्यान वर्णन, अपूज्यपूजनमें दुर्भिक्ष, मरण और भय. इसकी दूसरेको प्राप्ति और कृष्ण वेण्यादि माहात्म्य, ११४ श्रीकृष्ण सत्यभामा सम्वाद, ११५ महापातकी धनेश्वर विप्राख्यान, ११६ धनेश्वरका नरक दर्शन और कार्तिक

और वृद्ध महिमाख्यान, १४६ दुर्द्धर्षेश्वर माहात्म्य उस प्रसंगमें पाशुपत अस्त्रसे इन्द्र द्वारा वृत्र वधाख्यान, १४७ खड्गधार तीर्थ माहात्म्य उस प्रसंगमें चण्ड किराताख्यान, १४८ दुग्धेश्वरतीर्थ माहात्म्य १५१ पिचुमर्द्दार्कतीर्थ माहात्म्य, १५२ सिद्धक्षेत्र माहात्म्यमें कोटराक्षी स्तोत्र, १५३ तीर्थराज तीर्थ माहात्म्य, १५४ सोमतीर्थ, १५५ कपोत तीर्थ, १५६ गोतीर्थ माहात्म्य, १५७ काश्यप तीर्थ माहात्म्य, १५८ भूतालय तीर्थ माहात्म्य, १५९ घटेश्वर माहात्म्य, १६० वैद्यनाथ माहात्म्य १६१ देव तीर्थ माहात्म्य, १६२ चण्डेश तीर्थ माहात्म्य, १६३ गाणपत्य तीर्थ, १६४ साभ्रम तीर्थ माहात्म्य, १६५ वराह तीर्थ, १६६ संगम तीर्थ, १६७ आदित्य तीर्थ, १६८ नीलकण्ठ तीर्थ, १६९ साभ्रमती सागर संगम माहात्म्य, १७० नृसिंह तीर्थ माहात्म्य, १७१ गीता माहात्म्य, १७२ गीताके द्वितीयाध्याय माहात्म्यमें वेद शर्म्माख्यान, १७३ तृतीयाध्याय माहात्म्यमें जडाख्यान, १७४ चतुर्थाध्याय माहात्म्यमें बदरीमोचन, १७५ पञ्चमाध्याय माहात्म्यमें कन्याख्यान, १७६ षष्ठाध्याय माहात्म्यमें जानश्रुतिनृपाख्यान, १७७ सप्तमाध्याय माहात्म्यमें तंत्राख्यान, १७८ अष्टाध्याय माहात्म्यमें भावशर्म्माख्यान, १७९ नवमाध्याय माहात्म्य, १८० दशमाध्याय माहात्म्य, १८१ विश्वरूप नामक गीतैकादशाध्याय माहात्म्य और तदाख्यायिका, १८२ द्वादशाध्याय माहात्म्य, १८३ त्रयोदशाध्याय माहात्म्यमें दुराचाराख्यान, हरिदीक्षित पत्नीका व्यभिचार प्रसंग, १७४। १८८ चौदहसे अठारह अध्यायतकका माहात्म्य १९० नारदकर्तृक भक्ति माहात्म्य कथन, १९१ भक्तिकी हरिदास चित्तमें स्थिति वर्णन, १९२ गोकर्णाख्यान, १९३ भागवत सप्ताहमें गोकर्ण मुक्ति वर्णन, १९४ भागवत प्रशंसा, १९५ कालिन्दी माहात्म्य, १९६ विष्णुशर्म्माका पूर्व जन्मस्मृति, भिल्लसिंहकी मुक्तिकथन, १९७ निगमोद्बो-

यमस्तोत्र और उतथ्य कन्याको पुनर्जीवन प्राप्तिकथन, २२६ यमपुरी, वृत्तांत, २२७ पापियोंको नरकभोग, और कीटयोनि प्राप्ति कथन, २२८ शालग्राम पूजाका एकादश्यादि व्रतकरणरूप साधन कथन, २२९ कृत त्रेतादि क्रमसे चतुर्युग वर्णन, यमलोकसे फिर मृत्युलोकमें प्राप्त हुए पुष्कर नामका विप्रका आख्यान, २३०—२३१ रामद्वारा वृद्ध ब्राह्मण सान्दीपनीके पुत्रका पुनर्जीवन और कृष्ण समागम, २३२, उतथ्यकन्या सुवृत्ता और उसकी तीन सखीके साथ मृगशृंगका विवाह, ब्राह्मादि आठ प्रकारके विवाहका लक्षण और उस प्रसङ्गमें सौभरि द्वारा पचास राजकन्याका पाणिग्रहणाख्यान, २३३ गृहस्थाश्रम धर्म्म, २३४ पतिव्रता धर्म्म, २३५ मृगशृङ्गके चार पुत्रोंकी उत्पत्ति, श्वेत वराह कल्पमें ऋभुका अवतार, मृगशृंग पुत्र मृकण्डुका मातागण सहित, काशीगमन और काशी प्रशंसा, २३६ मृकण्डुका आख्यान, मार्कण्डे-योत्पत्ति, मार्कण्डेय कर्तृक मृत्युञ्जय स्तोत्र, माघस्नानादि पुण्य कथन, २३७ प्रधान २ तीर्थमें माघस्नानविधि, माघमें विष्णुपूजा विधि, २३८ उत्तम गति प्राप्तिका उपाय और पाप कर्म्म निरूपण, २३९ भीमैकादशी व्रतकथा, २४० शिवरात्र व्रत विधि, २४१—२४२ तिलोत्त-माख्यानमें सुन्द और उपसुन्द वधाख्यान, २४३ कुण्डल और विकुण्डलका आख्यान, २४४ विकुण्डल यमसंवादमें यमलोक गमनाभाव कारण तुलसी प्रशंसा, और नरक प्राप्तिकर धर्म्म निरूपण, २४५ विकुण्डल यम संवादमें गंगा प्रशंसा, स्वर्ग प्राप्तिका कारण-शालग्राम शिला मूल्य देकर खरीदनेमें महा पातक, एकादशी व्रत निबन्धन दुर्गतिनाश विकुण्डल कर्तृक नरक पतित अपने बन्धुओंका उद्धार, श्रीकुण्डल और विकुण्डलका स्वर्ग गमन कथन, २४६ माघस्नान माहात्म्य. प्रसंगमें काञ्चनमालिनी कृत माघ स्नान पुण्यसे राक्षसकी मुक्ति कथन, २४७ माघस्नान प्रशंसा, और गन्धर्व कन्याख्यान, २४८ गन्धर्व कन्या द्वारा कामुक ऋषि पुत्रको पिशाच-

योनि गमनरूपशाप, लोमशका माघस्नानोपाय कथन और ऋषिपुत्रकी शापमुक्ति, २४९ प्रयाग स्नान माहात्म्यमें भद्रकनामक ब्राह्मणाख्यान, देवद्युतिकृत योगसार स्तोत्र, २५० वेदनिधि लोमश सम्वाद, वेदनिधि द्वारा गंधर्व कन्याका पाणिग्रहण, माघमाहात्म्य समाप्ति, २५१ विष्णु-मंत्र प्रशंसा, प्रतप्त शंखचक्रांकन विधि, ब्रह्म शरीरमें विष्णुद्वारा चक्रांकन कथन द्वैत और तदधिकारियोंका परम धर्मकथन, २५२ विष्णुभक्ति निरूपण शंखचक्रांक विहीनकी निंदा, २५३ ऊर्ध्व पुण्ड्र धारण विधि २५४ उपदिष्ट अवैष्णवको पुनर्वैष्णव मंत्र ग्रहण विधि, द्वैताभ्यासका महत्त्व कथन, अष्टाक्षर मंत्र २५५ विष्णु स्वरूप कथन, त्रिपाद्विभूति स्वरूप कथन, २५६ महामायाकी प्रार्थनासे विष्णु द्वारा सृष्टि वचन, २५७ सविस्तार सृष्टि कथन, योगनिद्राभिभूत विष्णुके नाभिकमलसे ब्रह्माके कपालके स्वेदसे रुद्र नेत्रसे चंद्र सूर्य्यादि, मुखादिसे ब्राह्मणों-की उत्पत्ति, दशावतार, वैकुण्ठलोक और अष्टाक्षर जपसे वैकुण्ठ प्राप्ति कथन, २५८ मत्स्यावतार चरित २५९ कूर्मावतार चरित, २६० समुद्र मन्थनाख्यान, २६१ विष्णु कर्तृक एकादशी और द्वादशी प्रशंसा तथा देवगणकी कूर्मावतार स्तुति २६२ एकादशी व्रत विधि, २६३ पाषण्ड लक्षण और तामस दर्शन स्मृति और पुराणादिका त्याज्यत्व कथन, २६४ वाराहावतार चरित कश्यपके पुत्ररूपमें विष्णुका प्रादुर्भाव संकल्प, २६७ आदिति गर्भमें वामनरूपसे विष्णुका प्रादुर्भाव और बलि छलना, २६८ परशुराम चरित, २६९ रामचरित, २७०–७१ लंकासे लौटे हुए रामका राज्याभिषेक, शिवकृत रामसीता स्तुति, रामका परलोक गमन, २७२ श्रीकृष्ण चरित, २७३ रामकृष्णके उपनयन संस्कारसे मुचुकुंद कृष्ण सम्वाद पर्य्यंत, २७४ रामकृष्णके साथ जरासंधका युद्ध और रुक्मिणी प्रसंगमें, २७५ स्यमन्तक और पारिजात हरण उपाख्यान,

२७६ उपाऽनिरुद्धाख्यान, २७७ कृष्ण द्वारा पौंड्रक वासुदेव और उसके सुतका वध, २७८ जरासन्ध वध शिशुपाल वध दन्तवक्र वध सुदामा चरित, मुसलोत्पत्ति यदुवंश ध्वंस, कृष्णका देहत्याग, अर्जुनका द्वारकामें आगमन, अर्जुन सहगामिनी कृष्णपत्नियोंका हरण, कृष्ण मंत्रमहिमा इत्यादि कथन, २७९–२८० वैष्णवाचार कथन, २८१ पार्वतीकृत विष्णुकी पूजा, रामचंद्रके अष्टोत्तर शतनाम २८२ विष्णुको सर्वोत्तमत्व कथन, विष्णुपूजनके अन्तमें दिलीपका हरिपद गमन.

ऊपर पद्मपुराणका जो विषय दियागया है उसके पाताल खण्ड और उत्तर खण्डके किसी २ अंशमें लोगोंको शंका है कि उसके अनेक अंश पुराणश्रेणीके नहीं हैं आदि पद्मपुराणमें यह विषय वर्णित न होंगे इसपर हम कहते हैं अब देखना चाहिये कि मूल पद्मपुराणका लक्षण क्या है और उसमें क्या २ विधि वर्णित है.

मत्स्यपुराणमें (५३ । १४) लिखा है–

" एतदेव यदा पद्मं ह्यभूद्धैरण्मयं जगत् ।
तद्वृत्तान्ता अयं तद्वत् पाद्ममित्युच्यते बुधैः ॥
पाद्मं तत्पञ्चपञ्चाशत् सहस्राणीह पठ्यते "

इस पद्मकी श्लोकसंख्या ५५००० है, इसमें हिरण्मय पद्म जगदुत्पत्ति वृत्तांत वर्णित है, इस कारण इस पुराणको पण्डितलोग " पाद्म "कहते हैं.

मत्स्यपुराण पद्मपुराणका जो लक्षण निर्देश करता है इस समयके प्रचलित पद्मपुराणके सृष्टिखण्डमें उसका अभाव नहीं है । सृष्टिखण्डमें ३६ अध्यायमें यह हिरण्मयपद्म और उसमें जगदुत्पत्तिकी कथा विस्तृत भावसे वर्णित हुई है (१)

---

(१) "पद्मभूतमभूदेतत् कथं पद्ममयं जगत् ।
कथं च वैष्णवी सृष्टिः पद्ममध्येऽभवत् पुरा ॥
कथ पाद्मे महाकल्पेऽभवत् पद्ममय जगत् ।
ज ार्णवगतस्येह नाभौ जातं जलोद्भवम् ॥ " इत्यादि (३६ । २–३)

इस पद्मपुराणके अन्तर्गत सृष्टिखण्डमें लिखा है–

" एतदेव च वै ब्रह्मा पाद्मं लोके जगाद वै ।
सर्वभूताश्रयं तच्च पाद्ममित्युच्यते बुधैः ॥
पाद्मं तत् पञ्च पञ्चाशत् सहस्राणीह पठ्यते ।
पञ्चभिः पर्वभिः प्रोक्तं संक्षेपाद् व्यासकारणात् ॥
पौष्करं प्रथमं पर्व यत्रोत्पन्नः स्वयं विराट् ।
द्वितीयं तीर्थपर्व स्यात् सर्वग्रहगणाश्रयम् ॥
तृतीयपर्वग्रहणे राजान्ता भूरिदक्षिणाः ।
वंशानुचरितश्चैव चतुर्थे परिकीर्तितम् ॥
पञ्चमे मोक्षतत्त्वं च सर्वज्ञत्वं निगद्यते ।
पौष्करे नवधा सृष्टिः सर्वेषां ब्रह्मकारिका ॥
देवतानां मुनीनाञ्च पितृवर्गस्तथाऽपरः ।
द्वितीये पर्वतानाञ्च द्वीपाः सप्त च सागराः ॥
तृतीये रुद्रसर्गस्तु दक्षशापस्तथैव च ।
चतुर्थे सम्भवो राज्ञां सर्ववंशानुकीर्तनम् ॥
अपवर्गस्य संस्थानं मोक्षशास्त्रानुकीर्तनम् ।
सर्वमेतत्पुराणेस्मिन् कथयिष्यामि वो द्विजाः ॥

(सृष्टिखण्ड १ । ५४ । ६०)

इस पुराणमें ब्रह्माने सर्व भूताश्रय पद्म सम्बंधीय कथा श्लोकमें प्रकाश की है,इस कारण इसका नाम पाद्म है । इस पद्मपुराणमें ५५००० श्लोक है । व्यासके निमित्त संक्षेपसे यह पांच पर्वमें विभक्त है । प्रथम पौष्करपर्व है, इस पर्वमें विराट् पुरुषकी उत्पत्ति कही गई है । दूसरा तीर्थ पर्व है, इसमें सब ग्रहोकी कथा वर्णित हुई है । तीसरे पर्वमें बडे दानी राजगणका विवरण है, चौथे पर्वमें वंशानुचरित, पांचवें पर्वमें मोक्षतत्त्व और सर्वज्ञत्व निरूपित हुआ है । पौष्कर वा प्रथम पर्वमें ब्रह्मकृत नौ प्रकारकी सृष्टि वर्णन, देवता, मुनि और पितरोंकी कथा, दूसरे पर्वमें

पर्वत समूह, द्वीप और सात समुद्रका विवरण है, तीसरे पर्वमें द्वीप रुद्रसर्ग और दक्षशाप, चौथे पर्वमें राजगणकी उत्पत्ति और सर्व वंशानुकीर्तन तथा पञ्चम पर्वमें मोक्ष साधन, मोक्षशास्त्रका परिचय इस पुराणमें यह सब कहा गया है।

सृष्टिखण्डमें ऐसे पञ्च पर्वात्मक पद्मपुराणका उल्लेख होनेपर भी अब हम पद्मपुराणका कोई पर्व नहीं देखते। सृष्टिमें ऐसा वर्णित होनेपर भी उत्तरखण्डमें अन्य प्रकारके खण्ड विभागका परिचय पाया जाता है। यथा–

दाक्षिणात्यमें प्रचारित पद्मपुराणीय उत्तर खण्डमे (१)

"प्रथमं सृष्टिखण्डञ्च द्वितीयं भूमिखण्डकम्।
पातालञ्च तृतीयं स्याच्चतुर्थं पुष्करं तथा॥
उत्तरं पञ्चमं प्रोक्तं खण्डान्यनुक्रमेण वै।
एतत् पद्मपुराणन्तु व्यासेन च महात्मना॥
कृतं लोकहितार्थाय ब्राह्मणश्रेयसे तथा।" (१।६६–६८)

१ म सृष्टिखण्ड, २ य भूमिखण्ड, ३ य पाताल खण्ड, ४ र्थ पुष्कर खण्ड और पञ्चम उत्तर खण्ड, लोक हित और ब्राह्मणके श्रेयकारण महात्मा व्यासद्वारा खण्डानुक्रमसे पद्मपुराण रचित हुआ है.

ऊपर जो पञ्चमखण्डका उल्लेख किया गया है प्रचलित पद्मपुराणमें पुष्कर खण्डका संपूर्ण अभाव है। प्रचलित पद्मपुराणके कई अध्यायोंमें पुष्कर माहात्म्य वर्णित हुआ है.

फिर गौडीय उत्तर खण्डमें लिखा हैः–

"एतदादिपुराणं वः कथितं वहुविस्तरम्।
पद्माख्यं सर्वपापघ्नं पञ्चपर्वात्मकं द्विजाः॥

१ गौडीय किसी २ पोथियोंमें "तृतीय पर्व स्वर्गश्च" अर्थात् तीसरा स्वर्ग पर्व है ऐसा लिखा है, किन्तु दाक्षिणात्यकी किसी पोथीमें ऐसा पाठ नहीं है।

प्रथमं सृष्टिखण्डन्तु द्वितीयं भूमिखण्डकम् ।
तृतीयं स्वर्गखण्डञ्च तुर्य्यं पातालखण्डकम् ।
पञ्चमन्तूत्तरं खण्डं प्रत्येकं मोक्षदायकम् ।
परिशिष्टं क्रियायोगसारं वक्ष्यामि वः पुनः ॥ ”

यह आदि पुराण बहु विस्तृत है इसका नाम पद्म है; यह पञ्चपर्वात्मक और सर्वपापनाशक है । इसका प्रथम सृष्टि खण्ड, दूसरा भूमि खण्ड, तीसरा स्वर्ग खण्ड, चौथा पाताल खण्ड और पाँचवाँ उत्तर खण्ड है । प्रत्येक खण्डही मोक्ष दायक है । इसका परिशिष्ट क्रियायोग सार है ।

वास्तवमें गौडीय पाद्मोत्तर खण्डमें जैसे खण्ड विभाग वर्णित हुए हैं, नारद पुराणमेंभी ठीक ऐसे पञ्चखण्डात्मक पद्मपुराणका विषयानुक्रम दिया गया है, सो नीचे उद्धृत करते हैं—

शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि पुराणं पद्मसंज्ञकम् ।
महत्पुण्यप्रदं नृणां शृण्वतां पठतां मुदा ॥
यथा पञ्चेन्द्रियः सर्वं शरीरीति निगद्यते ।
तथेदं पञ्चभिः खण्डैरुदितं पापनाशनम् ॥

(१ सृष्टि खण्डमें—)

पुलस्त्येन तु भीष्माय सृष्ट्यादिक्रमतो द्विज ।
नानाख्यानेतिहासाद्यैर्यत्रोक्तो धर्म्मविस्तरः ॥
पुष्करस्य तु माहात्म्यं विस्तरेण प्रकीर्तितम् ।
ब्रह्मयज्ञविधानञ्च वेदपाठादिलक्षणम् ॥
दानानां कीर्तनं यत्र व्रतानाञ्च पृथक् पृथक् ।
विवाहः शैलजायाश्च तारकाख्यानकं महत् ॥
माहात्म्यञ्च गवादीनां कीर्तिदं सर्वपुण्यदम् ।
कालकेयादिदैत्यानां वधो यत्र पृथक् पृथक् ॥
ग्रहाणामर्चनं दानं यत्र प्रोक्तं द्विजोत्तम ।
तत्सृष्टिखण्डमुद्दिष्टं व्यासेन सुमहात्मना ॥

(२ य भूमि खण्ड—)

पितृमात्रादिपूज्यत्वे शिवशर्म्मकथा पुरा ।
सुव्रतस्य कथा पश्चात् वृत्रस्य च वधस्तथा ॥
पृथोर्वेणस्य चाख्यानं धर्म्माख्यानं ततः परम् ।
पितृशुश्रूषणाख्यानं नहुषस्य कथा ततः ॥
ययातिचरितञ्चैव गुरुतीर्थनिरूपणम् ।
राज्ञा जैमिनिसम्वादो बह्वाश्चर्य्यकथा ततः ॥
कथा ह्यशोकसौन्दर्य्या हुण्डदैत्यवधोचिता ।
कामोदाख्यानकं तत्र विहुण्डवधसंयुतम् ॥
कुण्डलस्य च संवादश्च्यवनेन महात्मना ।
सिद्धाख्यानं ततः प्रोक्तं खण्डस्यास्य फलोदयम् ॥
सूतशौनकसम्वादं भूमिखण्डमिदं स्मृतम् ॥

(३ य स्वर्ग खण्डमें—)

ब्रह्माण्डोत्पत्तिरुदिता यत्रर्षिभिश्च सौतिना ।
सभूमिलोकसंस्थानं तीर्थाख्यानं ततः परम् ॥
नर्म्मदोत्पत्तिकथनं तत्तीर्थानां कथाः पृथक् ।
कुरुक्षेत्रादितीर्थानां कथाः पुण्याः प्रकीर्त्तिताः ॥
कालिन्दीपुण्यकथनं काशीमाहात्म्यवर्णनम् ॥
गयायाश्चैव माहात्म्यं प्रयागस्य च पुण्यकम् ।
वर्णाश्रमानुरोधेन कर्म्मयोगनिरूपणम् ।
व्यासजैमिनिसम्वादः पुण्यकर्म्मकथाचितः ।
समुद्रमथनाख्यानं व्रताख्यानं ततः परम् ॥
ऊर्ज्जपञ्चाहमाहात्म्यं स्तोत्रं सर्वापराधनुत् ।
एतत् सर्वाभिधं विप्र सर्वपातकनाशनम् ॥

(४ थे पाताल खण्डमें-)

रामाश्वमेधे प्रथमं रामराज्याभिषेचनम् ।
अगस्त्याद्यागमश्चैव पौलस्त्यस्य च कीर्त्तनम् ॥
अश्वमेधोपदेशश्च हयचर्य्या ततः परम् ।
नानाराजकथाः पुण्या जगन्नाथानुवर्णनम् ॥
वृन्दावनस्य माहात्म्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
नित्यलीलानुकथनं यत्र कृष्णावतारिणः ॥
माधवस्नानमाहात्म्ये स्नानदानार्चने फलम् ।
धरावराहसम्वादो यमब्राह्मणयोः कथा ॥
सम्वादो राजदूतानां कृष्णस्तोत्रनिरूपणम् ।
शिवशम्भुसमायोगो दधीच्याख्यानकं ततः ॥
भस्ममाहात्म्यमतुलं शिवमाहात्म्यमुत्तमम् ।
देवरातसुताख्यानं पुराणज्ञप्रशंसनम् ॥
गौतमाख्यानकञ्चैव शिवगीता ततः स्मृता ।
कल्पान्तरी रामकथा भरद्वाजाश्रमस्थितौ ॥
पातालखण्डमेतद्धि शृण्वतां ज्ञानिनां सदा ।
सर्वपामप्रशमनं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥

(५ म उत्तर खण्डमें-)

पर्वताख्यानकं पूर्वं गौर्य्यै प्रोक्तं. शिवेन वै ।
जालन्धरकथा पश्चाच्छ्रीशैलाद्यनुकीर्त्तनम् ॥
सगरस्य कथा पुण्या ततः परमुदीरितम् ।
गङ्गाप्रयागकाशीनां गयायाश्चापि पुण्यकम् ॥
आम्रादिदानमाहात्म्यं तन्महाद्वादशीव्रतम् ।
चतुर्विंशैकादशीनां माहात्म्यं पृथगीरितम् ॥
विष्णुधर्म्मसमाख्यानं विष्णुनामसहस्रकम् ।
कार्त्तिकव्रतमाहात्म्यं माघस्नानफलं ततः ॥

जम्बूद्वीपस्य तीर्थानां माहात्म्यं पापनाशनम् ।
साभ्रमत्याश्च माहात्म्यं नृसिंहोत्पत्तिवर्णनम् ॥
देवशर्मादिकाख्यानं गीतामाहात्म्यवर्णने ।
भक्ताख्यानञ्च माहात्म्यं श्रीमद्भागवतस्य ह ॥
इन्द्रप्रस्थस्य माहात्म्यं बहुतीर्थकथान्वितम् ।
मंत्ररत्नाभिधानञ्च त्रिपाद्भूत्यनुवर्णनम् ॥
अवतारकथा पुण्या मत्स्यादीनामतः परम् ।
रामनामशतं दिव्यं तन्माहात्म्यञ्च वाडव ॥
परीक्षणञ्च भृगुणा श्रीविष्णोर्वैभवस्य च ।
इत्येतदुत्तरं खण्डं पञ्चमं सर्वपुण्यदम् ॥

ब्रह्माजी बोले कि, हे पुत्र ! मनुष्योंको अधिक पुण्यदायक पद्मपुराण नामक पुराण कहता हूं, श्रवण करो.

जैसे पञ्चेन्द्रिय युक्त सब कोई शरीरी कहे जाते हैं, उसी प्रकार पाप नाशकारी यह पद्मपुराण पांच खण्डमें वर्णित हुआ है, प्रथम सृष्टि-खण्डमें पुलस्त्यकर्तृक भीष्मके सृष्ट्यादि क्रममें नानाख्यान और इतिहासके साथ विस्तृत धर्म्म कथन, पुष्कर माहात्म्य, ब्रह्मयज्ञ विधान, वेदपाठादिके लक्षण दान और पृथक् २ व्रत, पार्वतीका विवाह और तारकाख्यान कीर्ति और पुण्यदायक गवादिका माहात्म्य और कालके-यादि दैत्यका वध ग्रहोंकी अर्चना और दान इत्यादि पृथक् २ रूपसे इस सृष्टि खण्डमें निर्दिष्ट हुए हैं.

द्वितीय भूमिखण्डमें पिता मातादिकी पूजा, शिव शर्म्मकथा, सुव्रतकी कथा, वृत्र वध कथा, पृथु और वेणराजोपाख्यान और धर्म्माख्यान, पितृशुश्रूषा, नहुष वृत्तान्त, ययाति, गुरु और तीर्थ निरूपण, राजा और जैमिनि-सम्वाद, अत्याश्चर्य्य हुण्डदैत्य चरित, अशोकसुन्दरीकी कथा, विहुण्ड वध संयुक्त कामोदाख्यान, महात्मा च्यवन कुण्डल सम्वाद, अनन्तर सिद्धाख्यान, सूत शौनक सम्वाद इसमें भूमि खण्डका विषय विवृत हुआ है।

तीसरे स्वर्ग खण्डमें सौति ऋषि सम्वाद, ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति, भूमिके साथ लोक संस्थान तीर्थाख्यान, नर्मदाकी उत्पत्ति कथन उस तीर्थकी पृथक् कथा कुरुक्षेत्रादि तीर्थोंकी पवित्र कथा, कालिन्दी पुण्य कथा, काशी माहात्म्य, पवित्र गया माहात्म्य, प्रयागमाहात्म्य, वर्णाश्रमके अनुरोधमें कर्म्म योग निरूपण, पुण्य रूप कथा युक्त व्यास और जैमिनि सम्वाद, समुद्रमथनाख्यान, व्रताख्यान, ऊर्ज्ज और पञ्चाह माहात्म्य सर्वापराध भजन स्तोत्र आदि सर्वपातन नाशन कार्य्योंका उल्लख है.

चौथे पाताल खण्डमें—रामाश्वमेध, रामका राज्याभिषेक, अगस्त्यका आगमन, पौलस्त्य चरित अश्वमेधोपदेश, हयचर्य्या, अनेक राज कथा, जगन्नाथाख्यान, वृन्दावन माहात्म्य, कृष्णावतारमें नित्य लीला-कथन, माघ स्नान, दान और पूजा फल, धरणी वराह सम्वाद यम और ब्राह्मणकी कथा, राजदूतोंका सम्वाद, कृष्णस्तोत्र, शिव शंभु समायोग, दधीचिका आख्यान, भस्म माहात्म्य, शिव माहात्म्य देवरात सुताख्यान, पुराणज्ञ प्रशंसा, गौतमाख्यान, शिवगीता, भरद्वाजाश्रमस्थ-कल्पान्तरी रामकथा, सर्वपापनाशक और सर्वाभीष्ट फलप्रद पाताल-खण्डमें यह सब वृत्तान्त हैं.

पञ्चम उत्तर खण्डमें—प्रथम गौरीके प्रति शिव प्रोक्त पर्वताख्यान जालन्धर कथा, श्रीशैल माहात्म्य, सगरकी कथा, गङ्गा—प्रयाग—काशी और गयाकी पुण्य कथा, २४ प्रकार एकादशी कथा, एकादशी माहात्म्य विष्णु धर्म्म, विष्णुके सहस्र नाम, कार्तिक व्रत माहात्म्य, माघ स्नान फल, जम्बूद्वीपके अन्तर्गत पापनाशक तीर्थ समूहका माहात्म्य, साभ्रमती माहात्म्य, नृसिंहोत्पत्ति, देवशर्मादिकी कथा, गीतामाहात्म्य, भक्ताख्यान श्रीमद्भागवतका माहात्म्य, बहुतीर्थ कथा, मंत्ररत्न, त्रिपाद् विभूति वर्णन मत्स्यादि क्रमसे पुण्यमयी अवतार कथा, रामशतनाम और उनका माहात्म्य, भृगुकी परीक्षा और श्रीविष्णुका वैभव, यह सब पुण्य रूप पांचवें उत्तर खण्डमें वर्णित हुआ है.

ऊपर जितने प्रमाण उद्धृत हुए हैं, प्रचलित पद्मपुराणके साथ मिलाकर देखनेसे हम ऐसा जानसकते हैं कि, आदि पद्मपुराणके लक्षण और विषयादिका प्रचलित पद्मपुराणमें संपूर्ण अभाव नहीं है। मत्स्य और नारद पुराणमें जैसे लक्षण निर्दिष्ट हुए हैं वे सबही प्रचलित पद्मपुराणमें पाये जाते हैं। किन्तु पाहिले पद्मपुराणका जैसा खण्ड विभाग था उसका संपूर्ण परिवर्तन हुआ है.

प्रचलित पद्मपुराण देखतेही हम पद्मपुराणके तीन संस्कारका परिचय पाते हैं—१ म संस्करणमें पुष्करादि करके पाँच पर्वोंमें पद्मपुराण विभक्त था पाँचखण्डमें विभक्त नहीं था। सृष्टि खण्डसे हम इस पञ्चपर्वात्मक पाद्मका सन्धान पाते हैं। विष्णु पुराणमें तत्पूर्ववर्ती पद्मपुराणका जो उल्लेख है संभवतः वही पञ्चपर्वात्म कथा। १ म संस्करणमें पौष्कर प्रथमपव गिना जाने परभी दूसरे संस्करणमें पौष्कर दूसरे खण्डमें बदल गया और सृष्टि खण्डमें प्रथम पर्वका स्थान अधिकार किया। दाक्षिणात्यमें प्रचलित पद्मोत्तर खण्डसे उसका प्रमाण पायाजाता है तीसरे संस्करणमें पौष्कर खण्डका लोप हुआ संभवतः सृष्टि खण्डके पुष्कर माहात्म्यके अन्तर्गत हुआ, स्वर्ग खण्डने उसका स्थान अधिकार किया गौडीय पद्मपुराण और नारद पुराणसे इस तीसरे संस्करणके लक्षणादि पाये। किन्तु इसके पीछे भी चौथा संस्करण हुआ। दाक्षिणात्य लोगोंने स्वर्गखण्ड ग्रहण नहीं किया, उन्होंने स्वर्ग खण्डके स्थानमें ब्रह्मखण्ड ग्रहण किया और यथाक्रमसे आदि खण्ड, भूमिखण्ड, ब्रह्मखण्ड पातालखण्ड सृष्टिखण्ड और उत्तर खण्ड इन छः खण्डोंमें पद्मपुराण विभक्त कर लिया (१)

---

(१) पूनाके आनन्दआश्रमसे जो पद्मपुराण प्रकाशित हुआहै। इसके आदि खण्ड, और ब्रह्मखण्डको गौडीय पौराणिक लोग कोईभी 'पाद्म' कहकर स्वीकार नहीं करता। इस देशकी बहुत सृष्टि खण्टकी पोथी आदि वा ब्रह्म कहकर उक्त हुई हैं। पुराणलक्षणके अनुसार सृष्टिखण्टही पहिला है। उक्त आदि और ब्रह्मखण्ड देखनेसे ही वे दूसरे ग्रन्थ ज्ञात-

पद्मपुराणके कई संस्कार हुए हैं एक प्रथम संस्कार वेदव्यासजीका दूसरा संस्कार बौद्धधर्मके ह्रास और सनातन धर्मके पुनः अभ्युदय समयमें हुआ और एक संस्करण नारदपुराणके अनुसार रहा इस प्रकार यह संस्कार हुए यह संस्करण युग भेद के कारणसे रहे परन्तु पश्चात् ग्यारहवीं बारहवीं शताब्दीमें जब कि श्रीस्वामी रामानुजाचार्य और माधवाचार्यका मत इस देशमें अधिक प्रचलित हुआ तब सम्प्रदायके कारण इसमें बहुतसी प्रक्षिप्त श्लोकावली मिलाई गई वही मानो एक प्रकारका चतुर्थ संस्कार है उदाहरणके लिये पाखण्डियोंके लक्षण माया वाद निन्दा, 'तामस' पुराणवर्णना; ऊर्द्ध्व पुण्ड्र आदि वैष्णवचिह्न धारणकी कथा भी द्वैतवादकी सुख्याति इत्यादि तृतीय संस्करणमें नहीं थी किन्तु इस चौथे संस्करणके समय यह सब आधुनिककथा प्रविष्टहुई है। इस चौथे संस्करणके उत्तरखण्डमें (२६३। ६६–८९ लिखा है.

होतेहैं अथवा यों मान लिया जाय कि किसी कल्पके द्वापरयुगमें इस प्रकारका विभाग हुआथा नीचे इन दोनों खंडोंकी सूची दीजाती है।

आदि खण्डमें–१ पद्मपुराणका खण्ड विभाग निर्णय, और पाठफल, २ प्राकृतसर्गवर्णन ३ जनपद नदी और पर्वतादि वर्णन, ४ उत्तरकुरुआदि वर्णन, ५ रमणकादिवर्ष निर्णय, ६ भारतवर्ष बर्णन, ७ भारतके चार युगवर्णन, ८ शाकद्वीपादि वर्णन, ९ शाल्मलि और क्रौञ्चद्वीप वर्णन, १० दिलीपाख्यान ११ पुष्करतीर्थ माहात्म्य, १२ जम्बू मार्गादि तीर्थ कथन, १३–१५ नर्मदा माहात्म्य १६ कावेरी सङ्गम माहात्म्य, १७–१८ नर्मदा कूलस्थतीर्थ समूहवर्णन, १९ शुक्रतीर्थ वर्णन, २० भृगुतीर्थ माहात्म्य, २१ नर्मदास्थ अश्वतीर्थादि बहुतीर्थ वर्णन, २२ नर्म्मदातीर्थ माहात्म्य, २३ नर्म्मदा स्नान माहात्म्य, २४ चर्म्मण्वतीआदि नदी तीरस्थ तीर्थ वर्णन, २५ वितस्तामाहात्म्य, २६ कुरुक्षेत्र माहात्म्य, २७ स्यमन्तपञ्चक माहात्म्य, २८ धर्म्मतीर्थ नागतीर्थादि माहात्म्य, २९ कालिन्दी तीर्थ माहात्म्य, ३०–३१ विकुण्डलाख्यान, ३२ सरस्वती, गोमतीआदि तीरस्थतीर्थ प्रसंग, ३३ वाराणसी माहात्म्य, ३४ ओङ्कारमाहात्म्य, ३५ कपाल मोचन–माहात्म्य, ३६ मध्यमेश्वर माहात्म्य, ३७ वाराणसीस्थ तीर्थ माहात्म्य, ३८–३९ गया आदि बहुतसे तीर्थ कथन, ४० तीर्थसेवादिफल, ४१–४२ प्रयाग माहात्म्य, ४३–

रुद्र बोले, हे देवि ! तामस शास्त्रकी कथा सुनो, इस शास्त्रके श्रवणमात्रसे ही ज्ञानियोंको पातित्य उत्पन्न होता है । मैंने पहिले पहिले शैव पाशुपतादि शास्त्र कहे थे, तदनन्तर मेरी शक्तिमें आसक्त ब्राह्मणोंने जो तामस शास्त्र कहे थे उनको सुनो, कणाद, वैशेषिक शास्त्र, गौतम, न्याय, कपिल सांख्य, धिषण अतिगर्हित चार्वाकमत और दैत्योंके

–प्रयागयात्रा विधि, ४४ प्रयागयात्राफल, ४५ अनाशक फलवर्णन, ४६–४९ प्रयाग माहात्म्य, ५० तीर्थ कर्म्मयोग कथन, ५१ कर्म्मयोग, ५२ नरकृत्य निर्णय ५३ साध्वाचार, ५४ द्विजकर्म्म कथन, ५५ वैष्णवाचार, ५६ द्विजका अभक्ष्य निर्णय, ५७ दान धर्म्म, ५८ वानप्रस्थाश्रम वर्णन, ५९ संन्यास वर्णन ६० भिक्षाचर्या, ६१ विष्णुरहस्य, ६२ पुराणावयवकथनमें पात्रकी श्रेष्ठताकथन ।

ब्रह्मखण्डमें–१ सूतशौनक सम्वादमें हरिभक्तिवर्णन और वैष्णवलक्षण निरूपण, २ हरिमन्दिरलेपनमहिमा, दण्डकनामकचौर चारित, व्यासजैमिनि सम्वादमें कार्तिक माहात्म्यारम्भ, दीपदान माहात्म्य, ४ ब्रह्मनारद सम्वादमें जयन्ती व्रतमहिमा, ५ पुत्र-जन्मोपाय श्रीधरनामक द्विज चारित, ६ वारनारी चारित, ७ राधाजन्माष्टमी, राधाजन्माष्टमी प्रभावसे कलावती नामक वारांगना उद्धार, ८ समुद्र मंथन कथारंभ इन्द्रके प्रति दुर्वासाका शाप, विष्णुकी आज्ञासे समुद्रमथनोपक्रम, ९ कूर्म्म रूपमें हरिका पर्वत धारण, हरका विषपान और अलक्ष्मीकी उत्पत्ति, १० ऐरावत, महालक्ष्मी और अमृतकी उत्पत्ति, विष्णुका मोहित रूपधारण, राहुका शिरश्छेद, समुद्रमथनकथा समाप्त, ११ गुरुवार व्रत और तत्प्रसंगमें भद्रश्रवराजकन्या श्यामवालाका चारित, १२ दीननाथ राजाका चारित, गालवकर्तृक नरमेध यज्ञनिरूपण, १३ कृष्णजन्माष्टमी व्रत माहात्म्य और तत्प्रसंगमें चित्रसेन राजचारित, १४ ब्राह्मणमहिमा और तत्प्रसङ्गमें भीमनामक शूद्रचरित, १५ एकादशी माहात्म्य और तत्प्रसङ्गमें बलभवैश्य और उसकी स्त्री महारूपाका चारित्र, १६ पूर्णिमामें विष्णुपूजाव्रत और तत्प्रसङ्गमें कालद्विज चारित, १७ हरिचरणोदकवर्णन, तत्प्रसङ्गमें सुदर्शनविप्रचरित, १८ अगम्यागमन–प्रायश्चित्त, १९ अभक्ष्याभक्षणप्रायश्चित्त, २० कार्तिकमहिमा कार्तिकमें राधा दामोदरपूजा, तत्प्रसंगमें शङ्कर और उसकी स्त्री कलिप्रियाका चारित, २१ कार्तिक मास व्रतविधि, २२ तुलसी और धात्रीमहिमा, २३ विष्णुपञ्चकविधि और उसके प्रभावसे दण्डकचौरोद्धार, कार्तिकमाहात्म्य समाप्ति, २४ अनेकप्रकारके दान और उनका फल, २६ प्रतिज्ञाखण्डनदोष वर्णनमें सुन्दरचरित्र, ब्रह्मखण्डका श्रवण फल । बम्बईके छपे पद्मपुराणमें भी यह ब्रह्मखण्डही चतुर्थखण्ड माना है और उस पद्मपुराणमें संयुक्त है ।

निधनार्थ बुद्धरूपी विष्णुने नग्ननीलाम्बरोंके असत् शास्त्र कहे थे माया-वाद रूप असत् शास्त्र प्रच्छन्न बौद्ध गिने जाते हैं। कलिकालमें ब्राह्मण रूपमें मैंने ही यह मायावाद प्रचार किया है। इसमें लोक निन्दित श्रुति समूहका कदर्थ कर्म्मरूप परित्याग, सर्वकर्म्म परिभ्रष्ट विधर्म्मियोंकी कथा, परमात्माके साथ जीवका ऐक्य, ब्रह्मका निर्गुणरूप इत्यादि प्रतिपादित हुआ है। कलिकालमें मनुष्योंके मुग्ध करनेके निमित्तही जगत्में इन सब शास्त्रोंका प्रचार हुआ है, मैं जगत्के नाशके निमित्त यह सब अवैदिक महाशास्त्र वेदार्थवत् रक्षा करता हूं, पूर्वकालमें जैमिनि ब्राह्मणने भी निरीश्वरवाद प्रचार करनेके निमित्त वेदकी कदर्थयुक्त पूर्व-मीमांसा रची थी, मैं तामस पुराणोंको कहता हूं प्रमाण—

"शृणु देवि प्रवक्ष्यामि तामसानि यथाक्रमम्।
तेषां स्मरणमात्रेण मोहः स्याज्ज्ञानिनामपि॥
प्रथमं हि मयैवोक्तं शैवं पाशुपतादिकम्।
मच्छक्त्यावेशितैर्विप्रैः प्रोक्तानि च ततःशृणु॥
कणादेन तु संप्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत्।
गौतमेन तथा न्यायं सांख्यं तु कपिलेन वै॥
धिष्णेन च तथा प्रोक्तं चार्वाकमतिगर्हितम्।
दैत्यानां नाशनार्थाय विष्णुना बुद्धरूपिणा॥
बौद्धशास्त्रमसत्प्रोक्तं नग्ननीलपटादिकम्।
मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्ध उच्यते॥
मयैव कथितं देवि कलौ ब्राह्मणरूपिणा।
अपार्थश्रुतिवाक्यानां दर्शयँल्लोकगर्हितम्॥
स्वकर्मरूपं त्याज्यत्वमत्रैव प्रतिपाद्यते।
सर्वकर्मपरिभ्रंशैर्वैधर्मत्वं तदुच्यते॥
परेशजीवयोरैक्यं मया तु प्रतिपाद्यते।

ब्रह्मणोस्य स्वयं रूपं निर्गुणं वक्ष्यते मया ॥
सर्वस्य जगतोप्यत्र मोहनार्थं कलौ युगे ।
वेदार्थवन्महाशास्त्रं मायया यदवैदिकम् ॥
मयैव कल्पितं देवि जगतां नाशकारणात् ।
मदाज्ञया जैमिनिना पूर्वं वेदमपार्थकम् ॥
निरीश्वरेण वादेन कृतं शास्त्रमहत्तरम् ।
शास्त्राणि चैव गिरिजे तामसानि निबोध मे॥अ०२३५।२-१३
मात्स्यं कौर्मं तथा लैङ्गं शैवं स्कान्दं तथैव च ।
आग्नेयं च षडेतानि तामसानि निबोध मे ॥ १८ ॥
गौतमं बार्हस्पत्यं च साम्वर्तं च यमं स्मृतम् ।
सांख्यं चोशनसं चेति तामसा निरयप्रदाः ॥ २६ ॥

इसी प्रकार मत्स्य कूर्म लिंग शिव स्कन्द पुराणको तामसी कहा है तथा गौतम बृहस्पति साम्वर्त यम सांख्य और उशना स्मृतिको तामस और नरक देनेवाली कहा है इसी प्रकार २३५ अध्याय मुद्रित पद्मपुराणके ५ श्लोकमें " शंखचक्रोर्ध्वपुंड्रादिचिह्नैः प्रियतमैर्हरेः । रहिता ये द्विजा देवि ते वै पापंडिनः स्मृताः"। जो शंख चक्रसे रहित ब्राह्मणको पाखण्डी कहा है तथा भस्मधारीको पापंडी कहा है मेरी समझमें जहां कहीं पुराणोंमें इस प्रकारके संप्रदाय द्वेष सूचक श्लोक पाये जांय वे निश्चयही आधुनिक और प्रक्षिप्त हैं इसमें कोई सन्देह नहीं और बुद्धिमान् उनको व्यासजीके निर्मित श्लोक नहीं मानते यही श्लोक इस बातकी साक्षी देते हैं कि एक समय संप्रदाय द्वेषभी इतना बढ गया था कि पुराणोंमें प्रक्षिप्त श्लोक मिलाकर महानुभावोंने अपने चित्तका गुवार-मिटाया.

लिखित पद्मपुराणके उत्तरखण्डमें २८२ अध्याय हैं और श्रीवेंकटेश्वर यंत्रालयके मुद्रित पद्मपुराणके उत्तर खण्डमें २५५ अध्याय हैं कहीं कहीं २ दोअध्यायोंको एक एक अध्याय होगया है कथा भागमें कोई भेद

नहीं है और उसमें यह उत्तर खण्ड छठा है इस कारण थोडासा विवरण उसका यहां लिखते हैं।

प्रथम सृष्टि खण्ड इसमें सूचीके अनुसार ८२अध्याय हैं दूसरा भूमिखण्ड इसमें सूचीके अनुसार १२५अध्याय हैं तीसरा स्वर्ग खण्ड यह पीछे लिखी सूचीके अनुसार नहीं है इस कारण इसके अध्याय क्रम लिखते हैं.

तृतीय स्वर्ग खण्डमें. १ स्वर्ग खण्ड कथारंभ, २ ब्रह्माण्डोत्पत्ति, ३ सुदर्शन द्वीप उपद्वीप विभाग कथन, ४ मेरु पर्वतके उत्तर देश कथन, ५ मेरु पर्वतके दक्षिण देश कथन, ६ भारत वर्ष वर्णन, ७ लोकस्थिति वर्णन, ८ जम्बूद्वीप शाकद्वीप परिमाण, ९ घृतोद समुद्र युक्त द्वीप विभाग वर्णन, १० दिलीपका वशिष्ठसे समागम, ११ वशिष्ठका दिलीप-को पुष्कर माहात्म्य कहना, १२ महाकालकोटि तीर्थ भद्रतीर्थादिमाहात्म्य कथन, १३ नर्मदा तीर्थ क्षेत्रपाल जलेश्वर दिन नर्मदाके दक्षिण तीर्थ वर्णन, १४ जलेश्वरतीर्थोत्पत्ति, महादेवजीका नारदजीको त्रिपुरके पास भेजना, १५ अग्निका त्रिपुर जलाना जलेश्वरोत्पत्ति और माहात्म्य, १६ कावेरी नर्मदा संगम माहात्म्य, १७ नर्मदाके उत्तरतीर पत्रेश्वर माहात्म्य, १८ शूल भेद तीर्थ सोमेश्वर नागेश्वरादि अनेक तीर्थ माहात्म्य, १९ भार्गवेश्वरतीर्थ, २० नरक तीर्थस्थित विलयतीर्थ गोतीर्थ आदि वर्णन, २१ विहगेश्वर नर्मदेश्वरादि तीर्थ वर्णन, २२ प्रमोहिन्या गन्धर्व कन्या इतिहास वर्णन, २३ लोमशका और पिशाचपनेको प्राप्त हुए द्विज पुत्रका संवाद, २४ जयन्ती तीर्थ माहात्म्य वर्णन दक्षिण सिंधु चर्मण्वती अर्बुदाचल सरस्वती सागर संगमादि तीर्थ वर्णन, २५ काश्मीरके तक्षक नाग भवन वितस्तातीर्थ मलदरुद्रास्पद तीर्थादि वर्णन, २६ कुरुक्षेत्र मन्तर्णकादि अनेक तीर्थ वर्णन, २७ कन्या तीर्थ सोम तीर्थ आदि अनेक तीर्थ और कुरुक्षेत्र सीमावर्णन, २८ धर्मतीर्थ कलाप वन सौगन्धिक वनादि अनेक तीर्थ वर्णन, २९ यमुना तीर्थ स्नान माहात्म्य, ३० हम-

कुंडल वैश्यका इतिहास, ३१ देवदूत द्वारा विकुण्डलका पूर्व जन्म वृत्तान्त वर्णन, ३२ सुगंध तीर्थ रुद्र तीर्थादि गोमती गंगा संग माहात्म्य-वर्णन, ३३ विस्तारसे काशी माहात्म्य वर्णन, ३४ विमलोंकार पंचायतन माहात्म्य, ३५ वाराणसीमें स्थित कपर्दीश पिशाच मोचन माहात्म्य वर्णन, ३६ मध्यमेश्वरमाहात्म्य, ३७ वाराणसीमें स्थित प्रयाग तीर्थ विश्वरूप तीर्थ आदि शुक्रेश्वर तीर्थ माहात्म्य वर्णन, ३८ गया तीर्थ अक्षयवट ब्रह्मारण्यमें स्थित ब्रह्म सरोवरादि अनेक तीर्थ वर्णन, ३९ संध्यातीर्थ विद्या तीर्थ आदि अनेक तीर्थ वर्णन युधिष्ठिरकी तीर्थ यात्रा- ४० प्रयाग माहात्म्यमें धर्म मार्कण्डेय सम्वाद, ४१ प्रयागक्षेत्र सीमादि-माहात्म्य, ४२ प्रयागतीर्थमें दानादिमहिमा, ४३ तीर्थयात्रा विधिमें प्रयागके तीर्थकथन, ४४ प्रयागमें स्थित मानसतीर्थ ऋणमोचनतीर्थ माहात्म्य, ४५ प्रयागमें गंगा यमुनाका माहात्म्य, ४६ प्रयागको पूज्यत्व कथन,४७ सब तीर्थोंसे प्रयागकी अधिकता, ४८ प्रयागको प्रजापति तीर्थ-त्व कथन, ४९ युधिष्ठिरका मार्कण्डेयको महादान देना, ५० विष्णु भक्ति प्रशंसा, ५१ कर्मयोग वर्णनमें वर्णाश्रमसामान्य धर्म, ५२ कर्तव्यनिषिद्ध धर्म कथन, ५३ ब्रह्मचारीधर्म कथन, ५४ गृहस्थ धर्म कथन गृहस्थाचारनीति कथन, ५६ भक्ष्याभक्ष्य निर्णय, ५७ दानधर्म वर्णन, ५८ वानप्रस्थाश्रमाचारधर्म, ५९ यति-धर्म कथन, ६० यति नियमविधान कथन ६१, सब धर्मोंमें विष्णु भक्तिका आधिक्यवर्णन, ६२ पद्मपुराण माहात्म्यवर्णन स्वर्ग खण्ड-की सामाप्ति । यह खण्ड आदिखण्डसे विशेष मिलता है । अ० २६ चौथा ब्रह्मखण्ड है इसकी सूचीभी पीछे नोटमें लिखे ब्रह्मखण्डके समान है, पांचवां पातालखण्ड है यह भी प्रायः सूचीसे मिलता है इसमें ११७ अध्याय हैं, छठा उत्तर खण्ड है इसमें २५५ अध्याय हैं सूचीवाले और इसकी कथा एक हैं आगे क्रियायोग सारख ड है इसमें २६ अध्याय हैं ।१

जैमिनिव्याससम्वाद, भगवद्भक्ति वर्णनमें सृष्टिवर्णन, ३ गंगाद्वारमाहात्म्य वर्णन, प्रयागमाहात्म्यमें प्रणिधिवैश्य वृत्तान्त, ५ विक्रमराजपुत्र माधव वृत्तांत वर्णन, ६ वीरवरका भीमनादनामक गण्डकको नाश करना वीरवरका इतिहास, ७ धर्मस्व ब्राह्मणका वृत्तांत वर्णन, ८ गंगामाहात्म्यमें पद्मगंधाका वृत्तान्त, ९ गंगामाहात्म्यमें यात्राविधि, १० विष्णुपूजा माहात्म्य वर्णन सुवर्णभूपचरित्र वर्णन, ११ विष्णुपुजाविधि वर्णन, १२ फाल्गुन वैशाख आदि महीनोंमें श्रीकृष्ण पूजाविधि वर्णन, १३ ज्येष्ठसे आरंभकर कार्तिकादि महीनोंमें विष्णुपूजाविधि, १४ मार्गशीर्षसे माघ मासपर्यंत विष्णुपूजा विधि, १५ भगवन्नाममाहात्म्य, १२ हरिभक्ति माहात्म्य वर्णनमें चक्रिकनामक शबरवृत्तान्त, १७ भगवद्भक्तिमाहात्म्यमें भद्रतनुब्राह्मणका वृत्तान्त वर्णन, १८ जगन्नाथक्षेत्र माहात्म्यवर्णन, १९ भगवतके निमित्त वस्तु समर्पण माहात्म्यवर्णनमें वीशुब्राह्मणकथा, २० दानमाहात्म्यवर्णनमें हरिशर्म ब्राह्मण वृत्तान्त वर्णन, २१ ब्रह्माद्वारा हरिशर्मके निमित्त विविधदानपात्रता वर्णन, २२ एकादशीमाहात्म्यवर्णन, २३ एकादशी व्रतमाहात्म्य वर्णनमें कोचरशनामक वृत्तान्तवर्णन, २४ तुलसीवृक्ष धात्रीवृक्ष वृत्तान्तवर्णन, २५ तुलसीमाहात्म्य वर्णनमें पवित्र ब्राह्मण और अनपत्यब्राह्मणका चारित्रवर्णन, २६ कलिमें वर्तमानजनोंकी अवस्था वर्णन, पद्मपुराणमाहात्म्यवर्णन, क्रियाखण्डविषयकी समाप्ति इस प्रकार बम्बई वेंकटेश्वर यंत्रालयके छपे पद्मपुराणकी सूची है, सब ग्रंथोंसे मिलाकर पद्मपुराणके विषयमें विचार किया है यह बडे आदरकी वस्तु है।

विष्णुपुराण ३.

प्रचलित विष्णु पुराणकी सूची प्रथम अंश ।

१ पराशरके प्रति मैत्रेयका प्रश्न और उनका उत्तर, २ विष्णुस्तुति और सृष्टिप्रक्रिया, सृष्टिकारिणी ब्रह्मशक्तिका विवरण और आयुकथन, ४

कल्पान्तमें सृष्टिविवरण, ५ देवादिसृष्टि कथन, ६ चातुर्वर्णसृष्टि और चतुर्वर्णस्थान निरूपण, ७ मानसपूजासृष्टि रुद्रादिसृष्टि और चतुर्विध प्रलय वर्णन, ८ भृगुकी उत्पत्ति कथन, ९ इन्द्रके प्रति दुर्वासाका शाप, ब्रह्माके निकट देवगणका गमन समुद्रमथन और इन्द्रका लक्ष्मीकी स्तुति करना, १० भृगुसर्गादि पुनः सृष्टिकथन, ११ ध्रुवोपाख्यान, १२ ध्रुवका वरलाभ, १३ वेनराजा और पृथुका आख्यान, १४ प्रचेतस प्रभृतिकी तपस्या, १५ कण्डुमुनिचरित और दक्षके किये मैथुनधर्मसे प्रजासृष्टि, १६ मैत्रेयका प्रह्लादचारित्र विषयक प्रश्न, १७ प्रह्लादचरित्र, १८ प्रह्लाद वधमें हिरण्यकाशिपुका वियोग, १९ प्रह्लादके प्रति हिरण्यकशिपुकी उक्ति और प्रह्लादका विष्णुस्तव, २० भगवानका आविर्भाव और हिरण्यकशिपुवध, २१ प्रह्लादवंश वर्णन, २२ विष्णुकी चारप्रकारकी विभूति वर्णन.

द्वितीय. अंश ।

१ प्रियव्रतपुत्र विवरण और भरत वंश कथन, २—३ जम्बूद्वीप वर्णन भारतवर्षवर्णन, ४ षट्द्वीप वर्णन और लोकालोक पर्वत कथन, ५ सप्त पाताल विवरण और अनन्तगुण विवरण, ६ नरकवर्णन और हरिस्मरणमें सर्वप्रायश्चित्त कथन, ७ सूर्यादिग्रह और सप्तलोकोंका संस्थान, ८ सूर्य रथसंख्यानादि कालगणना और गंगाकी उत्पत्ति, ९ वृष्टिका कारण कथन, १० सूर्यरथाधिष्ठातृ विवरण, ११ सूर्यके रथ और त्रयीमयी विष्णु शक्तिका वर्णन, १२ चन्द्रादिग्रहके रथादि प्रवहवायु और विष्णु माहात्म्य कथन, १३ जडभरतोपाख्यान और सौवीरराजके प्रति भरतका तत्त्वोपदेश, १४ सौवीरराजका प्रश्न और भरतका उत्तर, १५ ऋतुनिदाघ सम्वाद, १६ ऋभुके निकट निदाघकी पुनप्रार्थना और आत्मतत्त्वोपदेश.

तृतीय अंश।

१ मन्वन्तर कथन, २ सावर्ण्यादि मन्वन्तरकथन और कल्प-परिमाण, ३ वेदव्यासके अट्ठाईस नाम, ४ वेदव्यास माहात्म्य और वेदविभाग कथन, ५ यजुर्वेदशाखा विभाग और याज्ञवल्क्यकृत सूर्यस्तव, ६ साम और अथर्ववेदकी शाखाओंका विभाग, पुराण नाम और पुराण लक्षणादि,७ यमगीता, ८ विष्णु पूजाकी फलश्रुति और चातुर्वर्ण्यधर्म, ९ चारों आश्रमोंके धर्म वर्णन, १० जातकर्मादि क्रिया और कन्यालक्षण, ११ गृहस्थ, सदाचार और मूत्रपुरीषोत्सर्गादि विधि, १२ गृहस्थाचार–विधि कथन, १३ दाह आशौच और एकोद्दिष्ट तथा सपिण्डीकरण व्यवस्था, १४ श्राद्धफल श्रुति विशेष, श्राद्धफल और पितृगीता, १५ श्राद्धभोजी विप्र लक्षणादि और योगी प्रशंसा, १६ श्राद्धमें मधुमांसादि, दानफल और क्लीबादि द्वारा श्राद्ध दर्शन निषेध, १७ नग्नलक्षण, भीष्मवशिष्ठ सम्वाद, विष्णुकी स्तुति और मायामोहकी उत्पत्ति, १८ असुरगणोंके प्रति मायामोहका उपदेश, बौद्ध धर्मोत्पत्ति,नग्न सम्पर्क दोष और शतधनुराजाका उपाख्यान।

चतुर्थ अंश।

१ वंश विस्तार कथनमें ब्रह्मा और दक्षादिकी उत्पत्ति,पुरूरवाका जन्म और रेवतीके सहित,बलरामका विवाह, २ इक्ष्वाकु जन्म, ककुत्स्थ वंश तथा युवनाश्व और सौभरिका उपाख्यान, ३ सर्पविनाशमंत्र, अनरण्यवंश और सगरोत्पत्ति, ४ सगरका अश्वमेध, भगीरथका गंगा लाना और श्रीरामचन्द्रादिकी उत्पत्ति, ५ विश्वामित्र यज्ञ विवरण सीताकी उत्पत्ति और कुशध्वजवंश, ६ चन्द्रवंश कथन ताराहरण और अत्रि-त्रयोत्पत्ति, ७ पुरूरवा और चन्द्रवंश कथन, ८ आयुका वंश धन्वन्तरिकी उत्पत्ति और उसका वंश, ९ रात्रि और दैत्यगणका युद्ध और क्षत्रवृद्धिकी वंशावलि, १० नहुषवंश और ययातिका उपाख्यान, ११

यदुवंश और कार्त्तवीर्यार्जुन जन्म वर्णन, १२ क्रोष्टुवंश कथन, १३ स्यमन्तकोपाख्यान, जाम्बवती और सत्यभामाका विवाह और गान्दिनी उपाख्यान, १४ शिनि अम्बक और श्रुतश्रवाका वंश वर्णन, १५ शिशुपालकी मुक्तिका कारण, श्रीकृष्णजन्मकथा और यदुवंशीय संख्या निरूपण, १६ तुर्वसुवंश कथन, १७ द्रुह्यका वंश कथन, १८ अनुवंश और कर्णकी आधिरथपुत्रता, १९ जनमेजयवंश और भारतादिकी उत्पत्ति, २ जह्नु और पाण्डुका वंश कथन, २१ भविष्य राजवंश और परीक्षितवंश कथन, २२ इक्ष्वाकुवंशीय भविष्यराज वंश कथन, २३ बृहद्वंशीय भाविराजगण वर्णन, २४ प्रद्योतवंशीय भविष्य राजगण नन्दराज्य कलिप्रादुर्भाव और राजचारित्र वर्णन.

पंचम अंश।

१ वसुदेव देवकीका विवाह,ब्रह्माके निकट पृथिवीका गमन विष्णुस्तोत्र कंसवधके निमित्त विष्णुका अवतारस्वीकार, २ योगमायाका यशोदा-गर्भमें और भगवानका देवकीके गर्भमें प्रवेश और देवताओंका कृष्ण तथा देवकीकी स्तुति करना, ३ श्रीकृष्णजन्म, वसुदेवका गोकुलमें गमन और कंसके प्रति माहामायाकी बात, ४ कंसका आत्मरक्षाका उपायकरना और वसुदेवदेवकीको बन्धनसे मुक्त करना, ५पूतनाको मारना,३ शकट-भंजन तथा कृष्णबलदेवका नामकरण, ७ कालियदमन,८ धेनुकवध, ९ प्रलम्बवध, १० इन्द्रोत्सववर्णन, गोवर्द्धनपूजा, ११ गोवर्द्धनधारण, १२ श्रीकृष्णके निकट इन्द्रका आगमन, १३ राम और गोपी संगीत, १४ अरिष्टकासुर वध, १५ कंसके समीप नारदका आगमन, १६ केशिवध १७ अक्रूरका वृन्दावनमें आना, १८ श्रीकृष्णकी मथुरायात्रा, १९ श्रीकृष्णका रजकको मारकर मालीके घर जाना, २० कुब्जापर अनुग्रह करना धनुष शालामें प्रवेश और कंसवध, २१ उग्रसेनका अभिषेक करके मथुरामें सुधर्मासभाको लाना, २२ जरासंध पराजय २३ काल-

यवनोत्पत्ति और कालयवनवध, २६ बलदेवकी वृन्दावनयात्रा, २५ बलरामका वारुणी लाभ और यमुनाकर्षण, २६ रुक्मिणीहरण, २७ प्रद्युम्नहरण मायावतीका प्रद्युम्नलाभ और प्रद्युम्नद्वारा शम्बरवध, २८ बलरामद्वारा रुक्मिवध, २९ श्रीकृष्णका षोडश सहस्रपत्नीलाभ, ३० पारिजातहरण और इन्द्रादिका युद्ध, ३१ इन्द्रकी क्षमाप्रार्थना और द्वारका गमन, ३२ बाणयुद्धविवरणमें उषाका स्वप्नवृत्तान्त ३३ अनिरुद्धहरण, शिवयुद्ध और कृष्णद्वारा बाणकी बाहु छेदन, ३४ पौंड्रक काशिराजवध और वाराणसीदाहन, ७५ लक्ष्मणाहरण और साम्बका बन्धमोचन, ३६ द्विविदवध, ३७ मूसलोत्पत्ति यदुवंशध्वंस, और श्रीकृष्णका स्वलोकगमन, ३८ कलियुगारंभ, अर्जुनके प्रति व्यासका उपदेश तथा परीक्षित अभिषेक।

षष्ठ अंश।

१ कलिस्वरूप कलिधर्म कथन, २ अल्पधर्ममें अधिकफल लाभ, ३ कल्पकथन ब्रह्माका दिननिरूपण, ४ प्रलयमें ब्रह्माका अवस्थान और प्राकृतिकप्रलय, ५ विविध दुःख नरक यन्त्रणा और ब्रह्म अद्वय निरूपण, ६ योग कथन, केशिध्वजोपाख्यान, धर्मधेनुवध और खाण्डिक्यकी मन्त्रणा,७आत्मज्ञान देहात्मवादनिन्दा,योगप्रश्न त्रिविध भावना, ब्रह्मज्ञान साकार निराकार धारणा,खांडिक्य तथा केशिध्वजकी मुक्ति, ८ विष्णुपुराणका श्रेष्ठत्व,विष्णुनामस्मरण माहात्म्य फलश्रुति विष्णुमाहात्म्यकथन.

अब देखना चाहिये कि, विष्णुपुराणका लक्षण दूसरे पुराणोंमें किस प्रकार निर्दिष्ट हुआ है ? मत्स्यपुराणके मतसे वाराहकल्पवृक्षवृत्तान्त आरम्भ करके पराशरने जिसमें सम्पूर्ण धर्म्मकथा प्रकाश की है, वही वैष्णव है, पंडितलोग इसकी श्लोकसंख्या २३००० कहकर जानते हैं (१) नारद पुराणमें ऐसा अनुक्रम है.

(१) " वराहकल्पवृत्तान्तमधिकृत्य पराशरः। यत्प्राह धर्म्मानखिलांस्तदुक्तं वैष्णवं विदुः ॥ त्रयोविंशतिसाहस्रं तत्प्रमाणं विदुर्बुधाः " (मत्स्य)

" शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि पुराणं वैष्णवं महत् ।
त्रयोविंशतिसाहस्रं सर्वपातकनाशनम् ॥
यत्रादिभागे निर्दिष्टाः षडंशाःशक्तिजेन ह ।
मैत्रेयायादिमे तत्र पुराणस्यावतारिकाः ॥
प्रथमांशे—आदिकारणसर्गश्च देवादीनां च सम्भवः ।
समुद्रमथनाख्यानं दक्षादीनां ततोन्वयाः ॥
ध्रुवस्य चरितं चैव पृथोश्चरितमेव च ।
प्राचेतसं तथाख्यानं प्रह्लादस्य कथानकम् ॥
पृथग् राज्याधिकाराख्या प्रथमोंश इतीरितः ॥
द्वितीयांशे—प्रियव्रतस्य चाख्यानं द्वीपवर्षनिरूपणम् ।
पातालनरकाख्यानं सप्तस्वर्गनिरूपणम् ॥
सूर्य्यादिचारकथनं पृथग् लक्षणसंयुतम् ।
चरितं भरतस्याथ मुक्तिमार्गनिदर्शनम् ॥
निदाघऋतुसम्वादो द्वितीयोंऽश उदाहृतः ॥
तृतीयांशे—मन्वन्तरसमाख्यानं वेदव्यासावतारकम् ।
नरकोद्धारकं कर्म्म गदितं च ततः परम् ॥
सगरस्यौर्वसम्वादे सर्वधर्म्मनिरूपणम् ।
श्राद्धकल्पं तथोद्दिष्टं वर्णाश्रमनिबन्धने ॥
सदाचारश्च कथितो मायामोहकथा ततः ।
तृतीयोंशोऽयमुदितः सर्वपापप्रणाशनः ॥
चतुर्थांशे—सूर्य्यवंशकथा पुण्या सोमवंशानुकीर्तनम् ।
चतुर्थांशे मुनिश्रेष्ठ नानाराजकथोचितम् ॥
पञ्चमांशे—कृष्णावतारसंप्रश्नो गोकुलीयकथा ततः ।
पूतनादिवधो बाल्ये कौमारेऽघादिहिंसनम् ॥
कैशोरे कंसहननं माथुरं चरितं तथा ।

ततस्तु यौवने प्रोक्ता लीला द्वारावती भवा ॥
सर्वदैत्यवधो यत्र विवाहाश्च पृथग्विधाः ।
यत्र स्थित्वा जगन्नाथः कृष्णो योगेश्वरेश्वरः ॥
भूभारहरणं चक्रे परस्वहननादिभिः ।
अष्टावक्रीयमाख्यानं पञ्चमोंश इतीरितः ॥
षष्ठांशे—कलिजं चरितं प्रोक्तं चातुर्विध्यं लयस्य च ।
ब्रह्मज्ञानसमुद्देशः खण्डिकस्य निरूपितः ॥
केशिध्वजेन चेत्येप पष्ठोंऽशे परिकीर्त्तितः ॥
उत्तरभागे—अतः परस्तु सूतेन शौनकादिभिरादरात ।
पृष्टेन चोदिताः शश्वद्विष्णुधर्म्मोत्तराह्वयाः ॥
नानाधर्म्मकथाः पुण्या व्रतानि नियमा यमाः ।
धर्म्मशास्त्रं चार्थशास्त्रं वेदान्तं ज्योतिषं तथा ॥
वंशाख्यानप्रकरणात् स्तोत्राणि मलयस्तथा ।
नानाविद्याश्रयाः प्रोक्ताः सर्वलोकोपकारकाः ॥
एतद्विष्णुपुराणं वै सर्वशास्त्रार्थसंग्रहम् ॥ "

हे वत्स ! श्रवण करो, मैं तुम्हारे निकट यह सर्वपापहर तेईस सहस्र श्लोकपूर्ण वैष्णव महापुराण कीर्तन करता हूं, जिसके आदिभागमें शक्तिनन्दनने मैत्रेयके निकट पूर्वकालमें पुराणकी अवतारिका छः अंशोंमेंसे निर्दिष्ट की थी;

आदि कारण, सृष्टि, देवादिकी उत्पत्ति, समुद्र मथन और दक्षादिका वृत्तान्त, ध्रुव और पृथुचरित, प्रचेताका आख्यान, प्रह्लादकथा और पृथक् २ राज्याधिकार वृत्तान्त यह सम्पूर्ण विषय प्रथमांशमें कहा गया है,

प्रियव्रताख्यान; द्वीप और वर्ष निरूपण, पाताल नरकाख्यान, सात स्वर्ग निरूपण, पृथक् २ लक्षण युक्त सूर्यादिका चारकथन, भरतचरित,

मुक्तिमार्ग निदर्शन और भीष्मऋतुका सम्वाद, दूसरे अंशमें यह सम्पूर्ण विषय उद्धृत हुआ है.

मन्वन्तराख्यान, वेदव्यासका अवतार, नरकोद्धारक कर्म्म इसके पीछे सगर और और्व संवादमें सर्वधर्म्मका निरूपण, वर्णाश्रम निबन्धनमें श्राद्ध-कल्प निर्देश, सदाचार और मायामोह कथा यह सम्पूर्ण वृत्तान्त तीसरे अंशमें कहागया है, यह सर्व पाप नाशक है, हे मुनिश्रेष्ठ, सूर्य्यवंशकी पवित्रकथा और सोमवंशका अनुकीर्तन अनेक प्रकारके राजगणका वृत्तान्त भी इस चतुर्थांशमें वर्णित हुआ है ।

प्रथम कृष्णावतार विषयक प्रश्न, फिर गोकुलीय कथा, बाल्य कालमे पूतना आदिका वध, कौमारमें अघासुर आदिकी हत्या, कैशोरमें कंस-विनाश और माथुर चारित, इसके पीछे यौवनमें द्वारका पुरीकृत लीला, सर्व दैत्य वध, पृथक् २ प्रकार विवाह, द्वारका पुरीमे रहकर कृष्णकर्तृक शत्रु हननादि द्वारा भूभार हरण कारण और अष्टावक्रीय आख्यान आदि पंचम अंशमें विवृत हुआ है.

कलिजात चारित लयकी चार प्रकारकी अवस्था और केशिध्वजके साथ खांडिक्यका समुद्देश इत्यादि छटे अशमें कहा गया है.

इसके पीछे सूतशौनकादि कर्तृक यत्नपूर्वक जिज्ञासित होकर विष्णु धर्म्मोत्तर नामक परम पवित्र अनेक प्रकारकी धर्म्म कथा, व्रत, नियम, यम, धर्म्म शास्त्र, अर्थ शास्त्र, वेदान्त, ज्योतिष, वंशाख्यान, स्तोत्र मंत्र, और सर्वलोकोपकारक, अनेक प्रकारकी विद्या, यह सम्पूर्ण विषय कहा कहा गया है, इस विष्णुपुराणमें सर्वशास्त्रका संग्रह है.

मत्स्यमें विष्णुपुराणका जो लक्षण निर्दिष्ट हुआ है प्रचलित विष्णु पुराणमें उसका अभाव नही है, वाराह कल्प प्रसंगके पीछेही (१। ३, २५) प्रकृत प्रस्तावमे यह पुराण आरंभ हुआ है (१)

(१) " द्वितीयस्य परार्द्धस्य वर्तमानस्य वै द्विज ।
वाराह इति कल्पोऽय प्रथमः परिकीर्त्तितः ॥" (१ । ३ । २५)

तदनन्तर नारदपुराणमें जो विषयानुक्रम दिया गया है वह भी यथा-योग्य वर्णित देखा जाता है, किन्तु प्रधान झगडा श्लोकसंख्यापर है, २३००० में से अध्यापक विलसन साहबने ७०००श्लोक पाये हैं,उन्होंने विष्णुधर्मोत्तरको विष्णुपुराणका उत्तरभाग नहीं गिना है, इससे ही ज्ञात है कि उतने न्यूनश्लोक पाये हैं, किन्तु उद्धृत नारद पुराणीय वचन, इसके अतिरिक्त अलबेरुणीकी उक्ति पाठ करनेसे विष्णुधर्मोत्तरको विष्णु-पुराणका उत्तर भाग कहकर ग्रहण करनेमें कोई दोष नहीं आता, प्रच-लित विष्णुपुराण और विष्णुधर्म्मोत्तर एकत्र करनेसे १६००० से अधिक श्लोक नहीं पाये जाते, इसमें भी न्यूनाधिक सात सहस्र ७००० कम पड़ते हैं, इतने श्लोक कहाँ गये ? उसका निर्णय करना हमारी क्षुद्र बुद्धिके अगम्य है, तथापि प्रचलित धर्म्मोत्तर पूरा ग्रन्थ नहीं ज्ञात होता। नारद पुराणमें जो लक्षण लिखे हैं, वह सब लक्षण भी प्रचलित विष्णु-धर्म्ममें नहीं पायेजाते, जिस विष्णु धर्म्मका ज्योतिषांश लेकर ब्रह्मगुप्तने ब्रह्मसिद्धान्त रचना की, नारद पुराणमें उसका परिचय होनेपर भी प्रच-लित धर्म्मोत्तरमें उसके अधिकांशका अभाव है. (१)

पुराणोंमें बौद्ध जैन और भविष्य राजवंश वर्णन होनेसे उनकी परवर्ती समयकी रचना पुराण ग्रंथ है, ऐसा न जानना चाहिये।किन्तु व्यासजी त्रिकालज्ञ थे समाधिमें स्थित होकर यदि कहीं २ भविष्य राजवंशोंका संकेत और विधर्मी जनोंका निरूपण तथा अन्य जैन बौद्धोंका निरूपण भूतकालके शब्दोंमें अपनी योगशक्तिसे किया हो तो इसमें आश्चर्य नहीं मानना.

कन्याकृष्णमाहात्म्य, कलिस्वरूपाख्यान, कृष्णजन्माष्टमी व्रत कथा, जडभरताख्यान, देवीस्तुति, महादेवस्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र, विष्णु पूजन, विष्णु शतनाम स्तोत्र, सिद्धलक्ष्मी स्तोत्र, सुमनःशोधन, सूर्य स्तोत्र इत्यादि छोटी २ पोथी विष्णुपुराणके अन्तर्गत कहकर प्रचलित देखी

(१) काश्मीरमें प्राप्त विष्णुधर्म्मोत्तरमें इसका अधिक परिचय पायाजाता है।

जाती हैं, किन्तु, इन सबके देखनेसे ही उन पोथियोंकी विष्णुपुराणके पीछेकी रचना ज्ञात होती है.

हेमाद्रि और स्मृतिरत्नावलीकारने बृहद्विष्णु पुराणसे श्लोक उद्धृत किये हैं, किन्तु यह पुराण इस समय नहीं पाया जाता, सुना है कि काठियावाडमें किन्हींके घर पूरा २३००० का विष्णुपुराण है मिलनेपर उसका उल्लेख किया जायगा.

विष्णुपुराणकी बहुतसी टीका देखनेमें आती हैं, उनमें चित्सुखमुनि, जगन्नाथ पाठक, नृसिंहभट्ट, रत्नगर्भ, विष्णुचित्त, श्रीधरस्वामी और सूर्य्यकर मिश्रकी टीका उल्लेख योग्य है.

४ चतुर्थ शैव वा वायु ।

कोई कहता है, शैव और वायु पुराण एक हैं, और कोई कहता है कि शैव और वायु भिन्न हैं। विष्णु, पद्म, मार्कण्डेय, कौर्म्म, वराह, लिङ्ग, ब्रह्मवैवर्त्त, भागवत और स्कन्दपुराणमें "शिव" तथा मत्स्य, नारद, और देवीभागवतमें शैवके स्थान "वायवीयका" और मुद्गलपुराणमें शिव और वायु दोनोंका उल्लेख है। वायुपुराणीय रेवामाहात्म्यमें लिखा है

"पुराणं यन्मयोक्तं हि चतुर्थं वायुसंज्ञितम् ।
चतुर्विंशतिसाहस्रं शिवमाहात्म्यसंयुतम् ॥
महिमानं शिवस्याह पूर्वं पाराशरः पुरा ।
अपरार्द्धे तु रेवाया माहात्म्यमतुलं मुने ॥
पुराणेपूत्तमं प्राहुः पुराणं वायुनोदितम् ।
यस्य श्रवणमात्रेण शिवलोकमवाप्नुयात् ॥
यथा शिवस्तथा शैवं पुराणं वायुनोदितम् ।
शिवभक्तिसमायोगान्नामद्वयविभूपितम् ॥

मैंने जिस पुराणकी बात कही, उसका नाम वायु है, यह २४००० श्लोक और शिवमाहात्म्य युक्त है । पराशरसुत कृष्णद्वैपायनने इसके

पूर्वभागमें शिवकी महिमा और अपरार्द्धमें वा उत्तरभागमें अतुलनीय रेवा: का माहात्म्य प्रकाश किया है.

पुराणोंमें यह वायु प्रोक्त पुराण श्रेष्ठ गिना जाता है, इसकी कथा सुननेसे ही शिवलोक प्राप्त होता है । शिव और वायु प्रोक्त शिव पुराण एकही है, शिवभक्ति समायोगके कारण दो नाम विभूषित हुए हैं, इस रेवा माहात्म्यके प्रथममें भी यह बात लिखी है.

"चतुर्थं वायुना प्रोक्तं वायवीयमिति स्मृतम् ।
शिवभक्तिसमायोगात् शैवं तच्चापराख्यया ॥
चतुर्विंशति संख्यातं सहस्राणि तु शौनक ।
चतुर्भिः पर्वभिः प्रोक्तं"

रेवाखण्डके उक्त वचनसे बोध होता है कि वायु और शिवपुराण एकही है, यह पूर्व और उत्तरभाग तथा चार पर्वोंमें विभक्त है । नारदपुराणमें वायुपुराणका इस प्रकार विषयानुक्रम दियागया है.

"शृणु विप्र प्रवक्ष्यामि पुराणं वायवीयकम् ।
तस्मिन् श्रुते लभेद्धाम रुद्रस्य परमात्मनः ॥
चतुर्विंशतिसाहस्रं तत् पुराणं प्रकीर्तितम् ।
श्वेतकल्पप्रसंगेन धर्म्माण्यत्राह मारुतः
तद्वायवीयमुदितं भागद्वयसमाचितम् ।
पूर्वभागे—स्वर्गादिलक्षणं यत्र प्रोक्तं विप्र सविस्तरात् ॥
मन्वन्तरेषु वंशाश्च राज्ञां ये यत्र कीर्तिताः ।
गयासुरस्य हननं विस्तराद् यत्र कीर्तितम् ॥
मासानां चैव माहात्म्यं माघस्योक्तं फलाधिकम् ।
दानधर्म्मा राजधर्म्मा विस्तरेणोदितास्तथा ॥
भूमिपातालकव्योमचारिणां यत्र निर्णयः ।
व्रतादीनाञ्च पूर्वोऽयं विभागः समुदाहृतः ॥

तदुत्तरभागे—उत्तरे तस्य भागे तु नर्म्मदातीर्थवर्णनम् ।
शिवस्य संहिताख्या वै विस्तरेण मुनीश्वर ॥
यो देवः सर्वदेवानां दुर्विज्ञेयः सनातनः ।
स तु सर्वात्मना यस्यास्तीरे तिष्ठति सन्ततम् ॥
इदं ब्रह्मा हरिरिदं साक्षाच्चेदं परो हरः ।
इदं ब्रह्म निराकारं कैवल्यं नर्म्मदाजलम् ॥
ध्रुवं लोकहितार्थाय शिवेन स्वशरीरतः ।
शक्तिः कापि सरिद्रूपा रेवेयमवतारिता ॥
ये वसन्त्युत्तरे कूले रुद्रस्यानुचरा हि ते ।
वसन्ति याम्यतीरे ये लोकं ते यान्ति वैष्णवम् ॥
ओङ्कारेश्वरमारभ्य यावत् पश्चिमसागरम् ।
सङ्गमाः पंच च त्रिंशन्नदीनां पापनाशनाः ॥
दशैकमुत्तरे तीरे त्रयोविंशतिदक्षिणे ।
पंचत्रिंशत्तमः प्रोक्तो रेवासागरसङ्गमः ॥
सङ्गमे सहितान्येवं रेवातीरद्वयेपि च ।
चतुःशतानि तीर्थानि प्रसिद्धानि च सन्ति हि ॥
षष्टितीर्थसहस्राणि षष्टिकोटयो मुनीश्वर ।
सन्ति चान्यानि रेवायास्तीरयुग्मे पदे पदे ॥
संहितेयं महापुण्या शिवस्य परमात्मनः ।
नर्म्मदाचरितं यत्र वायुना परिकीर्त्तितम् ॥

हे विप्र ! मै तुम्हारे निकट वायवीय पुराण कहता हूं तुम सुनो जिसके सुननेसे परमात्मा रुद्रका लोक प्राप्त होता है इस पुराणमें चौवीस सहस्र श्लोक कहे गये हैं, श्वेतकल्प प्रसंगमें वायुने यह पुराण कहा है.

वायु पुराण दो भागमें विभक्त है इसके पूर्वभागमें सर्गादि लक्षण और राजोंका वंश समुदाय विस्तारसे कहागया है । पश्चात् गयासुर विनाश,

माससमुदायका माहात्म्य, माघमासका फलाधिक्य, दान धर्म्म, राजधर्म्म और भूमि, पाताल, दिशा तथा आकाशचारियोंका निर्णय और व्रतादिके नियम कहेहैं.

हे मुनीश्वर ! इसके उत्तर भागमें नर्म्मदा तीर्थवर्णन शिवसंहिताख्यान और जो देव सर्वदेवको दुर्विज्ञेय और सनातन हैं वह सबप्रकारसे जिसके तटपर सदा विराजमान और वह नर्म्मदाजल साक्षात ब्रह्मा विष्णु, शिव और मोक्षरूप है। निश्चयही लोकहितके निमित्त भगवान् शिवने अपने शरीरसे सरित् रूपमें कोई एक शक्तिस्वरूप इस रेवाको अवतारित किया है, जो इसके उत्तरकूलमें वास करते हैं, वह रुद्रके अनुचर और जो उसके दक्षिणतीरमें वास करते हैं वह विष्णुलोकको प्राप्त होते हैं ओङ्कारेश्वरसे आरंभ करके पश्चिम सागर पर्य्यन्त नदीसमुदायके पैंतीस पापनाशन सङ्गम हैं। उत्तर तटपर ग्यारह और दक्षिणमें तेईस संगम हैं उनमें यह रेवासङ्गमही पैंतीसवां कहा जाता है। रेवाके दोनों तटपर संगमसहित प्रसिद्ध चार सौ तीर्थ हैं। महात्मा शिवकी यह महापुण्यसंहिता है, जिसमें वायुकर्तृक नर्मदा चरित कीर्तित हुआ है.

नारदीय पुराणमें जिस प्रकार वायुपुराणकी अनुक्रमणिका है, इसके साथ रेवाखण्डवर्णित वायु वा शैवका विशेप पार्थक्य नहीं है, तथापि रेवामें गया माहात्म्यका प्रसङ्ग नहीं यही भेद है। फिर नारद पुराण कहता है कि पूर्व भागमेंही गयामाहात्म्य है किन्तु दुर्भाग्य क्रमसे स्वतंत्र आकारमें ही हमने वायु पुराणीय गयामाहात्म्य और रेवा नर्म्मदामाहात्म्य पाया है, किन्तु एकत्र रेवामाहात्म्य वर्णित चार पर्व युक्त वायुपुराणका सन्धानही नहीं पाया जाता.

कलकत्तेकी एसियाटिक सोसाइटीसे एक वायुपुराण नामक पुस्तक बाहर (१) हुई है। किन्तु इसमें चार पर्व अथवा पूर्वभागमें 'गया माहात्म्य नहीं है। सम्पादकने अपनी इच्छासे इसके अन्तमें गया

(१) ब्रह्माण्ड पुराणके विचार प्रसंगमें इसकी विस्तृत समालोचना देखो।

माहात्म्य लगादिया है। उसको छोड शिवसंहिता वा रेवामाहात्म्य कोई बातही नहीं। बम्बई और कलकत्तेमें शिवपुराण छपा है। क्रमसे उसमें भी हमने ऐसे पूर्वोत्तर और चार पर्व नहीं देखे। इस शिवपुराणकी वायुसंहितामें लिखा है—

"तत्र शैवं तुरीयं यच्छार्व सर्वार्थसाधकम्।
ग्रन्थलक्षप्रमाणं तद्व्यस्तं द्वादशसंहितम्॥ ४१॥
निर्म्मितं तच्छिवेनैव तत्र धर्म्मः प्रतिष्ठितः।
तदुक्तेनैव धर्म्मेण शैवास्त्रैवर्णिका नराः॥
एकजन्मनि मुच्यन्ते प्रसादात् परमेष्ठिनः।
तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन् शिवमेव समाश्रयेत्॥
तमाश्रित्यैव देवानामपि मुक्तिर्न चान्यथा।
यदिदं शैवमाख्यातं पुराणं वेदसम्मितम्॥
तस्य भेदान् समासेन ब्रुवतो मे निबोधत।
विद्येश्वरं तथा रौद्रं वैनायकमनुत्तमम्॥
औमं मातृपुराणञ्च रुद्रैकादशकं तथा।
कैलासं शतरुद्र च कोटिरुद्राख्यमेवच॥
सहस्रकोटिरुद्राख्यं वायवीयं ततः परम्।
धर्म्मसंज्ञं पुराणं च त्येवं द्वादश संहिताः॥ ४७॥
विद्येशं दशसाहस्रमुदितं ग्रन्थसंख्यया।
रौद्र विनायक ञ्चौमं मातृकाख्यं ततः परम्॥
प्रत्येकमष्टसाहस्रं त्रयोदशसहस्रकम्।
रुद्रैकादशकाख्यं यत् कैलासं षट्सहस्रकम्॥
शतरुद्रं दश प्रोक्तं कोटिरुद्रं तथैव च।
सहस्रकोटिरुद्राख्यं दशसाहस्रकं तथा॥
यदेतद्वायुना प्रोक्तं चतुःसाहस्रमीरितम्।

तथा पञ्चसहस्रन्तु यदेतद्धर्मनामकम् ।
तदेवं लक्षमुद्दिष्टं शैवं शाखाविभेदतः ॥"
५२ (वायुसंहिता १ अ०)

पुराणोंमें शैव चौथा है, यह शार्व वा शिवमहिमा सूचक और सर्वार्थ-साधक है, इसकी ग्रन्थसंख्या लक्ष है और यह बारह संहिताओंमें विभक्त है शैव धर्म्म प्रकाशनार्थ शिवद्वारा रचागया है, तदुक्त धर्म्म प्रभावसे परमेष्ठि-के प्रसादसे त्रैवर्णिक शैवगण एक जन्ममें ही मुक्ति प्राप्त करसकते हैं। वेद सम्मित शैव नामक आख्यात जो पुराण है, उसका संहिताभेद कहताहूँ— विद्येश्वर, रौद्र, विनायक, औम, मातृ, एकादशरुद्र, कैलास, शतरुद्र, कोटीरुद्र, सहस्र कोटीरुद्र, वायवीय और धर्म्म इन बारह संहिताओंमें विभक्त हैं। इनमें—

विद्येश्वर संहिता	...	ग्रंथ संख्या		१००००
रौद्र संहिता...	...	..."	...	८०००
विनायक संहिता	...	..."	...	८०००
औम संहिता...	...	..."	...	८०००
मातृ संहिता...	...	..."	...	८०००
रुद्रैकादश संहिता	...	..."	...	१३०००
कैलास संहिता	...	..."	....	६०००
शतरुद्र संहिता	...	..."	...	१००००
कोटीरुद्र संहिता	...	..."	...	१००००
सहस्रकोटीरुद्र संहिता	...	...."	...	१००००
वायु प्रोक्त संहिता	...	..."	...	४०००
धर्म्म संहिता...	...	..."	...	५०००
		कुलग्रंथ संख्या		...१०००००

ऊपर जो बारह संहिता कही गई हैं, उक्त द्वादशसंहितायुक्त शिवपु-राण इस समय प्रचलित नहीं है। रौद्र संहिता, विनायकसंहिता, मातृ सं-

हिता और चार प्रकारकी रुद्रसंहिता यह कई संहिता मुद्रित शिवपुराणमें नहीं हैं । बंबईमें जो शिवपुराण छपा है उसमें विद्येश्वर, औम वा ज्ञान, कैलास, वायवीय और धर्म्म यह कई संहिता, और सनत्कुमार नामक एक अतिरिक्त संहिता है । नारदपुराणमें उक्त रुद्रसंहितासमूहही ज्ञात होताहै कि शिवसंहिता नामसे आख्यात है । और नर्मदा माहात्म्य उक्त किसी संहिताके अन्तर्गत है, माघमाहात्म्य और दूसरे मासमाहात्म्य स्वतंत्र पाये जाते है, किन्तु किसी शिवपुराणमें नहीं पाये जाते.

नीचे प्रचलित शिवपुराणका विषयानुक्रम दियाजाता है–

ज्ञानसंहिता ।

१ सूतके प्रति ऋषियोंका प्रश्न, २ ब्रह्मनारद सम्वादमें ज्योतिर्लिङ्ग प्रादुर्भाव कथन, ३ ओंकार प्रादुर्भाव, शिवका शब्दमयत्व, ब्रह्मा और विष्णुके साथ शिवकी उक्ति प्रत्युक्ति, ४ शिव प्रसाद, विष्णुकृत शिवका स्तव ब्रह्मा और विष्णुके प्रति शिवका वरदान, ५ ब्रह्मा और विष्णुका हंसवराहरूप धारणका कारण निर्देश, ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति, सृष्टि निरूपणके निमित्त ऋषिगणकी सृष्टि, ७ संक्षेपसे दाक्षायणीका देह त्याग कथन, शिवपूजा विधि, ८ पावमान मंत्रादिद्वारा शिवपूजा विधि, ९ तारक उपाख्यानमें ब्रह्माके निकट देवगणका गमन, १० ब्रह्मा और देवगण संवाद, शिवका तपवर्णन, ११ मदनभस्म और पार्वतीका प्रत्यावर्त्तन, १२ पार्वती तपस्या, १३ पार्वतीकी कठोर तपस्यासे उत्तप्त देवता और ऋषियोंका शिवके निकट जाना और शिवका ब्रह्मचारी वेशम पार्वतीके पास आना और शिवकी उक्ति, १४ हर पार्वती सम्वाद, १५ शिवा विवाहका उद्योग १६ विवाहव्यापारमें वर और तदनु, यात्रियोंका हिमालय नगरमें गमन, १७ शिवको देखकर मेनकाका खेद और पार्वतीके प्रति ज्ञान उपदेश, १८ पार्वतीका विवाह, कार्त्तिकका जन्म, और उनका देवसेनापतित्व, तारकवध, २० त्रिपुरनाशके निमित्त

विष्णुका उपाय निर्द्धारण, २१ विष्णुसृष्ट मुंडिनदैत्यको मोह उत्पादन, २२ विष्णु आदि देवकृत शिव स्तव, २३ विश्वकर्म्माके बनाये देवमय रथमें चढकर शिवका त्रिपुर नाश, २४ देवगणकृत शिवस्तव और वरप्राप्ति, २५ शिवकर्तृक लिंगार्चन विधिकथन, २६ देवगणके प्रति ब्रह्माका शिवपूजा विधि कथन, २७ आह्निक कर्त्तव्य शिवपूजा विधि, २८ षोडशोपचारसे शंकर पूजाकथन, २९ धन्यादि द्वारा शिवपूजाका फल विशेष कथन, ३० जानकीके शापसे शिवपूजामें केतकी पुष्प व्यवहार निषेध और रामचरितवर्णन, ३१ ब्राह्मण और चम्पकपुष्पके प्रति नारदका शाप, ३२ गणेशचरित्र, ३३ गणेशकर्तृक शिवगणका पराजय और शिवकर्तृक गणेशका शिरश्छेदन, ३४ गणेशके शिरश्छेदनकी वार्ता सुनकर देवीका क्रोध, शिव द्वारा गणेशको जीवदान और गाणपत्य प्रदान ३५ मे पहिले विवाह करूंगा कहकर गणेश और कार्त्तिकका विवाद और गणेशकी जय, ३६ गणेशका विवाह सुनकर क्रोधयुक्त कार्त्तिकका क्रौञ्च पर्वतमें गमन, ३७ रुद्राक्षधारण माहात्म्य वर्णन, ३८ प्रधान २ ज्योतिर्लिङ्ग और उपलिङ्गके नाम और स्थानका माहात्म्य कीर्त्तन, ३९ नन्दिकेशतीर्थ माहात्म्य प्रसंगमें गोवत्स सम्वाद, ४० नन्दिकेशतीर्थ माहात्म्य, ४१ उत्तम लिङ्गकथा प्रस्तावमें अत्रीश्वर माहात्म्य वर्णन, ४२ ज्योतिर्लिङ्गभिन्न अन्यान्यलिङ्गोंका इतिहास वर्णन और शिवलिङ्गका माहात्म्य वर्णन, ४३ अन्धकेश्वर वर्णन प्रसङ्गमे अन्धकमर्दनादि कथन, ४४ शिवरात्रिव्रत नष्ट होनेमें दधीचि पुत्रको दोष कथन, ४५ सोमेश्वर कथा और ज्योतिर्लिङ्गकी उत्पत्ति, ४६ महाकाल और ओंकारेश्वरका प्रादुर्भाव, ४७ केदारेश्वराख्यान, ४८ भीमशंकर प्रादुर्भाव, कथा, ४९ विश्वेश्वर माहात्म्य पञ्चकोश्यादिकथा, ५० गौरीके प्रति शिवका काशीक्षेत्र माहात्म्य वर्णन, ५१ काशीमें मरण मात्रसे मोक्ष प्राप्तिका विवरण, ५२ गौतम तपस्या, गौतमक्षेत्र माहात्म्य कथन; ५३ गौतम पीडनार्थ ब्राह्मणोंकी गणेशपूजा, गौतम चारित, ५४ गौतम प्रशंसा, गङ्गास्थिति,

कुशावर्त्त सम्भव, त्र्यम्बक माहात्म्य, ५५ रावणतपस्या, वैद्यनाथकी उत्पत्ति, ५६ नागेश माहात्म्य, ५७ रामेश्वर माहात्म्य, ५८ घुश्मेश्वर शिव माहात्म्य, ५९ वराहरूपमें विष्णुका हिरण्याक्षवध और प्रह्लादचरित्र, ६० प्रह्लादचरित्रमें प्रह्लाद और हिरण्यकशिपु सम्वाद, ६१ हिरण्यकपिशु वध, नृसिंह चरित, ६२ नलजन्मान्तरकथा, ३३ पाण्डव गण द्वारा दुर्वासाका सन्तोष विधान, ६४ व्यासाज्ञासे अर्जुनकी इन्द्रकील पर्वतमें तपश्चर्य्या और इन्द्रसमागम, ६५ शिवार्जुन द्वारा शूकरूपी मूक दैत्य वध, ६६ वाण शिक्षार्थ अर्जुनके साथ स्वभृत्यका विवाद सुनकर शिवका भिल्लरूपमें वहां जाना, ६७ भिल्लरूपी शिवके साथ अर्जुनका संग्राम, अर्जुनके प्रति शिवका वरदान, ६८ पार्थिव शिवपुजन विधि, ६९ बिल्वेश्वर माहात्म्य, ७० शिवद्वारा विष्णुको सुदर्शनचक्र दान, ७१ शिवके सहस्रनाम, ७२ विष्णुके प्रति शिवका शिवरात्रिव्रत कथन, ७३ शिवरात्रिव्रत उद्यापन विधि, ७४ व्याध द्वारा शिवरात्रिव्रतकी प्रशंसा, ७५ शिवरात्रिव्रतफल श्रवणसे महापापी वेदनिधि विप्रकी मुक्ति और ब्रह्म लक्षण कथन, ७७ शिवकर्तृक विष्णु आदि देवगणका उत्पत्ति कथन, ७८ शिवभक्त तत्त्वका अनुसन्धान करनेवाले साधकोंको साथ नैकलभ्यत्व कथन, ज्ञानसंहिता समाप्ति,

विद्येश्वर संहिता ❀ ।

साध्य साधन निरूपण, २ मननादि स्वरूप कथन, ३ श्रवणादि अशक्त पक्षमें लिङ्ग पूजनरूप साधन कथन, ४ ब्रह्मा और विष्णुको युद्धमें प्रवृत्त देखकर देवगणका शिवके निकट जाना, ५ तेजोमय शिवलिंगका प्रादुर्भाव, उसके दर्शनसे ब्रह्मा और विष्णुकी विवादशान्ति, ६ शिवसृष्टि वैभव कर्तृक ब्रह्माका शिरश्छेद, ब्रह्माके प्रति शिवका अनुग्रह, ७ ब्रह्मा और विष्णुकी शिवपूजा, उनके प्रति शिवका लिंग

❀ ' विघ्नेश ' ' विघ्नेश्वर ' ऐसे नामान्तर पाये जाते हैं ।

पूजा प्रकरण कथन, ८ ब्रह्मा और विष्णुके प्रति शिवका सृष्ट्यादि स्वीय कृत्यपञ्चक प्रणवादि स्वरूप कथन, ९ लिंगनिर्म्माण तत्प्रतिष्ठा-विधि और मूर्त्तिपूजाप्रकरणकथन, १० शिवक्षेत्रसेवनादिमाहात्म्य, ११ ब्राह्मणोंका सदाचार और नित्यकर्तव्य विषयकथन, १२ पञ्च महायज्ञ कथन, दिन विशेषमें देव पूजाकी कर्त्तव्यता विधान, १३ देश विशेषमें पूजाफल वर्णन, १४ पार्थिव प्रतिमा पूजाविधि, १५ प्रणव षड्लिङ्ग माहात्म्य और शिवभक्तकी पूजा कथन, बन्धन और मोक्षका स्वरूप कथन लिंगक्रमकथन, विद्येश्वर संहिता समाप्ति, श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बईमें छपे हमारे टीका किये शिवपुराणमें यह क्रम अठारह अध्यायतक है आगे १९ पार्थिवेश्वर महिमा, २० वैदिक पार्थिवपूजाविधान कामना भेदके अनुसार पार्थिव लिंगपूजन, २१ शिवनैवेद्य बिल्वमाहात्म्य वर्णन, २३ भस्म नाम और रुद्राक्ष माहात्म्य वर्णन, २४ दो प्रकार भस्म धारण विधि, २५ रुद्राक्ष माहात्म्य वर्णन विद्येश्वर संहिता समाप्ति.

कैलास संहिता।

१ वाराणसीमें मुनियोंके प्रति सूतका प्रणवार्थ कथनारंभ, २ कैलासमें शिवके प्रति देवीका प्रणवार्थादि पूंछना, ३ प्रणवोद्धार और मंत्र दीक्षादि कथन, ४ प्रणवार्थप्रकाशक यंत्र लिखन परिपाटी, ५ प्रणवोद्धार विविधपूजन और न्यासान्तरादि विधि, ६ शंखपूजा और गुर्वादि पूजा, अनन्तर गणसहित शिवपूजाविधि, ७ गुहके प्रति वामदेवका प्रणवार्थ पूछना, ८ वामदेव मुनिके प्रति गुहका प्रणवोपासनादि कीर्तन, ९ गुरुके उपदिष्ट मार्गमें प्रणवोपासना और सप्त न्यासादि विधि, १० षड् विधार्थ परिज्ञान और विस्तृत प्रणवार्थ कलातत्त्वादि विवृति, ११ योगपट्टादि कथन, १२ यतियोंकी अन्त्येष्टि कर्म्मगति कथन, कैलास संहिता समाप्ति।

सनत्कुमारसंहिता ।

१ नैमिषारण्यमें सनत्कुमारका आगमन, व्यासादि मुनियोंका समागम, ऋषियोंका शिवपूजाविषयक प्रश्न, २ पृथिव्यादिका संस्थान क्रमादि कथन, ३ प्रकृतिसे महदादि क्रमद्वारा जगत् सृष्टि, सप्तद्वीप वर्णन, ४ अधोलोक वर्णन, नरकादि विवृति, ५ ऊर्ध्वलोक योग माहात्म्य वर्णन, ६ रुद्रमाहात्म्य, विस्तृतरूपसे पञ्चमूर्त्ति वर्णन, ७ रुद्रकीर्तन फल, रुद्रका स्तव, ८ सनत्कुमार चारिताख्यानमें उनको परम सिद्धि प्राप्तित्व कथन, ९ सनत्कुमारका शिव सर्वज्ञादि कथन, १० ब्रह्मलोक, विष्णुलोक और रुद्रलोक निरूपण, ११ रुद्रस्थान सप्तक कथन, १२ सर्वश्रेष्ठ रुद्रस्थान कथन, १३ विभीषण महेश्वर सम्वाद, १४ लिंगपूजा और शिव नाम-कीर्त्तन फल कथन, १५ स्थान माहात्म्य कथन, १६ तीर्थादि कथन, १७ पूर्वाध्यायमें कथित तीर्थ माहात्म्य, १८ व्यासके प्रश्नसे ब्रह्मा, विष्णु, और महेश्वरमें कौन प्रधान है इस विषयमें सनत्कुमारका उत्तर कथन, शिवलिंगका माहात्म्यादि कथन, १९ लिंगस्थापनका फल, २० शिव सन्तोषकर पूजाविधि, २१ शिवदेय पुष्पादि निरूपण, २२ विस्तारसे सविस्तर अनशन विधि कथन, २३ संक्षेपसे शिवप्रीतिकर धर्म्मका उप-देश, २४ लक्षणाष्टमी व्रत, २५ अन्नदान माहात्म्य, दानान्तर प्रशंसा, २६ विविध धर्म्म कार्य्यका उपदेश, २७ विस्तृतरूपसे नियमफल कीर्तन, २८ पार्वतीके प्रश्नानुसार शिवका चन्द्रमण्डल धारण और विषभोजन कारण कथन, २९ भस्म प्रशंसा और भस्म धारण फल, ३० निजपूजा फलकथन, शिवकर्त्तृक निज श्मशान वास हेतु निर्देश, ३१ शिवविभूति कथन, शिवज्ञान फलकीर्त्तन, ३२ प्रणवोपासनाका फल और देव कीर्त्तन, ३३ सप्रपञ्चध्यानादि क्रमकथन, ३४ दुर्वासाके प्रति शिवका ज्ञान उपदेश करना, ३५ फिर ध्यानवर्णन, अशक्त पक्षमें काशी-वास विधि, ३६ वायुनाडिकादि निरूपण, ३७ ध्यानविधि प्रशंसा,

३८ प्राणायामलक्षण और प्रणव उपासना कथन, ३९ शरीरको सर्व देवमयत्वकथन, ४० सनत्कुमार द्वारा नाडी विस्तार कथन, ४१ हर-पार्वती सम्वादमें काशीमाहात्म्य; ४२ शिवानुग्रहसे हरिकेश गुह्यकका दण्डपाणित्व कीर्त्तन, ४३ मण्डूक्याख्यान पुत्रसहित प्रताप मुकुट राजाका ओंकारेश्वर दर्शनको काशीपुरमें आगमन और ओंकारस्तव, ४४ सविस्तर ओंकारेश्वरवर्णन, ४५ ओंकारेश स्थानवासी पुष्पवाहनका इतिहासकीर्त्तन, ४६ नन्दिकी दुष्कर तपस्या, ४७ नन्दिके प्रति शिवका वरदान, ४८ महादेवके स्मरणमात्रसे देवगणका उनके निकट आना, ४९ शिवाज्ञासे देवगणकर्तृक नन्दिको गाणपत्यमें अभिषेक; स्तवकथन, ५० नन्दिका विवाह ५१ नीलकण्ठमाहात्म्य कीर्त्तन, ५२ त्रिपुरवृत्त देवगणकी स्तुतिसे महेश्वरकी तुष्टि, ५३ त्रिपुर नाशोयोग, नारद मंत्रणासे मयादिका युद्धोयोग, ५४ त्रिपुर दाह, ५५ पार्वतीके प्रश्नानुसार शिवका विप्रमाहात्म्य वर्णन ५६ सनत्कुमारका पाशुपतयोग कथन, ५७ देह स्थित नाडी विवरण, ५८ विमल ज्ञान ईशपद प्राप्ति प्रकार, ५९ शिवस्थित लोक कथन सनत्कुमार संहिता समाप्ति.

वायवीय संहिता ।

पूर्वभागमें—१ महादेव प्रसादसे कृष्णको पुत्रलाभ देवादिकी व्यवस्था पुराणादिकी प्रशंसा, २ ऋषियोंका ब्रह्माके निकट शैवतत्त्व सुनकर ब्रह्मोक्त यज्ञ करणार्थ नैमिषारण्यमें गमन; ३ नैमिषारण्यमें जाकर वायुके प्रति कुशल प्रश्न पूंछना, ४ पाशुपत तत्त्व, माया स्वरूप वर्णन, ५ वायु कर्तृक सविस्तर शम्भुका कालरूपत्वप्रकटन; ६ कालमान कथन, ७ संक्षेपसे ईशकर्तृक शक्त्यादि सृष्टि कथन, ८ पुरुषाधिष्ठित प्रकृतिसे सृष्टि कथन, ९ ब्रह्मका वराहरूपमें प्रादुर्भाव और जगत्का व्यवस्थापन, १० शिवानुग्रहसे ब्रह्माकी जगत् सृष्टि, ११ ब्रह्मा विष्णु और शिवमें परस्पर वशवर्त्तित्व, ब्रह्माकी रुद्रोत्पत्ति, १२ रुद्रसृष्टिके पीछे ब्रह्माके प्रति

सृष्टिका आदेश, १३ प्रजावृद्धिके निमित्त ब्रह्माके स्तवसे अर्द्ध नारीश्वर प्रसादलाभ, १४ ब्रह्माकी प्रार्थनानुसार रुद्रकर्तृक शक्तिरूपिणी स्त्रियोंकी सृष्टि, १५ शिवके वरसे ब्रह्मकर्तृक स्वायम्भुवादि द्वारा मैथुन सृष्टि, १६ दक्षयज्ञ वृत्तान्तमें पितरोंका दक्षके प्रति अभिशाप सती देहत्याग, १७ दक्षयज्ञध्वंसके निमित्त शिवका वीरभद्र और भद्रकालीको उत्पन्न करना, १८ दक्षयज्ञ नाश, १९ शिवके प्रसादसे वीरभद्रसे विष्ण्वादिकी पराजय, २० ब्रह्मादिसे स्तुति, वीरभद्रका देवादिको शिवसमीपमें लाना, दक्षका छागमुण्डका विषय कथन, २१ शुम्भ निशुम्भ वधके निमित्त गौरीका कौशिकीरूपमें अविर्भाव, २२ व्याघ्रके प्रति पार्वतीका अनुग्रह, २३ देवीका शिवसमीपमें गमन, और व्याघ्रका सोमनन्दी नामकरण, २४ देवीके निकट शिवका अग्निषोमात्मक विश्वप्रपञ्च कथन, २५ तीन प्रकारका शब्दार्थ कथन, जगत्में तद्रूपत्व कीर्त्तन, २६ महर्षियोंका शिव चरित्रानुवाद, २७ ऋषिके प्रश्नानुसार वायुका सविस्तर शिवतत्त्व और मुक्ति कारण ज्ञानोपदेश, २८ कर्म्मादि द्वारा पाशुपतयोगमें मुक्ति लाभ कथन, २९ पाशुपतव्रत कथन, भस्ममाहात्म्य वर्णन, ३० शिव प्रसादसे ऋषिकुमारको क्षीरसमुद्र प्राप्ति, वायवीय संहिता पूर्वभाग समाप्ति.

उत्तर भागमें—१ श्वेतकल्पमें वायु कथित शिवमाहात्म्य प्रसंगमें प्रयागमें मुनियोंके प्रश्नसे सूतकी उक्ति, २ श्रीकृष्णके प्रति उपमन्युका पाशुपतज्ञान कथन, ३ सुरेन्द्रादिकी परीक्षा, ४ ब्रह्मा विष्णु आदि देवगणको शिवरूपत्व कथन, ५ उमा महेश्वर स्त्रीपुंसात्मक जगत् प्रपंचत्व कथन, ६ परापरादि भेदसे दो प्रकारसे ब्रह्मरूपका वास्तविकैकत्व कथन, ७ प्रणवका रूप कथन, ८—९ ब्रह्मादि देव देवीके प्रति शंकरका वेदसार ज्ञानका उपदेश, १० एक सौ बारह शिवावतार कल्प योगेश्वर कथन, ११ देवीके प्रति शिवका सर्ववर्णोचित शिवधर्म्म कथन, १२

शिम पंचाक्षर मंत्रस्वरूप माहात्म्य कीर्तन, १३ शिवमंत्र ग्रहणादि कथा, १४ दीक्षा प्रयोग, १५ हडध्वशुद्धि शिव पूजा विधि, दहन पावनादि कथन, १६ शैवोंकी मंत्र साधन विधि, १७ अभिषेकादि संस्कार कथन, १८ शैवोंका आह्निक कर्म्म, १९ अन्तर्याग और बहिर्याग कथनक्रम, २० अनेक प्रकारके विधानसे हर पार्वतीकी पूजा विधि, २१ होमकुण्डमानादि निर्णय, २२ मासादि विशेषमें नैमित्तिक शिवपूजा कथन, २३ काम्य शिवपूजा कथन, २४ शिवस्तोत्र, २५ प्रकारान्तरसे पूजा, २६ शिव पूजा फलसे ब्रह्मादिको स्वस्व प्राप्ति, २७ ब्रह्मा और विष्णुकी लिंग साक्षात्कार कथा, २८ शिव प्रतिष्ठा संप्रोक्षण विधि, २९ योग उपदेश, ३० मुनियोंके निकट शिवचरित्र वर्णन और वायुका अन्तर्धान, नन्दि समागम, नन्दिका शिवकथा वर्णन वायवीय संहितोत्तरभाग समाप्ति,

धर्म संहिता ।

१ शिवमाहात्म्य निरूपण, २ श्रीकृष्णकी शिवमंत्र दीक्षा, ३ त्रिपुरदाह वर्णन, ४ अन्धक मर्दन, ५ शुक्रका शिवजठरमें गमन, शुक्रके प्रति देवीका अनुग्रह अन्धक सिद्धि, ६ रुरुदैत्यवध, ७ गौरीवेशमें अप्सरा गणका महादेवके साथ विहार, उपानिरुद्धसंगम, बाणयुद्धवर्णन, ८ कामतत्त्वादि निरूपण, ९ काम प्रकार, १० काली तपस्या, आडिदैत्यका वृत्तान्त, वीरके नन्दीरूपमें जन्मग्रहण करनेका कारण, शिवका कामचार, लिंगोद्भव कथन, ११ काम विक्रमत्व कथनमें शक्रादिको काम विक्रमत्व कथन, १२ महात्मा गणकी कामक्षोभ कथा, १३ विश्वामित्र आदिकी कामवश्यता कीर्तन, १४ श्रीरामका कामाधीनत्व प्रस्ताव, १५ नित्य नैमित्तिक शिवपूजा विधि, १६ शंकर क्रियायोग और उसका फलकथन, १७ शिवभक्त-पूजादि फलकथन, १८ विविध पापकथन, १९ पापफल कथन, २० धर्म्म प्रसंग, २१ अन्नदान विधि

२२ जलदान, तप और पुराण पाठका माहात्म्य कथन, २३ धर्म्म श्रवणमाहात्म्य, २४ महादान कथन, धर्म्म प्रसंग, २५ सुवर्णादि पृथिवीदान कथा, २६ कान्तार हस्तिदान कथा, २७ एक दिनकी आराधनासे शंकरकी प्रसाद कथा, २८ शिवके सहस्रनाम, २९ धर्मोपदेश और तुलापुरुषदान विधि, ३० परशुरामकी तुलापुरुष दान कथा, ३१ ब्रह्माण्डप्रसंग, ३२ नरकादि कीर्तन, ३३ द्वीपादि कथन, ३४ भारत वर्षादि वर्णन, ३५ ग्रहादि कथा, मृत्युञ्जय उद्धार कथा, ३६ मंत्रराज प्रभाव कीर्तन, ३७ पंच ब्रह्माख्यान, ३८ पंच ब्रह्म विधान, ३९ तत्पुरुष विधान, ४० अघोर कल्प वामदेव कल्प, सद्योजातकल्पादि कथन, ४१ ब्राह्मण कार्य्य, संग्राम माहात्म्य, युद्धमृत गणकी सद्गति लाभ कथा, ४२ संसार कथा, ४३ स्त्रीस्वभावादि कथन, ४४ अरुन्धती देवगण सम्वाद, ४५ विवाह कथा, ४६ मृत्युचिह्न आयु प्रमाणादि कथन, ४७ कालजयादि कथा, ४८ छायापुरुष लक्षण, ४९ धार्मिक गति कथा, लिंगपूजाका कारण निर्देश, ५० विष्णुकर्तृक शिवका स्तव, लिंगपूजाका फलकथन, ५१ सृष्टिकथन, ५२ प्रजापति कृत सर्ग कथन, ५३ पृथुपुत्रादि कथा, ५४ देवदानवगणकी विस्तृतरूपसे सृष्टि कथन, ५५ आधिपत्य कल्पना, ५६ अंगवंशकथन, ५७ पृथुचरित, ५८ मन्वन्तरादि कीर्तन ५९ संज्ञा और छायादिकी कथा, ६० सूर्य्य वंशवर्णन, ६१ सूर्य्य वंशवर्णन प्रसंगमें सत्यव्रत और सगरादिकी कथा, ६२ पितृकल्प श्राद्धादि कथन, ६३ पितृसप्तक वर्णन, मुनियोंकी जात्यन्तर प्राप्ति कथन, ६४ साधुसंगसे उनको परमगतिलाभ ६५ व्यासकी पूजाप्रकार कथन, धर्म्मसंहिता समाप्ति,

अब बात यह है कि, उक्त विषयीभूत शिवपुराणको हम महापुराण कहकर ग्रहण कर सकते हैं, या नहीं.

"श्वेतकल्पप्रसङ्गेन धर्म्मान् वायुरिहाऽब्रवीत् ।
यत्र तद्वायवीयं स्याद्रुद्रमाहात्म्यसंयुतम् ॥
चतुर्विंशत्सहस्राणि पुराणं तदिहोच्यते " ॥ ५३ । १८ ।

मत्स्यपुराणमें लिखा है.

जिसमें श्वेतकल्प प्रसंगमें वायुने धर्म्मकथा और रुद्रमाहात्म्य वर्णन किया है, वही वायुपुराण है, इसकी श्लोक संख्या २४००० ।

शिवपुराणमें जो वायुसंहिताका नाम पहले कहा है, इस वायुसंहितामें वायुकर्तृक श्वेतकल्प प्रसंग और रुद्रमाहात्म्य वर्णित है। एसियाटिक सोसाइटीसे मुद्रित वायुपुराणमें श्वेतकल्प प्रसङ्गमें वायुकर्तृक कोई कथा नहीं अथवा रेवामाहात्म्य, नारद पुराण आदिके लक्षणके साथभी नहीं मिलता, इस कारण उसको हम वायुपुराणही नहीं कहसकते किन्तु इस वायुसंहिताके चौथे अध्यायके पाठ करनेसे जाना जाता है कि श्वेत कल्प प्रसंगमेंही यह वायवीय रुद्रमाहात्म्य वर्णित हुआ है। (१) इस वायवीय संहिताके उत्तर भागके पहिले अध्यायमें स्पष्टही लिखा है.

"वक्ष्यामि परमं पुण्यं पुराणं ब्रह्मसम्मितम् ।
शिवज्ञानार्णवं साक्षाद्भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥
शब्दार्थन्यायसंयुक्तरागमार्थैर्विभूषितम् ।
श्वेतकल्पप्रसङ्गेन वायुना कथितं पुरा ॥" (१ । २४)

इस वायुसंहितामें शिव वा वायुपुराणका प्राचीन लक्षण है, किन्तु इसकी श्लोकसंख्या चार सहस्रसे अधिक न होगी जो शिवपुराण छपा है, उसकी श्लोकसंख्या प्रायः १८००० है, किन्तु इसमें भी वायुसंहितावर्णित

---

(१) " एकोनविंशतिः कल्पो विज्ञेयः श्वेतलोहितः ।
तस्मिन् कल्पे चतुर्वक्त्रः स्रष्टुकामोऽनपत्यपः ॥
श्वेतो नाम मुनिर्भूत्वा दिव्या वाचमुदीरयन् ।
दर्शनं प्रददौ तस्मै देवदेवो महेश्वरः ॥ " ४ । ५ ॥

अनेक संहिता नहीं हैं, ज्ञात होता है सब संहिता एकत्र होनेपर २४ हजारसे अधिक होसकती है ! तथापि जो इस संहितामें बारह संहिता· युक्त शिवपुराणके लक्षश्लोकोंकी बात लिखी है वह माहात्म्य सूचक परिवर्त्तीकालकी योजना ज्ञात होती है । रेवामाहात्म्यमें जो पूर्वोत्तरभाग और पञ्चपर्वात्मक शिव पुराणका उल्लेख है, यही संभवतः २४००० श्लोकात्मक शिवपुराण है, रेवा माहात्म्य इन पञ्चपर्व वा पञ्चसंहिताके मध्यमें किसी पर्वके अन्तर्गत है। (१) रेवा माहात्म्यकी सूची देखो (२) (किन्तु) इस समयमें गयामाहात्म्य युक्त वा द्वादशसंहितात्मक शिवपुराण नहीं पाया जाता ! गयामाहात्म्य किस प्रकार शैववायवीय पुराणमें संयुक्त हुआ यह बात जानना कठिन है.

---

१ एक शिवपुराणीय उत्तरखण्ड पाया गया है । इसके मतसे—

" यत्र पूर्वोत्तरे खण्डे शिवस्य चरितं बहु ।
शैवमेतत्पुराणं हि पुराणज्ञा वदन्ति हि ॥ "

किन्तु इसको हम शैव उपपुराण समझते हैं, इसका विवरण आगे देखना चाहिये ।

२ इस रेवा वा नर्म्मदा माहात्म्यमें ऐसा विषयानुक्रम दिया गया है—

पुराणोत्पत्ति युधिष्ठिर मार्कण्डेय सम्वादमें नर्म्मदामाहात्म्य, कल्प समुद्भव, मायूर-कल्प, कूर्म्मकल्प, बककल्प मात्स्यकल्प और वाराह कल्प समुद्भव कपिलापूर्व और विशल्या सम्भव, विशल्या सङ्गम, करमर्द्दा सङ्गम, नीलगङ्गा सङ्गम आदि माहात्म्य, मधुकव्रत त्रिपुर विध्वंसमें ज्वालेश्वर तीर्थ, रेवा कावेरी संगम, वाराही संगम, चण्डवेगासंगम, एरण्डी सङ्गम, पितृतीर्थ, ओङ्कारकरोत्पत्ति, कोटितीर्थ, काकहृद, जंबुकेश्वर तीर्थ, सारस्वत तीर्थ और कपिलासङ्गमाहात्म्य, नरक वर्णन, शरीर व्यवस्था, अमरेश्वर तीर्थ, प्रसङ्गमें गोदान महिमा, अशोक वनिता व्रत तीर्थ, मतङ्गतीर्थ, मृगवन तीर्थ, मनोरथ तीर्थ, अङ्गारगत्ता सङ्गम, कृष्ण, रेवा संगम, बिल्वाम्रक, सुवर्ण द्वीप, हिरण्यगर्भ संगम, अशोकेश्वर तीर्थ, वागुरेवा संगम, सहस्रावर्त्तक तीर्थ, सौगन्धिक वन, सरस्वती ब्रह्मोद, शङ्कर, साम, सहस्र यज्ञ कपालमोचन, अग्नि, अदितीश्वर, वाराह, देवपथ शुक्र दीप्तिकेश्वर, विष्णु, योधनपुरमें मारुतेश्वर, योगेश्वर, रोहिणी, दारु, ब्रह्मावर्त्त, पत्रेश्वर, आदित्य, मेघनाद, नर्म्मदेश्वर, कपिला, करञ्जेश्वर, कुलेश्वर, पिप्पलाद, विमलेश्वर, पुष्करिणी संगम माहात्म्य, शूलभेद, प्रशंसा, अन्धक वरदान, अन्धक युद्धमें शची ग्रहण, गीर्व्वाणश्वास, अन्धक वध, शूलभेदोत्पत्ति, पात्रपरीक्षा, दानधर्म्म-

कोई कहतेहैं इन ग्रन्थमें विष्णुमाहात्म्य वर्णन है गयामें जब बुद्धका प्रभाव ध्वंस हुआ और विष्णुभगवान्का प्रभाव जब फिर विस्तृत हुआ तब बौद्धरूपी गयासुरके ऊपर विष्णुरूपी गदाधरके पादपद्म स्थापन हुए तब

दीर्घतपाका आख्यान, ऋषिशृंगका स्वर्गगमन, दीर्घतपाका स्वर्गगमन, काशीराजमोक्ष, व्याधवाक्य, व्याधस्वर्गगमन, शूलभेद माहात्म्य समाप्ति, आदित्येश्वर, शक्रेश्वर, करोटेश्वर, कुमारेश्वर, अगस्त्येश्वर, व्यासेश्वर वैद्यनाथ, केदार, आनन्देश्वर, मातृ, नर्म्मदा मुण्डेश्वर, अनड्वाहीसंगम, भीमेश्वर, अर्जुनेश्वर, धर्म्मेश्वर, लुकेश्वर, धनद, जटेश्वर, रवि, कामेश्वर, मंगलेश्वर, कपिलेश्वर, गोपालेश्वर, मणीश्वर, तिलकेश्वर, गौतमेश्वर, शङ्खचूडेश्वर, केदार, पराशरेश्वर, भीमेश्वर, चन्द्रेश्वर, अश्वपर्णी-संगममें वह्नीश्वर, नारदेश्वर, वैद्यनाथ, तेजोनाथ, वानरेश्वर, कुंभेश्वर, रामेश्वर, मेघेश्वर, मधुच्छन्द, नन्दिकेश्वर, वरुणेश्वर, पावकेश्वर, कुबेर, कपि हनुमन्तेश्वर, पूतिकेश्वर, सोमनाथ, नन्दा, पिंगलेश्वर, ऋणमोचन, कपिलेश्वर, चक्र, जलशायी, चण्डादित्य, यमहासेश्वर, कहोडी गंगेश्वर, नन्दिकेश्वर, बदरिकेश्वर, नलेश्वर, मार्कण्डेश्वर, व्यास, कोटीश्वर, प्रभेश्वर, शुक्रेश्वर, नागेश्वर, मार्कण्डेश्वर, सङ्कर्षणेश्वर, जनकेश्वर, मन्मथेश्वर, अनसूया, एरण्डीसंगम, सुवर्णशिलेश्वर, अम्बिकेश्वर, करञ्जेश्वर, भरतेश्वर, मुकुटेश्वर, सौभाग्यसुन्दरी, धनेश्वर रोहिणेश्वर, सेनापुरमें चक्रतीर्थ, उत्तरेश्वर, भोगेश्वर, केदार, निष्कलङ्क, मार्कण्डेश्वर, धूतपापेश्वर, आंगिरसेश्वर, कोटीश्वर, अयोनिजेश्वर, अंगारकेश्वर स्कन्देश्वर, नर्म्मदेश्वर, ब्रह्मेश्वर, धातकी, वाल्मीकीश्वर, कपालेश्वर, पाण्डु, त्रिलोचनेश्वर, कपिलेश्वर, कम्बुकेश्वर, चन्द्रप्रभास, कोरलेश्वर, इन्द्रेश्वर, बाहुकेश्वर देवेश, शक्रेश्वर, नागेश्वर, गौतमेश्वर, अहल्येश्वर, रामेश्वर, मोक्ष, नर्म्मदेश्वर, कपर्दीश्वर, सागरेश्वर, भौरादित्य, अयोनिज, कोरिलापुरमें अग्नि, कपिलेश्वर, भृग्वीश्वर, आदिवराह, कौबेर, याम्य, वातेश्वर, रामेश्वर, कर्कटेश्वर, शक्रेश्वर, सोम, नन्दाह्रद, द्वादशी, जयवराह, शिव, योधनी पुरमें रामकेशव, रुक्मिणी, अनाहकेश्वर, सिद्धेश्वर, तामेश्वर, सिद्धेश्वर, वारुणेश्वर, अंगारक, लिंगवराह, अङ्कोल, कुसुमेश्वर, कलकलेश्वर, श्वेतवराह, मार्गलेश्वर आदित्येश्वर, और हुङ्कार इत्यादि तीर्थमाहात्म्य, चाणक्यनृपसिद्धि, मधुमती सङ्गमेश्वर, नर्म्मदेश्वर, अमरकेश्वर, गोपेश्वर, मार्कण्डेश्वर, कुटुम्बरीसगम, सौरतीर्थ, साम्बादित्य, सिद्धेश्वर, गोपेश्वर, कपिलेश्वर, वैद्यनाथेश्वर, घोडेश्वर, पिंगलेश्वर, भूतेश्वर, गंगावराह, शङ्खोद्धार, गौतमेश्वर, दशाश्वमेध, भृगुकच्छ, केदार, धूतपापा, एरण्डी, कनकेश्वरी, जालेश्वर, कालाग्निरुद्र, सालग्राम, चन्द्रादास, उदीर्ण वराह, चन्द्रप्रभाव, द्वादशादित्य, सिद्धेश्वर, कपिलेश्वर, त्रिविक्रम, विश्वरूपा, नारायण, मूलश्रीपति, चौलश्रीपति, हंस, प्रभा, भास्कर, मूलस्थान, कण्ठेश्वर, अट्टहासेश्वर,

इस माहात्म्यकी विशेष वृद्धि हुई, गयाक्षेत्र यद्यपि वेदप्रतिपाद्य है और वाल्मीकि रामायणमें भी इसका उल्लेख है परन्तु बौद्ध प्रादुर्भावके उपरान्त जब उनका समय हीन हुआ तब धर्मग्रन्थोंमें बहुत कुछ उलट फेर होगया अपने२संप्रदायके माहात्म्य सूचक बहुतसे प्रक्षिप्त श्लोक धर्मग्रंथोंमें मिलादिये गये और उनको पुराणोंमें मिलानेकी चेष्टा हुई ऐसेही गयामाहात्म्य वायुपुराणोंमें मिलानेकी चेष्टा हुई थी परन्तु वह उसके साथ सम्मिलित न हुआ.

महाकवि कालिदासने ज्ञानसंहिताके ९–२४ अध्यायका आशय लेकरही कुमारसंभवकी रचना की है, मुद्रित शिवपुराणमें वारह संहिता नहीं पाईजाती परन्तु एकादश रुद्र कोटिरुद्र शतरुद्र प्रभृति संहिता स्वतंत्र पाई जाती हैं.

भूर्भुवेश्वर, शूलेश्वर, सरस्वती, दारुकेश्वर, अश्विनीकुमार, गानागोनी, सावित्री, मातृ, मत्स्येश्वर, देव, शिखि, कोटी, पितामह, माण्डव्येश्वर, अक्रूरेश्वर, सिद्धरुद्रेश्वर, भटभटमातृ, कुवरीश्वर, टोटैका, क्षेत्रपाल, सुकन्या, स्वर्णबिन्दु, ऋणमोचन, भारभूति, मण्डेश्वर, एकशालामें डिण्डिमेश्वर, अप्सरेश्वर, मुन्यालय, मार्कण्डेश्वर, गणितादेवी, आमलीश्वर, कण्ठेश्वर, आखाटीश्वर, शृङ्गीश्वर, वालकेश्वर, कपालेश्वर, एरण्डीसङ्गम, रामपुङ्खिल, जमदग्नि, रेवा, सागर, लुण्ठनेश्वर, लुण्टेश्वर, हंसेश्वर, तिलदेश्वर, कोटीश्वर, अलिका, विमलेश्वर, और ओंकार, इत्यादि, बहुतसे तीर्थोंका माहात्म्य ।

नारद=पुराणमें जो माघ और मासमाहात्म्येश्वर उल्लेख है, इन दोनोंमेंसे माघमाहात्म्य, पाया जाता है । माघमाहात्म्य तीस अध्यायोंमें पूरा हुआ है। उसका क्रम इस प्रकार है। ब्रह्म नारद सम्वादमें माघस्नान प्रशंसा । २ माघकृत्य। ३ । ४ सुधर्म कन्या रोचिष्मतीका आख्यान ५ रोमशके शापसे सर्पयोनिको प्राप्त श्वेतगुह्यककी माघस्नानसे मुक्ति । ६ । ७ शुभदिन और पुण्यक्षेत्रकथा ८ शूद्रशतवलीके पुत्र भद्र और सुभद्रका उपाख्यान ९ प्रगाध ऋषिके शिष्य परिभ्रिकी कथा। १० । ११ कौशिकीस्नान प्रसंगमें जाबालि और शाण्डिल्य शिष्य सुयज्ञकी कथा। १२ । १३ सप्तकूष्माण्ड और डाकिनी गणका आख्यान । १४ तुन्तिल उर्मिल तीन गृद्धशिर (कदम्बग) और दो उदुम्बरपर आश्रय करनेवालोंकी कथा। १५ सुराजके सम्वादमें विसर्ग कथन। १६–२४ प्रकृतविष्णुपूजा कथन। २५–३० गालवमुनिद्वारा विष्णुमाहात्म्य और विष्णुपूजा कथन ।

निम्नलिखित ग्रन्थ वायुपुराणके अन्तर्गत कहकर प्रचलित हैं आनन्द कानन वा काशी माहात्म्य, केदारमाहात्म्य, गीतामाहात्म्य, गोस्तनी माहात्म्य, तिलपद्मदान प्रयोग, तुलसीमाहात्म्य, द्वारकामाहात्म्य, माधव माहात्म्य, राजगृह माहात्म्य, रुद्रकवच,लक्ष्मीसंहिता, वेंकटेश स्तोत्र, व्रतदान विधि, सीतातीर्थ माहात्म्य, हनुमत्कवच.

निम्न लिखित छोटी २ पोथी शिवपुराणके अन्तर्गत पाई जाती हैं अविमुक्त माहात्म्य, आदिचिदम्बर माहात्म्य, ज्येष्ठललिता व्रत, तृतीया-व्रत, वदरीवन माहात्म्य, बिल्ववनमाहात्म्य,भौमसंहिता,मयूरपुर माहात्म्य, व्यासपूजन संहिता, साध्यसाधन खण्ड, हेमसभानाथ माहात्म्य, परन्तु यह ग्रन्थ पुराणरचनाके पीछेके हैं.

हमारी सम्मतिमें महाशिवपुराण और वायुपुराण दोनोंही महापुराण हैं प्रत्येक द्वापर युगमें पुराण विभाग हुआ है किसी द्वापरमें वायु और किसीमें शिव महापुराण माना गया था इसमें सन्देह नहीं और इन छोटे २ ग्रन्थोंका मूल और संक्षिप्त माहात्म्य भी पुराणोंमें विद्यमान है इससे यह ग्रंथ अमूल नहीं है, और बौद्धोंने हमारे धर्मग्रन्थोंको इतना नष्टभ्रष्ट किया था कि उनके पीछे वे ग्रन्थ अपना असलीस्वरूप प्राप्त न करसके।

५ म भागवत ।

इस भागवतके महापुराण और मौलिकत्व सम्बंधमें अनेक मत प्रचलित हैं। वैष्णवलोग विष्णुमहिमा प्रकाशक श्रीमद्भागवतको और शाक्तलोग शक्तिमाहात्म्यपूर्ण देवीभागवतको ही महापुराण बताते हैं। इस विषयमें आलोचना करनेसे पहिले दोनों भागवतोंमें क्या २ विषय है यह बात जाननी आवश्यक है उसको देखकर विचार करनेमें सुभीता होगा।

श्रीमद्भागवत ५.

१ स्कन्धमें—१ मंगलाचरण, नैमिनीयोपाख्यान, ऋषि प्रश्न, २ ऋषि प्रश्नका उत्तर और भगवद्वर्णन, ३ अवतारकथन प्रसंगमें भगवान्का

चारित्र वर्णन; ४ तपस्यादि द्वारा चित्तसन्तोष न होनेसे वेदव्यासकी भागवतारंभप्रवृत्ति, ५ वेदव्यासके चित्तविनोदार्थ नारदकर्तृक हरिसंकीर्त्तनका गौरव वर्णन, ६ भगवत्फलचर्य्याका असाधारण फलकथन उस विषयमें वेदव्यासके विश्वासार्थ नारदकर्तृक कृष्णसंकीर्त्तन जनित पूर्वजन्म संभूत अपना सौभाग्य वर्णन, ७ भागवत श्रोता, राजा परीक्षितका जन्म वृत्तान्त वर्णन, निद्रित बालकके मारनेवाले अश्वत्थामाका दण्ड वर्णन ८ क्रोधान्ध अश्वत्थामाके अस्त्रसे श्रीकृष्णद्वारा परीक्षितकी रक्षा, कुन्तीका स्तव और राजाका शोकवर्णन, युधिष्ठिरके निमित्त भीष्मका सकल धर्म्मनिरूपण, उनकी की हुई श्रीकृष्णस्तुति और उनकी मुक्ति वर्णन ९–१० श्रीकृष्णका कृतकार्य्य होकर हस्तिनापुरसे द्वारिका गमन, स्त्रियोंकी की हुई स्तुति; ११ द्वारिकावासियोंसे स्तूयमान श्रीकृष्णका पुरीप्रवेश, उनकी प्रीतिका वर्णन, १२ परीक्षितका जन्म विवरण, १३ विदुरके वाक्यसे धृतराष्ट्रका महापथ गमनार्थ निर्गम, १४ अनिष्ट दर्शनसे उत्पन्नहुई राजा युधिष्ठिरकी शंका, अर्जुनके मुखसे श्रीकृष्णकी तिरोधान वार्ता श्रवण, १५ पृथिवीमंडलमें कलिके प्रवेशदर्शनसे परीक्षितके हाथमें राज्यभार समर्पणपूर्वक राजा युधिष्ठिरका स्वर्गारोहण, १६ कलिद्वारा खिन्न होकर पृथिवी और धर्म्मका परीक्षितके निकट उपस्थिति वृत्तान्त, १७परीक्षितका किया हुआ कलिनिग्रह, १८परीक्षितको ब्रह्मशाप और उसको वैराग्य,१९गंगापर शरीर छोडनेके लिये मुनिगणवृत राजा परीक्षितका प्रायोपवेश और उनके निकट शुकदेवका आगमन ।

२ य स्कन्धमें–१ कीर्तन श्रवणादि द्वारा भगवान्‌की धारणा और महापुरुष संस्थान वर्णन, २ स्थूल धारणा द्वारा जीते हुए मनके सर्वान्तर्य्यामी विष्णु धारणाकी कथा, ३ विष्णुधर्म्मकी विशेष बात सुनकर राजाका तद्भक्त्युद्रेक और उस धर्म्मश्रवणमें आदर, ४ श्रीहरिचेष्टित सृष्टयादि विषयमें राजा परीक्षितका प्रश्न, ब्रह्म नारद सम्वादमें

उत्तर देनेके लिये शुकदेवका मंगलाचरण, ५ नारदके पूछनेपर ब्रह्माका सृष्टयादि हरिलीला और विराट् सृष्टि कथन, ६ अध्यात्मादि भेदसे विराट् पुरुषका विभूति कथन, पुरुषसूक्त द्वारा पूर्वविषयोंकी दृढता सम्पादन, ७ ब्रह्मकर्तृक नारदके निकट भगवान्की लीलावतार कथन उन उन अवतारोंका कर्म्म प्रयोजन और गुण वर्णन, ८ राजा परीक्षितका पुराणार्थविषयक प्रश्न, ९ परीक्षितके प्रश्नका उत्तर देनेके लिये शुकदेव द्वारा भगवदुक्त भागवत कथन, १० भागवत व्याख्याद्वारा शुकदेवका राजप्रश्नोत्तर दानारंभ।

३ य स्कन्धमें—१ विदुर उद्धव सम्वाद, २ श्रीकृष्णके विच्छेदसे शोकार्त्त उद्धवका विदुरके निकट श्रीकृष्णकी बाललीला वर्णन, ३ उद्धव द्वारा श्रीकृष्णका मथुरा गमन, कंसवधादि और द्वारकाका कार्य्यवर्णन, ४ बन्धुनिधन सुनकर आत्मज्ञानलिप्सु विदुरका उद्धवोपदेशसे मैत्रेयके निकटगमन, ५ विदुरके प्रश्नसे मैत्रेयकर्तृक भगवल्लीला और महदादि सृष्टि कथन, श्रीकृष्णका स्तव, ६ महदादि ईश्वरमें आविष्टके कारण विराट्पुरुषकी सृष्टि, भगवत् आधिदैवादि कथन, ७ मैत्रेयमुनिके वचन श्रवणसे आनन्दित विदुरके अनेक प्रश्न, ८ जलशायी भगवान्के नाभिकमलसे ब्रह्माकी उत्पत्ति, ब्रह्मा द्वारा भगवान्की तपस्या, ९ लोकसृष्टि कामनासे ब्रह्मकर्तृक भगवत् स्तुति, भगवत् सन्तोष, १० प्राकृतादि भेदसे दश प्रकारकी सृष्टिका विवरण, ११ परमाणु आदिके द्वारा कालनिरूपण, युग और मन्वन्तरादिका कल्पमानादि कथन, १२ ब्रह्माकी सृष्टि वर्णन, १३ वाराहरूपी भगवान्के द्वारा जलमग्न पृथिवीका उद्धार, हिरण्याक्षवध, १४ दितिकी कामनासे कश्यपसे संध्याकालमें उसके गर्भोत्पत्ति, १५ ब्रह्मा द्वारा वैकुण्ठस्थ विष्णुभृत्योंका शापवृत्तान्त कथन, १६ भगवत्कर्तृक अनुतप्त विप्रगणोंकी सान्त्वना, दोनों सेवकोंके प्रति हरिका अनुग्रह, वैकुण्ठसे उनका पतन, १७ दोनों

भगवत्सेवकोंका असुर रूपसे जन्म, हिरण्याक्षका अद्भुत प्रभाव, १८ पृथिवी उद्धारकारी महावराहके साथ हिरण्याक्षका अद्भुतयुद्ध, १९ ब्रह्माकी प्रार्थनासे आदिवराह द्वारा हिरण्याक्षवध, २० पूर्वप्रस्तावित मनुवंश वर्णनार्थ सृष्टिप्रकरणानुस्मरण, २१ भगवान्के प्रसादसे कर्द्दम ऋषिका मनुकन्याविवाह घटना, २२ भगवान्की आज्ञानुसार मनुद्वारा कर्द्दमके हस्तमें कन्या सम्प्रदान, २३ तपके प्रभावसे विमानमें बैठकर कर्द्दम और देवहूतीका विहार. २४ देवहूतीके गर्भसे कपिलका जन्म और कपिलकी आज्ञासे कर्द्दमका तीन ऋण मुक्त प्रव्रज्यागमन, २५माताकी आज्ञासे कपिल द्वारा बन्ध विमोचनकारी भक्तिलक्षण कथन, २६ प्रकृति पुरुष विवेचनार्थ सांख्यतत्त्व निरूपण, २७ पुरुष और प्रकृतिके विवेकद्वारा मोक्षरीति वर्णन, २८ अध्यानशोभित अष्टांगयोग द्वारा सर्वोपाधि विनिर्मुक्त स्वरूपज्ञान कथन, २९ भक्तियोग वैराग्योत्पादनार्थ कालबल और घोरसंसार वर्णन, ३० पुत्रकलत्रादि आसक्त चित्तवाले कामियोंकी तामसीगतिका विवरण, ३१ मिश्रित पापपुण्यद्वारा मनुष्ययोनि प्राप्तिरूप राजसीगतिका विवरण, ३२ धर्मानुष्ठानद्वारा सात्त्विकगणोंकी ऊर्ध्वगति और तत्त्वज्ञानहीन व्यक्तिके पुनरावृत्तिका कथन, ३३ भगवान् कपिलके उपदेशसे देवहूतीका ज्ञानलाभ और जीवन्मुक्ति।

४ स्कन्धमें—१ मनुकन्या गणोंका पृथक् २ वंशवर्णन, २ भव और दक्षके परस्पर विद्वेषके मूल विश्वस्रष्टा गणोंका यज्ञवृत्तान्त, ३ दक्षयज्ञ दर्शनार्थ सतीकी पितृगृहमें गमन प्रार्थना, शिवका निवारण करना, ४ शिवके वाक्यको न मानकर सतीका पितृगृहमें गमन और पिताके अपमानसे शरीर त्याग, ५ सतीदेहत्याग श्रवणसे शंकरका रोष वीरभद्रसृष्टि; यज्ञनाश और दक्षवध, ६ दक्षादिके जीवदानार्थ देवगणसे युक्त ब्रह्माका शिवको शान्त करना, ७ दक्षभवादिके स्तवसे भगवान् विष्णुका आविर्भाव उनकी सहायतासे दक्षद्वारा यज्ञनिष्पादन, ८ विमाताके वाक्यसे रोषपरवश होकर नगरसे निकाले हुए ध्रुवकी तपस्या और हरिप्रीतिलाभ, ९ भग-

वानूकी आराधनासे वरप्राप्त ध्रुवका प्रत्यागमन और पितृराज्य पालन, १० ध्रुवका पराक्रमवर्णन, ११ यक्षोंका क्षय देखकर मनुका रणक्षेत्रमें आना और तत्त्वोपदेश द्वारा ध्रुवकी संग्रामसे निवृत्ति, १२ कुबेरद्वारा अभिनन्दित ध्रुवका अपने नगरमें लौटना और यज्ञानुष्ठान, तदनन्तर हरिधाममें आरोहण, १३ ध्रुव वंशमें पृथुजन्म कथनप्रसंगमें वेणपिता अंगका वृत्तान्त, १४ अंगराजका प्रव्रज्यागमन, ब्राह्मणों द्वारा वेणका राज्याभिषेक, वेणचरित्र, ब्राह्मणगण द्वारा वेणवध, १५ विप्रगणद्वारा मथ्यमान वेणबाहुसे पृथुका जन्म और राज्याभिषेक, १६ मुनियोंके नियोगसे सूतादिद्वारा भार्य्यासहित पृथुका स्तव, १७ प्रजागणको क्षुधाकातर देखकर धरणी वधार्थ पृथुका उद्योग, धरणीकर्तृक पृथुका–स्तव, १९ पृथुआदिद्वारा वत्सपात्रादि भेदसे क्रमशः पृथिवी दोहन, १९ अश्वमेध यज्ञमें अश्वापहारि इन्द्रवधार्थ पृथुका उद्योग, ब्रह्मद्वारा उसका निवारण, २० यज्ञमें वरदानप्रसंगमें भगवानूका पृथुके प्रति साक्षात् उपदेश, पृथुका स्तव, परस्परकी प्रीति, २१ महायज्ञमें देवता प्रभृतिकी सभामें पृथुद्वारा प्रजागणका अनुशासन, २२ मघवानूकी आज्ञासे पृथुके प्रति सनत्कुमारका परमज्ञानोपदेश, २३ भार्य्यासहित वनप्रस्थान करके समाधि प्रभावसे पृथुका वैकुंठगमन, २४ पृथुवंशकथा, पृथुपौत्र प्राचीनबर्हिसे प्रचेतादिकोंकी उत्पत्ति और उनका रुद्रगीताश्रवण, २५ प्रचेतागणोंके तपस्यामें प्रवृत्तहोनेपर प्राचीनबर्हिके निकट नारदागमन और पुरञ्जनकथाके बहानेसे विविध संसारकथन, २६ पुरञ्जनकी मृगया वर्णनके छलसे स्वप्न और जागरण अवस्था कथन, संसारप्रपञ्च कथन, २७ पुत्र कलत्रादिमें आसक्तिके कारण पुरञ्जनका आत्मविस्मरण, गन्धर्वयुद्ध, कालकन्यादिके उपाख्यानद्वारा जरारोगादि वर्णन, २८ पुरञ्जनका पूर्वदेहत्याग, स्त्रीचिन्ताके कारण स्त्रीत्वप्राप्ति, और अदृष्टवश ज्ञानोदयसे भक्तिलाभ, २९ उपाख्यानकी अर्थव्याख्याद्वारा संसार और मुक्तितात्पर्य कथन, ३० तपस्यासे

प्रसन्न विष्णुके वरलाभानन्तर प्रचेता गणोंका दारपरिग्रह, राज्यभोग और पुत्रोत्पादन, ३१ दक्षके हाथमें राज्यसमर्पणपूर्वक प्रचेताओंका वनगमन और नारदोक्त मोक्ष कथन.

५ स्कन्धमें—१ प्रियव्रतका राज्यभोग और ज्ञाननिष्ठा, २ आग्नीध्र चारित वर्णन, पूर्वचित्तिनामक अप्सराके गर्भसे उनका पुत्रोत्पादन, ३ आग्नीध्रपुत्र नाभिका मंगलावह चारित्र, यज्ञसे तुष्ट भगवान्‌को उसका पुत्रत्व स्वीकार ४ मेरुदेवीके गर्भसे नाभिपुत्र ऋषभका जन्म और राज्यवर्णन ५ ऋषभकर्तृक पुत्रोंके प्रति मोक्षधर्मोपदेश और पारमहंस्यज्ञान कथन, ६ ऋषभदेवका देहत्यागक्रम कथन, ७ राजा भरतका विवाह और हरि क्षेत्रमें हरिभजन कथा, यागादिमें हरिपूजा, ८ भगवद्भक्ति परायण भरतको मृगशिशुरक्षणमें आसक्तिके कारण राजाकी मृगत्वप्राप्ति और देहत्याग, ९ प्रारब्ध कर्म्म फलसे भरतका जडविप्ररूपसे जन्म ग्रहण, १० जडभरत और रहूगण उपाख्यान, ११ रहूगणद्वारा जिज्ञासित जडभरतका उसके प्रति ज्ञानोपदेश, १२ रहूगण नरपतिकी पुनर्जिज्ञासासे जडभरतद्वारा उसका सन्देहभञ्जन, १३ रहूगणराजाके वैराग्य दाढ्यार्थ भरतका भवाटवी वर्णन करना, १४ रूपक रूपसे वर्णित भवाटवीकी व्याख्या, १५ जडभरत वंशमें उत्पन्न नृपतियोंका विवरण, १६ प्रियव्रतके चारित्र प्रसंगमें द्वीपादिका वर्णन, उस विषयके जाननेकी इच्छासे परीक्षितका प्रश्न और भुवनकोश वर्णन, जम्बूद्वीप कथन प्रस्तावमें मेरुका अवस्थान वर्णन, १७ इलावत वर्षके चारोंतरफ गंगागमन और रुद्रद्वारा संकर्षणस्तव, १८ सुमेरुके पूर्वादिक्रमसे तीन तरफ तीन उत्तर वर्ष सेव्य सेवक वर्णन, १९ किम्पुरुषवर्ष और भारत वर्षका सेव्य सेवक कथन तथा भारत वर्षका श्रेष्ठत्व निरूपण, २० सागर सहित प्लक्षादि छः द्वीप और अन्तर्बहिर्भागादिके परिमाणानुसार लोकालोक पर्वतकी स्थिति वर्णन, २१ कालचक्रयोगसे भ्रमणशील सूर्य्यकी गति, राशिसं-

चार और तद्वारा लोक यात्रा निरूपण, २२ खगोलमें सोमशुक्रादिका अवस्थान और उनकी गतिके अनुसार मानव गणोंका इष्टानिष्ट फल, २३ ज्योतिश्चक्रका आश्रय,ध्रुवस्थान और शिशुमारस्वरूपमे भगवान्‌की, स्थितिकथन, २४ सूर्य्यके नीचे राहुआदिका अवस्थान और अतलादि अधोभुवन और उसके निवासियोंका विवरण, २५ पातालके अधोभागमें शेषनाग अनन्त जिस प्रकारसे है उसका वर्णन, २६ पातालके अधोभागस्थ सम्पूर्ण नरकोंका विवरण और उस स्थानमें पापियोंको दण्ड.

७ म स्कन्ध—१० विष्णुभक्त प्रह्लादके प्रति हिरण्यकशिपुका शत्रुता-प्रकाशक पूर्व वृत्तान्त, २ हिरण्याक्षवधसे क्रुद्ध हिरण्यकशिपुका त्रिजगत् विप्लावन, हिरण्यकशिपुद्वारा साधुओंके दमनार्थ दानवगणोंके प्रति उपदेश, तत्त्वकथनद्वारा आत्मीय और बान्धवोंका शोकापनोदन, ३ हिरण्यकशिपुकी उग्रतपस्यासे जगत्‌को सन्तप्त देखकर ब्रह्माका आगमन और स्तुत होकर उसक प्रति वरदान, ४ वरलाभानन्तर हिरण्यकशिपुका अखिललोक जय और विष्णुद्वेषी सर्वजनपीडन, ५ गुरूपदेश परित्याग-पूर्वक प्रह्लादकी विष्णुस्तवमें मति, हस्ति सर्पादिद्वारा उसके प्राणवधार्थ हिरण्यकशिपुका यत्न, ६ दैत्यबालकोंके प्रति प्रह्लादका नारदोक्त उपदेश, ७ दैत्यबालकोंके विश्वासार्थ प्रह्लादकर्तृक मातृगर्भमें रहनेके समय नारदोपदेश श्रवण वृत्तान्त कथन, ८ प्रह्लादको मारनेमें उद्यत होनेपर हिरण्यकशिपुका नृसिंहके हाथसे आत्मविनाश, ९ नरसिंहके कोप प्रशम-नार्थ ब्रह्माके वियोगमें प्रह्लाद द्वारा भगवान्‌की स्तुति, १० प्रह्लादके प्रति भगवान्‌का अनुग्रह और अन्तर्धान, प्रसंगतः रुद्रके प्रति अनुग्रह विवरण, ११ सामान्यतः मनुष्यधर्म और विशेषरूपसे वर्णाश्रम धर्म्म, तथा स्त्रीधर्म्म कथन, १२ ब्रह्मचारी और वानप्रस्थका असाधारण धर्म्म और चारों आश्रमका साधारण धर्म्म कथन, १३ साधक और यतिका

धर्म्म तथा अवधूतका इतिहास कथनद्वारा सिद्धावस्था वर्णन, १४ गृहस्थका धर्म्म और देशकालादि भेदसे विशेप २ कर्म्म, १५ सारसंग्रह पूर्वक सर्व वर्णाश्रम निबन्धन, मोक्षलक्षण वर्णन.

८ म स्कन्ध—१ स्वायम्भुव स्वारोचिप उत्तम और तामस इन चार मनुका निरूपण, २ गजेन्द्रमोक्षवर्णन हथिनियोंके साथ क्रीडाकारी गजेन्द्रका दैवात् ग्राहसे गृहीत होकर हरिस्मरण; ३ स्तवसे तुष्ट होकर भगवान्‌का गजेन्द्रको मोक्षकरना और देवलशापसे ग्राहको मुक्तकरना, ४ ग्राह और गजेंद्रमेंसे ग्राहको फिर गन्धर्वत्वप्राप्ति और गजेंद्रका भागवत पार्षद होकर तत् पदलाभ, ५ पञ्चम और षष्ठ मनुका विवरण तथा विप्रशापसे श्रीभ्रष्ट देवगणसहित ब्रह्मद्वारा हरिस्तव, ६ विष्णुके आविर्भावानन्तर पुनर्वार देवगणद्वारा तदीयस्तुति और असुरोंके साथ अमृतोत्पादनार्थ उद्यम, ७ क्षीरोदमथनमें कालकूटोत्पत्ति, और सम्पूर्ण लोकोंको भयभीत देखकर रुद्रद्वारा उसका पान, ८ समुद्रमथनमें लक्ष्मीका विष्णुको वरण और धन्वन्तरिके साथ अमृतोत्थान, तदनन्तर विष्णुका मोहिनीस्वरूप धारण, ९ मुग्धदानवगण द्वारा मोहिनीके हाथमें अमृतपात्रार्पण और दानवोंको वञ्चना करके मोहिनीरूपमें देवताओंको अमृतदान, १० मत्सरके कारण देवताओंके साथ दानवोंका संग्राम और विपण्ण देवगणोंके मध्यसे विष्णुका आविर्भाव, ११ दानवसंहार दर्शनसे देवर्पिद्वारा देवताओंका निवारण और शुक्राचार्य्यद्वारा मृतदैत्योंका पुनर्जीवन, १२ मोहनीरूप धारण पूर्वक भगवान् द्वारा त्रिपुरारिका मोहन, १३ सप्तमादि छः प्रकारके मन्वोंका पृथक् २ विवरण, १४ भगवद्वशवर्ती मन्वादिके पृथक् पृथक् कर्मवर्णन, १५ बलिका विश्वजित् यज्ञ और उसके द्वारा स्वर्गजय १६ देवताओंके प्रदर्शनमें देवमाता अदितिका शोक और उसकी प्रार्थनासे कश्यपद्वारा पयोव्रतोपदेश, १७ अदितिके पयोव्रतद्वारा,

उसकी कामना पूरणार्थ भगवान् हरिका उसका पुत्रत्व स्वीकार, १८ वामनरूपसे अवतीर्ण होकर भगवान्का बलियज्ञमें गमन और बलिका उनका सत्कारकरके वरदान, १९ वामनकर्तृकबलिके निकट त्रिपाद परिमित भूमियाचन, दानार्थ बलिका अंगीकार, भृगुका निवारण-करना, २० भगवान्का कपटजानकरभी झूँठके भयसे बलिको प्रतिश्रुत दान, इसके उपरान्त सहसा अद्भुतरूपसे वामनकी वृद्धि, २१ संसारमें बलिका यश फैलानेकेलिये तृतीयपाद पूरणके बहानेसे विष्णुद्वारा बलिका बन्धन, २२ पातालमें प्रस्थानके अनन्तर न्यूनतारोधसे बलिके प्रति वरदान पूर्वक भगवान्की द्वारपालता स्वीकार, २३ पितामह सहित बलिके सुतलगमनकरनेपर इन्द्रका विष्णुसहित स्वर्गारोहणपुरःसर पूर्ववत ऐश्वर्य भोग, २४ मत्स्यरूपी भगवान्का लीलावृत्तान्त.

९ म स्कन्धमें—१ वैवस्वतपुत्रके वंशवर्णन प्रसंगमें इलोपाख्यान, २ करुषादिपञ्चमनुपुत्रोंका वंशविवरण, ३ सुकन्याख्यान और रेवताख्यान समेत शर्य्यातिका वंशविवरण, ४ मनुपुत्र नाभाग और उसके पुत्र अम्बरीषकी कथा, ५।६ शशादसे लेकर मांधातातक अम्बरीष वंशवृत्तान्त और प्रसंगक्रमसे मान्धातृ तनयापति सौभरिका उपाख्यान, ७ मान्धाताके वंशवृत्तान्त प्रसंगमें पुरुकुत्स, और हरिश्चन्द्रका उपाख्यान, ८ रोहिताश्ववंश और कपिलाक्षेपसे सगरसन्तानोंका विनाश वृतान्त, ९।१० खट्वांगवंशमें श्रीरामचन्द्रका जन्म और रावणवधकरके अयोध्यागमन पर्य्यन्त उनका चरित्र, ११ रामकी अयोध्यामें स्थिति, अश्वमेध यज्ञादिका अनुष्ठान, १२ श्रीरामसुत कुश और इक्ष्वाकुपुत्र शशादका वंशविवरण, १३ इक्ष्वाकुपुत्र निमिका वंशविवरण, १४ बृहस्पतिकी स्त्रीमें चन्द्रसे बुधका जन्म, बुधके औरससे उर्वशीके गर्भमें आयुमुख्यादिकोंकी उत्पत्ति कथन, १५ ऐलपुत्रके वंशमें गाधिका जन्म, गाधिके, दौहित्र रामद्वारा कार्यवीर्यवध, १६ जमदग्निहनन, परशुरामद्वारा वारं

वार क्षत्रियवध विश्वामित्र वंशानुचरित, १७ आयुके पाँच पुत्रोंमेंसे क्षत्रवृद्धादि चारजनोंका वंशविवरण, १८ नहुषपुत्र ययातिका उपाख्यान १९ ययातिका वैराग्योदय और निर्वेदार्थ प्रियाके प्रति आत्मवृत्तान्त कथन, २० पुरुवंशविवरण और तद्वंशीय दुष्यन्ततनय भरतका यशः-कीर्तन, २१ भरतका वंशविवरण और प्रसंगक्रमसे रन्तिदेव,अजमीढादिकी कीर्तिवर्णन, २२ दिवोदासका वंश, ऋक्षवंशीय जरासन्ध युधिष्ठिर दुर्य्योधनादिका विवरण, २३ अनुद्रुयु और तुर्वसुका वंश तथा ज्यामेघकी उत्पत्ति यदुवंश विवरण, २४ रामकृष्णकी उत्पत्ति, विदर्भके तीन बेटोंसे उत्पन्न हुए अनेक वंश.

१० म स्कन्ध—१ देवकी पुत्रके हाथके अपनी मृत्यु सुनकर कंसका उसके छः गर्भ नाश करना, २ कंसवधार्थ देवकीगर्भसे भगवान् हरिका जन्म, ब्रह्मादिकर्तृक उनकी स्तुति, देवकीकी सान्त्वना, ३ भगवान्की निज स्वरूपमें उत्पत्ति, मातापिता द्वारा तदीयस्तुति, और वसुदेवद्वारा गोकुलमें आनयन, ४ चाण्डिकावाक्यश्रवणसे कंसका भय और मंत्रियोंकी कुमंत्रणासे बालकादिहिंसामें प्रवृत्ति, ५ पुत्रजातोत्सवसमाप्तिके अन्तमें नन्दका मथुरागमन और वसुदेव समागमोत्सव, ६ गोकुलसे लौटनेके समय नन्दका मार्गमें मृतराक्षसी दर्शन और उसके मरण विवरण श्रवणसे विस्मय, ७ आकाशमें शकटोत्क्षेपण, तृणावर्तको अधःक्षिप्तकरण, मुखमें विश्वप्रदर्शन आदि कृष्णलीलाकथन, ८ नन्दनंदनका नामकरण बालक्रीडाके छलसे मृद्भक्षणाभियोगरूपमें विश्वरूपदर्शन, ९ भाण्डभंगादि दर्शनसे गोपीद्वारा श्रीष्णका बन्धन, कृष्णके उदरमें स्थित विश्वनिरीक्षणमें विस्मय, १० श्रीकृष्णद्वारा यमलार्जुनभंग उनका निजरूप धारण, श्रीकृष्णका स्तव, ११ वृन्दावनमें श्रीकृष्णका गोचरण, श्रीकृष्णद्वारा वत्सासुर और बकासुर वध, १२ अघासुरका सर्पशरीर धारण, गोवत्सग्राम, श्रीकृष्णद्वारा उसका वध, १३ ब्रह्मा-

यामें गोपबालक और गोवत्सहरण, श्रीकृष्णद्वारा संवत्सरपर्यन्त पूर्ववत भावरक्षा, १४ अद्भुतलीलामें मोहित ब्रह्मद्वारा भगवान्का स्तव, १५ श्रीकृष्णद्वारा धेनुकासुरमर्दन, कालीयनागसे गोपबालकोंकी रक्षा, १६ यमुनाह्रदमें श्रीकृष्णका कालीनिग्रह, उसकी स्त्रियोंके स्तवसे श्रीकृष्णका करुणाप्रकाश, १७ नागालयसे कालियका निर्गमन, श्रीकृष्णद्वारा श्रान्त सुप्त बन्धुगणोंको दावानलसे परित्राण, १८ श्रीकृष्णद्वारा बलभद्रद्वारा प्रलम्बासुर वध, १९ श्रीकृष्णद्वारा गुञ्जारण्यमें गोप और गोकुलवासियोंको अरण्याग्निमें रक्षाकरण, २० वर्षा और शरदऋतुकी शोभावर्णन, गोपगणोंके साथ रामकृष्णकी प्रावृट्कालीन क्रीडा, २१ शरत्कालीन रम्यवृन्दावनमें श्रीकृष्णका प्रवेश, उनकी वंशी श्रवणसे गोपियोंके गीत, २२ वस्त्रहरण लीला, गोपकन्याओंके प्रति श्रीकृष्णका वरदान, तदनन्तर यज्ञशालामें गमन, २३ यज्ञदीक्षितोंके निकट गोपालगणोंकी अन्नभिक्षा, उनका अनुताप, २४ श्रीकृष्णका इन्द्रार्चन निवारण, श्रीकृष्णकर्तृक गोवर्द्धनोत्सव प्रवर्त्तन, २५ इन्द्रद्वारा व्रजविनाशार्थ भयंकर वारिवर्षण, श्रीकृष्णका गोवर्द्धन धारण और गोकुलरक्षा, २६ श्रीकृष्णके अद्भुतकर्मदर्शनसे गोपियोंका विस्मय, नन्दद्वारा गर्गकथित श्रीकृष्णका ऐश्वर्य्य वर्णन, २७ श्रीकृष्णके प्रभाव अवलोकनसे सुरभि और सुरेन्द्रद्वारा अभिषेकमहोत्सव, २८ वरुणालयसे नन्दानयन, गोपोंको वैकुण्ठदर्शन, २९ कृष्णसम्वादसे गोपीरासविहार कथन, रासारम्भमें श्रीकृष्णका अन्तर्धान, ३० गोपीगणोंका उन्मत्तभाव श्रीकृष्णान्वेषण, ३१ गोपीगणोंका कृष्णगान और उनके आगमनकी प्रार्थना, ३२ श्रीकृष्णका आविर्भाव और गोपीगणोंके प्रति सान्त्वना, ३३ गोपीमंडलमध्यस्थ श्रीकृष्णका यमुना और वनकेलि, ३४ गोकुलमें बालकगणोंका कृष्णगुणगान, ३५ अरिष्टवध, ३६ नारदवाक्यसे रामकृष्ण को वसुदेवपुत्र जानकर कंसकर्तृक तद्वधमंत्रणा और कृष्णके लानेके अक्रूरके

प्रति आदेश, ३७ श्रीकृष्णद्वारा केशीवध, व्योमासुरसंहार, ३८ अक्रूरका गोकुलगमन, श्रीकृष्णद्वारा उसका सन्मान, ३९ अक्रूरके साथ श्रीकृष्णकी मथुरायात्रा, गोपियोंकी खेदोक्ति, यमुनामें अक्रूरको विष्णुलोकदर्शन,४० श्रीकृष्णको ईश्वर जानकर सगुणनिर्गुण भेदसे अक्रूरका स्तव, ४१ श्रीकृष्णका मथुरासन्दर्शन, पुरीप्रवेश, रजकवध,सुदामाके प्रति वरदान, ४२ कुब्जाको सीधाकरना, धनुर्भङ्ग और रक्षकवधादि, ४३ गजेन्द्रवध, रामकृष्णका मल्लरङ्गमे प्रवेश, चाणूरके साथ सम्भापण, ४४ मल्लकंसादिका मर्दन, श्रीकृष्णकर्तृक कंसपत्नीके प्रति आश्वासदान रामकृष्णद्वारा पितृमातृदर्शन, ४५ श्रीकृष्णद्वारा पितामाताकी सान्त्वना और उग्रसेनाभिषेक, ४६ उद्धवको व्रजमें भेजना, श्रीकृष्णद्वारा यशोदा नन्दादिका शोकापनोदन, ४७ कृष्णकी आज्ञासे उद्धवका गोपियोंको तत्त्वोपदेश करना, ४८ कुब्जाके साथ विहार अक्रूरका मनोरथ पूर्ण और पाण्डवसान्त्वना, ४९ अक्रूरका हस्तिनापुरमें गमन, उसके द्वारा पाण्डवोंके प्रति धृतराष्ट्रका वैपम्यव्यवहार देखकर लौटना,५०श्रीकृष्णका जरासन्धके भयसे समुद्रमें दुर्गनिर्माण, जरासन्धजय, ५१ मुचुकुन्दकर्तृकयवनवध, ५२ श्रीकृष्णका गमन, ब्राह्मणमुखसे रुक्मिणीका सम्वाद श्रवण, ५३ श्रीकृष्णका विदर्भनगरमें गमन;रुक्मिणीहरण,५४ श्रीकृष्णका रुक्मिणीको निज पुरीमें लाना और रुक्मिणीका पाणिग्रहण, ५५ श्रीकृष्णसे प्रद्युम्नका जन्म और शम्बरद्वारा प्रद्युम्नहरण, शम्बरवध, ५६ श्रीकृष्णमणिहरण, जाम्बवान् और सत्राजितको कन्याप्राप्ति, अनन्तर अन्यदारग्रहण और स्यमन्तक हरणादिद्वारा अर्थकी अनर्थकता कथन, ५७ शतधन्वावध, अक्रूरद्वारा हरण की हुई मणिका वृत्तान्त, ५८ श्रीकृष्णका कालिन्दी आदि पञ्चकन्याका पाणिग्रहण, तपस्विनी कालिन्दीके विवाहार्थ इन्द्रप्रस्थमें गमन, ५९ श्रीकृष्णका भौमको मारना, उसकी लाईहुई सहस्रकन्या और स्वर्गसे पारिजातहरण, सहस्रकन्या-

सहवास, ६० श्रीकृष्णके परिहाससे रुक्मिणीका कोप, प्रेमकलहमें उनको सान्त्वना प्रेमकलहका ऐश्वर्य्यवर्णन, ६१ श्रीकृष्णके पुत्र पौत्रादिसंतति और अनिरुद्धविवाहमें बलरामद्वारा रुक्मकालिंगवध, सोलहसहस्र एकसौ आठ स्त्रियोंमें उत्पन्नहुए कोटीपुत्रपौत्रादिका विवाह वर्णन, ६२ ऊषाके साथ रमणकरते हुए अनिरुद्धका बाणद्वारा अवरोध, अनिरुद्धके निमित्त बाणयादवयुद्धमें दुर्जयबाणराजाकी बाहुच्छेदन, ६३ बाणयादवयुद्धमें माहेश्वरज्वरद्वारा बाणबाहुच्छेत्ता हरिकी स्तुति, ६४ श्रीकृष्णद्वारा नृगका शापमोचन और ब्रह्मस्वहरणदोषउक्ति, विभूतिमदोन्मत्त यदुगणोंको नृगोद्धार प्रसंगमें शिक्षादान, ६५ बलरामका गोकुलागमन और गोपियोंके साथ रमण, मत्ततावश कालिंदी आकर्षण, बलरामका चारित्रवर्णन, ६६ श्रीकृष्णका काशीमें आगमन, पौण्ड्रक और काशीराजवध, सुदक्षिण वध, ६७ बलरामकी रैवतपर्वतपर स्त्रियोंके साथ क्रीडा, द्विविदवानरवध, ६८ युद्धमें कौरवोंद्वारा शाम्बरोध, शाम्बमोचनार्थ बलरामका गमन, ६९ नारदद्वारा श्रीकृष्णका स्तव, ७० श्रीकृष्णके दैनन्दिन कर्म उपलक्षमें दूत और नारदके कार्य्यमें कार्य्य मंत्रविचार और जगदीश्वरका आह्निक और जगन्मंगल चरित्र देखकर नारदकी उक्ति, ७१ उद्धवके परामर्शसे श्रीकृष्णका इन्द्रप्रस्थमें गमन, ७२ श्रीकृष्ण और भीमद्वारा जरासन्ध वध, ७३ श्रीकृष्णका राजालोगोंको छुडाना और अपना रूप दिखाना, ७४ राजसूययज्ञानुष्ठान इस यज्ञमें पहिले पूजाके प्रसंगमें चेदिके राजा शिशुपालका वध, ७५ युधिष्ठिरका अवभृतसंभ्रम और दुर्य्योधनका मानभंग, ७६ वृष्णि शाल्व महायुद्धमें द्युमद गदाप्रहारसे प्रद्युम्नका रणक्षेत्रसे अपसरण, ७७ श्रीकृष्णद्वारा शाल्ववध, ७८ दन्तवक्र और विदूरथ हत्या, श्रीकृष्णका उसकी पुरीको आक्रमण करना, बलरामद्वारा सूतवध, ७९ बल्कल हनन और पीछे तीर्थस्नानादि द्वारा बलदेवके सूतहत्या

जनित पापकी मुक्ति,८०श्रीकृष्णका श्रीदामनामक ब्राह्मणकी पूजा करना, ८१ श्रीकृष्णका अपने सखा श्रीदामब्राह्मणके पृथुक् तण्डुल भोजन करके उसको इन्द्रदुर्लभ सम्पत्ति देना, ८२ कुरुक्षेत्रमें रविग्रहमें वृष्णिसमावेश और राजालोगोंकी परस्पर कृष्णकथा, श्रीकृष्णका कुरुक्षेत्रमें गमन, ८३ श्रीकृष्णकी स्त्रियोंका द्रौपदीके निकट अपना २ उद्वाह विषय कहना, ८४ मुनिसमागम और वसुदेवादिका प्रस्थान, ८५ पितामाताकी प्रार्थनासे श्रीकृष्णबलरामका पिताको ज्ञान दान और माताको मृतपुत्रोंका लाकर देना उसप्रसंगमें तत्त्वज्ञानोपदेश, ८६ अर्जुनद्वारा सुभद्राहरण श्रीकृष्णका मिथिलामें गमन,भक्तनृप और विप्रको सद्गतिप्रदान, ८७ नारद नारायणसम्वाद, वेदद्वारा नारायणस्तुति,८८ विष्णुभक्तकी मुक्ति और अन्यदेवभक्तोंको विभूतिप्राप्ति कथन,८९भृगुका मुनियोंके निकट विष्णुकी उत्कर्षता कहना,९० पुनर्वार संक्षेपसे श्रीकृष्णलीला और यदुवंश वर्णन ।

११श स्कन्धमें–१ यदुवंश नाशके हेतु मौशल कथाका उपक्रम,२नारद निमि जयंत सम्वाद,उस प्रसंगमें वसुदेवके निकट भागवत धर्म्मका प्रकाश, ३ मुनिगण कर्तृक माया; और उससे मुक्ति, ब्रह्म और कर्म्म इन चार प्रश्नोंका उत्तर प्रदान, ४ जयन्ती नन्दन द्रविण समद्वारा अवतार घटित कार्य्यविषयक प्रश्नका उत्तर, ५ युग २ में भक्तिहीन कनिष्ठाधिकारी लोगोंकी प्रतिष्ठा आर उपयुक्त पूजाविधि, ६ उद्धवकी ब्रह्मधाममें जानेके लिये हरिसे प्रार्थना, ७ उद्धवको आत्मज्ञान सिद्धिके हेतु श्रीकृष्ण कर्तृक अवधूत इतिहासोक्त आठ गुरुओंका विषय वर्णन, ८ अवधूत इतिहास प्रसंगमें श्रीकृष्ण द्वारा अवधूत शिक्षा वर्णन,९ श्रीकृष्णकर्तृक कुररादिसे शिक्षा करके यदुराजकी कृतार्थता वर्णन, १० चौवीस प्रकार गुरुओंका उपाख्यान सुननेसे विशुद्ध चित्त उद्धवका आत्मतत्त्व ज्ञान साधन रूप देहसम्बंध विचार और आत्मा संसार स्वरूप

नहीं है इस मतका निराश, ११ बद्ध मुक्त साधु और भक्तका लक्षण, १२ साधुसंगकी महिमा और कर्मानुष्ठान, कर्म्मत्याग रूप व्यवस्था वर्णन, १३ सत्त्वशुद्धिद्वारा ज्ञानोदयका क्रम, हंसेतिहास द्वारा चित्त गुणविश्लेष वर्णन, १४ भक्तिका साधन श्रेयस्त्व कथन, साधनाके साथ ध्यान, योग, वर्णन, १५ विष्णुपद प्राप्तिका बहिरंग साधन, चित्त धारणानुगत अणिमादि अष्टैश्वर्य्य कथन, १६ ज्ञान वीर्य्य प्रभावादि विशेषद्वारा हरिआविर्भाव युक्त विभूति वर्णन, १७ ब्रह्मचारी और गृहास्थियोंका भक्तिलक्षण, स्वधर्म्म विषयक उद्धवके प्रश्नसे भगवान् कर्तृक हंसोक्त धर्म्म रूप वर्णाश्रम विभाग कथन, १८ वानप्रस्थ और यति धर्म्म निर्णय, अधिकार विशेषमें धर्म्मकथन, १९ पूर्व निर्णीत ज्ञानादिके परित्यागरूप श्रेयःकथन, २०–२२ अधिकारी विशेषमें गुणदोष व्यवस्था, तत्प्रसंगमें भक्तियोग, ज्ञानयोग और क्रियायोग कथन, क्रियायोग, ज्ञानयोग और भक्तियोगमें अनाधिकारी कामासक्त लोगोंके सम्बन्धमें द्रव्य देशादिके गुणदोष कथन, तत्त्व संख्याका अविरोध, प्रकृति पुरुष विवेक और जन्म मृत्यु कथन, २३ भिक्षुगीता कथन, तिरस्कार सहनोपाय और बुद्धिद्वारा मनका संयम वर्णन, २४ आत्मा और अन्य समस्त पदार्थोंका आविर्भाव–तिरोभाव चिन्ता, उस प्रसंगमें सांख्ययोग निरूपण द्वारा मनका मोह निवारण, २५भगवान् द्वारा अन्तः करण संभूत सत्त्वादि गुणकी वृत्ति निरूपण, २६ दुष्ट संसर्गमें योग निष्ठाका व्याघात और साधुसंगमें तन्निष्ठाकी पराकाष्ठा वर्णन, दुष्ट संसर्ग निवृत्त्यर्थ ऐलगीत वर्णन, २७ संक्षेपसे क्रियायोग वर्णन, परमार्थ निर्णय, ज्ञानयो- गका संक्षेप वर्णन, २८-२९ पूर्वकथित भक्तियोगका पुनर्वार संक्षेप वर्णन और योगको अतिक्लिष्ट जानकर उद्धवका उसके विषयमें सुखोपाय पूछना, ३० मुसलोत्पत्तिकी कथा, श्रीकृष्णकी अपने धाममें जानेकी इच्छा, उस मुसल छलसे अपने कुलका संहार, ३१ यदुवंशको पुनर्वार देवभाव प्राप्ति,

श्रीकृष्णका सशरीर अपने धाममें गमन और वसुदेवादिका उनके पीछे गमन.

१२ श स्कन्ध—१ कलिप्रभाव वर्णन, सांकर्य्य कथन भांवी, मागध-वंशीय राजाओंका नामकीर्त्तन, कृष्णभक्तिके अतिरिक्त मुक्तिका दूसरा मार्ग नहीं इसका वर्णन, २ कलिके दोषोंकी वृद्धि, कल्कि अवतार और अधार्म्मिकोंका नाश, पुनर्वार सत्ययुगागम वर्णन, ३ भूमिगीत द्वारा राज्यके दोषादि वर्णन, दोष बहुल कलिमें हरिका स्तव कथन, ४ नैमित्तिकादि चार प्रकारके लयकथनपूर्वक हरिसंकीर्त्तन द्वारा संसार निस्तार वर्णन, ५ संक्षेपसे परब्रह्मोपदेश द्वारा राजाका तक्षक दंशनमें मृत्यु भय निवारण । ६ राजा परीक्षितकी मोक्षप्राप्ति, उसके पुत्र जनमेजयके सर्प यज्ञ और वेद शाखावि-भागकथन द्वारा व्यासदेवका वर्णन, ७ अथर्व वेदका विस्तार, पुराणविभाग और उनके लक्षण, भागवत श्रवणफल कथन, मार्कण्डेयका तपश्चरण, कामादिमें अमोह नारायणकी स्तुति, ९ मार्कण्डेय मुनिको प्रलय समुद्रमें माया-शिशु दर्शन, मुनिका शिशु अन्तरमें प्रवेश और निर्गम वर्णन, १० शिवका आगमन और मार्कण्डेय सम्भाषण, तत्प्रति शिवका वरदान, ११ महापुरुष वर्णन, प्रतिमासमें पृथक् २ पूजामें हरिके अवतार व्यूहका आख्यान, मार्कण्डेयने मानव होकर भी जिस प्रकार अमृत प्राप्त किया था उस क्रियायोगका सांगोपांग वर्णन, १२ इस पुराणके प्रथम स्कन्धसे लेकर उक्त समुदायके अर्थका सामान्य विशेषरूपमें एकत्र कथन, १३ यथाक्रमसे पुराण संख्या कथन, श्रीमद्भागवत ग्रन्थका दानमाहात्म्य वर्णन.

देवीभागवत ६.

नीचे देवीभागवतकी विषयसूची दी जाती है।

१ स्कन्धमें—१ सूत समीपमें शौनकादि ऋषियोंका पुराणप्रश्न, पुराण श्रवण प्रशंसा, भागवत प्रशंसा, २ भगवतीकी स्तुति, ग्रहोंकी संख्या निर्देश, पुराणलक्षण, शौनकादि मुनिकर्तृक नैमिषारण्यका माहात्म्य वर्णन ३ । ४ अष्टादश महापुराणोंका नाम और संख्या कथन, उपपुराणका नाम

कथन, जिस २ द्वापरमें जिस २ व्यासको उत्पत्ति हुई उसका विषय, भागवत माहात्म्य कथन, सूत समीपमें शुकदेव जन्म विषयक प्रश्न, व्यासदेवकी अपुत्र निबन्धन चिन्ता, व्यास समीपमें नारदका आगमन, पुत्रके लिये नारदके निकट व्यासका प्रश्न, हरिको ध्यानस्थ देखकर ब्रह्माका संशय, विष्णुकी शक्तिही सबका कारण है इस विषयका वर्णन, देवी माहात्म्य वर्णन, ५-८ ऋषियोंका हयग्रीवविषयक प्रश्न, देवगणोंका निद्रागत विष्णु समीपमें गमन, ब्रह्मादि देवगण कर्तृक भगवानकी निद्रा भंगमें मंत्रणा, वम्री नाम कीटकी उत्पत्ति, विष्णुके छिन्नमस्तकका अन्तर्द्धान, दुःखित देव और देवगण कर्तृक जगदम्बिकाकी स्तुति, देवगणोंके प्रति आकाशवाणी, विष्णुके मस्तक छेदनका कारण, दैत्य हयग्रीवकी तपस्यादि, हयग्रीव दैत्यका मस्तक छेदन और विष्णुका ग्रीवादेशमें संयोजन, ऋषियोंका मधुकैटभयुद्ध विषयक प्रश्न, मधुकैटभकी उत्पत्ति, दोनों दैत्योंको अपनी उत्पत्तिका कारण अनुसंधान, दोनों दैत्योंका वाग् बीजकी उपासना करना, दोनों दैत्योंको विष्णु नाभिसे उत्पन्नहुए ब्रह्माका दर्शन, दोनों दैत्योंका युद्धके लिये ब्रह्माके निकट प्रार्थना करना, ब्रह्मकर्तृक विष्णुका स्तव, विष्णुकी निद्राभंग न होनेसे ब्रह्मकर्तृक भगवतीका स्तव, विष्णुकी शरीरसे योगनिद्राका निःसरण और पार्श्वमें अवस्थान, सूत समीपमें ऋषियोंका शक्तिविषयक प्रश्न, शक्तिका प्राधान्यवर्णन, ९ विष्णुकी निद्राभंग, विष्णुके साथ मधुकैटभका युद्धोयोग, विष्णुकर्तृक महामायाका स्तव, मधुकैटभवध, १० ऋषियोंका शुकदेवोत्पत्ति विषयक प्रश्न, व्यासदेवका भगवतीकी आराधनामें गमन, व्यासको घृताची अप्सराका दर्शन, ११ बृहस्पतिकी स्त्री ताराके साथ चन्द्रमाका मिलन, चन्द्रके प्रति बृहस्पतिका तिरस्कार, चन्द्रकर्तृक बृहस्पति निराकरण और इन्द्रकर्तृक प्रत्याख्यान, चन्द्रकर्तृक इंद्रदूतका निराकरण, चन्द्रके साथ इंद्रका युद्धोयोग, बुधकी उत्पत्ति, १२ सुद्युम्न

राजाका वनगमन, सुद्युम्नराजाका स्त्रीत्वलाभ, सुद्युम्नराजाको इलानाम प्राप्ति, इलाके साथ बुधका मिलन, पुरूरवाकी उत्पत्ति, इलाकर्तृक भगवतीका स्तव, सुद्युम्नकी मुक्ति, १३ पुरूरवा समीपमें उर्वशीका नियम, पुरुरवाको उर्वशी दर्शन, १४ घृताचीका शुकीरूप धारण, शुकोत्पत्ति, शुकके गृहस्थाश्रम अवलम्बन करनेमें व्यासका अनरोध, शुकदेवकी विवाहमें अस्वीकारता, १५ शुकदेवका वैराग्य, व्यासके प्रति शुकदेवकी उक्ति, शुकदेवको भागवत पढनेके लिये व्यासका अनुरोध, वटपत्रशायी भगवान्का श्लोकार्द्ध श्रवण, विष्णु समीपमें भगवती प्रादुर्भाव, १६ विष्णुको विस्मित देखकर भगवतीकी उक्ति, विष्णु कर्तृक श्लोकार्द्ध विषयमें प्रश्न, श्लोकार्द्धका माहात्म्य वर्णन, ब्रह्माके निकट भगवती कर्तृक माहात्म्य कीर्तन भागवतका लक्षण शुकदेवको चिंतित देखकर जीवन मुक्त जनकके निकट गमनार्थ व्यासका उपदेश, शुककी मिथिला गमनेच्छा, १७ शुकदेवका मिथिला गमन, शुकके साथ द्वारपालका कथोपकथन, शुकदेवका जनकगृहमें विश्राम, १८ शुकका आना सुनकर राजा जनकका सत्कार करनेके लिये उनके पास आना, शुकका आगमन कारण वर्णन, शुकके प्रति जनकका उपदेश, जनकके साथ शुकका विचार, १९ शुकदेवका सन्देह निराकरण, शुकदेवका विवाह, शुककी तपस्या और अन्तर्द्धान व्यासदेवका "पुत्र पुत्र" कहकर पुकारनेमें पर्वतादिका प्रत्युत्तर दान, व्यास समीपमें महादेवागमन, व्यास द्वारा शुककी छाया दर्शन, २० पुत्र विरहातुर व्यासदेवका स्वजन्म स्थान द्वीपमें आगमन और दाशराजके साथ मिलन, सरस्वती तटपर व्यासका वास, शन्तनु राजाकी मृत्यु वर्णन, चित्राङ्गदको राज्य प्राप्ति, चित्राङ्गदके साथ गन्धर्व चित्राङ्गदका युद्ध, चित्राङ्गदकी मृत्यु और विचित्रवीर्यको राज्य प्राप्ति, स्वयम्वरमें भीष्मद्वारा परित्यक्त काशी-

राजकी ज्येष्ठ कन्याका शाल्व समीपमें, गमन भीष्म और शाल्वकर्तृक निराकृत काशीराजकन्याका तपस्यार्थ वनगमन, विचित्र वीर्य्यकी मृत्यु, धृतराष्ट्र प्रभृतिकी उत्पत्ति.

द्वितीय स्कन्धमें—१ ऋषियोंका सत्यवती विषयक प्रश्न, उपरिचर नृपति वृत्तांत, मत्स्यराज और मत्स्यगंधाकी उत्पत्ति, २ पराशरमुनिका आगमन, कामार्त्त पराशरके प्रति मत्स्यगंधाकी उक्ति, मत्स्यगंधाके योजनगंधा नामप्राप्ति, व्यासदेवकी उत्पत्ति, ३ महाभिष नृपतिका ब्रह्मसदनमें गमन, महाभिष और गंगाके प्रति ब्रह्माका अभिशाप, अष्टवसुका वसिष्ठाश्रममें गमन, द्यौनामक वसु कर्त्तृक वसिष्ठका गोहरण, वसुगणोंके प्रति वसिष्ठका शाप, गंगा और वसुगणोंका मिलन, शन्तनुराजाकी उत्पत्ति, ४ शन्तनुराज कर्त्तृक रूप धारिणी गंगाका विवाह, सप्तवसुओंकी क्रमशः गंगागर्भसे उत्पत्ति, और तत्कर्तृक जलमें निक्षेप, भीष्मकी उत्पत्ति, भीष्मको ग्रहण करके गंगाका अन्तर्द्धान, शन्तनु राजाको गंगासमीपसे फिर भीष्म प्राप्ति, ५ शन्तनुराजाको सत्यवती दर्शन, दास निकटमें सत्यवती प्रार्थना, दासवाक्यमें शन्तनुकी चिन्ता और गृहमें प्रत्यागमन, शन्तनुके प्रति भीष्मकी उक्ति, भीष्मका दासगृहमें गमन, भीष्मकी प्रतिज्ञा और सत्यवती आनयन ६ कर्णोत्पत्ति विवरण, दुर्वासा ऋषिका कुन्तिभोजगृहमें आगमन, कुन्तीको दुर्वासाका मंत्रदान, कुंतीकर्त्तृक सूर्य्यका आह्वान, कर्णकी उत्पत्ति, मंजूषाद्वारा कर्णका गंगाजलमें परित्याग, पाण्डुके साथ कुंतीका विवाह, पाण्डुके प्रति मृगरूपी मुनिका शाप, युधिष्ठिर आदिकी उत्पत्ति, पांडुकी मृत्यु, पुत्रोंके साथ कुंतीका हस्तिनापुर गमन ७ । ८ परीक्षितकी उत्पत्ति, धृतराष्ट्रका वन गमन, विदुरकी मृत्यु, देवीके प्रसादसे युधिष्ठिर आदिका मृत दुर्योधनादिका दर्शन, धृतराष्ट्रकी मृत्यु, यादव गणों और रामकृष्णकी मृत्यु, अर्जुनका द्वारका गमन और दस्युद्वारा

कृष्णपत्नी हरण, परीक्षितको राज्यप्राप्ति, परीक्षितका शमीकमुनिके गलेमें सर्प डालना, परीक्षितके प्रति ब्रह्मशाप रुरुवृत्तान्त वर्णन, ९ रुरुका विवाहोद्योग, रुरुपत्नीका सर्प दंशनसे मृत्यु, रुरुद्वारा पत्नीको जीवन दानका उद्योग, रुरुपत्नीका जीवनलाभ, परीक्षितका तक्षक भय निवारणकी चेष्टा करना, १० । ११ तक्षकका आगमन और मार्गमें कश्यप ब्राह्मणका दर्शन, तक्षकका न्यग्रोध वृक्ष दर्शन, कश्यपकर्त्तृक वृक्षको जीवन दान, कश्यपका गृहमें प्रत्यागमन, परीक्षितको मंत्रादि द्वारा वेष्टित देखकर तक्षककी चिन्ता, अनुचरसर्पोंका ब्राह्मण-वेषमें परीक्षितके निकट गमन, ब्राह्मणरूपधारी सर्पके निकटसे राजाका फल ग्रहण करना, राजाकी तक्षक दर्शनसे मृत्यु, जनमेजयके राज्यप्राप्ति, जनमेजयका विवाह, उत्तङ्कमुनिका हस्तिनापुरमें आगमन, उत्तंगमुनिके साथ जनमेजयका कथोपकथन, रुरुकी सर्पहननमें प्रतिज्ञा, डुण्डुभ सर्पके साथ रुरुका कथोपकथन, सर्पयज्ञारंभ, आस्तीक कर्त्तृक सर्पयज्ञ निवाररण, १२ जरत्कारु मुनिद्वारा गर्त्तमें लम्बमान पितृगणोंका दर्शन, आदित्य अश्व दर्शनमें विनता और कद्रुका कथोपकथन, सर्पगणोंके प्रति कद्रुका शाप गरुड़का इन्द्रलोकसे अमृत आहरण, वासुकि आदि सर्पोंका ब्रह्माके समीपमें गमन, जरत्कारु मुनिका दारपरिग्रह, अस्तीककी उत्पत्ति, जनमेजयके प्रति भागवत श्रवणमें व्यासका आदेश.

३ य स्कन्धमें—१ ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर आदिके कथनसे व्यासके निकट जनमेजयका प्रश्न, २ ब्रह्माके निकट नारदका आराध्य निर्णय प्रश्न, ब्रह्माका स्वकारण अन्वेषणार्थ पद्मसे नीचे आगमन, ब्रह्माको शेषशायि जनार्दन दर्शन, ब्रह्मा और विष्णु-समीपमें रुद्रका आगमन, ब्रह्मा विष्णु और रुद्रके प्रति देवीकी उक्ति, देवीके दिये हुए विमानमें ब्रह्मादिका आरोहण, ३ विमानमें चढ़कर ब्रह्मादिका अनेक प्रकारकी वस्तुओंका दर्शन, अन्य ब्रह्मा, दर्शन, अन्य शिवदर्शन, अन्य विष्णुदर्शन, ब्रह्मादिको देवीदर्शन, ४

भगवती समीपमें गमनोद्यत ब्रह्मादिको स्त्रीत्वकी प्राप्ति, देवीके चरणकमलोंमें विश्व ब्रह्माण्ड दर्शन, विष्णु द्वारा भगवतीकी स्तुति, ५ शिवकृत भगवतीस्तव, ब्रह्माकर्तृक भगवती स्तव, ६ ब्रह्मादिके प्रति भगवतीका उपदेश, ब्रह्माको महासरस्वती प्रदान, महादेवको महाकाली प्रदान, ब्रह्माको पुनर्वार पुरुषत्व प्राप्ति, ७ निर्गुणत्व कथन, गुण प्रभेद द्वारा तत्त्वस्वरूप वर्णन, ८ गुणसमूहका रूप संस्थान वर्णन, ९ गुणनिकरका लक्षण, जनमेजयके निकट व्यासद्वारा आराध्य निर्णय, १० मुनि समाजमें आराध्य निर्णयमें संदिहान जमदग्निका प्रश्न, लोमशद्वारा पूर्व प्रश्नकी मीमांसा, सत्यव्रत ऋषिका उपाख्यान, विप्र देवदत्तका पुत्रकी इच्छासे यज्ञारंभ, देवदत्त प्रति गोभिलका शाप, देवदत्तके पुत्रोत्पत्ति, उतथ्यका वैराग्यलाभसे वनगमन, ११ उतथ्यको सत्यव्रत नामप्राप्ति, सत्यव्रतका सरस्वती बीजको उच्चारण करना, बीज माहात्म्यसे सर्वज्ञत्व प्राप्ति, देवीमाहात्म्य, १२। १३ अन्वायज्ञ विधि वर्णन, जनमेजयके प्रति अन्वायज्ञ करनेमें वेद व्यासका उपदेश, विष्णु प्रति देववाणी, १४ ध्रुवसंधिराज्यका वृत्तान्त, ध्रुवसंधिकी मृत्यु, राजपुत्र सुदर्शनको राज्यप्रदानकी मंत्रणा, युधाजितका आगमन, १५ युधाजित और वीरसेनका युद्ध, वीरसेनकी मृत्यु, सुदर्शनको लेकर लीलावतीका प्रस्थान, सुदर्शनका भरद्वाज आश्रममें वास, १६ सुदर्शन विनाशकी इच्छासे युधाजितका भरद्वाजके आश्रममें जाना, जयद्रथका द्रौपदी हरण वृत्तान्त, १७ विश्वामित्रकथा, युधाजितका अपने नगरमें लौटना, सुदर्शनको कामराजबीज प्राप्ति, काशीराजकन्या शशिकलाका सुदर्शनके प्रति अनुराग, १८ शशिकलाका स्वयंवरोद्योग १९ सुदर्शनके प्रति शशिकलाका गाढानुराग वर्णन, सुदर्शन और अन्योन्य राजाओंका काशीमें आगमन, २० सुदर्शन और नृपगणोंका कथोपकथन, शशिकलाकी स्वयम्वरसभामें आनेमें अनिच्छा, २१ काशीपतिके मुखसे उस कन्याकी अन्य नृपतिको वरण करनेकी अनिच्छा सुनकर युधाजितका

तिरस्कार, युद्धकी आशंकासे काशीपतिकी कन्याके प्रति उक्ति, २२ सुदर्शनका विवाह, काशीपतिका राजाओंको विदा करना, २३ काशीसे सुदर्शनकी विदामें युद्धकी इच्छासे दूसरे राजालोगोंका आना, सुदर्शनके साथ राजगणोंका युद्ध और देवीका आविर्भाव, युधाजितकी मृत्यु, काशीपतिकर्तृक देवीका स्तव, २४ दुर्गाका काशीमें वास, सुदर्शनका अयोध्यामें आगमन, २५ सुदर्शनका अयोध्यामें देवीस्थापन, २६ नवरात्र व्रत विधि, कुमारी विधि वर्णन, वर्जनीय कुमारी वर्णन, सुशीलवणिकका उपाख्यान, २८ रामलक्ष्मण भरत और शत्रुघ्नकी उत्पत्ति, रामका दण्डकारण्यमें गमन, मायामृग वध, भिक्षुकवेषमें राणका आगमन, सीतासमीपमें रावणका परिचय दान, २९ सीताहरण, रामका जानकी अन्वेषणमें उद्योग, जटायुदर्शन, सुग्रीवके साथ रामचन्द्रकी मित्रता, शोकान्वितरामके प्रति लक्ष्मणकी उक्ति, ३० राम और लक्ष्मण समीपमें नारदका आगमन, नवरात्रव्रत करनेका उपदेश, रामचन्द्रका व्रत विधान, रामके प्रति भगवतीका वाक्य, रावण वध.

४ र्थ स्कन्धमें—१ वेदव्यास समीपमें जनमेजय कर्तृक कृष्णावतारादि विषयका प्रश्न, २ कर्म्म फलका प्राधान्य निर्णय, ३ कश्यपद्वारा वरुणका धेनु हरण , कश्यप प्रति वरुणका अभिशाप, कश्यपके प्रति ब्रह्माका शाप, पुत्रनिमित्त दितिका व्रत करण अदितको दितिका शाप, दितिकी सेवार्थ तत्समीपमें इन्द्रका गमन, इन्द्रद्वारा दितिका गर्भच्छेदन, ४ । ५ कश्यपका चौर वृत्तान्त सुनकर जनमेजयको संशय, मायाका प्राधान्य कीर्तन नर, नारायण वृत्तान्त, दोनों ऋषियोंका तप देखकर इन्द्रकी चिन्ता, तप भंग करनेके लिये इन्द्रका अप्सरा गणको भेजना, ६ नर नारायणके आश्रममें सहसा वसन्तऋतुका आविर्भाव, अकालमें वसन्त देखकर नारायणकी चिन्ता, ऋषियोंके सम्मुख अप्सराओंका आगमन, उर्वशीउत्पत्ति, ७ समस्त ब्रह्माण्डकी अहंकार आवृत्तता वर्णन, ८

प्रह्लादको राज्यलाभ, प्रह्लादसमीपमें यवनकी तीर्थविषयक उक्ति, प्रह्लादका नैमिषारण्यमें आगमन,९ प्रह्लादको नरनारायण दर्शन,प्रह्लादके साथ नर-नारायण ऋषिका युद्ध,प्रह्लाद समीपमें विष्णुका आगमन,प्रह्लादके प्रति विष्णु-की उक्ति, १० प्रह्लादका इन्द्रके साथ युद्ध और पराजय तथा तपस्यामें जाना, पराजित दैत्यगणोंका शुक्रसमीपमें गमन,११शुक्राचार्य्यका पुत्रप्राप्तिके लिये महादेव समीपमें गमन, शुक्रकी तपस्या,देवपीडित दैत्योंका शुक्रजननीके समीपमें गमन,शुक्रजननीके साथ देवगणोंका युद्ध, शुक्रजननीवध, १२विष्णुके प्रति भृगुका शाप, शुक्रमाताको जीवन लाभ,इन्द्र द्वारा शुक्र-समीपमें स्वकन्या जयन्तीका प्रेरण,जयन्ती द्वारा शुक्रकी परिचर्य्या,शुक्राचार्यको वरलाभ, शुक्रका जयन्तीको पत्नीत्वमें वरण, दैत्योंके समीपमें शुक्ररूपमें बृहस्पतिका आगमन, १३ बृहस्पतिका शुक्ररूपमें दैत्योंको ठगना,शुक्राचार्य्यका दैत्योंके निकट गमन और स्वरूपधारी बृहस्पतिदर्शन, १४ दैत्योंके प्रति शुक्राचार्य्यकी उक्ति, दैत्यगण द्वारा शुक्राचार्य्यका प्रत्याख्यान, दैत्योंके प्रति शुक्राचार्य्यका शाप, प्रह्लाद आदि दैत्योंका शुक्रसमीपमें गमन,शुक्राचार्यका पुनर्वार दैत्यपक्ष अवलम्बन करना, १५देव दानव युद्ध,देवगणोंकी पराजय,और इन्द्रद्वारा भगवतीका स्तुतिपाठ, भगवतीका आविर्भाव, प्रह्लाद द्वारा भगवतीका स्तव, दैत्यगणोंका पाताल प्रवेश, १६ विष्णुके नानावतार कथन, १७ अप्सरागणोंके प्रति नारायणकी उक्ति, उर्वशीको लेकर अप्सराओंका स्वर्ग गमन,कृष्णावतार विषयमें जनमेजयका प्रश्न,१८भाराक्रान्त पृथिवीका स्वर्गलोकमें गमन,देवगणोंके साथ ब्रह्माका विष्णुसदनमें गमन, विष्णुका निज पराधीनत्व कथन, १९ विष्णुआदि देवगणोंका भगवतीकी स्तुति करना, देवगणोंके प्रति भगवतीकी उक्ति, २० देवी माहात्म्य, वसुदेवके साथ देवकीका विवाह और कंसमति देव-वाणी, कंसका देवकी हननमें उद्योग, कंसके प्रति वसुदेवकी उक्ति,

कंसके हाथसे देवकीकी मुक्ति, २१ देवकीके पुत्रोत्पत्ति, कंसको पुत्र देनेके लिये वसुदेव और देवकीका कथोपकथन, वसुदेवका कंसको पुत्रदान, कंससमीपमें नारदका आगमन, कंसद्वारा वसुदेवके सब पुत्रोंकी हत्या, २२ षट्गर्भ वृत्तान्त,मरीचि पुत्रगणोंके प्रति ब्राह्मणका शाप और उनका दैत्ययोनिमें जन्मग्रहण,हिरण्यकशिपुको पुत्रगणोंकी ब्रह्माके निकटसे वरप्राप्ति,पुत्रगणोंके प्रति हिरण्यकशिपुका शाप, छःगर्भोंकी देवकीके गर्भसे उत्पत्ति,देवगणोंका अंशावतारकथन, असुरगणोंका अंशावतार कथन,२३ देवकीके आठवें गर्भका आविर्भाव,देवकीकी कारागारमें रक्षा, श्रीकृष्णका प्रादुर्भाव, वसुदेवका गोकुलमें ले जाकर अपने पुत्रकी रक्षा, गोकुलसे यशोदाकन्याका आनयन,कंसद्वारा कन्या विनाशका उद्योग और कंसके प्रति भगवतीकी उक्ति,पूतना धेनुक आदि दैत्योंका गोकुलमें गमन,२४कृष्णका पूतनादि वध, कृष्ण बलरामका मथुरामें आगमन और कंसवध,कृष्णआदिका द्वारवती गमन, रुक्मिणी हरण प्रद्युम्नहरण और कृष्णकर्तृक भगवतीकी स्तुति,२५कृष्णका शोक मोहादि देखकर जनमेजयका प्रश्न,व्यासका उत्तर प्रदान,कृष्णकी शिवाराधना,कृष्णके प्रति महादेवका वरदान,कृष्णके प्रति देवीकी उक्ति,महामाया भगवतीका सर्वेश्वर रत्न संस्थापन.

५ म स्कन्धमें—१ सूतसमीपमें शौनकादि ऋषियोंका कृष्णविषयक प्रश्न, व्याससमीपमें जनमेजयका शिवोपासनाविषयकप्रश्न, विष्णुकी अपेक्षा रुद्रका प्राधान्य वर्णन, ब्रह्मादि स्तम्ब पर्य्यन्त समस्त पदार्थोंका मायाधीनत्व वर्णन, २ व्याससमीपमें जनमेजयकी देवी माहात्म्य श्रवणेच्छा, महिषासुरकी तपश्चर्य्या, महिषासुरको वरप्राप्ति, रम्भ और करम्भकी तपस्या और करम्भ वध, रंभको महिष लाभ,रंभासुरकी मृत्यु,महिषासुर और रक्तबीजकी उत्पत्ति, ३महिषासुरका इन्द्रसमीपमें दूत प्रेरण, इन्द्रका दूतसमीपमें महिषासुरकी निन्दाकरना, महिषासुरके निकट दूतका प्रत्याग-

मन, दूतवाक्य श्रवणसे महिषासुरका युद्धोद्योग, ४ देवगणोंके साथ इन्द्रकी मंत्रणा (सलाह) इन्द्रको बृहस्पतिका उपदेश करना, ५ ब्रह्माके निकट इन्द्रका गमन, इन्द्रके साथ ब्रह्माका कैलास और वैकुण्ठमें जाना, दानवोंके साथ देवगणोंका युद्ध, बिडालाख्यका युद्ध, ताम्रासुरका युद्ध, ६ दिक्पालोंके साथ महिषासुरका युद्ध, ७ देव और दानव सेनाका तुमुल युद्ध, महिषासुरका विभिन्नरूप लेकर तुमुलयुद्ध, देवगणोंका रणभंग, महिषासुरका इंद्रपदग्रहण, देवगणोंका ब्रह्माकी स्तुति करना, देवगणोंका ब्रह्मा और शंकरके साथ वैकुंठगमन, ८ विजयका विष्णुके निकट देवगणोंके आनेका समाचार कहना, विष्णुके साथ देवगणोंका महिषासुरवधकी मंत्रणा करना, प्रत्येक देवके शरीरसे तेजकी उत्पत्ति, उस तेजसे भगवतीकी उत्पत्ति, किस देवतासे भगवतीके किस अंगकी उत्पत्ति हुई उस विषयका वर्णन, ९ देवगणोंके प्रति भगवतीका ऊंचे स्वरसे हँसना, शब्दानुकरणके निमित्त महिषासुरका दूतप्रेरण, महिषासुरके निकट दूतका समस्तवृत्तान्त कथन, देवीके निकट महिषासुरका दूत प्रेरण, १० देवगणोंको राज्य सौंपकर महिषासुरके पाताल जानेके निमित्त दूतके निकट भगवतीका कथन, ११ मंत्रियोंके साथ महिषासुरकी मंत्रणा, ताम्रासुरका युद्धमें गमन, १२ ताम्रके निकट देवीकी उक्ति, महिषासुरकी फिर मंत्रियोंके साथ मंत्रणा, बिडालाख्यकी उक्ति, दुर्मुखकी उक्ति, बाष्कलकी युक्ति, दुर्द्धरकी उक्ति, १३ बाष्कल और दुर्मुखका युद्धमें गमन, बाष्कलका युद्ध, बाष्कलकी मृत्यु, दुर्मुखका युद्ध, दुर्मुखकी मृत्यु, १४ चिक्षुराख्य और ताम्रका युद्धमें गमन, चिक्षुराख्य और ताम्रका युद्ध, चिक्षुराख्य और ताम्रकी मृत्यु, १५ असिलोमा और बिडालाख्यका युद्धमें गमन, असिलोमा और बिडालाख्यकी मंत्रणा, बिडालाख्यका युद्ध और मरण, असिलोमाका युद्ध, असिलोमाकी मृत्यु, दानवसेनाका रणभंग, १६ महिषासुरका मनुष्य-

रूप धारण करके युद्धमें जाना, देवीके प्रति महिषासुरकी उक्ति, १७ देवीके निकट महिषासुरका मन्दोदरी उपाख्यान कथन, मन्दोदरीका विवाहोद्योग, मन्दोदरीकी विवाहमे इच्छा, वीरसेनराजाको मन्दोदरी दर्शन, वीरसेनकी विवाहेच्छा और मन्दोदरी द्वारा उसका प्रत्याख्यान, १८ मन्दोदरीकी बहन इन्दुमतीका स्वयंवर, उक्तस्वयम्वरमें मन्दोदरीका विवाह, मन्दोदरीका अनुताप, महिषासुरके प्रति देवीका तिरस्कार, महिषासुरका अनेकरूप धारण करके देवीके साथ युद्ध, देवीद्वारा महिषासुरका वध, १९ देवगण द्वारा भगवतीकी स्तुति, देवगणोंके प्रति भगवतीकी उक्ति, २० जनमेजयद्वारा देवीलीलाका माहात्म्य कीर्त्तन, अयोध्याके स्वामी शत्रुघ्नको महिषराज्य प्राप्ति, महिषासुर वधके निमित्त जगन्मंगल वर्णन, २१ शुम्भ निशुंभ कथारंभ और शुम्भ निशुंभकी तपस्या, शुंभ और निशुंभको वरप्राप्ति, शुम्भका स्वर्गविजय, २२ बृहस्पतिके साथ देवगणोंकी मंत्रणा, देवगणोंके निकट बृहस्पतिका भगवतीके आराधनाका उपदेश, देवगणद्वारा भगवतीकी स्तुति, देवगणके निकट भगवतीका आविर्भाव, २३ कौशिकी और कालिका उत्पत्ति, चण्ड और मुण्डका अंबिका दर्शनके अनंतर शुम्भके निकट जाकर देवीको घरमें लानेका उपदेश देना, अम्बिकाके निकट सुग्रीवकी उक्ति, सुग्रीवके प्रति देवीकी उक्ति, २४ सुग्रीवके निकट देवीकी प्रतिज्ञा कथन-दूतका वचन सुनकर शुंभ और निशुंभका परामर्श, धूम्रलोचनका युद्धम गमन, २५ धूम्रलोचनके प्रति देवीकी उक्ति धूम्रलोचनका युद्ध, धूम्रलोचनका वध सुनकर शुंभ और निशुम्भका परामर्श, २६ चण्ड और मुंडका युद्धमें गमन और देवीकेप्रति उक्ति, चण्ड और मुंडके प्रति देवीका तिरस्कार, चण्ड और मुण्डका देवीके संग युद्ध, कालीकी उत्पत्ति, चण्ड-मुण्डवध, देवीका चामुण्डा नामकरण, २७ शुम्भके निकट रणभंग, सेनाकी उक्ति, भग्नसेनाके प्रति शुंभका तिरस्कार, रक्तबीजका युद्धमें गमन,

देवीके प्रति रक्तबीजकी उक्ति, २८ शुम्भसेनाका उद्योग देखकर ब्रह्माणी आदि देवशक्तियोंका आगमन, शिवदूतीका विवरण, दानवोंके समीपमें शिवका दौत्यकार्य्य, देवशक्तियोंका युद्ध, २९ रक्तबीजका युद्धमें आगमन, बहुतसे रक्तबीजोंकी उत्पत्ति और देवगणोंका त्रास, देवगणोंको डराहुआ देखकर कालीके प्रति अम्बिकाकी उक्ति, रक्तबीजवध, भयातुर दानवोंके प्रति शुम्भकी उक्ति, निशुम्भका समरगमनोद्योग, ३० निशुम्भ और शुम्भका युद्धमें आगमन, निशुम्भके साथ देवीका घोरयुद्ध, निशुंभकी मृत्यु, शुम्भके निकट रणभंगसेनाकी उक्ति, ३१ भग्नसेनाके प्रति शुम्भका तिरस्कार, शुंभका युद्धमें आगमन, देवीके साथ शुंभका युद्ध, शुंभवध, ३२ व्याससमीपमें जनमेजयका भगवती माहात्म्य विषयक प्रश्न, सुरथ और समाधिका वृत्तान्तारम्भ, सुरथराजाका वनगमन और सुमेधऋषिके आश्रममें स्थिति, सुरथराजाके साथ समाधि वैश्यका मिलन, सुरथके साथ समाधिका कथोपकथन, ३३ ऋषिके निकट सुरथका महामाया विषयक प्रश्न, सुरथ और समाधिके निकट महामाया माहात्म्य कथन, ब्रह्मा और विष्णुका वाक्ययुद्ध, ब्रह्मा और विष्णुको लिंग मूर्त्तिदर्शन, लिङ्गका आदि अन्त जाननेके निमित्त विष्णुका पातालमें और ब्रह्माका आकाशमें जाना, ब्रह्माका केतकीकी दलग्रहण और विष्णुके निकट मिथ्या कथन, केतकीका मिथ्या साक्षी देना, केतकीको महादेवका शाप देना, ३४ भगवतीकी पूजा विधि, नवरात्रविधिकथन, सुरथ और समाधिके प्रति देवीकी आराधना विषयक उपदेश, ३५ सुरथ और समाधिका देवीकी उपासना करना, देवीका प्रत्यक्ष आगमन, सुरथ और समाधिको वर प्राप्ति.

६ ष्ठ स्कन्ध—१ ऋषियोंके निकट सूतका वृत्रासुरवृत्तान्त कथन विश्वरूपकी उत्पत्ति, विश्वरूपकी तपस्या, २ विश्वरूपका वध करनेके निमित्त इन्द्रका गमन, विश्वरूपकी मृत्यु, विश्वरूपके छेदनार्थ इन्द्र और त्वष्टाका कथोपकथन, वृत्रासुरकी उत्पत्ति, ३ इन्द्रको जीतनेके निमित्त

वृत्रासुरका स्वर्गमें गमन, बृहस्पतिके साथ इन्द्रकी मंत्रणा, इन्द्रका युद्धमें गमन, देवगणोंका भागना, वृत्रासुरका तपस्या करनेको जाना, ४ वृत्रासुरके प्रति ब्रह्माका वरदान, वृत्रासुरके साथ देवगणोंका पुनर्वार युद्ध, जम्भिकाकी उत्पत्ति, देवगणोंका पलायन और वृत्रासुरका स्वर्गराज्यलाभ, वृत्रासुरके वधके निमित्त सब देवगणोंका वैकुण्ठमें गमन, ५देवगणोंके प्रति विष्णुकी उक्ति,देवीकी आराधनाके निमित्त विष्णुका उपदेश, देवगणद्वारा भगवतीकी स्तुति, देवगणोंको देवीका वरदान देना,६ इन्द्रके साथ वृत्रकी बन्धुता स्थापनार्थ ऋषियोंका गमन, इन्द्रके साथ वृत्रका कपट बंधुत्व स्थापन, समुद्र समीपमें इंद्रद्वारा वृत्रासुरका वध, ७ इंद्रके प्रति त्वष्टाका शापदान, देवगण द्वारा इंद्रकी निंदा, इंद्रका घर छोड़-कर मानससरोवरमें जाना, नहुषको इंद्रत्व प्राप्ति, ८ नहुषको इंद्राणीके प्राप्त करनेकी इच्छा, नहुषके साथ शचीका नियम करण, शचीकी भगवती पूजा, शचीके प्रति भगवतीका वरदान, ९ इन्द्रके साथ शचीका मिलन, नहुषका सप्तर्षियानमें आरोहण, नहुषके प्रति अगस्त्यमुनिका शाप, इन्द्रको पुनः स्वर्गराज्य प्राप्ति, १० कर्म्मफलाफलकथन, ११ कलियुगका माहात्म्य कीर्तन, १२ तीर्थनामकथन, जनमेजयका आडीव-कयुद्धका कारण पूँछना, संक्षेपसे हरिश्चन्द्रका उपाख्यान, वरुणके प्रति हरिश्चन्द्रको छलना, हरिश्चन्द्रके प्रति वरुणका अभिशाप, १३ हरिश्चन्द्रके प्रति वशिष्ठको कृतपुत्रद्वारा यज्ञकरणका उपदेश, यज्ञपशुके निमित्त शुनःशेपको लाना. शुनःशेपके रोनेमें विश्वामित्रकी करुणा, वशिष्ठ और विश्वामित्रका परस्पर शाप प्रदान, आडीवकका युद्ध, वशिष्ठ और विश्वामि-त्रकी शापमुक्ति, १४ वशिष्ठका मैत्रावरुणी नामक हेतुकथन, निमिके यज्ञ करनेकी इच्छा, निमिके प्रति वसिष्ठका शाप, वसिष्ठके प्रति निमिका शाप, अगस्त्य और वसिष्ठकी उत्पत्ति, १५ सब प्राणियोंके नेत्रमें निमिका वास, जनककी उत्पत्ति, कामक्रोधादिका दुर्जयत्व कथन, १६

हैहयगणद्वारा भृगुवंशीयगणके निकट धन प्रार्थना, हैहयगणद्वारा भृगु· वंशीय गणका विनाश, लोभ निन्दा कथन, १७ हैहयपत्नियोंकी गौरी-पूजा, और्वऋषिकी उत्पत्ति, हैहयंगणोंकी शांति, लक्ष्मीका रेवंत दर्शन, लक्ष्मीके प्रति नारायणका शाप, १८ लक्ष्मीका वडवारूप धारण करके शंकरकी आराधना करना, लक्ष्मीद्वारा हरि और हरका ऐक्यभाव कथन, लक्ष्मीके प्रति शंकरका वरदान, हरद्वारा विष्णुसमीपमें चित्ररूपका प्रेरण, विष्णु समीपमें दूतकी उक्ति, विष्णुका अश्वरूप धारण करके लक्ष्मीके निकट जाना, हैहयकी उत्पत्ति, लक्ष्मीका नवजातपुत्रको छोड-कर वैकुण्ठ गमन, १९।२० चम्पाख्या विद्याधरको शिशुप्राप्ति, विद्या-धरका शिशु लेकर इंद्रके निकट जाना,इन्द्रवाक्यसे विद्याधरद्वारा शिशुकी अपने स्थानमें रक्षा, तुर्वसुके निकट नारायणका गमन, तुर्वसुको पुत्र-लाभ, २१ हैहयको राज्यमें स्थापनानन्तर तुर्वसुका वन गमन, २२ कालकेतुद्वारा एकावलीका हरण,एकावलीका हैहयवरणकी इच्छा कथन, हैहयका कालकेतुके भवनमें जाना, २३ कालकेतुके साथ हैहयका युद्ध और कालकेतुकी मृत्यु, एकावलीके साथ हैहयका विवाह, २४ जनमे-जय द्वारा विष्णुकी अश्वयोनिका कारण पूंछना, नारदसमीपमें व्यासका संसार विषयक प्रश्न, व्यासके साथ सत्यवतीका कथोपकथन, २५काशि-राज सुताके पुत्रोत्पत्ति, नारदसमीपमे व्यासका मोहकारण पूंछना, २६ संसारमें सबही मोहके अधीन हैं,इस वृत्तांतका कहना, संजयके घर पर्वत नारदकी स्थिति, नारदके प्रति दमयंतीका अनुराग, पर्वत शापसे नार-दको वानर मुखप्राप्ति, नारदके साथ दमयंतीका विवाह, पर्वतके वरसे नारदको सुन्दर मुखकी प्राप्ति, महामायाका बलकथन,२७।२८ नारदका श्वेतद्वीपमें विष्णुके समीप गमन, विष्णु द्वारा नारदसमीपमें मायाका अजेयत्व कथन, नारदको माया दर्शनकी इच्छा,नारदको स्त्रीरूप प्राप्ति, नारदको तालध्वज राजाका दर्शन, २९ नारदके साथ तालध्वज राजाका·

विवाह, नारदके पुत्रोत्पत्ति, नारदकी मायामग्नता वर्णन, नारदका पुत्र-मृत्यु श्रवणसे विलाप, और नारायणका ब्राह्मण वेषमें वहां आना, नारदको पुनर्वार पुरुषरूप प्राप्ति, ३० तालध्वज राजाका पत्नीके विरहमें विलाप, तालध्वजके प्रति भगवान्‌का उपदेश,महामायाकी महिमा वर्णन, ३१ नारदको दुःखी देखकर ब्रह्माका पूंछना, ब्रह्माके निकट नारदका निज वृत्तान्त कथन, व्यास द्वारा गुणमाहात्म्यकीर्त्तन.

७ म स्कन्धमें—१ इन्द्र और सूर्य्यवंशकी कथारम्भ, दक्षप्रजापति द्वारा प्रजासृष्टि, नारदद्वारा दक्षपुत्रोंका दूरीकरण, नारदके प्रति दक्षका शाप प्रदान, सूर्य्यवंश वर्णन, च्यवनमुनिका उपाख्यान, शर्य्याति कन्या द्वारा च्यवनके नेत्र विद्ध करण, च्यवनके निकट शर्य्यातिका विनय, च्यवनद्वारा शर्य्यातिकी कन्याकी प्रार्थना, कन्यादानके विषयमे मंत्रियोंके साथ राजाकी मंत्रणा, शर्य्यातिका च्यवन ऋषिको कन्यादान, २।३।४ शर्य्याति कन्याकी पतिसेवा, अश्विनीकुमारका च्यवनपत्नीदर्शन, अश्विनीकुमारकी च्यवनपत्नीके प्रति उक्ति, ५ च्यवनको यौवनप्राप्ति, च्यवन और अश्विनीकुमार दोनोंकी समानाकृति देखकर सुकन्याद्वारा भगवतीकी स्तुति, भगवतीके प्रसादसे सुकन्याका च्यवनलाभ, ६शर्य्यातिका च्यवनाश्रममें गमन, शर्य्यातिके प्रति यज्ञकरणके निमित्त च्यवनकी उक्ति, शर्य्यातियज्ञमें दोनों अश्विनीकुमारोंका सोमपान, ७ शर्य्यातियज्ञमें इन्द्रके साथ च्यवनका विवाद, च्यवनविनाशके निमित्त इंद्रका वज्रत्याग,इंद्रविनाशके निमित्त च्यवनद्वारा महासुरका उत्पादन, च्यवनके निकट इंद्रकी क्षमा प्रार्थना, रेवत राजाकी उपत्ति, रेवतका निजकन्या रेवतीको ग्रहणकरके ब्रह्मलोकमें गमन, ब्रह्माके निकट रेवतका अपनी कन्याका वर पूंछना, बलदेवको रेवतीवर निर्देश, रेवत-राजाका बलदेवको कन्यादान, इक्ष्वाकुका जन्मकथन, ८।९ इक्ष्वाकुके पुत्र विकुक्षिको शशादनाम प्राप्ति, ककुत्स्थको राज्यलाभ, इंद्रको ककुत्स्थ-

राजाका वाहनत्व, ककुत्स्थका वंशकीर्त्तन, यौवनाश्वका पुत्रके निमित्त ऋषियोंके समीपमें गमन, यौवनाश्वसे मांधाताकी उत्पत्ति, १० मान्धाताका वंशवर्णन, सत्यव्रतकी उत्पत्ति, सत्यव्रतका राज्यत्याग, विश्वामित्रपुत्र गालवका वृत्तांत, सत्यव्रतद्वारा वशिष्ठकी धेनुहत्या, वशिष्ठशापसे सत्यव्रतको त्रिशंकुनाम प्राप्ति, ११ सत्यव्रतका मनस्तापसे मृत्युयोग, सत्यव्रतके प्रति भगवतीकी प्रसन्नता, राजाद्वारा सत्यव्रतको अयोध्यामें लाना, सत्यव्रतके प्रति राजाका उपदेश, १२ त्रिशंकुको राज्यप्राप्ति, त्रिशंकुकी शरीरसहित स्वर्ग जानेके निमित्त वशिष्ठके प्रति उक्ति, वशिष्ठके शापसे त्रिशंकुको चाण्डालत्व प्राप्ति, त्रिशंकुका राज्यत्याग, हरिश्चंद्रको राज्यलाभ, १३ विश्वामित्रकी चाण्डालघरमें कुक्कुर मांसभक्षणेच्छा, आपत्कालमें देहरक्षा विधि कथन, विश्वामित्रके निकट उनकी स्त्रीका दुर्भिक्ष विवरण, त्रिशंकुकृत उपकार वर्णन, त्रिशंकुके प्रत्युपकारार्थ विश्वामित्रका उनके समीप जाना, १४ त्रिशंकुका स्वर्गगमन, त्रिशंकुकी स्वर्गच्युति, विश्वामित्रके प्रभावसे त्रिशंकुका इन्द्रलोकमें गमन, हरिश्चंद्रकी पुत्रके निमित्त वरुणकी तपस्या करना, हरिश्चंद्रके प्रति वरुणका वरदान, हरिश्चंद्रकी पुत्रोत्पत्ति, हरिश्चंद्रकी पुत्रद्वारा यज्ञ करनेकी प्रतिज्ञा, १५ हरिश्चंद्रके घरमें वरुणका आगमन, हरिश्चंद्रके पुत्र रोहितका नामकरण, हरिश्चंद्रके घरमें फिर वरुणका आगमन, रोहितका पलायन, वरुणशापसे हरिश्चंद्रको जलोदर रोगकी प्राप्ति, हरिश्चन्द्रके घरमें फिर वरुणका आगमन, १६ रोहितके साथ इन्द्रका कथोपकथन, हरिश्चंद्रके प्रति वशिष्ठका क्रीत पुत्रद्वारा यज्ञकरनेका उपदेश, अजीगर्त्तका पुत्र विक्रय, शुनःशेपका रुदन, शुनःशेपको त्यागकरनेमें विश्वामित्रका उपदेश, शुनःशेपके त्याग करनेमें हरिश्चन्द्रका अस्वीकार, १७ शुनःशेपको विश्वामित्रका वरुणमंत्र देना, वरुणसे शुनःशेपकी मुक्ति और राजाको नीरोग करना, विश्वामित्रका पुत्र होकर शुनःशेपका उनके साथमें जाना, रोहितके साथ हरिश्चन्द्रका मिलन,

हरिश्चन्द्रको लेकर वशिष्ठ और विश्वामित्रका विवाद, १८ हरिश्चन्द्रका वनमें रोती हुई स्त्रीको देखना, विश्वामित्रको लोकपीडाकारी तपस्या करनेसे हरिश्चन्द्रका निषेध, विश्वामित्र द्वारा हरिश्चन्द्र भवनमें मायासूकर प्रेरण, सूकर द्वारा राजाका उपवनभङ्ग, सूकरके अनुसरण क्रमसे राजाका गहनवनमें प्रवेश, हरिश्चन्द्र समीपमें वृद्धब्राह्मण वेषसे विश्वामित्रका आना, पुत्र विवाहके निमित्त ब्राह्मण वेषधारी विश्वामित्रकी धन प्रार्थना, विश्वामित्रको हरिश्चन्द्रका राज्यदान, हरिश्चन्द्रके निकट विश्वामित्रकी दक्षिणा प्रार्थना, हरिश्चन्द्रका पुत्र और स्त्रीसहित राज्य त्याग, १९ । २० दक्षिणाके निमित्त विश्वामित्रका उत्पीडन, हरिश्चन्द्रका वाराणसीमें गमन, पत्नीविक्रयकथा श्रवणसे राजाका मोह, २१ हरिश्चन्द्रके निकट विश्वामित्रका फिर दक्षिणा मांगना, हरिश्चन्द्रकी स्त्रीका किसी ब्राह्मणके समीप धन मांगनेसे निषेध करना, क्षत्रियको भिक्षानिषेधत्व कथन, २२हरिश्चन्द्रका पत्नीविक्रयार्थ राजमार्गमें गमन, ब्राह्मण वेषमें विश्वामित्रका राजपत्नी विक्रय, माताके विरहमें रोहितका रोना, ब्राह्मणका राजपुत्र खरीदना, हरिश्चन्द्रका विलाप, विश्वामित्रको हरिश्चन्द्रका दक्षिणा देना, थोडा धन देखकर विश्वामित्रका क्रोध, २३ स्वयं बिकनेके अर्थ हरिश्चन्द्रका गमन, हरिश्चन्द्रको लेनेके अर्थ चाण्डालका आना, चाण्डालके आत्मसमर्पणमें असम्मत देखकर विश्वामित्रकी कटूक्ति, विश्वामित्रका दक्षिणा लेकर प्रस्थान, २४ हरिश्चन्द्रका काशीस्थ श्मशान रक्षा, हरिश्चन्द्रका अनुताप, २५ रोहितको सर्पका काटना, रानीको रोतीहुई देखकर ब्राह्मणका विलाप, नगरपालद्वारा राजपत्नीका तिरस्कार, चाण्डालद्वारा हरिश्चन्द्रको राजपत्नी वध करनेकी आज्ञा, हरिश्चंद्रका स्त्रीवध करनेका निषेध, २६ चण्डाल वाक्यसे स्त्रीवध करनेमें हरिश्चंद्रका उद्योग, हरिश्चंद्रका नाम उच्चारण करके राजपत्नीका विलाप,

राजा और रानीका परस्पर प्रत्यभिज्ञान, राजाका विलाप, २७ चितामें पुत्रको रखकर राजाका भगवतीकी स्तुतिकरना, हरिश्चन्द्रके निकट देवगणोंका आगमन, राजपुत्रका जीवनलाभ, हरिश्चन्द्रके साथ इन्द्रादिका कथोपकथन, हरिश्चन्द्रके प्रभावसे प्रजाका स्वर्गगमन, रोहितका राज्याभिषेक, २८ शताक्षी माहात्म्यकथन, दुर्गम नामक दानवका यज्ञादि नाशकरण,शतवर्षव्यापी अनावृष्टि,ऋषियों द्वारा भगवतीकी पूजा, भगवतीको शाकम्भरी नामकी प्राप्ति, दुर्गमासुर युद्धमें आगमन, देवीशरीरसे शक्तियोंका आविर्भाव, दुर्गमासुर वध, भगवतीको दुर्गानामकी प्राप्ति, २९ भुवनेश्वरी रूपकथन, हरि और हरकी शक्ति शून्यता, ब्रह्मा द्वारा सनकादिके प्रति महाशक्तिके प्रति आराधना करनेकी आज्ञा, ३० सनकादिका तपस्यामें गमन, सनकादिके निकट देवीकी उक्ति, हरि और हरका प्रकृतिस्थहोना, दक्षके घर सतीकी उत्पत्ति, दक्षके शिव विद्वेषका कारणनिर्णय; विष्णुकर्तृक सतीका देहच्छेद, पीठस्थान माहात्म्य, ३१ तारकासुरका विवरण, देवगणोंकी देवी पूजा, देवताओंके निकट देवीका आविर्भाव, देवगणोंकी देवीस्तुति, हिमालयके घरमें देवीका जन्म ग्रहण कथन, ३२ देवताओंके निकट देवीका आत्मतत्त्व प्रकाश, सृष्टि प्रक्रिया कथन, पञ्चीकरण, ३३ तत्त्वदृष्टिमें मायाका अभावत्व कथन, देवगणोंको देवीका विराट् मूर्ति दिखाना, देवीके प्रति देवगणोंकी स्तुति, ३४ जन्मग्रहणका कर्मजन्मत्व कथन, ज्ञानका श्रेष्ठत्व कथन, वेदान्त दर्शनका सार निरूपण, ह्रींकारबीजका स्वरूप कथन, ३५ योगस्वरूप वर्णन, योगासन कथन, प्राणायाम कथन, प्रत्याहारादि कथन, मंत्रयोग कथन, षट्चक्रादिका स्थान निर्णय, ३६ ब्रह्मतत्त्व निरूपण, ब्रह्म ज्ञानोपदेशका पात्रनिर्देश, ब्रह्मज्ञान दाताका गुरुत्व कथन,३७भक्तिस्वरूपादि कीर्तन,ज्ञानका मुक्तिकारणत्व कथन,३८ शक्तिमूर्तिके साथ देवीका स्थानकीर्तन, देवीनामपाठका फलकीर्तन, ३९

देवी पूजा निरूपण, देवीका ध्यान, ४० देवीका बाह्यपूजा क्रम कीर्तन.

८ म स्कन्धमें—१ नारद नारायण सम्वाद, नारदके प्रति नारायणका देवी स्वरूप वर्णन, स्वायम्भुव मनुकी देवीस्तुति, मनुके प्रति देवीका वरदान, २ ब्रह्माकी नासिकासे वराहकी उत्पत्ति, वराहद्वारा पृथिवीका उद्धार, ब्रह्माका वराह मूर्तिकी स्तुति, हिरण्याक्ष वध, ३ स्वायम्भुव मनुको पृथिवीप्राप्ति, स्वायम्भुवका प्रजासर्ग, ४ प्रियव्रतवंशकीर्तन, सप्तद्वीपका सामान्य विवरण, ५ जम्बूद्वीपका विवरण, इलावृतादि वर्षका वृत्तान्त, ६ जाम्बूनद सुवर्णकी उत्पत्ति, नदनदी और देवीमूर्त्तिका वृत्तान्त, ७ सुमेरु गिरिका विवरण, ध्रुवनक्षत्र वृत्तान्त, गंगाधारा वृत्तान्त, ८ इलावृत्तवर्षका वृत्तान्त, भद्राश्ववर्षका विवरण, ९ हरिवर्ष वृत्तान्त, केतुमाल वर्षका विवरण, रम्यक वर्षका वृत्तान्त, १० हिरण्मय वर्ष विवरण, उत्तरकुरुका विवरण, किम्पुरुष वर्ष कथन, ११ भारतवर्षवृत्तान्त, पर्वत और नदीका वृत्तान्त। भारतवर्षका प्राधान्यकथन, १२ प्लक्षद्वीपवृत्तान्त शाल्मलि द्वीप वृत्तान्त, कुशद्वीप विवरण, १३ क्रौञ्चद्वीप विवरण, शाकद्वीप वृत्तान्त, पुष्कर द्वीप विवरण. १४ लोकालोक गिरिवर्णन, उत्तरायणादि कथन, १५ सूर्य्यगति वर्णन, सूर्य्यरथ वर्णन, १६ मासादिका विषय वर्णन, चन्द्रस्थिति वर्णन, चन्द्रगति कथन, शुक्रादिग्रहोंकी गति वर्णन, १७ ध्रुवसंस्थान कीर्त्तन, ज्योतिश्चक्र वर्णन, १८ राहुकी स्थिति कीर्त्तन, पृथिवी और अतलादिका परिमाण निर्णय, १९ अतलका विवरण, वितलका विवरण, सुतलवृत्तान्त, २० तलातल और महातलका वृत्तान्त, रसातल और पातालका विवरण, अनन्तमूर्तिका माहात्म्य कथन, २१ सनातन कृत अनन्तस्तुति, नरकनाम कथन, २२ विशेष पापके कारण विशेष विशेष नरक प्राप्ति, २३ अवीचि प्रमुखनरक वर्णन, २४ तिथिविशेषमें देवीपूजा विधि, वार और नक्षत्र विशेषमें देवी पूजा विधि, योग करण और मासविशेषमें देवी पूजा विधि, देवीस्तुति.

९ म स्कन्ध—१ परम ब्रह्मरूपिणीप्रकृति, सृष्टि विषयमें गणेशजननी दुर्गा, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती और सावित्री आदि पांच प्रकारके रूपधारण विषयक वर्णन, प्रकृतिके अंशरूपिणी गंगा तुलसी, मनसा, षष्ठि, मंगल चण्डिका—काली और वसुन्धरादिवर्णन, प्रकृतिकी कलारूपिणी वह्नि-पत्नी, स्वाहा, यज्ञपत्नी दक्षिणा, दीक्षा, स्वधा, स्वस्ति, पुष्टि, तुष्टि, सम्पत्ति वृत्ति, सती, दया, प्रतिष्ठा, कीर्त्ति, क्रिया, मिथ्या, शान्ति, लज्जा, बुद्धि, मेधा, धृति, मूर्ति, शोभा, रूपा, लक्ष्मी और निद्रादिका वर्णन, दुर्गा, सावित्री और लक्ष्मी आदिकी प्रथम पूजाविधि, ग्राम्यदेवियोंकी पूजा कथन, २ मूलप्रकृतिका विषय और भगवतीका पञ्चप्रकृति रूप धारण विषयक वर्णन, गोलोक स्थित प्रकृति पुरुष वर्णन, प्रकृतिमें श्रीकृष्णका वीर्य्याधान, कमला और राधिकाकी उत्पत्ति, दुर्गाका आविर्भाव, श्रीकृष्णका गोपिकापति और महादेवमूर्ति धारण, ३ मूलशक्ति प्रसन्न डिम्बका विवरण, महा विराट्की उत्पत्ति, विष्णु और महादेवकी उत्पत्ति, ४ नारदका दुर्गादि पञ्चप्रकृति और कला प्रकृति विषयक प्रश्न, सरस्वती पूजा, स्तोत्र और कवचादि वर्णन, विश्वजय नामक सरस्वती कवच धारणका फल, ५ याज्ञवल्क्यकृत सरस्वती महास्तोत्र, गङ्गा शापसे सरस्वतीका नदीरूपसे पृथ्वीमें अवतरण और उस नदीका माहात्म्य वर्णन, विस्तारित रूपसे सरस्वतीका अवतरण वर्णन, पद्माके प्रति रानीका अभिशाप, लक्ष्मी, गङ्गा और सरस्वतीका भूलोकमें सारिदादि रूपमें अवतरण, ६। ७ शापो-द्धारार्थ नारायणके निकट सरस्वती गंगा और कमलाका निवेदन, सर-स्वती, गंगा और लक्ष्मीका शापमोचन, भक्तलक्षण कथन, ८ सरस्वती आदिका भारतमें गमन, कलिका विवरण, कल्किअवतार वर्णन, पुनः सत्ययुग प्रवृत्ति वर्णन, प्राकृत प्रलय वर्णन, ९ सच्चिदानन्द परमात्मासे ब्रह्मादि समस्त शक्तियोंकी उत्पत्ति, वसुन्धराका उत्पत्ति विवरण, वराह

द्वारा पृथ्वीका उद्धार कथन, पृथिवीकी पूजा विवरण, पृथिवीका ध्यान, स्तव और मंत्रादि कथन, १० पृथिवीके प्रति अपराध करनेसे नरकादि फलप्राप्ति, भूमि और पृथिवी आदि शब्दोंकी व्युत्पत्ति, ११ गङ्गाकी उत्पत्ति और माहात्म्य वर्णन, भगीरथकी गंगापूजा, १२ कण्वशाखोक्त गंगाका ध्यान, विष्णुपदी नामसे गंगास्तोत्र, गोलोकसे गङ्गाकी प्रथमोत्पत्ति वर्णन, १३ गंगादेवी किस प्रकार विष्णुपादपद्मसे उत्पन्न हुई किस प्रकार ब्रह्माके कमण्डलुमें स्थिति की और किस प्रकारसे शिवकी प्यारी हुई, इस विषयमें नारदका प्रश्न,गंगाजी किस प्रकारसे नारायणकी प्यारी हुई तद्विषयका वृत्तान्त वर्णन, कृष्णके प्रति राधाका तिरस्कार; राधिकाके भयसे गंगाका कृष्णचरणमें प्रवेश,ब्रह्मा, विष्णु और शिवादिका गोलोकमें गमन, ब्रह्मा और महेश्वरके प्रति कृष्णकी उक्ति, कृष्णचरणकमलसे गंगाका बहिर्गमन, गंगाजलका कुछ अंश ब्रह्मद्वारा अपने कमण्डलुमें और कुछ अंश शिवद्वारा अपने मस्तकमें धारण, १४ जाह्नवीके नारायण पत्नीत्वका कारण निर्देश, १५ तुलसीका उपाख्यान, उस विषयमें नारदका प्रश्न, वृषध्वजका उपाख्यान,१६ कुशध्वज पत्नी मालावतीके गर्भमें लक्ष्मीका देववतीरूपसे जन्मग्रहणकी कथा,देववतीकी तपस्या, रावणके प्रति देववतीका अभिशाप, देववतीका सीतारूपसे जन्मग्रहण, और रामका वनगमन, मायासीताकी उत्पत्ति, रावणका मायासीता हरण, सीताका द्रौपदीरूपसे जन्म ग्रहण, द्रौपदीके पांचपतिहोनेका कारण, १७ धर्म्मध्वजका निज पत्नी माधवीके साथ विहार,धर्म्मध्वजकी ओरसे तुलसीकी उत्पत्ति और उसकी नामनिरुक्ति, तुलसीकी तपस्या, तुलसीका वृक्ष रूपत्व वर्णन, १८ तुलसीकी मदनावस्था वर्णन, शंखचूडका तुलसी साक्षात्में कथोपकथन, तुलसीके ग्रहणार्थ शंखचूडके प्रति ब्रह्माका उपदेश, १९ शंखचूडके साथ तुलसीका विवाह, देवगणोंके प्रति शंखचूडका उपद्रव, देवगणोंका वैकुंठमें गमन, शंखचूडका वृत्तान्त

कथन, २० महादेवकर्तृक चित्ररथको दूतरूपसे शंखचूडके निकट प्रेरण, महादेवके साथ स्कन्द, वीरभद्रादि इंद्र यमादि और शक्तियोंका सम्मिलन, तुलसीके साथ शंखचूडका कथोपकथन, २१ शंखचूडका युद्धोयोग, शंखचूडका महादेवके निकट गमन, शंखचूडके प्रति महादेवकी उक्ति, महादेवके प्रति शंखचूडकी प्रत्युक्ति, शिवका पुनः कथन, २२ देवगणोंके साथ असुरोंका परस्पर युद्धारंभ, स्कंदके साथ असुरोंका युद्ध, कालीके साथ शंखचूडका युद्ध, महादेवके निकट कालीका संग्राम सम्वाद प्रदान, २३ शिवके साथे शंखचूडका संग्राम, हरिका वृद्ध ब्राह्मण वेषमें शंखचूडका कवचहरण और तुलसीके निकट गमन, शंखचूडवध, २४ नारायणका शंखचूडरूप और तुलसीके निकट गमन, तुलसीके साथ नारायणका सहवास, नारायणके प्रति तुलसीका अभिशाप, तुलसीका माहात्म्यवर्णन, गंडकीजात शालिग्रामशिलासमूहका विवरण और उनका माहात्म्यवर्णन, २५ महामंत्रसहित तुलसीपूजा, २६ सावित्रीउपाख्यान सुननेके निमित्त नारायणके निकट नारदका प्रश्न, अश्वपति वृत्तान्तकथन, गायत्रीजपका फल और जपका प्रकार निर्देश, सावित्रीव्रत कथन, सावित्रीका ध्यान, सावित्रीस्तव, २७ अश्वपति-कन्यारूपसे सावित्रीका जन्मग्रहण, यम सावित्रीसम्वाद, २८ यमके निकट सावित्रीका धर्म्मकर्म्मादि विषयमें प्रश्न, धर्म्मकर्म्मादि विषयमें यमका प्रत्युत्तर प्रदान, कौन २ कर्म्म करनेसे जीवोंको किस प्रकार गति प्राप्त होती है इस विषयमें धर्म्मके प्रति सावित्रीका प्रश्न, २९ सावित्रीके प्रति धर्म्मका वरदानाभिप्रायप्रकाश, धर्म्मके निकट सावित्रीको सत्यवानके औरससे शतपुत्रादि प्राप्ति, और जीवके कर्म्मविपाक श्रवणकी प्रार्थना, सावित्रीके प्रति धर्म्मका वरदान, जीवका कर्म्मविपाक और दानधर्म्मादिक फलकथन, ३० किस २ कर्म्मसे स्वर्ग लाभ और अन्यान्य किस २ कर्म्मसे मनुष्योंको पुण्यलाभ होता है उस विषयमें धर्म्मके प्रति सावित्रीका प्रश्न और यमका तद्विषयक उत्तरमें

दानादिका फलकथन, जन्माष्टमी और शिवरात्रि आदि व्रतफलकथन, हरिपूजा और शिवपूजादिका फलकथन, ३१ यमका सावित्रीको शक्तिमंत्र देना, ३२ पापियोंके पापके फलभोगार्थ नरककुण्ड कथन, ३३ भिन्न २ पातकियोंका भिन्न २ कुण्डपात वर्णन, ३४ विविध पापफलकथन, विविध नरककुण्डवर्णन, ३५ पापियोंके निमित्त अवशिष्ट कुण्डवर्णन, ३६ कुण्ड कैसे हैं ? पापी लोग उनमें किस प्रकार स्थिति करते हैं ? उस विषयमें यमके प्रति सावित्रीका प्रश्न, किसप्रकार कर्म्मबन्धन नष्ट होता है और यमपुरीका भय नहीं रहता, धर्म्मका उस विषयमें कीर्तन, जीवका भोग देह कथन, ३७ छियासी कुण्ड संख्या और उन सबका लक्षण निर्देश, ३८ यमके निकट सावित्रीकी देवीभक्ति प्रार्थना, यमका सावित्रीको शक्ति भक्तिका वरदान, देवीके गुणकीर्त्तन और देवीका उत्कर्ष वर्णन, ३९ महालक्ष्मीका उपाख्यान, ४० नारायणके निकट लक्ष्मीकी समुद्रकन्या होनेके विषयमें नारदका प्रश्न और नारायणका उत्तर, इन्द्रके प्रति दुर्वासाका अभिशाप वर्णन, इन्द्रका स्वर्गराज्यभ्रंश, इन्द्रके प्रति बृहस्पतिका उपदेश, राज्यभ्रंशविनोदार्थ इंद्रका ब्रह्माके निकट गमन, ४१ सम्पूर्ण देवगणोंके साथ ब्रह्माका विष्णुके निकट गमन, लक्ष्मीका परित्याज्य स्थानसमूह कथन, समुद्रमें जन्म ग्रहणार्थ लक्ष्मीके प्रति विष्णुका आदेश, सागरमंथन और लक्ष्मीकी उत्पत्ति, ४२ महालक्ष्मीका अर्चनाक्रम, महालक्ष्मीका ध्यान, महालक्ष्मीका स्तोत्र, ४३ स्वाहाका उपाख्यान, राधाके भयसे कृष्णका पलायन, दक्षिणाके प्रति राधाका अभिशाप, कृष्णविरहमें राधाकी खेदोक्ति, लक्ष्मीके अंगसे दक्षिणाकी उत्पत्ति, दक्षिणाका स्तव, दक्षिणाका ध्यान और पूजाविधि ४४ । ४५ । ४६ नारायणके निकट नारदका षष्ठी, मंगलचण्डी और मनसाका विवरण पूंछना, प्रियव्रतके साथ षष्ठी देवीका साक्षात् षष्ठी देवीद्वारा प्रियव्रतके मृतपुत्रको जीवनदान, षष्ठीपूजाविधि, षष्ठीस्तोत्र, ४७ मंगल

चण्डीकी पूजा और कथा, मनसाका उपाख्यान, ४८ मनसाका ध्यान और पूजाविधि, जरत्कारु और मनसाका विवरण, आस्तीकका जन्म, मनसामाहात्म्य और पूजादि, ४९ सुरभीका उपाख्यान, सुरभि पूजा, सुरभिस्तोत्र, ५० राधा और दुर्गामाहात्म्य वर्णन, राधाका बीज मंत्रादि, राधास्तोत्र, दुर्गा देवीका माहात्म्य और पूजा विवरण.

१० म स्कन्धमें–१ स्वायम्भुव मनुके वृत्तांत कथनमें देवीमाहात्म्य कथन, स्वायम्भुवमनुकी उत्पत्ति और उनकी देवी आराधना, २ स्वायम्भुव मनुके प्रति देवीका वरदान, देवीका विंध्यपर्वतमें गमन, विंध्याचलका वृत्तांत कथन, ३ विंध्याचलका सूर्य्यगति निरोध, ४ देवगणोंका शिवके निकट गमन और सूर्यगति निरोध कथन, ५ देवगणोंका विष्णुके निकट गमन और विष्णुस्तुति, देवगणोंके प्रति विष्णुका अभयदान, ६ देवगणोंका विष्णुसमीपमें विंध्यका सूर्य्यगति निरोध कथन, अगस्त्यके निकट गमनार्थ देवगणोंके प्रति विष्णुका उपदेश, देवगणोंका वाराणसी गमन, कार्य्यसिद्धिकरणार्थ अगस्त्यका अंगीकार, ७ अगस्त्यद्वारा विंध्याचलकी उन्नति निवारण, ८ स्वारोचिष मनुकी उत्पत्ति और वृत्तांत कथन, ९ चाक्षुष मनुकी उत्पत्ति और वृत्तांत कथन, चाक्षुषमनुको देवीका राज्य-प्रदान, १० वैवस्वतमनु और सावर्णि मनुका वृत्तांत कथन, सुरथराजाका उपाख्यान, ११ महाकालीका चारित्र कथन; मधुकैटभ वधार्थ ब्रह्माका महामायास्तव, मधुकैटभवध, १२ सावर्णि मनुके वृत्तांत कथनमें महिषासुर-वध, शुम्भ और निशुम्भ वध वर्णन १३ शेष छः मनुके वृत्तान्त कथनमें करुष,पृषध्र, नाभाग, दिष्ट, शर्य्याति और त्रिशंकु इन छः राजाओंका भ्रामरीशक्तिका आराधन करना, उक्त छै राजाओंको मन्वंतराधिपत्य प्राप्तिका वर देकर भ्रामरीशक्तिका अंतर्धान, भ्रामरी देवीका वृत्तांत कथन, भ्रामरीवृत्तांत श्रवणकी फलश्रुति.

११ स्कन्धमें—१ सदाचार कथनमें प्रातःकृत्य वर्णन, प्राणायाम विवरण, २ शौचादिविधि, ३ स्नानविधि, रुद्राक्षमाहात्म्य और रुद्राक्ष धारण विधि, ४ । ५ एकमुख, दोमुख, तीनमुख, चारमुख और पांचमुखादि चौदह मुख पर्य्यन्त रुद्राक्षधारणका फल, शरीरके किस २ स्थानमें कितने रुद्राक्षधारण करने होते हैं उनका विवरण, जपमालाका विधान रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णन, ६ रुद्राक्षका आत्यन्तिक माहात्म्य वर्णन, ७ एकमुखरुद्राक्षधारणका माहात्म्य, ८ भूतशुद्धिका विवरण, ९ शिरोव्रत विधानवर्णन, १०। ११ । गौणभस्मका विवरण, १२भस्मधारण माहात्म्य वर्णन, १३ भस्ममाहात्म्य १४ विभूतिधारण माहात्म्य, १५ त्रिपुण्ड्रधारण माहात्म्य, दुर्वासाके मस्तककी भस्म गिरनेके कारण कुम्भीपाक नरकस्थ प्राणियोंके सुख और आनन्द प्राप्ति, कुम्भीपाकका पुण्यतीर्थ कथन, पुनर्वार अन्य कुम्भीपाक निर्माण, ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण माहात्म्य, १६ संध्याविधि, गायत्रीकी उपासना, आचमन विधि, रेचक पूरक और कुम्भककालमें जिन २ देवताओंका ध्यान किया जाता है उनका विवरण, सन्ध्योपासना द्वारा सूर्य्य भक्षक मन्देह नामक तीस करोड राक्षसोंका दाहन विवरण, सिद्धासन वर्णन, न्यास विधि, गायत्रीकी चौवीस मुद्रा प्रकरण, १७ तीनप्रकारके गायत्रीका विवरण, गायत्रीकी आराधना, पुष्पोंका देवदेवी विषयमें प्रियत्व कथन, १८ देवीपूजाका विशेष विधान, देवी पूजाकालमें देय पुष्पादिकी संख्या निर्देश और फललाभ, देवीपूजामाहात्म्य, १९माध्याह्न सन्ध्या कथन, २० ब्रह्म यज्ञादि कीर्त्तन, सायाह्न संध्या वर्णन, २१ गायत्रीका पुरश्चरण, २२ वैश्वदेवादिपञ्चयज्ञका विवरण, प्राणाग्निहोत्र, २३ भोजनान्तमें पात्रान्नप्रदान, प्राजापत्य कृच्छ्र, सान्तपनादि पराक और चांद्रायणादिका लक्षण निरूपण, २४ गायत्रीकी शान्ति कथन, दोष और रोगादि शान्ति, होम और जपादि द्वारा जप और वृष्ट्यादि लाभ, गायत्रीजपद्वारा अणिमादि ऐश्वर्य्य, इन्द्र और मरुतादि प्राप्ति, गायत्रीजपद्वारा पञ्चमहापातकसे मुक्तिलाभ.

१२ स्कन्धमें–१नारायणके निकट नारदका सुख साध्य पुण्यकर्म्म समूहका प्रश्न, गायत्रीमें अधिक पुण्यप्रद मुख्यतम क्या है? तथा, गायत्रीके ऋषि और छन्दआदि विषयमें प्रश्न, गायत्रीके जपका सर्वश्रेष्ठत्व वर्णन, गायत्रीके छन्द और देवतादि कथन, २ गायत्रीके प्रत्येक वर्णकी शक्ति कथन, गायत्रीके वर्णोंका तत्त्वकथन, गायत्री वर्णकी मुद्रा, ३ गायत्री कवच, ४ अथर्व वेदोक्त गायत्री हृदय, ५ गायत्री स्तोत्र, ६ गायत्रीका सहस्र नाम स्तोत्र, ७ दीक्षा विषयमें नारदका प्रश्न, दीक्षाशब्दकी व्युत्पत्ति और दीक्षाविधि कथन; उस प्रसंगमें भूत शुद्ध्यादि कथन, मण्डललिखन, सर्वतोभद्रमण्डलकुण्डल संस्कार, स्रुक् स्रुवादि और आज्यसंस्कारहोम विधि पूर्णाहुति मंत्रग्रहण, ८ शक्ति भिन्न द्विजगणोंके निमित्त उपासकतत्त्वका कारण,जगदम्बिकाका यक्षरूपमें आविर्भाव, यक्षके निकट इन्द्रद्वारा अग्निका प्रेरण, यक्षके निकट वह्निका तृणचालनमें असामर्थ्य कथन, इन्द्राज्ञासे यक्षके निकट वायुका गमन, यक्षके निकट तृणचालनमें असामर्थ्य कथन, यक्षके निकट इन्द्रका गमन, यक्षका अन्तर्द्धान, इन्द्रके प्रति मायाबीज जपके निमित्त आकाश वाणी, इन्द्रको उमामूर्ति दर्शन; इन्द्रके निकट भगवतीका मायाधिष्ठित ब्रह्ममूर्तिका सर्व विषयक कारणत्व वर्णन, शक्त्युपासनाका नित्यत्ववर्णन, ९ गौतम शापसे ब्राह्मणोंकी अन्य देवोपासनामें श्रद्धा, दुर्भिक्षके कारण ब्राह्मणोंका गौतमके निकट गमन, गौतमस्तवसे सन्तुष्टा गायत्रीका गौतमको पूर्णपात्र प्रदान, पूर्णपात्र द्वारा गौतमका समस्त लोगोंको अन्न दान, नारदका गौतम सभामें आगमन, ब्राह्मणके प्रति गौतमका गायत्री शक्ति रहितार्थ अभिशाप; ब्राह्मणोंको वेद और गायत्र्यादि विस्मरण, १० मणिद्वीप वर्णन, ११ पद्मरागादि प्राकार और उसमें सेना तथा शक्ति आदिका सन्निवेश वर्णन, १२ चिन्तामणिगृहादि वर्णन, देवीका ध्यान, चिन्तामणिगृहका परिमाणादि, १३ जनमेजयकृत देवी मुखवर्णन,

१४ देवीभागवत पुराण पाठका फल वर्णन, मुनियोंके निकटसे व्यासकी पूजा प्राप्ति, नैमिषारण्यसे सूतका निर्गमन, ऊपर दोनों भागवतकी सूची उद्धृतहुई बडेही आश्चर्य्यका विषय है कि दोनों भागवतकी श्लोक संख्या १८००० है और दोनों ही बारहस्कन्धोंमें विभक्त हैं, ऐसे स्थलमें किसको महापुराण और किसको उपपुराण कहकर ग्रहण किया जाय, बड़ी ही विषम समस्या है मत्स्यपुराणके मतसे.

"यत्राधिकृत्य गायत्रीं वर्ण्यते धर्म्मविस्तरः ।
वृत्रासुरवधोपेतं तद्भागवतमुच्यते ॥
सारस्वतस्य कल्पस्य मध्ये ये स्युर्नरामराः ।
तद्वृत्तान्तोद्भवं लोके तद्भागवतमुच्यते ॥
अष्टादशसहस्राणि पुराणं तत्प्रकीर्त्तितम् ॥ "

जिस ग्रन्थमें गायत्रीका अवलम्बन पूर्वक विस्तारसे धर्म्मतत्त्व वर्णित हुआ है, और जो वृत्रासुर वध वृत्तान्त पूर्ण है वही भागवत नामसे प्रसिद्ध है। सारस्वत कल्पमें जिन समस्त मनुष्य देवताओंकी कथा है, उस वृत्तान्तसे युक्त ग्रन्थही मनुष्य समाजमें भागवत नामसे विख्यात है । इसकी श्लोक संख्या १८००० है । पद्मपुराणमें लिखा है.

"पुराणेषु च सर्वेषु श्रीमद्भागवतं परम् ।
यत्र प्रतिपदं कृष्णो गीयते बहुदर्शिभिः ॥ ३ ॥
श्रीमद्भागवतं शास्त्रं कलौ कृष्णेन भाषितम् ।
परीक्षिते कथां वक्तुं सभायां संस्थिते शुके ॥ १६ ॥

उत्तरखण्ड १८९ अ०

सब पुराणोंमें श्रीमद्भागवतही श्रेष्ठ है, जिस ग्रन्थके प्रतिपदमें ऋषियोंद्वारा अनेक प्रकारसे कृष्ण माहात्म्य कीर्तित हुआ है । कलिकालमें कृष्णद्वैपायन भाषित यह भागवतशास्त्र है । यह शास्त्र शुकदेवजीने परीक्षितको कहा है.

फिर नारद पुराणमें अतिसंक्षेपसे भागवतकी इस प्रकार विषयानुक्रमणिका दी गई है—

" मरीचे शृणु वक्ष्यामि वेदव्यासेन यत्कृतम् ।
श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसम्मितम् ॥
तदष्टादशसाहस्रं कीर्त्तितं पापनाशनम् ।
सुरपादपरूपोऽयं स्कन्धैर्द्वादशभिर्युतः ॥
भगवानेव विप्रेन्द्र विश्वरूपीक्षमीरितः ।
तत्र तु प्रथमे स्कन्धे सूतर्षीणां समागमः ॥
व्यासस्य चरितं पुण्यं पाण्डवानां तथैव च ।
पारिक्षितमुपाख्यानमितीदं समुदाहृतम् ॥
परीक्षिच्छुकसम्वादे सृतिद्वयनिरूपणम् ।
ब्रह्मनारदसम्वादेऽवतारचरितामृतम् ॥
पुराणलक्षणं चैव सृष्टिकारणसम्भवः ।
द्वितीयोऽयं समुदितः स्कन्धो व्यासेन धीमता ॥
चरितं विदुरस्याथ मैत्रेयेणास्य संगमः ।
सृष्टिप्रकरणं पश्चाद्ब्रह्मणः परमात्मनः ॥
कापिलं सांख्यमप्यत्र तृतीयोऽयमुदाहृतः ।
सत्याश्चरितमादौ तु ध्रुवस्य चरितं ततः ॥
पृथोः पुण्यसमाख्यानं ततः प्राचीनवर्हिषः ।
इत्येष तुर्य्यो गदितो विसर्गे स्कन्ध उत्तमः ॥
प्रियव्रतस्य चरितं तद्वंश्यानां च पुण्यदम् ।
ब्रह्माण्डान्तर्गतानां च लोकानां वर्णनं ततः ॥
नरकस्थितिरित्येष संस्थाने पञ्चमो मतः ।
अजामिलस्य चरितं दक्षसृष्टिनिरूपणम् ॥
वृत्राख्यानं ततः पश्चान्मरुतां जन्म पुण्यदम् ।

षष्ठोऽयमुदितः स्कन्धो व्यासेन परिपोषणे ॥
प्रह्लादचरितं पुण्यं वर्णाश्रमनिरूपणम् ।
सप्तमो गदितो वत्स वासनाकर्म्मकीर्त्तने ॥
गजेन्द्रमोक्षणाख्यानं मन्वन्तरनिरूपणम् ।
समुद्रमथनं चैव बलिवैभवबन्धनम् ॥
मत्स्यावतारचरितमष्टमोऽयं प्रकीर्त्तितः ।
सूर्य्यवंशसमाख्यानं सोमवंशनिरूपणम् ॥
वंशानुचरिते प्रोक्तो नवमोऽयं महामते ।
कृष्णस्य बालचरितं कौमारं च व्रजस्थितिः ॥
कैशोरं मथुरास्थानं यौवनं द्वारकास्थितिः ।
भूभारहरणं चात्र निरोधे दशमः स्मृतः ॥
नारदेन तु सम्वादो वासुदेवस्य कीर्तितः ।
यदोश्च दत्तात्रेयेण श्रीकृष्णेनोद्धवस्य च ।
यादवानां मिथोऽन्तश्च मुक्तावेकादशः स्मृतः ।
भविष्यकलिनिर्देशो मोक्षो राज्ञः परीक्षितः ।
वेदशाखाप्रणयनं मार्कण्डेयतपः स्मृतम् ।
सौरी विभूतिरुदिता सात्त्वती च ततः परम् ॥
पुराणसंख्याकथनमाश्रये द्वादशो ह्ययम् ।
इत्येवं कथितं वत्स श्रीमद्भागवतं तव ॥"

हे मरीचे ! सुनो मैं तुम्हारे निकट वेदव्यासप्रणीत श्रीमद्भागवत नामक ब्रह्मसम्मित पुराण कहता हूँ यह अठारह सहस्रश्लोकमें पूर्ण और पापनाशक है । यह बारह स्कन्धयुक्त और कल्पवृक्षस्वरूप है । हे विप्रेन्द्र ! इस पुराणमें विश्वरूपी भगवान्‌काही कीर्तन किया गया है ।

उसके प्रथमस्कन्धमें सूत और ऋषियोंका समागम, पुण्यजनक व्यास और पाण्डवोंका चरित तथा परीक्षित्‌का उपाख्यान, परीक्षित्

और शुक सम्वाद, सतिद्वयनिरूपण ब्रह्म और नारद सम्वादमें अवतार चरित, पुराण लक्षण और सृष्टिकारण सम्भव यह सम्पूर्ण व्यासद्वारा दूसरे स्कन्धमें कहे हैं। विदुरचरित और विदुरका मैत्रेयके साथ समागम, तत्पश्चात् परमात्मा ब्रह्मका सृष्टि प्रकरण और कपिलका सांख्ययोगकीर्तित हुआ है। प्रथम सतीचरित पश्चात् ध्रुवचरित और पृथुका तथा प्राचीनबर्हिका पुण्याख्यान, चौथेस्कन्धमें यह चार बातें कही गई हैं। प्रियव्रत और तद्वंशोत्पन्न दूसरोंका पुण्यप्रद चरित, ब्रह्माण्डान्तर्गत लोकोंका वर्णन और नरकस्थिति आदि पांचवेंमें वर्णित हुए हैं। अजामिल चरित, दक्ष सृष्टि निरूपण, वृत्राख्यान और पुण्यप्रद मरुद्गणोंका जन्म, छठे स्कंधमें कीर्तित हुआ है। सप्तमस्कधमें पुण्यमय प्रह्लाद चरित और वर्णाश्रम निरूपित हुए हैं, गजेंद्रका मोक्षणाख्यान, मन्वन्तर निरूपण, समुद्र मंथन, बलिबंधन, मत्स्यावतार चरित आदि सम्पूर्ण कथा अष्टममें कही हैं। नवमस्कन्धमें सूर्यवंशाख्यान और सोमवंशनिरूपण और वंशानुचरित आदि कहे गए हैं। कृष्णका बाल्य और कौमार चरित, व्रजमें स्थिति, कैशोरमें मथुरावास, यौवनमें द्वारका वास और भूभार हरण, यह सब विषय दशममें वर्णित हुए हैं। वसुदेव नारद सम्वाद, दत्तात्रेयके साथ यदुका और उद्धवके साथ श्रीकृष्णका सम्वाद, तथा यदुगणोंका परस्पर विनाश, एकादशमें कीर्त्तित हुए हैं। भविष्यकलिनिर्देश, राजापरीक्षितकी मोक्ष, वेदशाखा प्रणयन, मार्कण्डेयकी तपस्या, सौरी और सात्वती विभूति तथा पुराणसंख्या कथन, बारहवें स्कन्धमें कहे गए हैं। हे वत्स ! यह द्वादश स्कन्धात्मक श्रीमद्भागवत तुम्हारे निकट कही.

मत्स्य, नारद और पद्मपुराणमें भागवतके जितने लक्षण निर्दिष्ट हुए हैं, श्रीमद्भागवतमें वे सब हैं। नारदीयके वचनानुसार कहा जासकता है कि प्रचलित श्रीमद्भागवत ही यथार्थ महापुराणमें गिना जासकता है, क्योंकि नारदीयकी उक्तिमें श्रीमद्भागवतका लक्षणही निर्दिष्ट हुआ है, देवीभा-

गवतका नहीं। किन्तु मत्स्यवर्णित विस्तृतभावमें सारस्वत कल्प प्रसङ्ग श्रीमद्भागवतमें नहीं है श्रीमद्भागवमें 'पाद्मं कल्पमथोशृणु' इस प्रकार पाद्म कल्पका प्रसङ्गही विवृत हुआ है ऐसे स्थलमें श्रीमद्भागवतको सारस्वत कल्पाश्रित महापुराण कहकर ग्रहणकरनमें भी आपत्ति उत्पन्न होती है।

फिर शिवपुराणके उत्तरखण्डमें लिखाहै।

" भगवत्याश्च दुर्गायाश्चरितं यत्र विद्यते।
तत्तु भागवतं प्रोक्तं न तु देवीपुराणकम् ॥ "

जिस ग्रंथमें भगवती दुर्गाका चरित वर्णित है वही देवीभागवत नामसे प्रसिद्ध है, परन्तु देवीपुराण नहीं.

शैव नीलकण्ठकृत कालिका पुराणके हेमाद्रि प्रस्तावमें—

" यदिदं कालिकाख्यं तन्मूलं भागवतं स्मृतम्। "

कालिकानामक जो उपपुराण है उसका मूल भागवत है, देवीयामलमें ऐसा पायाजाता है.

श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं वेदसम्मितम्।
परीक्षितायोपदिष्टं सत्यवत्यङ्गजन्मना ॥
यत्र देव्यवताराश्च बहवः प्रतिपादिताः।
इदं रहस्यं चरितं राधोपासनमुत्तमम् ॥
व्यासाय मम भक्ताय प्रोक्तं पूर्वं मयाद्रिजे।
मत्तो रहस्यं ज्ञात्वैव राधोपासनमुत्तमम् ॥
एतस्य विस्तरं चक्रे श्रीमद्भागवते तथा।
नारदे ब्रह्मवैवर्त्ते लोकानां हितकाम्यया ॥ "

श्रीमद्भागवतपुराण वेदसम्मित, सत्यवतीसुत व्यासने परीक्षित्पुत्र जनमेजयको यह पुराण उपदेश किया है। इस ग्रन्थमें देवीके नानावतार, देवीके रहस्य और चरित तथा राधाकी उपासना वर्णित है, हे अद्रिजे! मैंने पूर्वकालमें अपने भक्त व्यासको इस राधाकी उपासना प्रकाश

की थी । इस रहस्यमें मत्त होकर व्यासने मनुष्योंकी हितकामनासे श्रीम-द्भागवतमें तथा नारद और ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें इस राधाकी कथा विस्तारसे वर्णन की है.

चित्सुखके भागवत कथा संग्रहमें उद्धृत है–

"ग्रन्थोऽष्टादशसाहस्रो द्वादशस्कन्धसम्मितः ।
हयग्रीवब्रह्मविद्या यत्र वृत्रवधस्तथा ॥
गायत्र्या च समारम्भस्तद्वै भागवतं विदुः ॥"

यह ग्रन्थ १८००० और १२ स्कन्धयुक्त है, जिसमें हयग्रीवको ब्रह्मविद्यालाभकी कथा और वृत्रवधकथा वर्णित है और गायत्रीका अवलम्बन करके जो पुराण आरंभ हुआ है, वही भागवत है.

ऊपर जितने प्रमाण उद्धृत हुए हैं, उनसे देवीभागवतकोही महापुराण कहा जाता है.

देवीभागवतके प्रथममेंही त्रिपदा गायत्री है, किन्तु विष्णुभागवतमें गायत्रीका "धीमहि" यह अंश मात्र है। दोनों पुराणोंमेंही वृत्रासुर वधकी कथा होनेपरभी विष्णुभागवतमें हयग्रीवका नाममात्र (५।१८। १।) तो लिखा है, किन्तु हयग्रीवको ब्रह्मविद्यालाभकी कथा आदिमें नहीं। देवीभागवतमें (१ । ५ अ०) हयग्रीवनामक दैत्यको ब्रह्मविद्यास्वरूपिणी महामायाकी तपस्या और हयग्रीवरूपधारी विष्णुका माहात्म्यआदि विशेषरूपसे वर्णित हुआ है। पहिलेही कह दिया है कि, मात्स्योक्त सारस्वत कल्पका प्रसंग विष्णुभागवतमें नहीं । स्कन्दपुराणीय नागरखण्डमें लिखा है, "सारस्वतस्तु द्वादश्यां शुक्लायां फाल्गुनस्य च।" अर्थात् फाल्गुनकी शुक्ल द्वादशी तिथिमें सारस्वत कल्पका आविर्भाव हुआ है.

शिवपुराणीय औम संहितामें लिखा है–

"ब्रह्मणा संस्तुता सेयं मधुकैटभनाशने ।
महाविद्या जगद्धात्री सर्वविद्याधिदेवता ॥
द्वादश्यां फाल्गुनस्यैव शुक्लायां समभून्नृप ।"

" हे राजन् ! यही उन सम्पूर्ण विद्याओंकी अधिष्ठात्री महाविद्या हैं, जगद्धात्री यह मधुकैटभवधके निमित्त ब्रह्माद्वारा स्तुतहोकर फाल्गुनकी शुक्लद्वादशीमें आविर्भूत हुई थी । ऑम संहिताके उक्तवचनानुसार देवीभागवतके १ म स्कन्धके ७ अध्यायमें ब्रह्मस्तुति और मधुकैटभ नाशार्थ देवीका प्रादुर्भाव पाठकरनेपर इस देवीभागवतको ही सारस्वतकल्पाश्रित पुराण कहा जासकता है। जो कुछभी हो, इस समय दो मत पाये जाते हैं, नारद और पाद्ममतसे विष्णुभागवतही महापुराणोंमें गण्य है, किन्तु मत्स्यादि मतसे देवीभागवतही महापुराणमें गिना जाता है । इस प्रकार मतभेदहोनेका कारण क्या ? उपपुराणकी तालिकासे जाना जाता है कि "भागवत" नामक एक उपपुराणभी है, यथा—

"आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परम् ।
पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवताह्वयम् ॥ "

नीलकण्ठकृत गरुडपुराणमें तत्त्वरहस्यके द्वितीयांशके धर्म्मकाण्डमें लिखा है.

"पुराणं भागवतं दौर्गं नन्दिप्रोक्तं तथैव च । "

अर्थात् दुर्गा माहात्म्य सस्वलित भागवत और नन्दिकेश्वर प्रोक्त पुराणादि उपपुराणोंमें गिने जाते हैं.

रामाश्रमकी दुर्जनमुखचपेटिकामें भी पद्मपुराणकी दुहाई देकर यह श्लोक उद्धृत हुआ है.

"शैवं भागवतं दौर्गं भविष्योत्तरमेव च । "

इस प्रकार मधुसूदन सरस्वतीके सर्वशास्त्रार्थ संग्रहमें, नागोजी भट्टके निबन्धमें, दुर्जनमुख पद्मपादुकामें और पुरुषोत्तमके भागवतस्वरूप विपर्यशंका निरास, त्रयोदश आदि ग्रन्थोंमें देवीभागवतकी उपपुराणत्व और विष्णु भागवतको महापुराणत्व स्थापनकी चेष्टा हुई है.

इधर मिताक्षरा टीकाकार प्रसिद्ध बालंभट्ट श्रीमद्भागवतको एकसाथही पुराण नहीं गिनते.

इस देशके अनेक लोगोंका विश्वास है कि विष्णुभागवत सुप्रसिद्ध बोपदेवकी बनाई हुई है, वास्तविक बोपदेवरचित भागवतानुक्रमभी पाया गया है। बडे ही आश्चर्य्यका विषय है। कोलब्रुकप्रमुख अनेक पाश्चात्य पण्डित भी बोपदेवको भागवतरचयिता कहकर विश्वास करते हैं। खृष्टीय १३ शताब्दीके शेषभागमें बोपदेव देवगिरिमें वर्तमान थे उन्होंने मुक्ताफल नामक भागवतका तात्पर्य्यार्थ ज्ञापक एक ग्रंथभी लिखा था, उनके आश्रयदाता हेमाद्रिनेभी श्रीमद्भागवतसे वचन उद्धृत किया है,ऐसे स्थलमें बोपदेवको भागवत रचयिता नहीं समझा जाता। हां उनकी बनाई भागवत विषयसूची हमारे यहां मुरादाबादमें छपी मिलती है, परंतु श्रीमद्भागवतके रचयिता बोपदेव कभी नहीं है यह सिद्धांत हो चुकाहै।

अब देखना चाहिये कि विष्णुभागवत और देवीभागवत दोनों ग्रंथ आलोचना करनेपर प्रकृत प्रस्तावमें किसको हम महापुराण कहकर गणना करसकते हैं.

श्रीमद्भागवतके प्रसिद्ध टीकाकार श्रीधरस्वामीने प्रारंभमेंही लिखा है "भागवतनामान्यदित्यपि नाशंकनीयम्" अर्थात् भागवतनामक अन्य पुस्तक है ऐसी शंकाकरनी उचित नहीं, श्रीधरस्वामीकी उस उक्तिके द्वारा ज्ञात होता है कि उनके समयमेंभी इस भागवतको पुराणत्व लेकर बखेडा चलता था और एक दूसरी भागवत भी प्रचलित, थी नहीं तो वह ऐसी बात क्यों कहते।

श्रीधर स्वामीने इस टीकाके उपक्रममें लिखा है.

"द्वात्रिंशत्त्रिशतं च यस्य विलसत्"

अर्थात् जिसकी अध्याय संख्या ३३२

काशीनाथने (दुर्जनमुख महाचपेटिकामें) पुराणार्णवसे चित्सुखोद्धृत उक्तश्लोक कई श्लोकोंके साथ यह चरणभी उद्धृत किये हैं—

" स्कन्धा द्वादश एवात्र कृष्णेन विहिताः शुभाः ।
द्वात्रिंशत्त्रिशतं पूर्णमध्यायाः परिकीर्त्तिताः ॥ „

इस ग्रंथमें कृष्ण द्वैपायन द्वारा द्वादशस्कन्ध विहित हुए हैं और ३३२ अध्याय कीर्त्तित हुए हैं.

श्रीधरस्वामीकी उक्ति और पुराणार्णवका उक्त वचन पाठकरनेसे विष्णुभागवतको ही महापुराण कहकर स्वीकार किया जाता है.

विष्णुभागवतमें उसकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें लिखा है, चार वेद-विभाग और पञ्चमवेदस्वरूप इतिहास-पुराण-समूह संकलन, एवं स्त्री शूद्र और निन्दित ब्राह्मणादिकोंके निमित्त महाभारत रचना करकेभी वेदव्यासके मनमें तृप्ति नहीं हुई, अंतमें उन्होंने नारदके उपदेशसे हरि-कथामृतरूप भागवत रचना करके परमतृप्ति लाभ की थी ॥ (१ मस्कन्ध ४ र्थ-६ ष्ठ. अ०) भागवतके उक्तप्रमाणानुसार जाना जाता है कि, पुराण इतिहासादि रचित होनेके पीछे श्रीमद्भागवत रची गई है किन्तु ऊपर कहआये हैं कि विष्णु आदि पुराणोंके मतसे भागवत पाँचवाँ पुराण गिना जाता है, ऐसे स्थलमें सबसे अंतमें रचित विष्णुभागवत पञ्चमेतर पुराण होता है । इस विष्णुभागवतमें पुराणलक्षण कथनमें लिखा है-

" सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृत्तिरक्षान्तराणि च ।
वंशो वंश्यानुचरितं संस्थाहेतुरपाश्रयः ॥
दशभिर्लक्षणैर्युक्तं पुराणं तद्विदो विदुः ।
केचित् पञ्चविधं ब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थया ॥
अव्याकृतगुणक्षोभान्महतस्त्रिवृतोऽहमः ।
भूतसूक्ष्मेन्द्रियार्थानां सम्भवः सर्ग उच्यते ॥
पुरुषानुगृहीतानामेतेषां वासनामयः ॥
विसर्गोयं समाहारो बीजाद्बीजं चराचरम् ॥
वृत्तिर्भूतानि भूतानां चराणामचराणि च ।

कृता स्वेन नृणां तत्र कामाच्चोदनयापि वा ॥
रक्षाच्युतावतारेहा विश्वस्यानुयुगे युगे ।
तिर्य्यङ्मर्त्यर्षिदेवेषु हन्यन्ते यैस्त्रयीद्विषः ॥
मन्वन्तरं मनुर्देवा मनुपुत्राः सुरेश्वरः ।
ऋषयोऽशावतारश्च हरेः षड्विधमुच्यते ॥
राज्ञां ब्रह्मप्रसूतायां वंशस्त्रैकालिकोऽन्वयः ।
वंशानुचरितं तेषां वृत्तं वंशधराश्च ये ॥
नैमित्तिकः प्राकृतिको नित्य आत्यन्तिको लयः ।
संस्थेति कविभिः प्रोक्ता चतुर्द्धास्य स्वभावतः ॥
हेतुर्जीवोऽस्य सर्गादेरविद्याकर्मकारकः ।
यम्चानुशायिनं प्राहुरव्याकृतमुतापरे ॥
व्यतिरेकान्वयो यस्य जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु ।
मायामयेषु तद्ब्रह्म जीववृत्तिष्वपाश्रयः ॥
पदार्थेषु यथा द्रव्यं सन्मात्रं रूपनामसु ।
बीजादिपंचतां तासु ह्यवस्थासु युतायुतम् ॥
विरमेत यदा चित्तं हित्वा वृत्तित्रयं स्वयम् ।
योगेन वा तदात्मानं वेदेहाया निवर्त्तते ॥
एवं लक्षणलक्ष्याणि पुराणानि पुरा विदः ।
मुनयोऽष्टादश प्राहुः क्षुल्लकानि महान्ति च ॥ ”

(भा०-१२।७।९-२२)

सर्ग, विसर्ग, संस्था, रक्षा, मन्वंतर, वंशकथन, वंशानुचरित, प्रलय, हेतु और अपाश्रय पण्डितोंने पुराणके यह दश लक्षण निर्देश किये हैं. कोई २ पञ्चलक्षणयुक्त ग्रंथकोभी पुराणकहते हैं, उनकी व्यवस्था यह है कि दशलक्षण महापुराण और पञ्चलक्षण अल्प वा उपपुराण है, प्रकृतिके त्रिगुण समूहसे महान्, उससे त्रिगुणात्मक अहंकार

भूत, सूक्ष्मेंद्रिय और उससे उत्पन्न जो स्थूलदृष्टि उसका नाम सर्ग है। ईश्वरानुगृहीत महदादिकी पूर्व पूर्व वासनामें बीजसे बीजोत्पत्तिकी समान समाहाररूप चराचर उत्पत्तिको विसर्ग वा अवान्तर सृष्टि कहते हैं। चरभूतोंके कामविषय चराचर रूप और मनुष्योंका स्वभावतः और कामकृत वा विधि बोधित जो जीवनोपाय, उसका नाम संस्था वा स्थिति है। संसारमें युग २ में वेदद्वेषी दैत्योंद्वारा देव, तिर्य्यक्, मनुष्य और ऋषियोंके कार्य्य नाशोपक्रममें नारायणके जो विशेष २ अवतार हैं उनका नाम रक्षा है। मनु, देवगण, मनु पुत्रगण, और ऋषिगण यह हरिके अंशावतार हैं इनके अपने २ अधिकारकालको मन्वन्तर कहते हैं। ब्रह्मोद्भव शुद्धवंशीय राजालोगोंकी भूत, भविष्यत् और वर्तमान इस त्रैकालिक पुरुषपरम्परा वर्णनका नाम वंशकथन है, तथा इनके वंशमें उत्पन्नवंशधर गणोंके चारित्रवर्णनका नाम वंशानुकथन है। नैमित्तिक प्राकृतिक नित्य और आत्यन्तिक स्वभावसेही हो वा ईश्वरमायाक्रमसे ही हो, इस चार प्रकारके लयका नाम प्रलय है। अज्ञानवशासे कर्म्मकर्त्ता जीव इस विश्वके जन्म स्थित और नाशका कारण है, इसकाही नाम हेतु है। मायामय विश्व तैजस प्रज्ञादि जीवनिष्ठ जाग्रत् स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थामें साक्षिरूपसे उनके अन्वय और समाधिकालमें, इन सर्व अवस्थामें जिनका व्यतिरेक हो उस अधिष्ठानका नाम अपाश्रय है। जैसे घटादिपदार्थोंमें मृत्तिकादि द्रव्य और रूपनामादिमें सत्तामात्र है, उसकी समान बीजसे पञ्चत्वतक जीवकी सम्पूर्ण अवस्थामें जो युक्त और अयुक्त है, वही अपाश्रय है। पुराणवेत्ता पण्डितोंने इन सम्पूर्ण लक्षणयुक्त अठारह पुराण और अठारह उपपुराण निर्णय किये हैं.

पहिले कहदिया है कि समस्त प्रधान पुराणमतसे महापुराण पञ्चलक्षणाक्रान्त है। अमरसिंहादि प्रमुख कोषकारोंने पुराणके पाँचलक्षण स्वीकारकिये हैं श्रीमद्भागवत और ब्रह्मवैवर्त्तके अतिरिक्त और कोईभी

पुराणके दशलक्षण ग्रहंण नहीं करता कोई कहते हैं कि भविष्यराजवं-शवर्णनके पीछे श्रीमद्भागवतकी रचना सप्तमशताब्दीमें हुई है इसका उत्तर हम पीछे दे चुके हैं कि भविष्यराजवंशवर्णन व्यासजीका स्वभाव है और वह अपने योगबलके परिचयका पुराणोंमें संकेत इसीप्रकार करते हैं.

बडी शंका यह है कि जब पुराण भागवत और महाभारत एकही मुखसे निकली हैं तब भाषाकी आलोचना करनेसे ऐसा ज्ञात नहीं होता, ब्रह्म विष्णु ब्रह्माण्ड और महाभारतकी रचना जैसी सरल ओजस्वी और बीच बीचमें गाम्भीर्य शाली है भागवतकी भाषा वैसी नहीं है, भागवतके अनेक स्थान कठिन अलंकृत विविध छन्दोंसे युक्त और गम्भीर चिन्ता संयुक्त हैं और इसको पंचम पुराणभी भागवतकारने स्वीकार नहीं किया किन्तु अठारहवां माना है सूचीमें एकबेर पंचम और एकबेर अष्टम कहा है.

उत्तर यह है, व्यासजीने लौकिक विचित्र और समाधिनामक तीन भाषाओंमें पुराण रचना की है, लौकिक साधारण,विचित्र अध्यात्म और समाधिभाषा ब्रह्मानन्दमय मग्न होकर जो मुखसे निकली है इसीसे नानाछन्दोबद्धरूप ब्रह्मानन्दकी तरंग है और पंचम अष्टम कहकर इसके पाठसे परमशान्ति और प्रकटितब्रह्मानन्द प्राप्तहोता है इस कारण इसीको सबसे पश्चात् मानलिया है.

पुराणार्णवके श्लोकानुसार विष्णु भागवतकोही महापुराण समझा जाता है, वास्तविक यह श्रीमद्भागवत नानाख्यानयुक्त एक वैष्णवीय दार्शनिक ग्रन्थ, है गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने जो अपूर्वमत प्रकाश कियाथा पाञ्चरात्र और भागवतगण दार्शनिकमत स्वीकार करते हैं, वेदान्तिक मतके साथ वह सम्पूर्ण तत्त्व अनेक उपाख्यानादिद्वारा विस्तारसे समझानेके निमित्त भागवत की सृष्टि है इस कारणही दार्शनिक जगत्में भागवतका अधिक आदर है,इस कारणही दूसरे सम्पूर्ण पुराणोंकी अपेक्षा इस भागवतके ऊपर सर्व साधारण हिन्दुओंका गाढ अनुराग यथेष्ट सन्मान और अचालित भक्तिलक्षित होती है.

विशुद्धवेदान्तमत इस भागवतमें अतिसुन्दर उपायसें विवृत हुआ है (१) इस कारणही भागवतकारने लिखा है.

" सर्ववेदान्तसारं हि श्रीभागवतमिष्यते ।
तद्रसामृततृप्तस्य नान्यत्र स्याद्रतिः क्वचित ॥" (१२।१३।१५)

अब देखना चाहिये देवीभागवतकी मूल आलोचनाकरके कैसा पाया जाता है। देवीभागवतके दूसरे अध्यायमें लिखा है ॥ ५ ॥

" पुराणमुत्तमं पुण्यं श्रीमद्भागवताभिधम् ।
अष्टादशसहस्राणि श्लोकास्तत्र तु संस्कृताः ॥
स्कन्धा द्वादश एवात्र कृष्णेन विहिताः शुभाः ॥
त्रिशतं पूर्णमध्याया अष्टादशयुताः स्मृताः ॥ १२ ॥
सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितश्चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥" (१।२।१८)

यह श्रीमद्भागवत नामक पुराण सर्वोत्तम और पुण्यप्रद है, यह अष्टादश सहस्र संख्यक विशुद्ध श्लोक माला सम्वलित, ३१८ अध्याय पूर्ण सौरुय, मंगल मय १२ स्कन्धयुक्त है। सर्ग प्रतिसर्ग वंशावली, मन्वन्तर और वंशानुचरित इन पाँचलक्षणयुक्त (यह) पुराण है.

पाँचलक्षण धरनेपर यह देवीभागवतही महापुराणामें गणनाकरने योग्य है मत्स्यआदि पुराणोक्त लक्षणभी इस देवीभागवतमें हैं, पुराणार्णवके वचन भागवतमें * ३३२ अध्याय हैं, किन्तु देवीभागवतके मतसे ३१८—

---

(१) इस श्रीमद्भागवतके बहुसंख्यक टीके दीखते हैं—अमृत, तरंगिणी, आत्मप्रिया, कृष्णपदी, चैतन्यचन्द्रिका, जयमङ्गला, तत्त्वप्रदीपिका, तात्पर्य्यचन्द्रिका, तात्पर्य्यदीपिका, भगवल्लीलाचिन्तामणि, रसमञ्जरी, शुकपक्षीय, आनन्दतीर्थकृत भागवततात्पर्य्य निर्णय, और जनार्द्दनभट्ट, नरहरि, और श्रीनिवासरचित उसकी टीका, श्रीधरस्वामिकृत भावार्थ दीपिका और केशवदासकृत भावार्थदीपिका स्नेहपूरिणी, कल्याणरचित तत्त्वदीपिका.

* श्रीभागवत १२ । ७३ । २ श्रीभागवत १२ । १३ । ५ ।

अध्याय मात्र हैं। अध्यायसंख्या लेकर महापुराणत्व सम्बन्धमें खगोल रहता है.

विष्णुभागवतमें जिस प्रकार दार्शनिक तत्त्व प्रधान है यह देवीभागवत उसी प्रकार तंत्रानुसारी है। इसमें यथेष्ट तंत्रका प्रभाव लक्षित होता है। इस कारणही देवीयामल आदि तांत्रिक ग्रंथोंमें इस देवीभागवतका प्राधान्य स्वीकृत हुआ है.

किन्हींका मत है कि देवताकी मूर्ति निर्माण करके प्रतिष्ठा करना, तांत्रिक समयकी बात है। प्रथम शताब्दीमें तंत्रका विशेष प्रचार था। ६ छठी शताब्दीकी, नेपालसे तंत्रकी पोथी मिली है, देवीभागवतमें पुरातनकथा होनेपरभी तांत्रिक प्रभावके समय इसका फिर संस्कार हुआ था, राधाकी उपासनाभी इसीका फल है। विष्णुभागवतमें गोपी और कृष्णका चरित विस्तृत होनेपरभी राधाका नाम नहीं है, होता तो राधामाहात्म्य अवश्य होता। जहां देवीभागवतमें राधाचरित है वह विष्णु भगवान्‌से पीछेका है। कोई अंश इसमें विष्णुभागवतसे पहलेका भी हो तथापि यह संस्करण नवमशताब्दीका है.

किन्हींका मत है कि पूर्वकालमें एकही भागवत थी बौद्धसमयमें ब्राह्मणधर्मके शोचनीय परिणामके साथ वह पुरातन भागवत लोप होगई जब फिर ब्राह्मणधर्मका अभ्युदय हुआ तब वैष्णवोंने दार्शनिक(१)श्रीमद्भागवत और

१ कौरसाधु,कृष्णभट्ट,और गोपालचक्रवर्तीकी टीका, चूडामणिचक्रवर्तीकी अन्वयबोधिनी, नरसिंहाचार्य्यकी भावप्रकाशिका, नरहरिकी तात्पर्य्यदीपिका नारायण, भेदवादी यदुपति वल्लभाचार्य्य, विजयध्वज तीर्थ, विश्वनाथ चक्रवर्ती, विष्णुस्वामी, वीरराघव, शिवराम, श्रीनिवासाचार्य्य, सत्याभिनवतीर्थ, सुदर्शनसूरि,हरिभानुशुक्र आदिकी टीका इसके अतिरिक्त मधुसूदन सरस्वतीकी भागवत पुराणाद्यश्लोकत्रय टीका, कृष्णदीक्षितकी . सुबोधिनी, सनातनगोस्वामीकी वैष्णवतोषिणी, वासुदेवकी बुधरञ्जिनी, विट्ठल दीक्षितका निबन्ध विवृति प्रकाश, ब्रह्मानन्द भारतीका एकादशस्कन्ध सार आदि उल्लेख योग्य है।

शाक्तिकोंने पौराणिक देवीभागवतका प्रचार किया। इन दोनों ग्रंथोंमें पूर्वतन भागवतके लक्षण विद्यमान हैं पूर्वतन भागवत १८००१ अठारह सहस्र एकश्लोकोंमें थी इन्होंने भी संकलित कर दोनोंमें १८००० श्लोक रक्खे.

इन दोनों शंकाओंपर हमको यह कहना है कि जब दूसरे पुराणोंमें दोनों महापुराणोंका वर्णन है तब क्योंकर एकही भागवत होगी यह निश्चय है। दोनोंमेंही पूजाप्रतिष्ठा है राधाका नाम न लिखनेका कारण यह है कि श्रीमद्भागवतको व्यासजीने पुरुष उपासना प्रधान लिखा है इस कारण राधारूप मुख्यशक्तिका उल्लेख नहीं किया और देवीभागवतमें प्रकृति वा शक्तिको प्रधान मानकर उसका नाम ग्रहण कियाहै। पद्मकल्पमें श्रीमद्भागवत और सारस्वतकल्पमें देवीभागवतकी प्रधानता रही है. विना प्रकृति पुरुषके जगतही नहीं चलता इस कारण व्यासजीने दोनोंकी महिमामें एक २ स्वतंत्र ग्रंथकी रचना की है यह दोनोंही महापुराण हैं.

इन दोनों ग्रंथोंमें कुछ उलट फेरभी नहीं हुआ है कारण कि इधर श्रीमद्भागवतका और मिथिलामें देवीभागवतका अधिक प्रचार है इस विषयमें यदि विशेष देखनाहो, तो हमारे देवीभागवतके उपोद्घात प्रकरणको देखो.

नारदपुराण ६.

१–४ नारद सनत्कुमार सम्वाद, ५ भगवान्का मृकण्डुपुत्ररूपता कथन, ६–११ गंगाकी उत्पत्ति और माहात्म्यादि वर्णन, १२ वर्णसमूहमें ब्राह्मणको दानपात्रत्व कथन, १३ देवतायतन स्थापनमें पुण्यकथन, १४ धर्मशास्त्रनिर्देश, १५ नरक वर्णन, १६ भगीरथका गंगानयन वृत्तांत, १७–२३ विष्णुव्रत कथन, २४–२५ वर्णाश्रमाचारकथन, २६ स्मार्त्त धर्म्म कथन, २७–२८ श्राद्धविधि, २९ तिथ्यादि निर्णय, ३० प्रायश्चित्त निर्णय, ३१ यममार्ग निरूपण, ३२ भवाटवी निरूपण, ३३–३४

हरिभक्ति लक्षण, ३५ ज्ञान निरूपण, ३६ विष्णुसेवा प्रभाव ३७–४० विष्णु माहात्म्य, ४१ युगधर्म्म कथन, ४२ सृष्टितत्त्व निरूपण, ४३ जीवतत्त्व कथन, ४४ परलेक निरूपण,४५ मोक्षधर्म्म निरूपण, ४६ अध्यात्मिकादि तीन दुःख निरूपण, ४७ योगस्वरूपवर्णन ४८–४९ परमार्थ निरूपण, ५० वेदान्त शिक्षादिशास्त्र, ५१ कल्पशास्त्र निरूपण ५२ व्याकरणशास्त्र निरूपण, ५३ निरुक्तशास्त्र निरूपण, ५४–५६ ज्योतिःशास्त्र निरूपण, ५७ छन्दःशास्त्र निरूपण, ५८शुकोत्पत्ति कथन, ५९–६१ ब्राह्मणकर्त्तव्य निरूपण,६२ मोक्षशास्त्रसमादेश, ६३ भागवततत्त्व निरूपण, ६४–६७ दीक्षा विधि, अभीष्टदेव पूजाविधि, ६८ गणेशमंत्र निरूपण, ६९ त्रयीमूर्ति निरूपण, ७०–७२ विष्णुमंत्र निरूपण, ७३ राममंत्र निरूपण, ७४ हनुमन्मंत्र निरूपण, ७५हनुमद्दीप विधान, ७६ कार्त्तवीर्य्यार्जुन मंत्रपूजादि विधान, ७७ कार्त्तवीर्य्य कवच, ७८ हनुमत्कवच, ७९ हनुमच्चरित, ८०–८१ कृष्णमंत्र निरूपण, ८२ पूर्वजन्ममें नारदका महादेवके निकट कृष्णतत्त्व प्राप्तिवृन्तान्त कथन, ८३ राधांशावतार निरूपण, ८४ मधुकैटभोत्पत्ति विवरण, ८५ कालीमंत्र निरूपण, ८६–८८ सरस्वत्यवतार वर्णन,८९ शक्तिसहस्रनाम कथन,९०शक्तिपटल, ९१ महेशमंत्र निरूपण, ९२ पुराणाख्यान निरूपण, ९३ ब्रह्म और पद्म, पुराणानुक्रमणिका, ९४ विष्णुपुराणानुक्रमणिका, ९५ वायु पुराणानुक्रमणिका, ९६ भागवतानुक्रमणिका, ९७ नारदपुराणानुक्रमणिका· ९८ मार्कण्डेयपुराणानुक्रमणिका, ९९ आग्नेयपुराणानुक्रमणिका, १०० भविष्य पुराणानुक्रमणिका, १०१ ब्रह्मवैवतपुराणानुक्रमणिका, १०२ लिङ्गपुराणानुक्रमणिका, १०३ वराहपुराणानुक्रमणिका, १०४ स्कन्द पुराणानुक्रमणिका, १०५ वामनपुराणानुक्रमणिका, १०६ कूर्म्मपुराणानुक्रमणिका, १०७ मत्स्यपुराणानुक्रमणिका, १०८ गरुडपुराणानुक्रमणिका, १०९ ब्रह्माण्डपुराणानुक्रमणिका, ११० प्रतिपदव्रत निरूपण, १११ द्वितीयाव्रत निरूपण, ११२ तृतीयाव्रत निरूपण, ११३ चतुर्थीव्रत

निरूपण, ११४ पञ्चमीव्रत निरूपण, ११५ षष्ठीव्रत निरूपण, ११६ सप्तमीव्रत निरूपण, ११७ अष्टमीव्रत निरूपण, ११८ नवमीव्रत निरूपण; ११९ दशमीव्रत निरूपण, १२० एकादशीव्रत निरूपण, १२१ द्वादशी व्रत निरूपण, १२२ त्रयोदशीव्रत निरूपण, १२३ चतुर्दशीव्रत निरूपण; १२४ पूर्णाव्रत निरूपण, १२५ पुराण महिमा.

उत्तरभागमें–१द्वादशी माहात्म्य,२तिथि विचार,३ विष्णुको भक्त्यधीनत्व कथन, ४ नियोगाचरण निरूपण,५ यमविलाप, ६ यमके प्रति ब्रह्माका वाक्य, ७ लोकमोहनार्थ ब्रह्माद्वारा मोहनी स्त्रीकी उत्पत्ति, ८ मोहनी चरित, ९ राजा रुक्मांगदका मृगयामें गमन और तत्पुत्र धर्मांगदका राज्याभिषेक, १० मृगयादि वारुणोद्देशमें राजा रुक्मांगदके प्रति अहिंसाधर्म्मोपदेश, ११ रुक्मांगद राजाका मृगयाके निमित्त वनगमन और मोहनी दर्शन,१२ मोहनीके साथ रुक्माङ्गदकी विवाह प्रतिज्ञा,१३ रुक्मांगदके साथ मोहिनीका विवाह, १४ रुक्मांगदकर्तृक गृहगोधाविमुक्ति, १५ रुक्मांगदका स्वनगर प्रस्थान, १६ पतिव्रतोपाख्यान, १७ माताके प्रति धर्म्मांगदका प्रबोधवाक्य, १८ मातृगणके संतोषार्थ धर्म्मांगदका विविधि अर्थप्रदान, १९ मोहिनीके प्रणयमें मुग्धराजाका मोहिनीके साथ पुनर्विहारार्थ पुत्रको राज्यार्पण, २० धर्म्मांगदका दिग्विजय, २१ कामपीडितराजाका मोहिनीको वित्तदान, २२–२७ हरिवासरदिनमें राजाको भोजनकरानेमें मोहिनीका अनुरोध और रुक्मांगद राजाका हरिवासरमाहात्म्य वर्णन, २८–३३ मोहिनी द्वारा स्वामी रुक्मांगदको बहुतसे क्लेशदान वृत्तान्त, ३४–३७ मोहिनीके प्रति वसुगणका शापदान, शापसे उद्धारके निमित्त तीर्थसेवादि उपदेश, ३८–४३ गंगामाहात्म्य; ४४–४७ गयामाहात्म्य,४८–५१ काशीमाहात्म्य, ५२–६१ पुरुषोत्तम माहात्म्य, ६२–६३ प्रयाग माहात्म्य ६४–६५, कुरुक्षेत्र माहात्म्य, ६६ हरिद्वार माहात्म्य, ६७बदरिकाश्रम माहात्म्य,६८ कामोदा माहात्म्य, ६९ कामारुपाख्य माहात्म्य, ७० प्रभासतीर्थ माहात्म्य, ७१ पुष्करमाहात्म्य,

७२ गौतमाश्रम माहात्म्य, ७३ त्र्यम्बक माहात्म्य, ७४ गोकर्ण तीर्थ माहात्म्य, ७५ लक्ष्मण माहात्य, ७६ सेतु माहात्म्य, ७७ नर्म्मदातीर्थ माहात्म्य, ७८ अवन्ती माहात्म्य, ७९ मथुरा माहात्म्य, ८० वृन्दावन माहात्म्य, ८१ वसुका ब्रह्म समीपमें गमन वृत्तान्त, ८२ मोहिनी तीर्थसेवन वृत्तान्त.

नारदपुराणमें ही नारद महापुराणकी इस प्रकार विषयानुक्रमणिका है।

"शृणु विप्र प्रवक्ष्यामि पुराणं नारदीयकम् ।
पञ्चविंशतिसाहस्रं बृहत्कल्पकथाश्रयम्॥
सूतशौनकसम्वादः सृष्टिसंक्षेपवर्णनम् ।
नानाधर्म्मकथाः पुण्याः प्रवृत्ते समुदाहृताः ॥
प्राग्भावे प्रथमे पादे सनकेन महात्मना ॥
द्वितीये मोक्षधर्म्माख्ये मोक्षोपायनिरूपणम् ।
वेदाङ्गानाञ्च कथनं शुकोत्पत्तिश्च विस्तरात् ॥
सनन्दनेन गदिता नारदाय महात्मने ॥
महातंत्रे समुदिष्टं पशुपाशविमोक्षणम् ।
मंत्राणां शोधनं दीक्षा मंत्रोद्धारश्च पूजनम् ॥
प्रयोगाः कवचं नाम सहस्रं स्तोत्रमेव च ।
गणेशसूर्य्यविष्णूनां नारदाय तृतीयके ॥
पुराणं लक्षणञ्चैव प्रमाणं दानमेव च ।
पृथक् पृथक् समुद्दिष्टं दानं फलपुरःसरम् ॥
चैत्रादिसर्वमासेषु तिथीनाञ्च पृथक् पृथक् ॥
प्रोक्तं प्रतिपदादीनां व्रतं सर्वाघनाशनम् ।
सनातनेन मुनिना नारदाय चतुर्थके ॥
पूर्वभागेऽयमुदितो बृहदाख्यानसंज्ञितः ॥
अस्योत्तरविभागे तु प्रश्न एकादशीव्रते ।

वसिष्ठनाथ सम्वादो मान्धातुः परिकीर्त्तितः ॥
रुक्माङ्गदकथा पुण्या मोहिन्युत्पत्तिकर्म्म च।
वसुशापश्च मोहिन्यै पश्चादुद्धरणक्रिया ॥
गङ्गाकथा पुण्यतमा गयायात्रानुकीर्त्तनम्।
काश्या माहात्म्यमतुलं पुरुपोत्तमवर्णनम् ॥
यात्राविधानं क्षेत्रस्य बह्वाख्यानसमन्वितम् ॥
प्रयागस्याथ माहात्म्यं कुरुक्षेत्रस्य तत्परम्।
हरिद्वारस्य चाख्यानं कामोदाख्यानकं तथा ॥
बदरीतीर्थमाहात्म्यं कामाख्यायास्तथैव च।
प्रभासस्य च माहात्म्यं पुराणाख्यानकं तथा।
गौतमाख्यानकं पश्चाद्वेदपादस्तु वस्तुतः।
गोकर्णक्षेत्रमाहात्म्यं लक्ष्मणाख्यानकं तथा ॥
सेतुमाहात्म्यकथनं नर्म्मदातीर्थवर्णनम्।
अवन्त्याश्चैव माहात्म्यं मथुरायास्ततः परम् ॥
वृन्दावनस्य महिमा वसोर्ब्रह्मान्तिके गतिः।
मोहिनीचरितं पश्चादेवं वै नारदीयकम् ॥ "

हे विप्र ! सुनो, तुम्हारे निकट नारदीयपुराण कहता हूं, यह पुराण पचीससहस्र श्लोकोंमें पूर्ण और बृहत् कल्पकी कथायुक्त है.

इसके पूर्वभागके प्रथमपादमें सूतशौनकसम्वाद, संक्षेपसे सृष्टिवर्णन और माहात्म्य, सनकद्वारा अनेकप्रकारकी धर्म्मकथा कही है.

मोक्षधर्म्माख्य द्वितीयपादमें मोक्षका उपायनिरूपण, वेदाङ्ग समुदायका कथन और विस्तृतरूपसे शुककी उत्पत्ति, यह सम्पूर्ण महात्मा नारदके निकट सनन्दन द्वारा उक्त हुए हैं.

महातंत्रोद्दिष्ट पशुपाशविमोक्षण, मंत्र समुदायका शोधन, दीक्षाउद्धार, पूजा और प्रयोग एवं गणेश, सूर्य्य तथा विष्णुका सहस्रनामस्तोत्र,

पुराणके लक्षण और प्रमाण, दान और दानका पृथक पृथक् फल उद्देश और चैत्रादिमासमें प्रतिपदादि तिथिक्रमसे पृथक् २ व्रत निरूपण, यह सम्पूर्ण सनातनमुनिने नारदको इस चतुर्थ भागमें कहे हैं.

इसके उत्तरभागमें एकादशीव्रत विषयमें प्रश्न, वसिष्ठका और मान्धाताका सम्वाद, पवित्र रुक्मांगद कथा, मोहिनीकी उत्पत्ति और कर्म्म, मोहिनीप्रति वसुशाप, पश्चात् उद्धारक्रिया, पुण्यतम गंगाकथा, गयायात्राकीर्त्तन, काशीमाहात्म्य, पुरुषोत्तमवर्णन, बहु. आख्यानयुक्त पुरुषोत्तम क्षेत्रका यात्राविधान, प्रयागमाहात्म्य, कुरुक्षेत्रमाहात्म्य, हरिद्वाराख्यान, कामोदाख्यान, बदरीतीर्थमाहात्म्य, कामाख्यामाहात्म्य, प्रभासमाहात्म्य, पुराणाख्यान, गौतमाख्यान, वेदपादस्तव, गोकर्णक्षेत्रमाहात्म्य, लक्ष्मणाख्यान, सेतुमाहात्म्य, नर्म्मदातीर्थवर्णन, अवन्ती और मथुराका माहात्म्य, वृन्दावनमहिमा, ब्रह्माके निकट वसुका गमन और फिर मोहिनी चरित्र यह सम्पूर्ण नारदीयमें कहा गया है.

नारदपुराणोक्त विषयानुक्रमके साथ नारदीय पुराणकी पूर्वोद्धृत सूचीका सम्पूर्ण मेल है। जिस नारदपुराणकी पोथीसे सूची और समस्तपुराणका विषयानुक्रम दियागया है उस नारदीयपुराणकी ग्रन्थसंख्या प्रायः २२००० है.

अध्यापक विलसन साहबने नारदपुराणके ३००० श्लोक पाये हैं ज्ञात होता है उन्होंने संपूर्ण नारदपुराण नहीं देखा। उनका विवरण पाठ करनेसे जाना जाता है कि, नारदपुराणके उत्तरभागमें १ म से ३७ अध्यायोंमें जितना अंश है वही अंशमात्र उन्होंने पाया है (१) इस कारणही ज्ञात होता है कि उन्होंने नारदपुराणमें पुराणके पांच लक्षण नहीं पाये और उसको पुराण कहकर स्वीकार नहीं किया अब देखना चाहिये इस वृहत् पुराणको हम महापुराण कहकर स्वीकार करसकते हैं या नहीं ?

मत्स्यपुराणके मतसे—

Wilsons Vishnupuran by Hal.
Vol. I, P. L. I.

"यत्राह नारदो धर्म्मान् बृहत्कल्पाश्रयानिह ।
पञ्चविंशत्सहस्राणि नारदीयं तदुच्यते ॥

जिस ग्रन्थमें नारदने बृहत्कल्पप्रसंगमें अनेक धर्म्म कथा कही है वही २५००० श्लोकयुक्त नारदपुराण है.

शिव उपपुराणके उत्तरखण्डमें है–

"नारदोक्तं पुराणन्तु नारदीयं प्रचक्षते ॥"

नारदोक्तपुराणही नारदीयनामसे विख्यात है ।

उक्त लक्षणके अनुसार हमने जो नारदपुराण पाया है वही नारदीय महापुराण गिना जासकता है ।

अध्यापक विलसन नारदपुराणको खृष्टीय १६-वा ११ शताब्दीका रचित भक्तिग्रन्थ अनुमान करते हैं, परन्तु ११ ग्यारहवीं शताब्दीमें आलवेरुणीमें इस पुराणका उल्लेख किया है और बारहवीं शताब्दीमें गौडाधिप बल्लालसेनके दानसागरमें नारदपुराणके श्लोक उद्धृत हुए हैं इससे उनका मत ठीक नहीं है । विशेषकर नारदपुराणको देखनेसे केवल इसको भक्तिग्रन्थही नहीं कहसक्ते, वैष्णवोंके अनुष्ठानादि और नानासम्प्रदायकी दीक्षा आदिका विधानभी इस पुराणमें पाया जाता है,इसका उत्तरभाग विचारनेसे वैष्णवसंप्रदायका विशेषग्रन्थ तो समझा जाता है किन्तु पूर्व भागके विशेषविषयोंकी आलोचना करनेसे कोई विशेष साम्प्रदायिक ग्रंथ नहीं समझा जाता। इसमें जिस प्रकार सब पुराणोंका विषयानुक्रम दिया गया है उससे स्पष्टही है कि उन उन पुराणोंके पश्चात् ही इसका संकलन हुआ है । इसमें छठा कहा जानेपरभी हम इसको छठा नहीं कहेंगे हां किसी विशेष उद्देश्यसे छठा कहा हो तो ठीक है और यहभी संभव है कि इस पुराणका अधिकांश प्राचीन अंशही विलुप्त हुआ है ।

आलेवरुणीने जो भारतके समयका अपने कालमें वर्णन किया है उससे जानाजाता है कि उस कालमें तांत्रिक और पौराणिक सब प्रकारकी देवप्रतिष्ठा मंत्र और दीक्षा प्रचलित थी।

इस पुराणमें कोई ऐसी कथा नहीं पाई जाती जिससे उसके परवर्ती-कालकी रचना ग्रहण की जाय।

इससे पहले पद्मपुराणके आलोचनस्थलमें जो दिखाया है कि प्रच-लित पद्मपुराणमें जिस प्रकार पाखण्डिलक्षण मायावादकी निन्दा की है नारदपुराणके सकंलन समयमें पद्मपुराणमें वैसा कोई विषय नहीं था। विदित होता है कि अद्वैतविरोधी सम्प्रदायवालोंने ही पाखण्डिलक्षण और मायावादकी निन्दाका अंश रचा है कारण कि नारदपुराणकी सूचीमें वैसा नहीं इससे भी इसकी अतिप्राचीनता सूचित हुई.

बृहन्नारदीयपुराणनामसे भी एक वैष्णवग्रंथ मुद्रितहुआ है वह महापुराण नहीं है उपपुराणमें गिनाजासकता है।लघुबृहन्नारदीयनामकी भी छोटी पोथी पाई जाती है पर वह पुराण वा उपपुराण श्रेणीमें नहीं गिनीजासकती.

कार्तिकमाहात्म्य, दत्तात्रेयस्तोत्र, पार्थिवलिंगमाहात्म्य, मृगव्याधकथा, यदवगिरिमाहात्म्य, श्रीकृष्णमाहात्म्य, संकटगणपतिस्तोत्र इत्यादि नामोंकी कई पोथियें नारदपुराणके नामसे प्रचलित हैं.

सप्तम मार्कण्डेय पुराण ७.

१ मार्कण्डेयके समीपमें जैमिनीका भारतविषयक प्रश्न, उसके उत्तरमें मार्कण्डेयका वसुशापकथन, २ कन्धर और विद्युद्रूपका युद्धवर्णन, चटककी उत्पत्ति कथन, ३ शमीकमुनिके निकटमें पिंगाक्षादि पक्षियोंका शापकारणवर्णन, उनकी विन्ध्याचलप्राप्ति, ४ विन्ध्याचलस्थ चार प-क्षियोंके निकट गमनपूर्वक जैमिनीका चार प्रश्न कहना. उसके उत्तरमें उनके प्रति चतुर्व्यूहावतारवर्णन, ५ द्रौपदीके पञ्चस्वामीका कारण, इन्द्र-विक्रियाकथन, ६ बलदेवकृत ब्रह्महत्याका कारण कथन, ७ विश्वा-मित्रके क्रोधसे हरिश्चन्द्रकी राज्यच्युति, द्रौपदीका विवरण, ८ हरिश्च-न्द्रका उपाख्यान, ९ आडिवक युद्धप्रस्ताव, १० पक्षियोंके निकट जैमिनीका प्राणिजन्मादिविषयकप्रश्न, ११ पितृसमीपमें पुत्रका निषे-

कादिवृत्तान्तवर्णन, १२ महारौरवादि नरकवृत्तान्तवर्णन, १३ वैश्यराज और यमपुरुष सम्वाद, १४–१५ वैश्यराजप्रति यमपुरुषका कर्म्मफल कथन, वैश्यराजका स्वर्ग गमन, १६ पतिव्रतामाहात्म्य, अनुसूयाको वरलाभ, १७ दत्तात्रेयकी उत्पत्ति, १८ कार्त्तवीर्य्यार्जुनके प्रति गर्गका उपदेश कथन पूर्वक दत्तात्रेयका वृत्तान्तवर्णन, १९ दत्तात्रेय और कार्त्तवीर्य्यका सम्वाद, २० नागराजाश्वतरके निकट उनके पुत्र कुवलयाश्वका वृत्तान्तवर्णन प्रारम्भ, २१ कुवलयाश्वका स्वबाणविद्ध पातालकेतुदैत्यके अनुसरणमें पातालगमन, उस स्थानमें मदालसाका पाणिग्रहण, ससैन्य पातालकेतुवध, २२ मदालसावियोग, २३ अश्वतरको तपश्चरण द्वारा मदालसाप्राप्ति, कुवलयाश्वका नागराजभवनमें गमन, २४ कुवलयाश्वका पुनरश्वतर निकटमें मदालसालाभ, २५ मदालसाका अलर्क प्रति वर्णधर्म और आश्रम धर्मका उपदेश करना, २६ मदालसाके दो पुत्रोंका तपश्चरण, पुत्र अलर्कके प्रति उनका उद्घापणवाक्य, २७ मदालसाका पुत्रानुशासन, २८ अलर्कके प्रति मदालसाका चारों आश्रमके धर्म्म कर्म्मादिका कथन, २९ विस्तारविभावसे गार्हस्थ्य धर्म्म निरूपण, ३० नित्य नैमित्तिकादि श्राद्धकल्प, ३१ पार्वणश्राद्धकल्प, ३२ श्राद्धकल्प, ३३ काम्यश्राद्धफलकथन, ३४ सदाचारादिव्यवस्थानिरूपण, ३५ वर्ज्यावर्ज्यादिनिरूपण, ३६ मदालसाका पुत्रको अंगुलीयकदान, ३७ अलर्कका आत्मविवेक, ३८ दत्तात्रेय और अलर्कका सम्वाद, ३९ योगाध्याय, ४० योगसिद्धि, ४१ योगिचर्य्या, ४२ अंगारका रूप कथन, ४३ अरिष्ट कथन, ४४ सुबाहु और काशिराजका कथोपकथन, ४५ क्रौष्टुकिके प्रति मार्कण्डेयकी ब्रह्मोत्पत्तिकथन, ४६ कालनिरूपण, ब्रह्मायुका परिमाण, ४७ प्राकृत वैकृत सर्गविधान, ४८–४९ विस्तारितभावसे देवादिसृष्टिकथन, ५० यज्ञानुशासन, ५१ दुःसहकी उत्पत्ति, ५२ रुद्रसर्ग, ५३ स्वायम्भुवमन्वन्तरकथन, ५४–५५ भुवनकोपकथनप्रसंगमें जम्बू-

द्वीपवर्णन, ५६ गंगावतार, ५७ भारतवर्षविभाग, ५८ कूर्मसंस्थापन, ५९–६० वर्षवर्णन, ६१ स्वारोचिषमन्वन्तर कथन प्रारम्भ, ६२ कलिवरूथिनी समागम, ६३ स्वारोचिषका जन्म, स्वारोचिषके साथ मनोरमाका विवाह, ६४ स्वारोचिषके साथ मनोरमाकी दो सखियोंका विवाह, ६५ चक्रवाक और मृगके प्रति स्वारोचिषका तिरस्कार, ६६ स्वारोचिषकी उत्पत्ति, ६७ स्वारोचिषमन्वन्तरकथन, ६८ निधिनिर्णय, ६९ उत्तममन्वन्तरकथन प्रारम्भ, उत्तमका पत्नीपरित्याग, द्विजका भार्य्यान्वेषण, ७० द्विजका भार्य्यानयन, ७१ राजा और राक्षसका सम्वाद, ७२ राजमहिषीका लाना, उत्तममनुकी उत्पत्ति, ७३ उत्तममन्वन्तर कथन, ७४ तामसमन्वन्तरकथन, ७५ रैवतमन्वन्तरकथन, ७६ चाक्षुषमन्वन्तर कथन, ७७ वैवस्वतमन्वन्तर कथन, वैवस्वतमनुकी उत्पत्ति, सुर्य्यंशातन, ७८ देवर्षिकृत सूर्य्यस्तव, अश्विनीकुमारउत्पत्ति कथन, ७९ वैवस्वतमन्वन्तर, ८० सावर्णिकमन्वन्तरकथन, ८१ देवीमाहात्म्यारम्भ, मधुकैटभवध, ८२ महिषासुरसैन्यवध, ८३ महिषासुरवध, ८४ शक्रादिमाहात्म्य, ८५ देवीदूतसम्वाद ८६ धूम्रलोचनवध, ८७ चण्डमुण्डवध, ८८ रक्तबीजवध, ८९ निशुम्भवध, ९० शुम्भवध, ९१ देवीस्तुति, ९२ देवीका वरदान, ९३ देवीमाहात्म्यफलश्रुति, ९४ देवीमाहात्म्यसमाप्ति, ९५ सर्वसावर्णमन्वन्तर, ९६ रुचिरका उपाख्यान, ९७ पितृगणद्वारा रुचिरको वरदान, ९८ रौचमनुकी उत्पत्ति, ९९–१०० भौत्यमन्वन्तरकथन, १०१ भूपालवंशानुकीर्त्तन, मार्त्तण्डोत्पत्ति, १०२ ब्रह्माकी सृष्टि और भास्करकी उत्पत्ति, १०३ ब्रह्मकृत दिवाकरस्तुति, १०४ काश्यपान्वयकीर्त्तन, अदितिकृतसूर्य्यस्तुति, १०५ भास्वानको वरदान, अदितिगर्भसे उनका जन्म, १०६ सूर्य्यका तनुलिखन, १०७ सूर्यस्तव, १०८ मन्वन्तर श्रावणफल, १०९ भानुसन्तति, सम्भूती वर्णनमें राजवर्द्धनाख्यान, ११० भानुमाहात्म्य, १११ सूर्य्यवंशानुक्रम, ११२ पृषध्रको शूद्रताप्राप्ति, ११३ नाभागचरित, ११४ प्रतिशाप, ११५ नाभागचरित, ११६ भलन्दनवत्सप्रीचरित, ११७–

११९ खनित्रचरित, १२० विविंशचरित, १२१ खनीनेत्रचरित, १२२ करन्धमचरित १२३ अवीक्षितचरित और उसके द्वारा वैशालिनिहरण, १२४ अवीक्षितका बंदीत्व, १२५–१२६ अवीक्षितका उद्धार और वैराग्यप्राप्ति,माताका किमिच्छिकव्रतमें अवीक्षितको पौत्रमुखप्रदर्शनार्थ पितृसमीपमें अंगीकार, १२७ दानवहस्तसे अवीक्षितका वैशालिनीको बचाना,१२८ अवीक्षितका वैशालिनी विवाह और मरुत्तका जन्मकथन, १२९ मरुताभिषेक, १३०–१३२ मरुतचरित, १३३ नरिष्यन्तचरित, १३४सुमनसास्वयम्वर,१३५नरिष्यन्तवध, १३६वपुष्मन्तवधार्थ दमवाक्य, १३७ वपुष्मद्वध और दमचरित, १३८ मार्कण्डेयपुराणफलश्रुति।

प्रचलितमार्कण्डेयपुराणकी विषयसूची दी गई। देखना चाहिये दूसरे पुराणोंमें मार्कण्डेयके किस प्रकार लक्षण निर्दिष्ट हुए हैं.

नारदपुराणके मतसे—

"अथातः संप्रवक्ष्यामि मार्कण्डेयाभिधं मुने।
पुराणं सुमहत् पुण्यं पठतां शृण्वतां सदा॥
यत्राधिकृत्य शकुनीन् सर्वधर्म्मनिरूपणम्।
मार्कण्डेयेन मुनिना जैमिनेः प्राक् समीरितम्॥
पक्षिणां धर्म्मसंज्ञानां ततो जन्मनिरूपणम्।
पूर्वजन्मकथा येषां विक्रिया च दिवस्पते॥
तीर्थयात्राबलस्यातो द्रौपदेयकथानकम्।
हरिश्चन्द्रकथा पुण्या युद्धमांडीवकाभिधम्॥
पितापुत्रसमाख्यानं दत्तात्रेयकथा ततः।
हैहयस्याथ चरितं महाख्यानसमाचितम्॥
मदालसाकथा प्रोक्ता अलकचरितान्विता।
सृष्टिसंकीर्त्तनं पुण्यं नवधा परिकीर्त्तितम्॥
कल्पान्तकालनिर्देशो यक्षसृष्टिनिरूपणम्।

रुद्रादिसृष्टिरप्युक्ता द्वीपवंशानुकीर्त्तनम् ॥
मनूनां च कथा नानाः कीर्त्तिताः पापहारिकाः ।
तासु दुर्गाकथात्यन्तं पुण्यदा चाष्टमेन्तरे ॥
तत्पश्चात् प्रणवोत्पत्तिस्त्रयीतेजसमुद्भवः ।
मार्कण्डेयस्य जन्माख्या तन्माहात्म्यसमन्विता ॥
वैवस्वता च यश्चापि वत्सप्रीचारितं ततः ॥
खनित्रस्य ततः प्रोक्ता कथा पुण्या महात्मनः ॥
अविक्षिचरितं चैव किमिच्छव्रतकीर्त्तनम् ।
नरिष्यन्तस्य चरितं रामचन्द्रस्य सत्कथा ।
कुशवंशसमाख्यानं सोमवंशानुकीर्त्तनम् ॥
पुरूरवाकथा पुण्या नहुपस्य कथाद्भुता ।
ययातिचरितं पुण्यं यदुवंशानुकीर्त्तनम् ॥
श्रीकृष्णबालचरितं माथुरं चरितं ततः ।
द्वारकाचरितं चाथ कथा सर्वावतारजा ॥
ततः सांख्यसमुद्देशप्रपञ्चस्तत्त्वकीर्त्तनम् ।
मार्कण्डेयस्य चरितं पुराणश्रवणे फलम् ॥ ”

हे मुने ! अनन्तर तुम्हारे निकट मार्कण्डेय पुराण कहता हूं । इस पुराणके श्रोता और पाठक दोनोंकोही महत्पुण्य होता है । जिसमें शकुनियोंको अवलम्बन करके माकण्डेय मुनिने समस्त धर्म्मोका निरूपण किया है और पक्षियोंकी धर्म्मसंज्ञा, जन्मनिरूपण और पूर्वजन्मकथा, दिवस्पतिकी विक्रिया, बलदेवकी तीर्थयात्रा, द्रौपदेय कथा, हरिश्चन्द्र कथा, आडिवकाभियुद्ध, पितापुत्र समाख्यान, दत्तात्रेयकथा, हैहयचरित, मदालसा कथा, अलर्कचरित, नवधासृष्टि कीर्तन, कल्पान्त कालनिर्देश, यक्षसृष्टि निरूपण, रुद्रादिसृष्टि, द्वीपवंशानुकीर्तन, कल्पान्तकालनिर्देश, मनुओंकी नानाविध पापहारक कथा, उनमें अष्टम मन्वन्तरमें अत्यन्त

पुण्यप्रद दुर्गाकी कथा, प्रणवोत्पत्ति, त्रयीतेजउद्भव, मार्कण्डेयका समाख्यान, और उसका माहात्म्य, वैवस्वतचरित और वत्सप्रीचरित । इसके पश्चात् पुण्यदायक खनित्रकथा, अविक्षिचरित, किमिच्छव्रत–कीर्तन, नरिष्यन्त-चरित, इक्ष्वाकुचरित, तुलसीचरित, रामचन्द्रकी सत्कथा कुशवंश समाख्यान, सोमवंशानुकीर्तन, पुरूरवाकी कथा, नहुषकथा, ययातिचरित, यदुवंशकीर्तन, श्रीकृष्णका बाल्य और माथुरचरित, द्वारकाचरित, सांख्यसमुद्देश, प्रपंचकी असत्यता कीर्तन, एवं मार्कण्डेयचरित यह सम्पूर्ण कीर्तित हुए हैं.

मत्स्यपुराणके मतसे–

"यत्राधिकृत्य शकुनीन् धर्म्मान् धर्मविचारणा ।
व्याख्याता वै मुनिप्रश्ने मुनिभिर्धर्म्मचारिभिः ॥
मार्कण्डेयेन कथितं तत्सर्वं विस्तरेण तु ।
पुराणं नवसाहस्रं मार्कण्डेयमिहोच्यते ॥ (५३ । २६)

जो ग्रन्थ धर्म्माधर्म्म विचारज्ञ पक्षियोंके प्रसंगमें आरंभ होकर धार्म्मिक मुनिगणद्वारा कहा गया है और सब विषय मुनि प्रश्नानुसारमें मार्कण्डयद्वारा कहे गये हैं, वही ९००० ग्रन्थयुक्त मार्कण्डेय पुराण है.

शैवपुराणके उत्तरखण्डमें लिखा है–

"यत्र वक्ताऽभवत् खण्डे मार्कण्डेयो महामुनिः ।
मार्कण्डेयपुराणं हि तदाख्यातं च सप्तमम् ॥"

हे तण्डे ! जिस पुराणमें महामुनि मार्कण्डेय वक्ता हुए थे वही सप्तम मार्कण्डेय पुराण नामसे आख्यात है । मत्स्यनारदादिपुराणोंमें मार्कण्डेय पुराणका जो लक्षण निर्दिष्ट हुआ है प्रचलित मार्कण्डेय पुराणमें उसका किंचिन्मात्रभी अभाव नहीं है. क्या देशीय क्या अध्यापक विलसनप्रमुख पाश्चात्य पंडितगण सब ही एकवाक्यसे इस मार्कण्डेयपुराणकी

याथातथ्य मौलिकता स्वीकार करते हैं, अध्यापक विलसन साहबने लिखा है कि, प्रचलित मार्कण्डेयपुराणमें केवल ६९०० श्लोक दीखते हैं। तो २१००श्लोक कहांगये ? कोईभी इसका सदुत्तर नहीं देता। किसीने लिखा है कि जो अंश पाया जाता है, वह प्रथम खण्ड है। इस समय शेष खण्ड कहां हैं ? नारद पुराणके विषयानुक्रमसे जाना जाता है नरिष्यन्त चरितके पीछे इक्ष्वाकुचरित, तुलसीचरित्र, रामचन्द्रकथा, कुशवंश, सोमवंश, पुरूरवा, नहुष और ययातिचरित, यदुवंश, श्रीकृष्णकी बाल्य और माथुरलीला, द्वारकाचरित, सांख्यकथा, प्रपञ्चसत्व और मार्कण्डेय चरित वर्णित था। किन्तु प्रचलित मार्कण्डेय पुराणमें नरिष्यन्त चरितके परवर्ती विषयसमूह है ही नहीं। इन समस्त विषयोंके एकत्र करनेपर मार्कण्डेय पुराणकी श्लोकसंख्या पूर्ण होगी, इसमें सन्देह नहीं.

इस पुराणमें साम्प्रदायिक भाव नहीं है, ऐसी अनेक कथा हैं, जो किसी पुराणमें नहीं, बडेही आश्चर्य्यका विषय है, इस पुराणसम्पर्कमें वेदव्यासका नाम नहीं। प्रचलित पुराणोंमें जिस प्रकार मेल है, इस पुराणमें वैसी मिलावट नहीं पाई जाती। इसका देवीमाहात्म्य, वा चण्डी, सब हिन्दू सम्प्रदायको अवश्य अवलंबनीय और अत्याज्य सम्पत्ति है। हिन्दूओंके सब प्रधान धर्म्मकर्म्मोंमें यह देवीमाहात्म्य पाठ न करनेसे कोई कार्य्यही सिद्ध नहीं होता, संपद विपदमें हिन्दुओंके घर २ में मार्कण्डेय पुराणीय सप्तशति चण्डी पठित होती है।

शंकराचार्य्य, बाण और मयूरभट्टद्वारा इस मार्कण्डेयपुराणका उल्लेख होनेसे इसको बहुत प्राचीन ग्रन्थही स्वीकार करसकते हैं। बडेही आश्चर्य्यका विषय है, लोगोंने सप्तशती चण्डीका आदर किया है, नेपालमें एक बौद्धाचार्य्यकी हस्तलिखित ८०९ वर्षकी सप्तशती पाई है गई। सम्भवतः बौद्ध प्रभावकालमें भी यह पुराण भ्रष्ट नहीं हुआ। इसको हम बहुत प्राचीन पुराण कहकर ग्रहण करसकते हैं।

अष्टम आग्नेय पुराण ८.

इस समय दो प्रकारका अग्नि वा वह्निपुराण प्रचलित देखा जाता है। नीचे दोनों प्रकारके आग्नेयकी ही विषयसूची दीजाती है–

१ म वह्निपुराणमें–१ ऋषिप्रश्न, २ अग्निस्तव, ३ ब्रह्मस्तुति, ४ स्नानविधि ५ आह्निक स्नानविधि, ६ भोजनविधि, ७ आग्निकतप, ८ आश्वमेधिक (वेणुकथा,) ९ पृथुका उपाख्यान, १० गायत्रीकल्प, ११ ब्राह्मणप्रशंसा, १२ सर्गानुशासन, १३ गणभेद, १४ योगनिर्णय, १५सर्वकथन, १६ सर्गानुकीर्तन, सतीदेहत्याग, १७ रुद्रवर्ग, १८काश्यपीय प्रजावर्ग, १९ काश्यपीयवंश २० प्रजापतिसर्ग, २१–२३ वराह प्रादुर्भाव, २४–२७ नरसिंह प्रादुर्भाव,२८देवाम्बरीष सम्वाद, २९वैष्णवधर्म्ममें युगानुकीर्त्तन, ३० वैष्णवधर्म्ममें क्रियायोगविधि, ३१ वैष्णवधर्म्ममें शुद्धिव्रत, ३२ सुनामद्वादशी, ३३–३५ धेनुमाहात्म्य ३६ घृतधेनुविधि,३७वृषदान, ३८ पाशुपतदान,३९ पापनाशन वृषदान ४० भद्रनिधिदान,४१ शिबिकादान, ४२ विद्यादान, ४३ गृहदान, ४४ दासीदान,४५ब्राह्मणकथन, ४६ अन्नदान, ४७ प्रेतोपाख्यान, ४८ दीपमालिका स्थापन, ४९ च्यवन नहुष सम्वाद, ५० तुलापुरुष दान, ५१–५२ शार्म्मलोपाख्यान, ५३ तडाग वृक्ष प्रशंसा, ५४ दानादियज्ञकरण, ५५ वारुणाराम प्रतिष्ठा, ५६–६० वामन प्रादुर्भाव, ६१ क्रियायोग, ६२ कामधेनुप्रदान, ६३ मुद्गलोपाख्यान, ६४ शिवका उपाख्यान, ६५ दानावस्थानिर्णय, ६६ संग्राम प्रशंसा, ६७ रोहिणीका अष्टमीकल्प, ६८ वैवस्वतानुकीर्त्तन, ६९ सगरोपाख्यान, ७०–७१ गंगावतार, ७२ गंगामाहात्म्य, ७३–७४ सूर्य्यवंशमाहात्म्य कीर्त्तन, ७५ सीताशाप कथन, ७६–७७ वैश्रवण वरप्रदान, कपिल दर्शन, ७८ राक्षसयुद्ध,७९ विश्वामित्रयज्ञ, ८० अहल्याशापमोचन, ८१ सीताका विवाह,८२ सुमंत्र प्रेषण, ८३ रामानिर्गम, ८४ जनसंलाप, ८५ चित्रकूटनिवास,

८६ कैकेयीवाक्य, ८७ नन्दिग्रामवास, ८८ त्रिशिरावध, ८९ खरवध, ९० रावणवाक्य, ९१ अशोक वनिका प्रवेश, ९२ वनगवेषण, ९३ रामक्रोध, ९४ जटायुदर्शन, ९५ जटायुका सत्कार, ९६ अयोमुखकी मुक्ति, ९७ कबन्धदर्शन, ९८ कबन्ध वाक्य, ९९ कबन्धोपदेश, १०० सुग्रीवदर्शन, १०१ सुग्रीववाक्य, १०२ हनूमान् वाक्य, १०३ रामवाक्य, १०४ वालिसंग्राम, १०५ वालिका वाक्य, १०६ सुग्रीवाभिषेक, १०७ वर्षानिवृत्ति, रामविषाद १०८ लक्ष्मणका क्रोध, १०९ वानरसैन समागम, ११० सुग्रीववाक्य, १११ वानरयूथप प्रत्यागमन, ११२ हनूमन्त प्रस्थान, ११३ वानर प्रत्यागमन, ११४ वनविवरण, ११५ राघवचरित्र प्रसंगमें वानरविवाद, ११६ प्रायोपवेशन, ११७ सीतावार्त्तोपलब्धि, ११८ सम्पातिपक्षनिवास, ११९ वानर प्रत्यागमन, १२० हनूमानका गर्ज्जन, १२१ लंकावलोकन, १२२ लंकान्वेषण, १२३ अवरोधदर्शन, १२४ सीतोपलम्भन, १२५ राक्षसीसमादेश, १२६ सीताविलाप, १२७ स्वप्न दर्शन, १२८ सीतासम्बोधन, १२९ सीताप्रश्न, १३० वनभंग, १३१ किंकरवध, १३२ अमात्यवध, १३३ सेनापतिवध, १३४ अक्षकुमारवध, १३५ रावणवाक्य, १३६ पुच्छ निवापण, १३७ लंकादाह, १३८ सीतासमाश्वासन, १३९ हनूमत्कथन, १४० मधुभक्षण, १४१ सीतावाक्य, १४२ सुग्रीववाक्य, १४३ सेनानिवेश, १४४–१४६ विभीषणवाक्य, १४७ विभीषणगमन, १४८ सेतुबन्धप्रारंभ, १४९ सेतुबन्धन, १५० मायामयरामदर्शन, १५१ सीताका प्रलाप, १५२ प्रहस्तवध, १५३ सुग्रीवविग्रह, १५४ कुम्भकर्णवध, १५५ नरान्तकवध, १५६ त्रिशीर्षवध, १५७ अतिकायवध, १५८ इन्द्रजित्का युद्ध, १५९ औषधानयन, १६० कुम्भवध, १६१ निकुम्भवध, १६२ मकराक्षवध, १६३ मायामयसीतावध, १६४ इन्द्रजिद्धोम, १६५ रामोत्थापन, १६६ इन्द्रजित्दर्शन, १६७ विरथीकरण, १६८ इन्द्रजित्वध, १६९ विज-

याख्यापन, १७० सुपार्श्ववाक्य; १७१ परिवेदन, १७२ विरूपाक्षवध, १७३ महापार्श्ववध, १७४ शक्तिभेद; १७५ रामरावणयुद्ध; १७६ रावणशिरश्छेद; १७७ विभीषणाभिषेक; १७८ विमानारोहण, १७९ अयोध्यापुरमें रामचन्द्रका प्रवेश; १८० रामाभिषेक; १८१ राज्यवर्णन श्रवणफल, अनुक्रमणिका वर्णन, अग्निपुराण पठनफल.

दूसरे अग्निपुराणम—१ अग्निपुराणारम्भक प्रश्न, २ मत्स्यावतार कथन, ३ कूर्म्मावतार कथा, ४ वराहअवतार वर्णन, ५ रामायणकी आदिकाण्डकथा, ६ अयोध्याकाण्ड कथा, ७ अरण्यकाण्ड वर्णन, ८ किष्किन्धा काण्ड वर्णन, ९ सुन्दरकाण्ड वर्णन, १० लंकाकाण्ड वर्णन, ११ उत्तरकाण्ड वर्णन, १२ हरिवंशकथन, १३ भारताख्यानमें आदिपर्वसे उद्योगपर्वपर्य्यन्त कथन, १४ आश्वमेधिक पर्वपर्य्यन्त कथन, १५ आश्रमिक पर्वशेष पर्यंत कथन, १६ युद्धकल्पसे अवतार कथन, १७ जगत्सृष्टि, १८ स्वायम्भुवादि कृतसृष्टिकथन, १९ कश्यप सृष्टि कथन, २० सृष्टिविभाग, भृग्वादिकृत सृष्टि कथन, २१ विष्णुआदिकी पूजा कथन, २२ स्नानविधि कथन, २३ पूजाविधि, २४ अग्निकार्य्यादि, २५ मंत्रप्रदशन, २६ मुद्राप्रदर्शन, २७ दीक्षाविधि कथन, २८ अभिषेक विधि, २९ मण्डलादि लक्षण, ३० मण्डलादि वर्णन, ३१ कुशापामार्ज्जनात्मक रक्षाविधि, ३२ अडतालीस संस्कार कथन, ३३ पवित्रारोहण प्रसङ्ग, ३४ पवित्रारोहण, अग्निकार्य्य कथन, ३५ पवित्र अधिवास, ३६ विष्णुपवित्रारोहण, ३७ संक्षेपपवित्रारोहण, ३८ देवालयादिका माहात्म्य वर्णन, ३९ प्रतिष्ठादि कार्य्य, भूपरिग्रह कथन; ४० अर्घ्यदान विधि; ४१—४२ शिल्पविन्यासविधि; प्रासाद लक्षण, ४३ देवतागणोंकी प्रासादमें शान्त्यादि स्थापन वर्णन, ४४ वासुदेवादि प्रतिमा लक्षण, ४५ पिण्डिका लक्षण कथन, ४६ शालग्राम इत्यादि मूर्त्तिलक्षण, ४७ शालग्रामादि पूजा, ४८ चौबीस मूर्त्तियोंका स्तव; ४९ दशावतार प्रतिमा लक्षण, ५० देवीप्रतिमा लक्षण, ५१ सूर्य्यादि प्रति-

मालक्षण, ५२ योगिन्यादि प्रतिमा लक्षण, ५३ लिङ्गलक्षण, ५४ लिङ्ग-मानादि कथन, ५५ प्रतिमा पिण्डिका लक्षण, ५६ दिक्पाल याग कथन, ५७ कलशाधिवास विधि, ५८ स्नापनादि विधि, ५९ अधिवास लक्षण प्रकार कथन, ६० पिण्डिका स्थापनके निमित्त भागनिर्णय और प्रतिष्ठादि कथन, ६१ । ६२ ध्वजारोहण, ६३ तार्क्ष्यादि प्रतिष्ठा कथन, ६४ कूपवापी तडागादिकी प्रतिष्ठा कथन, ६५ सभादि स्थापन, ६६ साधारण प्रतिष्ठा, ६७ जीर्णोद्धार कथन, ६८ यात्रिकास्तवादि कथन, ६९ अवभृथ स्नान विधि, ७० वृक्ष राम प्रतिष्ठा, ७१ गणेश पूजा, ७२ स्नान तर्पणादि कथन, ७३ सूर्य्यपूजा, ७४ शिवपूजाविधि, ७५ अग्निस्थापनादि विधि, ७६ शिवपूजाशेष, चण्डपूजा विधि, ७७ कपिलादि पूजन विधि, ७८ पवित्रारोहण, अधिवासप्रकार निर्णय, ७९ पवित्रारोहणविधि, ८० दमनकारोहण विधि, ८१ समयदीक्षा विधि, ८२।८३ संस्कार दीक्षा विधि, ८४ निवृत्ति कलाशोधन, ८५ प्रतिष्ठाकला शोधन, ८६ विद्याकला शोधन, ८७ शान्तिकला शोधन, ८८ निर्वाणदीक्षा समाप्ति, ८९ एकतत्त्व दीक्षा विधि, ९० अभिषेकादि कथन, ९१ नानामंत्रादि कथन, ९२ प्रतिष्ठा विशेष कथन, ९३ वास्तुपूजा, ९४ शिलाविन्यास कथन, ९५ प्रतिष्ठोपकरण कथन ९६ अधिवासन विधि, ९७ शिव प्रतिष्ठा कथन, ९८ गौरीप्रतिष्ठा कथन, ९९ सूर्य्यप्रतिष्ठा, १०० द्वार प्रतिष्ठा, १०१ प्रासादप्रतिष्ठा, १०२ ध्वजारोहण विधान, १०३ जीर्णोद्धार क्रिया १०४ सामान्य प्रासाद लक्षण, १०५ गृहादिवास्तुकथन, १०६ नगरादिवास्तु कथन, १०७ स्वायम्भुवसर्ग कथन, १०८ भुवनकोषवर्णन, १०९ तीर्थमाहात्म्य कथन, ११० गंगामाहात्म्य, १११ प्रयागमाहात्म्य, ११२ काशीमाहात्म्य, ११३ नर्म्मदादिमाहात्म्य, ११४ गयामाहात्म्य, ११५ गयामाहात्म्य विविध विषय, ११६ गयामाहात्म्य कथा समाप्ति, ११७ श्राद्धकल्प, ११८ जम्बूद्वीप वर्णन, ११९ द्वीपान्तरवर्णन, १२० ब्रह्माण्डवर्णन, १२१ ज्योतिःशास्त्रानुसार दिनदशा विवेकादि,

१२२ कालगणना, १२३ विविधयोग कथन, १२४ युद्धजयार्णव कथन, १२५ युद्धजयार्णवमें नानाचक्र कथन, १२६ नक्षत्र निर्णय, १२७ बलनिर्देश, १२८ कोटचक्रकथन, १२९ अर्घ्यकाण्डकथन, १३० मण्डलनिरूपण, १३१ घातचक्रादि १३२ सेवाचक्रादि, १३३ नानाफलकथन, १३४ त्रैलोक्यविजयविद्या, १३५ संग्राम विजय विद्या, १३६ नक्षत्रचक्र, १३७ माहामाया विद्या, १३८ षट्कर्म्म कथन, १३९ षष्टि संवत्सर कथन, १४० वश्यादियोग कथन, १४१ छत्तीसपदक ज्ञान, १४२ मंत्रौषधादि कथन, १४३ कुब्जिकाक्रम पूजा, १४४ कुब्जिकापूजा, १४५ षोढान्यासादि कथन, १४६ अष्टाष्टकदेवी कथन, १४७ त्वरितापूजादि, १४८ संग्रामविजय पूजा, १४९ अयुत लक्ष कोटि होमकथन, १५० मन्वन्तर कथन, १५१ वर्णाश्रमेतर धर्म्म कथन, १५२ गृहस्थवृत्ति कथन, १५३ ब्रह्मचर्य्य धर्म्म, १५४ विवाह प्रकरण, १५५ आचाराध्याय, १५६ द्रव्यशुद्धि, १५७ शावाद्यशौचकथन, १५८ स्रावाद्यशौच कथन, १५९ शौचकथन, १६० वानप्रस्थधर्म्म, १६१ यतिधर्म्म १६२ धर्म्मशास्त्र, १६३ श्राद्धविधि, १६४ ग्रहयज्ञविधि, १६५ नानाधर्म्म कथन, १६६ वर्णधर्म्मादि कथन,१६७त्रिविध ग्रहयज्ञ कथन, १६८ महापातकादि कथन, १६९ महापातकादि प्रायश्चित्त कथन, १७० संसर्गादि प्रायश्चित्त कथन, १७१ रहस्यादि प्रायश्चित्त कथन, १७२ पापनाशकस्तोत्र, १७३ हननादि निरूपण, प्रायश्चित्त विशेष विधि, १७४ पूजालोपादिमें प्रायश्चित्तविशेषका उपदेश, १७५ व्रतपरिभाषा, १७६ प्रतिपद्व्रत; १७७ द्वितीया व्रत, १७८ तृतीयाव्रत, १७९ चतुर्थीव्रत, १८० पञ्चमीव्रत-कथन, १८१ षष्ठीव्रत कथन, १८२ सप्तमीव्रत कथन, १८३ जयंत्यष्टमी व्रत कथन, १८४ अष्टमीव्रत कथन, १८५ नवमीव्रत कथन, १८६ दशमीव्रत कथन, १८७ एकादशीव्रत कथन, १८८ द्वादशीव्रत

२५५ दिव्यकथन, २५६ दायभाग, २५७ सीमाविवाद प्रकरण, २५८ वाक्पारुष्यादि दण्ड, २५९ ऋग्विधान, २६० यजुर्विधान, २६१ सामविधान, २६२ अथर्वविधान, २६३ श्रीयुक्तादि विशेष-नियम, २६४ देवपूजा, वैश्वदेवादि, २६५ दिक्पालस्नान, २६६ विनायकस्नान, २६७ माहेश्वरस्नान, २६८ नीराजन, २६९ छत्रादि मंत्र कथन, २७० विष्णुपञ्जर कथन, २७१ वेदशाखादि कीर्तन, २७२ दानमाहात्म्य कथन, २७३ सूर्य्यवंश, २७४ चन्द्रवंश, २७५ यदुवंश, २७६ द्वादशसंग्राम कथन, २७७ तुर्वसु और अनु-द्रुह्युवंशकीर्तन, २७८ पुरुवंश, २७९ आयुर्वेदमें सिद्धौषध कीर्तन, २८० सर्वरोगहर औषधकीर्तन, २८१ वसादि भेषज गुण कथन, २८२ वृक्षा-युर्वेद कीर्तन, २८३ औषध प्रकरण, २८४ विष्णुनाममंत्र कीर्तन, २८५ सिद्धयोग कीर्तन, २८६ मृत्युञ्जयकल्प कथन, २८७ हस्तिचि-कित्सा, २८८ अश्वचिकित्सा, २८९ अश्वलक्षण, २९० अश्वशांति, २९१ गजशांति, २९२ गोशांति, २९३ मंत्रपरिभाषा, २९४ नागलक्षण, २९५ नागदष्ट चिकित्सा, २९६ पञ्चांगरुद्र विधि, २९७ विषहरण मंत्रादि कथन, २९८ गोनसादि चिकित्सा, २९९ बाल-ग्रह चिकित्सा, ३०० बालग्रहका मंत्रकथन, ३०१ सूर्य्यकी अर्चना, ३०२ विविधमंत्र कथन, ३०३ अंगाचर अर्चना, ३०४ पञ्चाक्षरादि पूजाका मंत्र, ३०५ पञ्चपञ्चाशत विष्णुनाम कीर्तन, ३०६ नारसिंहादि मंत्रकथन, ३०७ त्रैलोक्य मोहनमंत्र कथन, ३०८ त्रैलोक्यमोहिनी लक्ष्म्यादि पूजा, ३०९ त्वरितापूजा, ३१०-३११ त्वरितामंत्र कथन, ३१२ त्वरिताविद्या कथन, ३१३ विनायक पूजादि कथन, ३१४ त्वरिताज्ञान, ३१५ स्तम्भनादि मंत्रकीर्त्तन, ३१६ सर्वकर्म्मके मंत्रादि कथन, ३१७ सकलादि मंत्रोद्धार, ३१८ गणपूजा, ३१९ योगीश्वरी पूजा, ३२० सर्वतोभद्र मण्डल कीर्तन, ३२१ अघोरास्त्रादिशान्तिकल्प,

३२२ पाशुपतास्त्र शान्ति, ३२३ षडंगाघोरास्त्र कथन, ३२४ शिवशान्ति, ३२५ अंशुकादि कीर्तन, ३२६ गौर्य्यादिपूजा, ३२७देवालय माहात्म्य, ३२८छन्दसाका आरम्भ, ३२९ गायत्री भेद कथन, ३३० छन्दोजातिनिरूपण, ३३१—३३३वैदिक लौकिक छन्दोभेद कथन, ३३४विषमवृत्त कथन, ३३५अर्द्धसमवृत्त निरूपण ३३६ शिक्षानिर्देश, ३३७ काव्यादि लक्षण, ३३८ नाटक निरूपण, ३३९ रस निरूपण, ३४० रीतिनिर्देश, ३४१ वृत्यादिरंगकर्म्म निरूपण, ३४२ अभिनयादि निरूपण, ३४३ शब्दालंकार कथन, ३४४ अर्थालंकार कथन, ३४५ शब्दार्थालंकार कथन, ३४६ काव्यगुण विवेक, ३४७ काव्यदोप निरूपण, ३४८ एकाक्षराभिधान, ३४९ व्याकरणारम्भ, ३५०सन्धिसिद्धरूप कथन, ३५१।३५२ सुप्विभक्तिसिद्धरूप कथनमें पुँल्लिंग शब्दसिद्धिरूपकथन, स्त्रीलिंग शब्दसिद्धरूप कथन, ३५३ नपुंसकशब्दसिद्धिरूप कथन, ३५४ कारक, ३५५ समास, ३५६ तद्धित, ३५७ उणादिसिद्धरूप कथन, ३५८ तिङ्विभक्तिसिद्धरूप कथन, ३५९ कृत्सिद्धरूप कथन, ३६०—३६२ स्वर्गपातालादि वर्ग, ३६३ भूमिवनौषध्यादि वर्ग, ३६४ मनुष्यवर्ग, ३६५ ब्रह्मवर्ग, ३६६ क्षत्रविट्शूद्र वर्ग, ३६७ सामान्य नाम लिंगादि, ३६८नित्य नैमित्तिक प्राकृत प्रलय, ३६९ आत्यन्तिकलय, गर्भोत्पत्त्यादि, ३७० शरीरावयव, ३७१ नरक निरूपण, ३७२ यम, नियम, ३७३ आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, ३७४ ध्यान, ३७५ धारणा, ३७६ समाधि, ३७७—३७९ ब्रह्मज्ञान, ३८० अद्वैत ब्रह्मज्ञान, ३८१ गीतासार, ३८२ यमगीता, ३८३ आग्नेयपुराणमाहात्म्य कथन.

ऊपर जो दो श्रेणिके अग्निपुराणकी सूची दी गई है उनमें दूसरा छप गया है, १ पहला अभीतक मुद्रित नहीं हुआ है। अब देखना चाहिये इन दोनोंमेंसे किसको हम यथार्थ ८म पुराण कहकर ग्रहण करसकते हैं?

नारदपुराणमें इसप्रकार आग्नेयका विषयानुक्रम दिया गया है;—

"अथातः संप्रवक्ष्यामि तवाग्नेयपुराणकम् ।
ईशानकल्पवृत्तान्तं वसिष्ठायानलोऽब्रवीत् ॥
तत्पंचदशसाहस्रं नाम्ना चरितमद्भुतम् ।
पठतां शृण्वतां चैव सर्वपापहरं नृणाम् ॥
प्रश्नपूर्वं पुराणस्य कथा सर्वावतारजा ।
सृष्टिप्रकरणं चाथ विष्णुपूजादिकं ततः ॥
अग्निकार्य्यं ततः पश्चान्मंत्रमुद्रादिलक्षणम् ।
सर्वदीक्षाविधानं च अभिषेकनिरूपणम् ॥
लक्षणं मण्डलादीनां कुशापामार्जनं ततः ।
पवित्रारोपणविधिर्देवालयविधिस्तथा ॥
शालग्रामादिपूजा च मूर्तिलक्ष्म पृथक् पृथक् ।
न्यासादीनां विधानंच प्रतिष्ठापूर्तका ततः ॥
विनायकादिदीक्षाणां विधिर्ज्ञेयस्ततः परम् ।
प्रतिष्ठा सर्वदेवानां ब्रह्माण्डस्य निरूपणम् ॥
गङ्गादितीर्थमाहात्म्यं जम्ब्वादिद्वीपवर्णनम् ।
ऊर्ध्वाधोलोकरचना ज्योतिश्चक्रनिरूपणम् ॥
ज्योतिषं च ततः प्रोक्तं शास्त्रं युद्धजयार्णवम् ।
षट्कर्म्म च ततः प्रोक्तं मंत्रयंत्रौषधीगणः ॥
कुब्जिकादिसमर्चा च षोढा न्यासविधिस्तथा ।
कोटिहोमविधानंच तदन्तरनिरूपणम् ॥
ब्रह्मचर्य्यादिधर्म्माश्च श्राद्धकल्पविधिस्ततः ।
गृहयज्ञस्ततः प्रोक्तो वैदिकस्मार्त्तकर्म्म च ॥
प्रायश्चित्तानुकथनं तिथीनांच व्रतादिकम् ।
वारव्रतानुकथनं नक्षत्रव्रतकीर्त्तनम् ॥
मासिकव्रतनिर्देशो दीपदानविधिस्तथा ।

नवव्यूहार्चनं प्रोक्तं नारकाणां निरूपणम् ॥
व्रतानां चापि दानानां निरूपणमिहोदितम् ।
नाडीचक्रसमुद्देशः सन्ध्याविधिरनुत्तमः ॥
गायत्र्यर्थस्य निर्देशो लिङ्गस्तोत्रं ततः परम् ।
राजाभिषेकमंत्रोक्तिर्धर्म्मकृत्यं च भूभुजाम् ॥
स्वप्नाध्यायस्ततः प्रोक्तः शकुनादिनिरूपणम् ।
मण्डलादिकनिर्देशो रणदीक्षाविधिस्ततः ॥
रामोक्तनीतिनिर्देशो रत्नानां लक्षण ततः ।
धनुर्विद्या ततः प्रोक्ता व्यवहारप्रदर्शनम् ॥
देवासुरविमर्दाख्या ह्यायुर्वेदनिरूपणम् ।
गजादीनां चिकित्सा च तेषां शांन्तिस्ततः परम् ॥
गोनसादिचिकित्सा च नानापूजास्ततः परम् ।
शान्तयश्चापि विविधाश्छन्दः शास्त्रमतः परम् ॥
साहित्यं च ततः पश्चादेकार्णादिसमाह्वयाः ।
सिद्धशिष्टानुशिष्टश्च कोपः स्वर्गादिवर्गके ॥
प्रलयानां लक्षणं च शारीरकनिरूपणम् ।
वर्णनं नरकाणांच योगशास्त्रमतः परम् ॥
ब्रह्मज्ञानं ततः पश्चात् पुराणश्रवणे फलम् ।
एतदाग्नेयकं विप्र पुराणं परिकीर्त्तितम् ॥

इसके पश्चात् तुम्हारे निकट अब आग्नेयपुराण कहता हूं, अग्निने वसिष्ठके निकट यह ईशान कल्पवृत्तान्त कहा है । इसके श्रवण वा पाठ करनेसे मनुष्योंके सब पाप दूर होते हैं । इसमें प्रश्नपूर्वक समस्त अवतारोंकी कथा कही है । इसके प्रथममें सृष्टिप्रकरण, पश्चात् विष्णुपूजादि एवं क्रमसे अग्निकार्य मंत्र मुद्रादिका लक्षण, समुदायदीक्षा विधान, अभिषेक निरूपण, मण्डलादिका लक्षण, कुशापामार्ज्जन, पवित्रारोपणविधि, देवालयविधि शालग्रा-

मादिपूजा, पृथक् मूर्तिचिह्न, न्यासादिका विधान, प्रतिष्ठापूर्वक विनायकादिकी दीक्षाविधि, सर्वदेवप्रतिष्ठा, ब्रह्माण्डनिरूपण, गंगादितीर्थ-माहात्म्य, जम्बूआदिद्वीपवर्णन, ऊर्ध्व और अधोलोक रचना, ज्योतिश्चक्र निरूपण, ज्योतिष, मंत्र और यंत्रौषधिसमूह, षट्कर्म्म, युद्ध जयशास्त्र, कुब्जिकादि समर्चा, षोडान्यासविधि, कोटिहोम विधान तदन्तर निरूपण, ब्रह्मचर्य्यादि धर्म्म, श्राद्धकल्पविधि, ग्रहयज्ञ, वैदिक और स्मार्तकर्म प्रायश्चित्तानुकथन, तिथिअनुसार व्रतादि, वारव्रतानुकथन, नक्षत्रव्रतकीर्त्तन, मासिकव्रत निर्देश, दीपदानविधि, नवव्यूहार्चन, नरक समुदायका निरूपण, व्रत और दान, समुदायका निरूपण, नाड़ीचक्र समुद्देश, सन्ध्याविधि, गायत्र्यर्थका निर्देश, लिंगस्तोत्र, राजगणोंका अभिषेक मंत्र, राजगणोंका धर्म्मकार्य्य, स्वप्नाध्याय, शकुनादि निरूपण, मण्डलादिका निर्देश, रणदीक्षा विधि, रामोक्तनीतिनिर्देश, रत्नसमूहका लक्षण, धनुर्विद्या और व्यवहार प्रदर्शन, देवासुर विमर्द्दाख्यान, आयुर्वेदनिरूपण, गजादिकी चिकित्सा, उनकी शान्ति, गोनसादि चिकित्सा, अनेकप्रकारकी पूजा, विविधप्रकार शान्ति, छन्दःशास्त्र, साहित्य, एकार्णादि समाह्वयसिद्ध, शिष्टानुशिष्ट स्वर्गादिवर्गविशिष्टकोष, प्रलयसमुदायका लक्षण, शारीरकनिरूपण, नरकवर्णन, योगशास्त्र, ब्रह्मज्ञान और पुराणश्रवणफल यह सम्पूर्ण आग्नेयपुराणमें कहे गये हैं । हे विप्र ! यह आग्नेयपुराण कीर्त्तन किया.

मत्स्यपुराणमें लिखा है—

" यत्तदीशानकं कल्पं वृत्तान्तमधिकृत्य च ।
वसिष्ठायाग्निना प्रोक्तमाग्नेयं तत् प्रचक्षते ॥
तच्च षोडशसाहस्रं सर्वक्रतुफलप्रदम् ॥"

ईशानकल्पके वृत्तान्त प्रसङ्गमें अग्निने वसिष्ठके निकट जो पुराण कहा है, वही आग्नेय नामसे विख्यात है । वह १६००० श्लोकयुक्त और सर्वयज्ञोंका फल देनेवाला है ।

नारदपुराणोक्त विषयानुक्रम इस समयके मुद्रित अग्निपुराणमें पाया-जानेपरभी उसमें ईशानकल्प वृत्तान्त अथवा मात्स्योक्त कोई लक्षण नहीं हैं.

वाराह प्रचलित अग्निपुराणके दूसरे अध्यायमें-

" प्राप्ते कल्पेऽथ वाराहे कूर्म्मरूपोऽभवद्धरिः । "

इस प्रकार वाराहकल्प प्रसङ्ग है। इस कारण यह वाराह कल्प प्रसंगाधीन अग्निपुराण वह्निपुराण नामसे जो स्वतंत्र १ में पुराणकी सूची दी है, इसमें ईशानकल्प वा वसिष्ठके साथ अग्निकी कथाका कोई प्रसंग नहीं है। ब्रह्माके पुत्र मरीचिने द्वादशवार्षिकसत्रमें अग्निके निकट जो धर्म्मानुष्ठानादिका उपदेश पाया था उसके अवलम्बनसे इस पुराणका प्रथमांश आरंभ है.

नारदपुराणका विषयानुक्रम और प्रचलित अग्निपुराणकी विषयसूची मिलाकर देखनेसे सरलतासे ही ज्ञात होता है कि, ईशानकल्प और अग्नि-वसिष्ठादि सम्वाद छोडकर और सब कथाही प्रचलित अग्निपुराणमें हैं। सम्भवतः यही अग्निपुराणका संशोधितरूप है। इसमें थोडाही अदलबदल हुआ है। इसकी ग्रन्थसंख्या कुछ अधिक १५००० है। स्कन्द पुराणीय शिवरहस्यखण्डमें लिखा है कि, अग्निका माहात्म्य प्रकाश करनाही अग्निपुराणका उद्देश्य है; किन्तु इस विषयमें कोई कथा हमने अग्निपुराणमें नहीं देखी; किन्तु १ में वह्निपुराणके प्रथमाध्यायमें वेदमंत्र-द्वारा अग्निमाहात्म्य कीर्तित हुआ है। बल्लालसेनके दानसागरमें अग्नि-पुराणसे जो श्लोक उद्धृत हुए हैं, उनमेंसे कई श्लोक इस वह्निपुराणमें पाये गये हैं, किन्तु यह सब श्लोक प्रचलित अग्निपुराणमें नहीं पाये जाते। पुराणोद्धारकालमें यह संशोधितरूप प्रकाशित होनेपर भी आदि अग्नि-पुराणके अनेक विषय इस वह्निपुराणमें हैं.

भविष्यपुराण ९.

इस भविष्यपुराणके सम्बन्धमें बड़ा भारी गोलमाल है। हमने चार प्रकारके * भविष्यपुराण पाये हैं। इन चारोंमें ही भविष्यपुराणके कुछ लक्षण मिलते हैं। इस कारण समालोचना करनेसे पहिले उन चारोंके अध्याय और विषय क्रम दियेजाते हैं.

१ भविष्य. (१)

ब्राह्मपर्वमें—१ सुमन्तु शतानीक सम्वादमें वेदपुराणादि शास्त्रप्रसंग, महाप्रलयकालकी अवस्था वर्णन, ब्रह्माण्डोत्पत्ति विवरण, सर्ग और प्रतिसर्ग विवरण, मन्वन्तरविभाग, सत्यत्रेतादि युग धर्म्मकथन, ब्राह्मणादि चार वर्णोंकी कर्तव्यता निरूपण और ब्राह्मणोंको ब्रह्मण्योत्पादक ४० प्रकार संस्कारकथन, २ ब्राह्मणादि तीनों वर्णोंका संस्कारकाल नियम और उपनयनांग द्रव्यभेदकथन; शुचिलक्षण प्रसंगमें उच्छिष्ट भोजन निषेध और आचमन विधि, ३ सावित्र्युपदेशनियम, ब्रह्मचारि, ब्राह्मणकर्त्तव्य, गुरुशिष्यकर्त्तव्य कथन, ४ स्त्रियोंके शुभाशुभलक्षण निर्देश, ५ निर्धनको दारपरिग्रहविडम्बना, भार्य्याहीन गृहस्थकी त्रिवर्गसाधनमें अधिकारलोपकथा,

* इसके अतिरिक्त भविष्यत् ब्रह्मखण्ड वा ब्रह्माण्डखण्ड एक और भौगोलिक संस्कृतग्रन्थ पायागया है। यहभी आधुनिक नहीं है।

(१) इस भविष्यके प्रथममें ही इस प्रकार पर्व विभागकी कथा है।

"प्रथमं कथ्यते ब्राह्मं द्वितीयं वैष्णवं स्मृतम्।
तृतीयं शैवमाख्यातं चतुर्थं त्वाष्ट्रमुच्यते॥
पञ्चमं प्रातिसर्गाख्यं सर्वलोकैः सुपूजितम्।
एतानि सात पर्वाणि लक्षणानि निबोध मे॥
सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्॥"

६ विवाह योग्यकन्या निरूपण,अष्टविध विवाहलक्षण और पुण्यदेश विवरण, ७ वासोचित स्थाननिर्णय, नारीचरित्र, पतिकी कर्त्तव्यताकथन,८शास्त्रसे विहित निषिद्ध काय्र्यादि जाननेके नियम,९चरित्रभेदसे स्त्रियोंका उत्तममध्म-मादि संज्ञाभेद, कुलीनास्त्रियोंकी कर्त्तव्यता निरूपण, १०–१४ स्त्रियोंका कर्त्तव्यानिर्णय, १५ प्रतिपदादि पन्द्रह तिथियोंमें विशेष २ द्रव्याहार रूप व्रतविधान, १६ ब्रह्मार्चनमाहात्य, १७ तिथि विशेषमें ब्रह्माके रथयात्रा दीपदानादि विशेष कर्म्मविधान,१८ शर्य्यातिदुहिता सुकन्याके साथ च्यवन-का विवाह, सुरूपपुत्राभिलाष और शर्य्यातिकृत यज्ञकथा,कार्त्तिक शुक्ला द्वितीयाव्रत विधि,१९ अशून्यशयनाद्वितीयाव्रतविधि, २० तृतीयागौरीव्रत-विधि, २१ विनायकव्रतविधि, २२–२५ पुरुषोंके शुभाशुभलक्षण, २६ स्त्रियोंके शुभाशुभलक्षण निरूपण,२७विनायककी मूर्त्तिगठनमें परिमाणभेद, होममें द्रव्यभेद और मंत्रभेद कथन, २८ अङ्गारकचतुर्थीव्रत, २९–३० नागपञ्चमी व्रतविधान,सर्प दंशन और सर्पजातिभेद कथन,सर्पदंशनके अष्ट-विध हेतु और लक्षणादि कथन,सर्पदंशितकी मृत्यु,जीवन प्राप्ति कारण,उस-का निर्देश समयादि निरूपण, ३१-३२ नागोंका जाति कुल वर्ण निरूपण सर्पदष्टोंके रसरक्तादि गत विषयमें औषध कथन, ३३–३४ भाद्रपद और आश्विनपञ्चमीमें नागपूजाविधान, ३५ कार्त्तिक षष्ठ्यादि स्कन्दपूजा-विधि, ३६–४१ सविस्तार ब्राह्मणोंकी दशविध संस्कारकथा, ४२ भाद्रपद षष्ठीमें स्नान दानादि प्रशंसा, कार्त्तिकेय पूजा माहात्म्य, ४३ शाकसप्तमी व्रतविधि, ४४ वासुदेव साम्बसंवादमें सूर्य्यमाहात्म्य, ४५ सूर्य्यार्चन विधि, ४६ ब्रह्मयाज्ञवल्क्य सम्वादमें सूर्य्यका परमात्मस्वरूप कथन, ४७ सुमेरुके चारों तरफ सूर्य्यरथका परिभ्रमण, दो २ मास करके सूर्य्यरथका गन्धर्व यक्षादिलोकमें अवस्थान, ४८ सूर्य्यको चन्द्र-मण्डलमें अमृतोत्पत्ति कारणत्व औषधि आदिका हेतत्व कीर्त्तन, उद-

यास्त मध्याह्न अर्द्धरात्रादि समयमें संयमनी पुष्पोदिमें सूर्य्यरथका अवस्थान कथन, ४९ ब्रह्मायाज्ञवल्क्य सम्वादमें सूर्य्यमाहात्म्य कीर्त्तन, ५० सूर्य्यकी रथयात्रा विधि, ५१–५२ सूर्य्य रथयात्राकाल कीर्त्तन, नवग्रह और गणपत्यादिको एक नैवेद्यदान विधि, ५३ रथशोभाकर द्रव्यकथन, सुवर्णद्वारा रथनिर्माण कथन, ५४ रथसप्तमीव्रत विधि, ५५ ब्रह्ममहर्षिसम्वादमें सूर्य्याराधन और तत्फल कीर्त्तन, ५६–५७ ब्रह्महत्या पापक्षय निमित्त क्रियायोगानुष्ठानमें दण्डिनके प्रति तपसे प्रसन्न हुए सूर्य्यका आदेश, ५८–५९ ब्रह्मासे दण्डीका क्रियायोग श्रवण, ६०–६८ शंखद्विज सम्वादमें सूर्य्यकी रथयात्रा और पूजाविधि, ६९ साम्बका कुष्ठरोग विवरण, ७०–७१ कृष्णनारद संवादमें साम्बकी कुष्ठमुक्तिका उपाय निर्द्धारण, ७२ कृष्णकी आज्ञासे साम्बका द्वारका गमन और नारदके निकट कुष्ठरोग शान्तिका उपाय, प्रपंचावधारण, ७३ कुष्ठरोगकी शान्तिके निमित्त सूर्य्योपासनात्मक उपायकथन, ७४ नारदसाम्ब सम्वादमें सूर्य्यमाहात्म्य कीर्त्तन, सूर्य्यका जन्मकर्म्म विवरण, ७५ सूर्य्यपुत्रोंका जन्मविवरण, ७६ नारदसाम्ब सम्वादमें सूर्य्यपूजाविधि द्रव्यविशेषमें पूजामाहात्म्य, ७७ समयविशेषमें जयाविजयाआदि संज्ञा कथन, विजयालक्षण, सूर्य्यार्चनमें विशेष फलकीर्त्तन, ७८ आदित्योपासनमें नन्दादि द्वादश वारकथन, नन्दादि तिथिमें सूर्य्यपूजाकी विशेषविधि ७९ भद्रामें पूजाविधि और फल, ८० सौम्यवारलक्षण और पूजाफलकीर्त्तन, ८१ कामदलक्षणकथन और पूजाफल, ८२ पुत्रदलक्षण और पूजाफल, ८३ जयलक्षण और पूजाफल, ८४-८८ जयंतलक्षण और पूजाफल, ८९–९० देशकालभेदसे कर्म्मानुष्ठानमें और द्रव्यविशेषोपहारमें मार्त्तण्डपूजाकी फलश्रुति, ९१–९६ जया, जयन्ती, अपराजिता, महाजया, नन्दा, भद्रादिलक्षण और उस उस तिथिमें सूर्य्यार्चनका विशेष फलकथन, ९७ तिथिनिर्क्षत्र और देवताकथन, स्वस्व तिथि नक्षत्रमें तत्तदेवताकी

की उत्पत्ति कथन, धारणमें फलकीर्त्तन, १३० भोजकगणोंका ज्ञानोत्कर्ष कीर्त्तन, १३१-१३२ भोजकगणोंका महत्त्व कीर्त्तन, आदित्यमाहात्म्य श्रवणफल.

२ भविष्य ।

पुराणोपक्रममें व्यास ऋषिगण सम्वाद, राजा अजमीढको धर्म्मशास्त्र कथनार्थ अभ्यर्थित व्यासशिष्य सम्वाद, भविष्य पुराण प्रस्ताव, ब्राह्म, ऐन्द्र, याम्य, रौद्र, वायव्य, वारुण, सावित्र्य, वैष्णवभेदसे अष्टविध व्याकरण कथन, महापुराणका नामकीर्तन, भविष्य पुराणकी ५० हजार श्लोकसंख्या कथन, महापुराण लक्षण, चतुर्दश विद्यालक्षण, अष्टादशविद्या कथन, सृष्टिकथन, प्रसंगमें ब्रह्माका जन्मादि कथन, प्रसंगक्रमसे प्रथम जलसृष्टि कथन, कालसंख्या निरूपण, ब्राह्मणके ४८ प्रकारके संस्कार निर्णय, क्षमाशौचादि लक्षण, ५-६ जातकर्म्मादि निरूपण, ब्राह्मण क्षत्रिय गणके नामलक्षण, वेदाध्ययनके पश्चात् कृतसमावर्त्तनका विवाहविधान, स्त्रीलक्षण, धनहीनको विवाहादि विडम्बनाकथन, अर्थोपार्जनकी आवश्यकता, भार्य्याहीनकी सब कर्म्ममें अयोग्यता कथन, असदृशविवाह सम्बन्ध निषेध, ७-१३ वास्तव निर्माणयोग्य देशादि निरूपण, स्त्रीरक्षोपाय वर्णन, स्त्रियोंकी वृत्ति निरूपण, देवर और पतिके मित्रके साथ उनका विविक्तदेशावस्थान और परिहासादि वर्जनीयता कथन, उनका सर्वत्र स्वातंत्र्यनिषेध, गार्हस्थधर्म्म निरूपण, सेवकोंकी वेतन दानव्यवस्था, साध्वीकर्त्तव्य निरूपण, दुर्भगाका लक्षणादि, स्वामिदोषसे स्त्रीका दुर्भगत्व कथन, आश्रमधर्म्म निर्देश, १४-२० प्रतिपदादि तिथिनियम, विधातृपूजामें कर्त्तव्यताविधान, कार्त्तिकपाणमासीमें ब्रह्माकी रथयात्राविधि, कार्तिकी अमावस्यामें दीपदानविधि, ययातिदुहिता सुकन्याके साथ च्यवनका विवाह, अश्विनीकुमारकी प्रार्थनासे च्यवनके साथ उनका जलप्रवेश, श्रावणद्वितीयामें अशून्यशय-

व्रतविधि, वैशाखतृतीयामें वीरतृतीयाव्रत, गणेश और कार्तिकेयके विरोध प्रसंगमें समुद्रगर्भमें स्त्रीपुरुष लक्षणज्ञान, शास्त्र निक्षेप वृत्तान्तकीर्त्तन, विनायकको एकदन्तप्राप्ति कथन, २१–३१ गणेशको विघ्नराजत्व प्राप्तिकथन, दुःस्वप्नदर्शनशान्तिकथा, सामुद्रिक शास्त्रोत्पत्ति कथन, सामुद्रिकमें स्त्री और पुरुष लक्षणकथन, श्वेतार्कमूलमें गणेशप्रतिमूर्ति निर्माणपूर्वक पूजाविधानादिकथन, श्वेतकरवीरनिर्मित गणेशपूजाविधि, भाद्रमासमें शिवा चतुर्थी व्रतविधान, माघमासमें शान्ताचतुर्थीव्रतविधान, अंगारकरसुखावह चतुर्थी व्रतविधि, ३२–३३ नागपञ्चमीविधान, कद्रुका अभिशाप, सर्पभयनिवारणार्थ भाद्रपञ्चमीमें नागपूजाविधान, ज्येष्ठ वा आषाढमें नागनियोंका गर्भाधान, चारमास गर्भधारण और कार्तिकमासमें, २४० करके अण्डप्रसवकथन, प्रसूतीद्वारा प्रसूत सर्पशावकका भक्षणादि भागनिरूपण, उनकी १२० वर्ष परमायुकथन दन्तोद्भव कञ्चुकत्यागादि कालनिरूपण सन्धिस्थापन संख्याकथन अकालजातसर्पका निर्विषत्व कथन द्विजिह्व और द्वात्रिंशद्दशनत्व कथन, चार दाँतका विषावहत्व कथन, और तल्लक्षणादि निरूपण ३५–३६ दाँतमें विषागमप्रकार कथन सर्पदर्शन कारण निरूपण दष्टस्थानलक्षण कालदष्टलक्षण विषवेग निरूपण त्वचागतत्व हेतु विषकी औषधत्व निरूपण । रक्तादिगत विषलक्षण उसकी अवस्थाका औषधकथन मृतसञ्जीवनी औषधकथन ३७–४० स्त्रीपुरुष नपुंसक सर्पदंशित गणका लक्षण ब्राह्मणक्षत्रियादि जातीय सर्पदंशित गर्णोका लक्षण, सर्पोंका वासस्थानादि भेद कथन सर्पोंका ६४ प्रकारकथन, सर्पभयनिवारणार्थ द्वारके दोनों तरफ गोमयरेखा दान कर्त्तव्यताकथन, भाद्रशुक्ल पञ्चमीमें नागपूजा विधान, कार्तिक मासमें षष्ठीव्रत, विधान, ब्राह्मणत्व जाति निरूपण और संकेत कथन जातिभेदकारणादि कथन दशप्रकारके संस्कार युक्त ब्राह्मणत्व कथन ४१–४६ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य आदिकी साधारण प्रवृत्ति कथन और कृत्य

निरूपण शीलादि सम्पन्नशूद्रका ब्राह्मण अपेक्षा आधिक्य कथन, भाद्रपदशुक्लषष्ठीमें षष्ठी पूजाविधि मार्तण्डपत्नी दाक्षायणीका वडवारूपसे उत्तर कुरुवर्षमें तपस्या छायाके गर्भसे शनि और तपतीकी उत्पत्ति कथन, यमुना और तपतीके परस्पर शापसे नदीभावप्राप्ति, छायाके शापसे यमको प्राणिहिंसकत्व प्राप्ति, विश्वकर्म्मा द्वारा सूर्य्यांगच्छेदनादि द्वारा प्रकाश्यरूप प्रकटन करवीर पुष्प और रक्तचन्दन प्रलेपदानसे वेदनाकातर सूर्य्यका प्रकृतिस्थ होना और तत्पुष्पादिका सूर्य्यप्रियत्वकथन अश्वरूपधारी रविका वड्वागर्भसे अश्विनीकुमारकी उत्पत्ति, शाकसप्तमीव्रत विधि ४७–५७ श्रीकृष्ण शाम्बसम्वादमें सूर्य्यमाहात्म्य कीर्त्तन सविस्तार सूर्य्यपूजा विधि रथसप्तमी व्रत विधान, ग्रहचक्रका सूर्य्यरथत्वनिरूपण; सूर्य्यकिरणमें आकर्षित जलसे मेघकी उत्पत्ति, उदयास्त समयादि निरूपण, जगत्को आदित्यमूलकत्व कथन, सूर्य्यरथयात्राविधान ग्रहशान्ति विधि, ब्रह्म शिव सूर्य्यादिकी प्रियवस्तु निरूपण ५८–६६ ब्रह्मऋषि गणसम्वादमें क्रियायोगकथन द्वादशमासिक व्रतविधि ब्रह्मडिण्डिसम्वादमें रहस्यसप्तमी व्रतविधि, नीलवस्त्रपरिधानमें ब्राह्मणके दोष कीर्तन शंखभोज कुमार सम्वाद शाम्बकृत सूर्योपासना विवरण; सूर्य्यका ऐश्वर्य्य वर्णन ६७–७६ उपचार विशेषमें सूर्य्यपूजामें फलविशेषकथन स्वप्नदर्शनका शुभाशुभ निर्णय आदित्य सर्षप व्रत विधान आदित्यादि स्तोत्र शाम्बके प्रति दुर्वासाका अभिशाप वृत्तान्त, शाम्बके सौन्दर्य्य दर्शनसे विमुग्ध किसी २ कृष्णमहिषीको कृष्णदत्त शापविवरण शाम्बको कुष्ठरोग प्राप्ति, शाम्बकृत सूर्य्य-
कृष्णदत्त शापविवरण शाम्बको कुष्ठरोग प्राप्ति, शाम्बकृत सूर्य्य-
प्रतिमा प्रतिष्ठा, नारदका सूर्य्यलोक गमन ७६–८५ सूर्य्यका जन्मादि वृत्तान्तकथन, पुरुषनाम निर्वचन सूर्यमंडलका विस्तार कथन, सूर्य्यका तेजोमय गोलोकत्व कथन सूर्य्यकिरणजालमें समुद्रतडागादिसे जलाकर्षण, रश्मिका नामभेदकथन, कार्य्यभेदानिरूपण, मरीचि,

ध्वजांकमुनिका उपाख्यान, भोजकगणोंकी उत्पत्ति कथन, अभ्यंगादि विधान, १३७–१५० ऋतुविशेषमें देवतागणोंका सूर्य्यरथावस्थान निरूपण, सूर्य्यपूजक गणोंको निर्मोकधारणमें फलाधिक्य, अव्यंगोत्पत्तिकथन, धूपाविधि, वासुदेवके सम्मुखमें कंसद्वारा भोजकज्ञान स्वरूपवर्णन, भोजनकरानेयोग्य ब्राह्मणनिरूपण, सूर्य्यका प्रियोपासक लक्षण, सुदर्शनचक्रागमविवरण, सूर्य्यमंत्रदीक्षा विधान, पुराणेतिहासश्रवणादि पाठप्रकारकीर्त्तन, अदित्यमाहात्म्य श्रवणविधि.

विष्णुपर्वके पूवभागम १५१ अष्टमीकल्पमें शिवमाहात्म्य,१५२ प्रातष्ठाविधान, १५३ लिंगप्रतिष्ठा विधान, १५४ महादेवमाहात्म्य, १५५ लिंगप्रतिष्ठाविधि, १५६ लिंगलक्षण, १५७ लिंगार्चन विधि, १५८–१७१ लिंगप्रतिष्ठा समाप्ति, १७२–१७९ विष्णु और सनत्कुमार सम्वाद, १८० अष्टकाष्टमी, १८१ दाम्पत्यपूजन, १८२–१८३ विष्णु सनत्कुमार सम्वाद, १८४ विष्णुकृतस्तव, १८५ शतरुद्रीय, १८६ महा देवमाहात्म्य, १८७ महादेवकी रथयात्रा, १८८ महादेव रूपव्रत १८९ महाव्रत, १९०–१९३ महाव्रतविधि, १९४ पुष्पाध्याय, १९५–१९६ महाष्टमी, १९७ जयन्त्यष्टमी, १९८–२०२ गौरीमाहात्म्य, २०३–२०४ गौरीविवाह, २०५–२०६ चित्रसेनकृत स्तव, २०७–२१० ब्रह्महत्यामें प्रायश्चित्तविधि, २११–२१३ ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त, ११४ सुरापान प्रायश्चित्तविधि, २१५–२१८ नवमीकल्पमें दुर्गामाहात्म्य, २१९ भगवतीस्तोत्र, २२०–२२१ चण्डिकाराधन, २२२ चण्डिका स्तव, २२३–२२४ दुर्गास्नान फल, २२५–२३० दुगामाहात्म्य २३१ दुर्गामाहात्म्यमें दोनों नवमी, २३२ भगवतीनवमी, २३३ रथनवमी, २३४ विष्णुकृत भगवतीका स्तव, २३५–२३७ महानवमी, २३८–२४० सर्व मंगलार्चन विधि, २४१ मंत्रोद्धार, २४२–२४७ भगवतीयज्ञ, २४८–२४९ सिद्धचध्याय, २५० रुरुवध, २५१–२५१ कौजम्भिवध, २५३ कुम्भानु-

कुम्भवध, २५४ निकुम्भवध, २५५ कुम्भवाहवध, २५६ सुकुम्भवध, २५७–२५९ घण्टाकर्णवध, २६० मेघनादवध, २६१ जम्भासुरवध, २६२ रुरुउपाख्यान, २६३ रुरुवध, मङ्गलविधि, २६४–२६७ मातृमण्डलविधान, २६८ देवीका नाम विधान, २६९ रथयात्रा, २७० दुर्गायात्रा समाप्ति, २७१–२७३ मंत्रोद्धार, २७४–२७५ आनन्दनवमीकल्प, २७६ नन्दिनीनवमी, २७७ नन्दानवमी २७८ नन्दकल्प, २७९ नन्दिनीप्रतिष्ठा, २८० महानवमी कल्पसमाप्ति, २८१ प्रतिष्ठातंत्रमें भूमिपरीक्षा, २८२ प्रासादलक्षण, २८३ शिलालक्षण, २८४ ब्रह्मण्यार्चालक्षण, २८५ प्रतिमालक्षण, २८६ प्रतिष्ठामंत्रमें अधिवासविधि, २८७ नवमीकल्पसमाप्ति.

मध्यतंत्रके उपरिभागमें–१ सूतऋषिसम्वादमें उपरिभागप्रसंग, २–३ पातालवर्णन, ४ ज्योतिश्चक्र, ५–६ गुरुमाहात्म्यकथन, ७ पुस्तकादिमान लक्षण, ८–९ यूपनियम, १०–१७ प्रतिमालक्षण, १८ षोडशोपचारविधि, १९ अग्निनाम, २० द्रव्यपरिमाण, २१ द्रव्यनिर्णय, २३–२४ मण्डलकथन, २५ मण्डलाध्याय कथन.

मध्यतंत्रके द्वितीयभागमें–१ मूल्यकथन, २–५ तिथिखण्ड, ६ व्रतादिकथन, ७ प्रवरकथन, ८ वास्तुनिर्णय, ९–१० अर्घ्यदानविधि, ११–२२ मध्यप्रतिष्ठा विधि, २३ क्षुद्रारामप्रतिष्ठा विधि, २४–२५ अश्वत्थप्रतिष्ठा विधि, २६ वटप्रतिष्ठाविधि.

तृतीयभागमें–१–५ पुष्पारामप्रतिष्ठा विधि, ६–७ सेतुप्रतिष्ठा विधि, ८–११ ग्रहहोम विधि, १२–१४ प्रतिष्ठाविधि, १५–१६ महालक्ष्मी व्रत प्रतिष्ठाविधि, १७ एकादशीव्रत प्रतिष्ठाविधि, १८ पवित्र विधान; १९ ध्वजारोपण, २० कुम्भदानविधि, २१–२२ प्रासादप्रतिष्ठा विधि।

चतुर्थभागमें–१ दानविधि, २–७ धेनुदान विधि, ८–१० प्रायश्चित्त विधि, ११ सुरापान प्रायश्चित्त.

भविष्य ।

प्रथमभागमें—१ सूतके साथ ऋषियोंके सम्वादमें उत्तर विभागप्रतिज्ञा कथन, गार्हस्थ्याश्रम प्रशंसा, २ धर्म्ममाहात्म्य कथन प्रवृत्ति निवृत्ति भेदसे दोप्रकारके कर्म्म निरूपण, निवृत्ति प्रशंसा, शमदमादि षोडशविधगुणनिरूपण, ब्राह्मणोंके गुण निरूपण, रुद्रसे जगत्सृष्टि प्रक्रिया कथन, विशेषरूपसे सेश्वरसांख्यका मत प्रतिपादन, रुद्रसे ब्रह्मा और विष्णुकी उत्पत्ति कथन, युग मन्वन्तर कालादि निरूपण, ३—४ महर्लोक और तपोलोकादिका संस्थानादि निरूपण, उस उस स्थानके अधिवासि कथन, ब्रह्मलोकादि वर्णन, रुद्रलोक वर्णन, सप्तपाताल वर्णन, जम्बू और प्लक्षआदि सप्तद्वीपका वर्णन, जम्बूद्वीपका संस्थानादि कथन, उस स्थानका वर्ष और पर्वतादि स्थान निर्देश, ज्योतिश्चक्र निरूपण, सूर्य्य और चन्द्रका शीघ्र गामित्व निरूपण, उनका नीचोच्चादि कथन, ५ ब्राह्मण प्रशंसा, ब्राह्मण मुखसे देव पितृलोक आदिक भोग कालकथन ब्राह्मणको देखकर अभिवादन न करनेसे प्रत्यवाय कथन, मनुष्योंमें तीन प्रकारके अधम लक्षण, दो प्रकारके विषम लक्षण, चार प्रकारके पशु लक्षण, त्रिविध पापलक्षण, त्रिविध पापिष्ठलक्षण, सप्तविध नष्टलक्षण, पाँचप्रकारके लक्षण, द्विविध रुष्ट लक्षण, छैप्रकारके दुष्टलक्षण, द्विविधपुष्ट लक्षण, अष्टविध कुष्ठ लक्षण, द्विविध आनन्द लक्षण, द्विविधकारा लक्षण, सरण्डलक्षण, त्रिकु लक्षण, चण्डचपल मलीमसादिका लक्षण, दण्ड, पण्ड, खल, नीच, वाचाल, कदर्य्य आदिके लक्षण और उनका अवान्तर भेद कथन ६—७ गुरु निरूपण, द्वादशी अमावस्या तिथिमें दानविधान, अपर पक्षमें तर्पणविधि, पितृस्तोत्र कथन, ज्येष्ठभ्राताको पितृतुल्यत्व कथन पुराण श्रवण फल कथन, उनका क्रम कथन, धर्म्मशास्त्र आगम तंत्र यामल डामर परायण आदिके अधिष्ठातृ देवता कथन, मधुक्षीरा यवक्षीरादिकी परिभाषा कथन, रुद्रके आगे वासुदेवके गुणकीर्त्तनमें फल कथन, दुर्गाके आगे वासुदेवके गुणकीर्त्तनमें दोषकथन,

पुस्तकादि हरणके दोष कीर्त्तन, पुराणादि लिखनेके नियमादि कथन, अब्राह्मणकी लिखीहुई पुस्तकको निष्फलत्व कथन, लिपिकरणमें दिङ्‌निरूपण और निषिद्ध दिन कथन, लिपिकरण वेतन, ग्रहणादिमें प्रत्यवाय कथन, पुस्तक परिमाणादि कथन, ताड अगर भोजपत्रादि विधान, पुराण पाठमें स्वरादि विधि कीर्त्तन, शूद्रको धर्म्मशास्त्र कथन निषेध पुराण वाचकको व्यास उपाधि, ८–२२ अनध्याय काल निरूपण, छात्र लक्षण, अध्यापना प्रकार कथन, म्लेच्छोक्त शास्त्रादि परित्यागकी आवश्यकता कथन, कलिमें निगम ज्योतिष, वेद आदिके संग्रहमें दोष कथन, अन्तर्वेदि बहिर्वेदि कर्म निरूपण, देवगृह निर्माणादि विधि कथन, पुष्करिणी और दीर्घिकादि परिमाण कथन, प्रासाद, पुष्करिणी आदिकी प्रतिष्ठा न करनेका दोष कथन, पतित देवगृहादि संस्करणका फलकथन, जलाशय दानादि माहात्म्य कीर्त्तन, शिवलिङ्ग चालनादि निषेध कथन, पुष्करिणी करण योग्य स्थान निरूपण, जलाशय प्रतिष्ठा करके यूपादि निरूपण भूमिशोधनादि विधि कीर्त्तन, मुद्रादि सप्तव्रीहि कथन, जलाशय और गृहादि आरंभमें वास्तु बलिदानादि कथन, वृक्षरोपणादि विधि कथन, नदीतट श्मशान और घरके दक्षिण और तुलसी वृक्षरोपण दोष कीर्त्तन अश्वत्थ और वृक्षरोपण फल कथन वृक्षच्छेदनका दोष कीर्त्तन, उद्भिज्ज विद्या कथन, वृक्षोंका देहादि कथन, १९–२० कूपादि प्रतिष्ठा विधि, प्रतिमा लक्षण कथन, उसका अङ्ग प्रत्यङ्गादिका परिमाण कथनपूर्वक निर्म्माण प्रकार कीर्त्तन, कुण्ड निर्माण प्रकार कथन, होम विशेषमें होमसंख्या निरूपण, कुण्ड संस्कार विधि कथन, होम विधि कथन, वह्नि जिह्वा कथन, होमावसानमें पूजा विधान, षोडशोपचार मंत्र कथन, होमभेदमें वह्निनाम भेद कीर्त्तन, होमद्रव्य परिमाण कथन, छिन्न भिन्न द्वारा होम करणमें दोष कथन, २१–२२ प्रतिष्ठाके वृक्षादि निरूपण स्रुक् स्रुवादि निर्माण प्रकार कथन, होम संख्या करनेके निमित्त गंगामृत्तिका गुटिकादि विधान

उसके आसनादि निरूपण देवता भेदसे मण्डल निर्माण प्रकार कीर्त्तन, वेदी निर्माण प्रकार कथन, मण्डल निर्माण प्रकार कथन, मण्डप, निर्माण प्रकार कथन, मण्डपकी द्वारादि करण विधि, पद्मादि निर्माण प्रकार, क्रौञ्च प्राण निर्माण प्रकार कीर्त्तन, प्रासादमें मयूर वृषभ सिंहादि मूर्ति निर्माणकी फल श्रुति कथन, सर्वतोभद्र मण्डलादि निर्माण प्रकार कथन, राजद्रव्य प्रमाण कीर्त्तन, यज्ञका स्वर्ण दक्षिणादि परिमाण कथन, दक्षिणा दानकी आवश्यकता कथन, पुराण पाठकी दक्षिणा निरूपण ।

द्वितीय भागमें १–४ शालग्राम दानकी दक्षिणा कथन, पूर्णपात्र परिमाणादि कथन, कुण्डलादि निर्म्माण, वेतनादि निरूपण, पुष्करिणी आदि खोदनेका परिमाण और वेतनादि निरूपण वस्त्रनिर्माणादिका वेतन कथन, नरवाहनादिका वेतनादि निरूपण, शान्तिकलशादि निरूपण, उसमें पञ्चपल्लवादि दानकी आवश्यकतादि कथन, कलश स्थापनकी विधि कीर्त्तन, चन्द्र सूर्य्यादिका चतुर्विध परिमाण लक्षण कथन; कर्म्म विशेषमें मास विशेषका नियम, मलमासमें प्रेतक्रिया विधान, कथन सपिण्डनादि विधि कीर्त्तन, शुक्रका उदय और अस्तकाल, युद्धादि कथन द्विराषाढादि निरूपण, ५–१० पूर्वाह्नमें देवकार्य कर्तव्यता, मध्याह्नमें एकोद्दिष्टादि कर्त्तव्यता, खर्वदर्पादि त्रिविध तिथि लक्षणादि कीर्त्तन शुक्ल कृष्णतिथि व्यवस्था कथन, युग्मादि तिथि व्यवस्था कथन, तिथि की उपवास व्यवस्था कथन, अम्बु घट श्राद्ध विधि, भार्य्या पुत्र रहित का यज्ञानुष्ठानादिमें अनधिकार कथन, कार्तिकमासादिमें स्नान दानादिकी फलश्रुति कथन, अशून्य शयनव्रत विधान, श्रावण पंचमीमें मानस पूजा, भाद्रमासमें षष्ठी पूजा, और जन्माष्टमी व्यवस्था, दशहरा कथन, एकादशीका उपवास कथन, विष्णुशृंखलादि निरूपण, शक्रोत्थान विधि, रटन्ती चतुर्दशी, शिव चतुर्दशी, चैत्रादि पूर्णिमामें स्नान दानादिकी फल श्रुति कथन, ११–१७ काश्यप, गौतम, मौद्गल्य, शाण्डिल्य आदि गोत्रका प्रवर कीर्त्तन, वास्तुयाग विधान कथन,

मण्डल निर्म्माणादि कथन, वास्तुयागमें कथित समस्त देवगणोंका ध्यानादि कथन, उनकी पूजा विधि कथन, अर्घ्य दान विधान, गृह्याग्नि विधि कीर्तन, होम विधान कथन, वह्नि जिह्वाका ध्यान कथन, देवादि प्रतिष्ठाके पूर्वदिनमें अधिवासन विधि कथन, होतृ आचार्य्यादि वरण विधि कीर्त्तन, सर्वत्र यज्ञादिमें संकल्पकी आवश्यकता निरूपण, संकल्प विधि कथन, प्रतिष्ठादिके मास तिथि नक्षत्र वारादिनिरूपण, मण्डपवेदी आदि निर्म्माण प्रकार कथन, जलाशय प्रतिष्ठादि वृद्धि श्राद्ध कर्त्तव्यता कीर्त्तन, जलाशय प्रतिष्ठा विधान कथन.

तृतीय विभागमें १—११। आरामादि प्रतिष्ठा विधि कीर्त्तन, गोप्रचार विधान कथन; अनाथ मण्डप दान विधि कथन, प्रपादान विधि कथन, क्षुद्राराम प्रतिष्ठा विधि कथन, अश्वत्थवृक्ष प्रतिष्ठा विधि कथन, पुष्करिणी प्रतिष्ठा प्रयोग कथन, वटस्नान विधि कथन, बिल्वप्रतिष्ठा विधि कथन, शिलादारुमयादि मण्डप प्रतिष्ठा विधि, पुष्पाराम प्रतिष्ठा विधि, तुलसी प्रतिष्ठा विधि कथन, सेतुप्रतिष्ठा विधि कथन; भूमिदान विधि कथन, सामान्य प्रकारसे अधिवासन विधि कथन, दुर्निमित्त निरूपण, उत्तर विभागका अनुक्रम.

४ भविष्योत्तर।

१ व्यासजीका आना, २ ब्रह्मांडोत्पत्ति, ३ वैष्णवी माया कथन, ४ संसार दोष ख्यापन, ५ पापोत्पादक कर्म्म भेद कथन, ६ शुभाशुभ कर्म्म फल निर्देश, ७ शकट व्रत कथन, ८ तिलक व्रत कथा, ९ कोकिल व्रत, १० बृहत्तपोव्रत, ११ नरव्रत, १२ पंचाग्नि साधन, रम्भा तृतीया व्रत कथा, १३ गोष्पद तृतीया व्रत कथा, १४ हरिकाला व्रत, (हरिताली वा हरिकाली),१५ ललिता तृतीया व्रत, १६ अवियोग तृतीयाव्रत, १७ उमामहेश्वरव्रत, १८ रम्भातृतीयाव्रत, १९ सौभाग्याष्टक तृतीयाव्रत,२०अनन्त तृतीयाव्रत, २१ रसकल्याणी व्रत,२२

आर्द्रानन्दकरी व्रत, २३ चैत्र भाद्रपद माघ तृतीयाव्रत, २४ अनन्ततृतीया व्रत, २५अक्षयतृतीया व्रत,२६अंगारक चतुर्थी व्रत, २७ विनायक स्वपन चतुर्थी व्रत, २८—२९नागशान्ति व्रत, ३०सारस्वतव्रत, ३१ पंचमी व्रत, ३२ श्रीपञ्चमी व्रत, ३३ अशोक षष्ठी व्रत ३४ फलषष्ठी व्रत, ३५ मन्दारषष्ठी व्रत, ३६ ललित षष्ठी व्रत, ३७ कार्तिकेयषष्ठी व्रत, तत्प्रसंगमें स्कन्दपुराणीय कपिला षष्ठीव्रत कथा, ३८ महातप सप्तमी व्रत, ३९ विजया सप्तमी व्रत, ४० आदित्य मण्डप विधि, ४१ त्रयोदश वर्ज्या सप्तमी व्रत, ४२ कुक्कुटी मर्कटी व्रत, ४३ उभय सप्तमी व्रत,४४ कल्याण सप्तमी व्रत, ४५ सप्तमी व्रत ४६ कमला सप्तमी व्रत, ४७ शुभ सप्तमी व्रत ४८ आदित्य स्वपन सप्तमी व्रत, ४९अचला सप्तमी व्रत, ५० उमा सप्तमी व्रत, तत्प्रसंगमें सूर्य्य पुराणान्तर्गत पुत्रकाम कृष्ण पञ्चमी व्रत, ५१ आमाष्टमी व्रत, ५२ दूर्वाष्टमी व्रत ५३ कृष्णाष्टमी व्रत, ५४ बुधाष्टमी व्रत, ५५ अनघाष्टमी व्रत, ५६ सोमाष्टमी व्रत, ५७ श्रीवृक्षनवमी व्रत, ५९ ध्वज नवमी व्रत, ५९ उल्कानवमी व्रत, ६० दशावतार दशमी व्रत, ६१ आशादशमी व्रत, ६२ तारक द्वादशी व्रत, ६३ अरण्य द्वादशी व्रत, ६४ रोहिणी चन्द्र व्रत, ६५ हरिहर हिरण्य प्रभाकरादिका अयोग व्रत, ६६ गोवत्सद्वादशी व्रत, ६७ द्वादश जनोत्थापन द्वादशीव्रत,६८ नीराजन द्वादशी व्रत,६९ भीष्मपञ्चक व्रत, ७० मल्लद्वादशी व्रत, ७१ भीम द्वादशी व्रत, ७२ वणिक व्रत, ७३ श्रवण द्वादशी व्रत, ७४ सम्प्राप्ति द्वादशी व्रत, ७५ गोविन्दद्वादशी व्रत, ७६अखण्ड द्वादशी व्रत, ७७मनोरथ द्वादशी व्रत,७८तिल द्वादशी व्रत,७९सुकृत द्वादशी व्रत,८० धरणी व्रत, ८१विशोक द्वादशी व्रत,धेनु विधान, ८२ विभूति द्वादशी व्रत, ८३ अनंग द्वादशी व्रत, ८४ अंक पाद व्रत, ८५ श्वेत मन्दार निम्बार्क करवीराऽर्क व्रत, ८६ यमादर्श

त्रयोदशी व्रत, ८७ अनंग त्रयोदशी व्रत, ८८ पाली व्रत, ८९ रम्भा व्रत, ९० आनन्द चतुर्दशी व्रत, ९१ श्रवणिका व्रत, ९२ चतुर्दश्यष्टमी नक्त व्रत, ९३ शिवचतुर्दशी व्रत, ९४ सर्वफल त्याग चतुर्दशी व्रत, ९५ जयपूर्णिमा व्रत, ९६ वैशाखी कार्तिकी माघी (पूर्णिमा) व्रत, ९७ युगादि तिथिमाहात्म्य, ९८ सावित्री व्रत, ९९ कार्तिकमें कृत्तिका व्रत, १०० पूर्ण मनोरथ व्रत, १०१ अशोक पूर्णिमा व्रत, १०२ अनन्त-फल व्रत, १०३ साम्भरायणी व्रत, १०४ नक्षत्र पुरुष व्रत, १०५ शिवनक्षत्र पुरुष व्रत, १०६ सम्पूर्ण व्रत, १०७ कामदान वेश्या व्रत, १०८ ग्रह नक्षत्र व्रत, १०९ शनैश्चर व्रत, ११० आदित्यादिन नक्त विधि, १११ संक्रान्त्युद्यापन व्रत, ११२ विष्टिव्रत, ११३ अगस्त्यार्घ्य विधि व्रत, ११४ अगस्त्यार्घ्य विधि, ११५ शुक्रबृहस्पत्यर्घ्य, ११६ व्रत-पञ्चाशीति, ११७ माघस्नान विधि, ११८ नित्यस्नानविधि ११९ रुद्र-स्नानविधि, १२० चन्द्रादित्यग्रहण स्नानविधि, १२१ अनशन व्रत विधि, १२२वापी कूप तडगोत्सर्ग व्रत विधि, १२३वृक्षोद्यापन विधि, १२४देवपूजा फल, १२५ दीपदान विधि, १२६ वृषोत्सर्ग विधि, १२७ फाल्गुनोत्सव विधि, १२८–१३० मदन महोत्सव, १३१ भूतमातोत्सव, १३२ श्रावणी पूर्णिमामें रक्षाबन्धन विधि, १३३ महानवम्युत्सव विधि, १३४ महेन्द्र महोत्सव, १३५ कौमोदकी निर्णय, १३६ दीपोत्सव विधि, १३७ लक्षहोम विधि, १३८ कोटिहोम विधि, १३९ महाशान्ति विधि, १४० गणनाम शान्तिक, १४१ नक्षत्रहोम विधि, प्रसंगमें ब्रह्मपुराणान्तर्गत अपराध, शतव्रत और गरुडपुराणीय विष्णुसम्वादमें काञ्चन व्रत कथा, १४२ कन्या प्रदान, १४३ ब्राह्मण्य विधि शुश्रूषा, १४४ वृषदान विधि, १४५ प्रत्यक्ष धेनु दान विधि, १४६ तिलधेनु दान विधि, १४७ जल धेनु विधि, १४८ घृत धेनु विधि, १४९ लवणधेनु विधि, १५० सुवर्णधेनु विधि, १५१ रत्नधेनु विधि, १५२ उभय मुखी धेनु विधि, प्रसङ्गक्रमसे आदि वराह

पुराणोक्त कपिलादान माहात्म्य कथा, १५३ महिपीदान विधि, १५४-अविदान विधि, १५५ भूमिदान माहात्म्य, १५६ पृथिवीदान माहात्म्य, १५७ हलपंक्तिदान विधि, १५८ अपाकदान विधि, विष्णुपूजा रुद्रप्रार्थना मंत्र, स्कन्दपुराणोक्त अर्द्धोदय व्रतकथा और वराह पुराणोक्त अर्द्धोदय, पितृस्तव, १५९ गुर्व्वष्टमी व्रतप्रसंग क्रमसे स्कन्द-पुराण शिवरात्री व्रत कथा १६०–१६१ उमामेहश्वर सम्वादमें शिव-रात्री व्रतोद्यापन विधि, तत्प्रसंगमें श्रीविश्वरूप निबन्धके दान खण्डोक्त बृहस्पति सम्वादमें चन्द्र सहस्रोद्यापन विधि तथा बृहस्पति वसिष्ठ सम्वादमें भीमरथीव्रत और स्कन्दपुराणीय सिद्धि विनायक पूजन विधि, १६२ भौमस्तुति, १६३ गृहदान विधि, १६४ अन्नदान माहा-त्म्य, १६५ स्थालीदान विधि, १६६ दासीदान विधि, १६७ प्रपादान-विधि, १६८ अग्निकाष्ठिका दान विधि, १६९ विद्यादान विधि, १७० तुलापुरुपदान विधि, १७१ हिरण्यगर्भदान विधि, १७२ ब्रह्माण्डदान विधि, १७३ कल्पवृक्षदान, १७४ कल्पलता दान, १७५ गजरथाश्व-दान विधि, १७६ कालपुरुष दान विधि, १७७ सप्तसागर दान विधि, १७८ महाभूत घट दान विधि, १७९ शय्यादान विधि, १८० आत्मप्रतिकृतिदान विधि, १८१ हिरण्याश्व दान विधि; १८२ हिरण्यरथ दान विधि, १८३ कृष्णाजिन दान विधि, १८४ विश्वचक्र दान विधि, १८५ हेम हस्ति रथि दानविधि, १८६ भुवन दानप्रतिष्ठा विधि, १८७ नक्षत्रविशेषण द्रव्यविशेष दान विधि, १८९ वराहदान विधि, १९० धान्यपर्वत दान विधि, १९१ लवणपर्वत दान विधि, १९२ गुडाचल दान विधि, १९३ हेमपर्वत दान विधि, १९४ तिलाचल दान विधि, १९५ कार्पासाचल दान विधि, १९६ घृताचल दान विधि, १९७ रत्नाचल दान विधि, १९८ रौप्याचल दान विधि, १९९ शर्कराचलदानविधि, भविष्यपुराणकी जो चारप्रकारकी पोथी पाई गई हैं, उनकी विषयसूची

दीगई (१) किन्तु बात यह है कि, इनमेंसे हम किसीको भी आदिभविष्य कहकर ग्रहण नहीं करसकते.

मत्स्यपुराणके मतसे–

" यत्राधिकृत्य माहात्म्यमादित्यस्य चतुर्मुखः ।
अघोरकल्पवृत्तान्तप्रसङ्गेन जगत्स्थितम् ॥
मनवे कथयामास भूतग्रामस्य लक्षणम् ।
चतुर्दशसहस्राणि तथा पञ्चशतानि च ॥
भविष्यचरितप्रायं भविष्यं तदिहोच्यते " ५३ । ३१

जिस ग्रन्थमें चतुर्मुख ब्रह्माने सूर्य्यका माहात्म्य वर्णन करके अघोर कल्पवृत्तान्त प्रसंगमें जगत्की स्थिति और भूतग्रामके लक्षण वर्णन किये हैं जिसमें अधिकांशही भविष्य चरित वर्णित और १४५०० श्लोक युक्त हैं, वह भविष्यपुराणके नामसे विख्यात है.

शैव उत्तरखण्डके मतसे-"भविष्योक्ते भविष्यकम्" अर्थात् भविष्योक्ति वर्णित होनेसे भविष्य पुराण नाम हुआ है.

---

(१) ग्रन्थान्तरमें–१० करवीर व्रत, ११ भद्रोपचार, प्रतिपद व्रत, १२ अशून्यशयन द्वितीय व्रत, १३ गोपद त्रिरात्र व्रत, २० रसकल्याणी तृतीया व्रत, २१ रसकल्याणी व्रत, २२ आनन्दकृतृतीया व्रत, ३३ विपष्ठी व्रत, ३४ पष्ठी व्रत, ३८ शाण्डिल्यसप्तमी व्रत, ४१ अभीष्टसप्तमी व्रत, ४५ शर्करासप्तमी व्रत, ५१ जन्माष्टमी व्रत, ८९ अनन्तचतुर्द्दशी व्रत, ९ साम्भरायणी व्रत, (?) ९६ भद्रा व्रत, ९८ मार्गवार्घ्य विधि,११०भूतमालोत्सर्ग विधि,११४ होम विधि, १३८ परक्षीरधेनु दान विधि,दधि धेनु दान विधि, मधुधेनु दान विधि, १४८ इसके पश्चात् फलधेनु दान विधि,नवनीतधेनु दान विधि, रसधेनु दान विधि, १४९ फिर कृष्णगोदान विधि, गोसहस्रदानविधि,वृषदान विधि, १२५ फिर अश्वदान विधि, कर्त्तव्य निर्णय, प्रेतत्व परिहारक दान विधि, श्राद्धतत्त्व निर्णय, श्राद्ध विधि, ब्राह्मविवाहादि लक्षण, १५४ फिर विश्वचक्र दान विधि, १८५ अध्यायके पीछे वर्त्तमान ग्रन्थोंके १११ अध्यायके साथ आदर्श ग्रन्थके १९९ अध्याय-गत शर्कराचल दान माहात्म्य पर्य्यंत विषयगत मेल है । दोनोंके बीचमें जो असाम-ञ्जस्य वा विषयगत पृथक्पन लक्षित हुआ है, वही ऊपर सन्निवेशित हुआ किन्तु वर्त्तन ग्रन्थमें अतिरिक्त और भी कई अध्याय देखे जाते हैं, यथा १७२ सदाचार-

भविष्य।

बम्बई के छपे भविष्यपुराणके देखनेसे विदित होता है कि यह सब भविष्य उसमें संयुक्त है इसमें पर्व भी हैं हम उनकी सूची यहां प्रकाश करते हैं प्रथम ब्राह्मपर्व.

१ मङ्गलाचरण, शतानीककी राजसभामें भृगुव्यासादिका आगमन भविष्यपुराण प्रस्ताव, २ भविष्यपुराण विभाग विराट् ब्रह्माण्ड सृष्टिदेवादि सृष्टिवर्णन, ३ वर्णाश्रमोंके धर्म जातकर्म संस्कारादि, ४ केशान्तकर्म ब्रह्मचर्य वर्णन, ५ स्त्री सामुद्रिक लक्षण वर्णन,६ स्त्रीलक्षण सद्वृत्त कथन, ७ अष्टविधि विवाह लक्षण वर्णन, ८ गृहस्थ धर्म स्त्री पुरुष सद्वृत्त वर्णन, ९ पुरुष विषयमें स्त्रीका वर्त्ताव आगम प्रशंसा, १० पतिव्रता स्त्रीधर्म,११ पतिव्रता स्त्रियोंकी गृहकार्यमें दक्षता, १२ स्त्री धर्म, स्त्री कर्तव्य वर्णन १३ स्त्री सदाचार वर्णन, १४ प्रोषित भर्तृका सपत्नी कर्तव्य वर्णन, १५ पति शुश्रूषामें सपत्नी वृत्ति वर्णन, १६ पंच यज्ञ, तिथि व्रत प्रतिपदाका व्रत माहात्म्य वर्णन, १७ ब्रह्मार्चन विधि वर्णन, १८ कार्त्तिक कृष्ण प्रतिपदामें ब्रह्मपूजन माहात्म्य, १९ द्वितीया व्रत च्यवन सुकन्या वृत्तान्त वर्णन, २० फल द्वितीया अशून्य शयन व्रत वर्णन, २१ तृतीया व्रत, २२ चतुर्थी विनायक व्रत, २३ विघ्नेश पूजा, २४ सामुद्रिक लक्षण २५ पुरुष शुभाशुभ लक्षण, २६ पुरुष सामुद्रिक लक्षण,२७ राजदेह लक्षण वर्णन, २८ स्त्री सामुद्रिक लक्षण, २९ गणेशाराधन, ३० निम्बादि मूलमय गणेश पूजन, ३१ सुखाद्यांगार चतुर्थी, ३२ नागपञ्चमी व्रत, ३३ नागजाति उत्पत्ति, ३४ कालदष्ट वृक्ष वर्णन, ३५ समधातु गत सर्पविषौषधिक्रिया कथन, ३६ सर्पविष चिकित्सा, ३७ भाद्रपद नाग पंचमी व्रत, ३८ आश्विनमें नाग पूजा, ३९ स्कन्द षष्ठी व्रत, ४० कार्तिक माहात्म्य, ४१ ब्राह्मणोंका ब्राह्मण्य विवेक,

—लक्षण कथन, १७३ मतसमुद्रके नामकीर्तन १७४ मत्स्यपुराणोक्त तिलपात्र दान विधि, १७५ ऋषिपंचमीव्रत, १७६–१७७ ऋषिपंचमी व्रत विधि कथन।

४२ ब्राह्मण्य संस्कार,४३वर्णव्यवस्था विवेक वर्णन, ४४ वर्णधर्म विभाग, ४५ कार्तिकेय माहात्म्य,४६ कार्तिकेय षष्ठी व्रत,४७ सप्तमीकल्प आरंभ शाक सप्तमीव्रत कथन, ४८ आदित्य माहात्म्य, ४९ आदित्याराधन विधि,५०रथसप्तमी माहात्म्य, ५१ माघ शुक्ला महासप्तमी व्रत, ५२ रथ-यात्रा विधि,५३ सूर्यगति विवेक, ५४ आदित्यकी श्रेष्ठता, ५५ आदित्य रथयात्रा,५६ रथपर्यटन विधिवर्णन, ५७ रथयात्राके उत्तर कर्तव्य कर्म, ५८ रथयात्रा माहात्म्य, ५९ माघ शुक्ला सप्तमीमें सूर्याराधन, ६० सूर्य परिचर्या माहात्म्य, ६१ सूर्य योग माहात्म्य, ६२ सूर्य दण्डिसम्वाद, ६३ ब्रह्मदण्डी सम्वाद, ६४ सप्तमी फल वर्णन,६५सप्तमी व्रत माहात्म्य६६ शाम्बख्यान, ब्रह्मा याज्ञवल्क्य सम्वाद, ६७ सर्व स्वरूप माहात्म्य, ६८ सिद्धार्थ सप्तमी व्रत,६९उस दिनके स्वप्नका फल वर्णन, ७०सर्षप सप्तमी व्रत माहात्म्य, ७१ ब्रह्माके कहे सूर्यनाम,७२ शाम्बको दुर्वासाका शाप, ७३सूर्यके आराधनसे शाम्बका कुष्ठनाश,७४चन्द्रभागाके किनारे सूर्यका द्वादश मूर्तिस्थान विभाग७५शाम्ब नारद समागम,७६ नारदका शाम्बके प्रति सूर्यपरिवार कथन, ७७ सूर्यका विराट् रूप,७८ सूर्यका सृष्टचवतार माहात्म्य,७९ विश्वकर्मा द्वारा सूर्यतेज शातन,८० सप्तमी व्रत माहात्म्य, ८१ विजयासप्तमी व्रत माहात्म्य, ८२ विजयासप्तमीव्रत माहात्म्य, ८३ नन्दादित्य व्रत माहात्म्य,८४भद्रानामक आदित्य वार व्रत माहात्म्य,८५ सौम्य आदित्यवार व्रत, ८६ कामद आदित्यवार व्रत, ८७ पुत्रनामक आदित्यवार व्रत, ८८–९२ जयन्त विजय आदित्याभिमुख हृदय रोगहर महाश्वेत नामक आदित्यवार व्रत कथन, ९३ सूर्याराधन ९४ सूर्यलोकमें पुरुष वृत्तान्त वर्णन, ९५ आदित्यलय माहात्म्य, ९६–१०१ जय जयन्ती, अपराजिता, महाजया नन्दा भद्रासप्तमी व्रत, १०२ नक्षत्र पूजा विधि, १०३ सूर्यपूजा, १०४ काम्योपवास, १०५ कामदा

सप्तमीव्रत, १०६ पापनाशिनीसप्तमीव्रत, १०७ भानु पादद्वय व्रत, १०८–१११ सर्वार्थावाप्ति मार्तण्ड, अनन्त, अभ्यंग सप्तमीव्रत, ११२ तृतीयापद व्रत, ११३ आदित्यलय बंधन मार्जनादि फल, ११४ आदित्यप्रतिमा स्नान योग, ११५ कौसल्याका आदित्यअर्चन विधि कहना, ११६ सत्राजित उपाख्यान, ११७ भोजक महात्म्य, ११८–११९ आदित्यके निमित्त दीपदान माहात्म्य, १२० सूर्यपूजा माहात्म्य, १२१ विश्वकर्माका सूर्यतेज शातन, १२२ १२३ ब्रह्मादि देवताओंका सूर्यकी स्तुति करना, १२४ सूर्यके अनुचरोंकी निरुक्ति, १२५ भुवन कोश वर्णन, १२६ लोकपाल लोक वर्णन, १२७ सांबकृत सूर्यस्तुति, १२८ सूर्यका सांबको वर देना, १२९ साम्बको सूर्यप्रतिमा लाभ, १३० चन्द्रभागाके किनारे साम्बका सूर्य मूर्तिस्थापन करना, १३१ प्रतिमा निर्माणमें दारुपरीक्षा, १३२ सर्वदेवप्रतिमा लक्षण, १३३ प्रतिमा प्रतिष्ठा विधि, १३४ प्रतिष्ठा मण्डल वर्णन, १३५ प्रतिमास्नानविधि, १३५ सूर्यप्रतिमा अधिवासन प्रकार, १३७ सर्वदेवप्रतिष्ठा प्रासाद प्रकार वर्णन, १३८ ध्वजारोपण प्रकार, १३९ गौरमुख पुरोहित सांब सम्वाद, १४० साम्बका चन्द्रभागाके किनारे साम्बपुर वसाना, १४१ भोजक जाति वर्णन, १४२ अव्यङ्गोत्पत्ति, १४३ नारदकी कही धूपदान विधि, १४४ व्यासद्वारा भोजकोत्पत्ति कथन, १४५–१४६ भोजक ज्ञानप्राप्ति वृत्तान्त, १४७ सूर्यको प्रिय अप्रिय भोजक लक्षण वर्णन, १४८ श्रीकृष्णको सुदर्शनकालचक्रप्राप्ति, १४९ सूर्यचक्र सूर्यदीक्षा विधि वर्णन, १५० स्थंडिलमें सूर्यार्चन, १५१ और धर्म प्रस्ताव, १५२ सूर्यार्चनमें अनेक प्रश्न, १५३ देवतोंद्वारा सूर्यस्तुति, १५३ सूर्यका ब्रह्मादिके प्रति अपनी त्रयीमूर्ति कथन, १५५ आदित्यका ब्रह्माके प्रति स्व माहात्म्य कथन, १५६ शालिग्रामस्थलमें जाकर तप करते हुए विष्णुके निमित्त सूर्यका वरदेना, १५७ सूर्यावतार कथा प्रस्ताव, १५८ सूर्योत्पत्ति वृत्तान्त, १५९ नानाविधि सूर्यावतार, कथा,

२ मध्यमपर्व (प्रथम भाग)

पातालादि ऊर्ध्वलोक वर्णन, ४ भूलोक विस्तार ज्योतिश्चक्र कथन, ५ ब्राह्मण लक्षण, ब्राह्मण कर्तव्य, ६ ब्राह्मण माहात्म्य गुण वर्णन, ७ ब्राह्मणेतिहास श्रवण माहात्म्य, ८ब्राह्मणेतिहास विभाग, ९ अन्तर्वेदि बहिर्वेदि प्रमाण, १० आराम कर्म वृक्षारोपण, ११ वापी कूपतडाग प्रतिष्ठा विधि, १२ प्रतिदेवता प्रतिमा वर्णन, १३ विविध कुण्ड निर्णय, १४ आहुति होम संख्यामान वर्णन, १५ अष्टादश कुंड संस्कार वर्णन, १६ होमावसाने षोडशोपचार वर्णन, १७ कर्म विशेषमें वह्निनामकीर्त्तन, १८ होमार्थ द्रव्य प्रमाण वर्णन, १९ स्रुवदर्वीपात्र निर्माण, २० पूर्णाहुति होमनिर्णय, यथाविधि कृत यागफल वर्णन, देवता और कर्मद्वारा विविध मण्डप निर्माण वर्णन २१.

दूसरे भागमें १ मण्डलोद्धार वर्णन, २ क्रौंच वाणादि विविध मण्डल वर्णन, ३ कर्मानुसार दक्षिणादि मूल्यपरिमाण वर्णन, ४ पूर्णपात्र परिमाण कर्मानुसार वेतनपरिमाण वर्णन, ५ कलश निर्माण स्थापनादि प्रकार वर्णन, ६ महीनेके आश्रय अनुसार चार प्रकारके मासरूप लक्षण निर्णय, ७ देव पितृ कर्म विशेषमें तिथि निर्णय, ८ तिथि विशेषमें कर्म फलादि वर्णन, ९ गोत्र प्रवर सन्तान वर्णन, १० बलि मण्डल-पूर्वक वास्तुयाग विधि, ११—१२ वास्तुपूजामें छन्द ऋषि वर्णन, १३ देवतार्घ्य दान विधि, १४ स्वगृह्योक्त अग्नि कर्म विधि, १५ अग्निकर्ममें कुशकंडिका स्थालीपाक विधान, १६ अग्निजिह्वा ध्यान वर्णन, १७ प्रतिष्ठापूर्वक दिन कर्तव्य विधि, १८ यज्ञकर्मानुसार ब्राह्मण योजन, १९ प्रतिष्ठा याग काल निर्णय पूर्वक प्रतिष्ठा विधान, २० गृहवास्तु प्रतिष्ठा देवार्चन प्रकार वर्णन, २१ मध्यम प्रकारमें गृह वास्तु प्रतिष्ठा विधि ।

तीसरे भागमें १ आराम प्रतिष्ठा विशेष विधान, २ गोप्रचारोत्सर्ग प्रतिष्ठा विधि, ३ क्षुद्र बगीचेकी प्रतिष्ठा विधि, ४ अश्वत्थ प्रतिष्ठा पुष्करिणी प्रतिष्ठा जलाशय प्रतिष्ठा विधि, ५ नलिनी वापी ह्रद प्रतिष्ठा, ६ क्षुद्र आराम वृक्ष प्रतिष्ठा, ७ एकादि वृक्ष प्रतिष्ठा, ८ पुनः अश्वत्थ प्रतिष्ठा,

९ वट प्रतिष्ठा, १०. बिल्व प्रतिष्ठा, ११ पूग आम्र फलयुक्त वास्तु प्रतिष्ठा विधि, १२ शैल दारु तृणमय मण्डप प्रतिष्ठा, १३ महायूप प्रतिष्ठा, १४ पुष्पाराम प्रतिष्ठा, १५ तुलसी आदि वृक्ष प्रतिष्ठा विधि, १६ वृक्षादिकी उत्तम मध्यम अधम प्रकारकी प्रतिष्ठा विधि, १७ गोप्रचार प्रतिष्ठा विधि, १८ एक दिन साध्य प्रतिष्ठा विधि, १९ कल्पादि देवता प्रतिष्ठा, २० दुर्निमित्तसे प्रकट हुए अरिष्टोंकी शान्तिका प्रकार वर्णन, मध्यम पर्व समाप्ति.

इसके आगे प्रति सर्ग पर्व है प्रथम खण्डमें, १ सत युगी वैवस्वत मनुसे सुदर्शन तक राजकाल कथन, २ त्रेता युगी राज्य वृत्तान्त वर्णनमें सुदर्शनसे लेकर सम्वरण राजाका समय वर्णन, ३ द्वापरयुग वर्णनमें सम्वरणसे लेकर म्लेच्छयज्ञकारी प्रद्योतनृप पर्यन्त कथन, ४ म्लेच्छ यज्ञ वृत्तान्त, कृष्णका कलिको वरदेना सूतादिका हिमालय गमन व्यासजीका भविष्य कथारंभ, म्लेच्छ भूमिके उत्कर्ष वर्णनमें आदम श्वेत नुहकी नाश महल्लल बृहदहनूक मताच्छिल्य, होमक न्यूह सीम सम भाव वृत्तान्त वर्णन, न्यूहका नौकारोहण, भारतवर्षका वृष्टिके जलमें निमग्नहोना, न्यूहका भूमिवास, मुनिकृत देवी स्तुति, ५ न्यूह वंश वर्णन म्लेच्छभाषा विधान सिमहाम याकूत जुम्र माजूज, मदी, यूनान, इलीश तरलीश किती आदि राज्यकर म्लेच्छ वंश वर्णन,संस्कृत भाषासे अपभ्रंश हुई व्रजभाषा, महाराष्ट्र, यावनी गुरुण्ड भाषाओंके भेद वर्णन, यावनी भाषाके कुछ शब्दोंका अपभ्रंश वर्णन, ६ आर्य्यावर्तमें म्लेच्छोंका आगमन कारण, काश्यप ब्राह्मण वृत्तान्त, तिसके द्वारा सरस्वती स्तुति, तिसका म्लेच्छोंका शिष्य करना,मगध राजवंश वर्णन,गौतमकी उत्पत्ति, पट्टनमें बौद्ध धर्मका संस्कार, अर्बुदाचलपर कान्यकुब्ज द्विजके ब्रह्महोम करनेसे प्रमर, सामवेदि, चपहानि, यजुर्विद इन चार प्रकारके क्षत्रियोंकी उत्पत्ति वर्णन. ७ कलिंजर अजमेर द्वारका, नगरियोंमें प्रमर चौहान

शुक्रोंकी स्थिति वर्णन, अग्नि वंश विस्तार, प्रमर वंश वृत्तान्त, प्रमर वंशमें विक्रमादित्यका जन्म, वेताल विक्रम सम्वाद, प्रथम खण्ड समाप्ति.

दूसरे खण्डमें, १ पद्मावती कथा वर्णन, २ मधुमती वर निर्णय कथा, ३ वीरवर कथा वर्णन, ४ चन्द्रवती कथा, ५ हरिदासकी कन्या महादेवीकी कथा, ६ कामांगी कन्याकी कथा, ७ त्रिलोकसुन्दरी कथा, ८ कुसुमदा देवीकी कथा, ९ कामालसा नामक वैश्य कन्याकी कथा, १० गुणशेखर राजपत्नीकी कथा, ११ धर्मवल्लभ भूपालकी कथा, १२ ब्राह्मण हत्या कथा, १३ सुखभाविनी वैश्यकन्या तथा चोर कथा, १४ चन्द्रावलीकी कथा, १५ जीमूत वाहन शंखचूड गरुड कथा वर्णन, १६ कामवरूथिनी नामक वैश्य कन्या कथा, १७ गुणाकरनाम द्विजसुत और यक्षिणी कथा वर्णन, १८ मोहिनी नामक चोर ब्राह्मणकी स्त्री, तथा चोर पिण्डक कथा वर्णन, १९ विप्रपुत्र कथा वर्णन, २० अनंग मंजरी कथा, २१ विष्णुस्वामीके चार पुत्रोंकी कथा, २२ क्षत्रसिंह नृपतिकी कथा, विक्रमाख्यान वर्णन, २३ विक्रमका यज्ञ करना, भर्तृहरि वृत्तान्त कथन, २४ सत्यनारायण कथा, नारद नारायण सम्वाद, २५ शतानन्द ब्राह्मणकी कथा, २६ चन्द्रचूड नृपककी कथा, २७ भिल्ल कथा, २८ सत्यनारायण व्रतमें साधु वणिक्की कथा, २९ साधुकी भार्याका दुःखी होकर सत्यनारायणका व्रत करना, साधुकी सद्गति, ३० कलियुगकी प्रवृत्ति देखकर पितृशर्म ब्राह्मणका देवीकी स्तुति करना, चतुर्वेदी ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, ३१ पाणिनी महर्षि वृत्तान्त वर्णन, ३२ तोतादरीस्थित वोपदेव वृत्तान्त, ३३ व्याधकरण ब्राह्मण वृत्तांत, सप्तशती प्रथम चारित्र माहात्म्य, ३४ महानन्दि राजाके वृत्तांत वर्णनमें सप्तशती मध्यम चारित्र माहात्म्य वर्णन, पतञ्जलि वृत्तांत वर्णनमें भगवतीका उत्तम चारित्र माहात्म्य वर्णन, द्वितीय खण्ड समाप्ति.

तीसरे खण्डमें—१ सूतका शौनकादिक प्रति भारतयुद्धमें मृतहुए पाण्डवादिका पुनः बारहशताब्दीमें अवतार कथन, २ भरत खण्डका १८

स्थानोंमें विभाग,शालिवाहनका शकोंको पराजय करना,आर्यदेश म्लेच्छ देशकी मर्यादा, ईश पुत्रका साम सिंहको म्लेच्छदेशमें स्थापन, शालिवाहनका६०वर्ष तक राज्यकरना,३ शालिवाहन वंशीय नृप राज्य वर्णन, भोजराजकी दिग्विजय, कालिदासका चण्डीयागप्रभावसे वाह्लीकको मारना, मुहम्मदीय धर्म,शामसीह स्थलमें स्थिति वर्णन,भोजराजका समय,४भोजवंशीय नृपति राज्य वर्णन,कलिवृद्धिके निमित्त भगवदवतारप्रस्ताव,व्रतपा नाम आभीरीका भगवतसे पुत्रकी प्राप्तिके निमित्त तप करना, उसका सुमति नृपसे विवाह,उससेदेशराजवत्सराजकी उत्पत्ति,५जयचन्द्र और पृथ्वीराजकी उत्पत्ति,उनका परस्पर द्वेष,६जयचन्द्र सुता संयोगिनीका स्वयम्बर,पृथ्वीराजकी विजय,७भीष्मराजके तपसे प्रसन्न होकर उनको इन्द्रका घोडा देना,पारिमल राजके तपसे सन्तुष्टहोकरशंकरका उसके घर निवासका वरदेना, लक्ष्मणराजके तपसे प्रसन्न हो जगन्नाथका ऐरावत देना, ८ जंबुक राजादि राजमण्डल वृत्तान्त वर्णन,९देशराज वत्सराज विवाह वर्णन,१०कृष्णांशचरित्र वर्णन,मल्ल क्रीडादि वृत्तांत वर्णन, ११ कृष्णांशद्वारा राजोंका पराजय,१२कृष्णांशका शत्रुओंसे युद्ध,१३ युद्धका समय वर्णन, पृथ्वीराजका गुर्जर राज्यलेना,धर्मांश बलखानका विवाह वृत्तान्त, १४ जयन्तअवतार कथा,उसकी इन्दुलनामसे विख्याति, इन्दुल चरित्र वर्णन,१५चण्डिकादेवी वाक्य वर्णन, १६ बलखानि विवाह बलखानि संकट और उससे मुक्ति, १७ पृथ्वीराजको सप्तकौरवांश पुत्र प्राप्ति वर्णन,ब्रह्मानन्द विवाह वृत्तान्त, १८ इंदुलसे हंसोंका पद्मिनीवृत्तान्त कथन,इन्दुलका सिंहल गमन और युद्ध, १९ इन्दुलका पद्मिनीके संग विवाह, २० पांचालदेशके मयूरध्वजको स्कंद प्रमाद वर्णन, सुखखानि विवाह वर्णन, २१ सिंधुदेशके मयूरध्वजकी कन्याके संग कृष्णांशका विवाह, २२ कृष्णांशका अपनी बहन चन्द्रावलीके घर गमन, २३ चित्ररेखाके संग

इन्दुलका विवाह, २४ पृथ्वीराजके आगे चन्द्रका भाषा ग्रंथ निर्माण, जय पराजय वर्णन, २५ शारदानन्द राज–कन्याका स्वयंम्वर वृत्तान्त, २६ महावतीमें युद्धवृत्तान्त वर्णन, २७ कच्छदेशीय युद्धवृत्तान्त वर्णन, २८ कृष्णांशका पुराणभेद श्रवण, २९ किन्नरी कन्याकी उत्पत्ति, बौद्ध-राज चीन साम राज्यके साथ युद्ध वृत्तान्त वर्णन, ३० लक्षण पद्मि-नीका लाना और युद्ध, ३१ कृष्णांशका शालयोपिद्विवाह वर्णन, देहलीमें म्लेच्छ राजा सहोदका आगमन, आर्यदेशमें म्लेच्छागमन वृत्तान्त वर्णन, ३२ चन्द्रवंशी राजोंका घोर समर, अलाउद्दीनका दिल्लीमें कुतुकोद्दीनको स्थापन करना, तृतीय खण्ड समाप्ति.

चतुर्थ खण्डमें-१ व्यासका अपने मनके उद्देश्यसे भविष्यकथा वर्णन, अग्नि-वंशिय नृप चरित्रवर्णन, २ बुंदेलखण्ड राज्य, कल्पासिंहान्त भमर वंश समाप्ति, अजमेर पुर वृत्तान्त, तोमर वंश वृत्तांत, म्लेच्छोंसे उपभुक्त चौहानवंशी क्षत्रि-योंकी पत्नियोंसे जट्ट जाट्य मेहन आदि क्षुद्रक्षत्रिय जाति वृत्तांत वर्णन, ३ शुक्ल नामक अग्निवंशीय नृपवंश वर्णन, सिंधु, कच्छभुज, उदयपुर कान्यकुब्ज वंश वृत्तांत वर्णन, शेष क्षुद्र भूपाल स्थिति वर्णन, ४ परिहर भूपति वंश विस्तार वर्णन, ५ ब्रह्मके मध्याह्नकालमें भगवदवतार वृत्तांत, ६ देहलीमें स्थित म्लेच्छ नृप वृत्तांत वर्णन, सहोज्जीनका देवतातीर्थ खण्डन वर्णन, मौंगल तैमुरलंग राज्य वर्णन, इन्द्राणीके संग इन्द्रका भूमिमें आना, सूर्य माहात्म्य वर्णन, ७ धातृ शर्म द्विज चरित्र वर्णन, मित्र शर्म द्विज चरित्र वर्णन, रामानंदोत्पत्ति वृत्तांत, निम्बानन्दोत्पत्ति वृत्तांत, ८ माधवाचार्य श्रीधराचार्य विष्णुस्वामी वाणीभूषण भट्टोजिदीक्षित वराहमिहिर उत्पत्ति वृत्तांत, ९ धन्वन्तरि सुश्रुत जयदेवोत्पत्ति, वृत्तान्त, १० कृष्ण चैतन्य शंकराचार्योत्पत्ति, ११ आनन्दगिरि वनशर्म पुरीशर्म उत्पत्ति, १२ भारतीश गोरखनाथ क्षेत्र शर्म ढुण्ढिराज उत्पत्ति, १३ अघोर पन्थी भैरव

हनुमत् जन्म रुद्रमाहात्म्य बालशर्म उत्पत्ति, १४ रुद्रमाहात्म्य रामानुजकी उत्पत्ति, १५ वसुअवतार वृत्तान्तमें कुबेर अवतार, त्रिलोचन वैश्यकी उत्पत्ति, १६ नामदेव रंकण वैश्यकी उत्पत्ति, १७ कबीर नरशी पीपा नानक नित्यानन्द साधुओंकी उत्पत्ति, १८ अश्विनीकुमार अवतार वर्णनमें सधन रैदास उत्पत्ति, १९ कृष्ण चैतन्यके शिष्य बलभद्र विष्णुस्वामी माध्वाचार्यादिका वृत्तान्त, २० जगन्नाथ माहात्म्य वर्णन, २१ कण्व ब्राह्मणकी स्त्रीमें उपाध्याय दीक्षित पाठक मिश्रा अग्निहोत्री द्विवेदी त्रिवेदी पाण्डेय चतुर्वेदी पुत्रोंकी उत्पत्ति और उनका वंश वर्णन, कृष्णचैतन्य द्वारा म्लेच्छ माया निरास वर्णन, २२ तिमिरलंगके पुत्रोंका देहलीमें अकबर राज्य वृत्तान्त, अकबरका वंश, शिवाजी राज्य वृत्तान्त, मुगलोंका वंश क्षय होना, नादर राज्य रामसे वर पाये गुरुण्डदेशके वंशवालोंका वाणिज्यके निमित्त इस देशमें आना, कलिकत्ता वृत्तान्त, अष्टकौशल्य द्वारा राज्य वृत्तान्त, गुरुंड राज्य समाप्ति मौन राज्य वृत्तान्त, २३ विक्रमादित्यकी बाईसवीं शताब्दीमें किलकिलामें भूतनन्दि शिशुनन्दी आदिकी उत्पत्ति कथा, २७ सत्ताईसवीं शताब्दीमें वैदिक धर्म प्रवर्तक तीर्थ और क्षेत्रोंका उद्धार करनेवाले पुष्पमित्र राजाकी उत्पत्ति फिर ३१ शताब्दीतक भ्रष्टाचार वर्णन। सोमनाथ राजाकी उत्पत्ति, राहुराज्यमें महमदीय मत प्रचार, सब भूमिमें म्लेच्छमयत्व वृत्तान्त वर्णन, २४ दैत्योंका हरिखण्डमें गमन, विश्वकर्माका और खण्डोंका मार्ग रोक देना, वर्णसंकर जीवोत्पत्ति, द्विहस्त मनुष्योंकी उत्पत्ति, वामन अंशसे उत्पन्न राजोंका वृत्तान्त, कलिके दूसरे तीसरे चरणमें वर्तमान जीवोंका वृत्तान्त, २५ चौथे चरणमें नरकका अजीर्ण निवारणके लिये ब्रह्माका भगवान्‌की स्तुति करना, कल्की अवतार कथा अठारह कल्पका वृत्तान्त, कल्की पूजा माहात्म्य, सत्ययुगके आरंभ दिनका माहात्म्य, २६ कल्कि विजय वृत्तान्त वर्णन ब्राह्मणादि व्यवस्थाका स्थापन होना प्रतिसर्ग पर्वकी समाप्ति.

उत्तर पर्वमें १ मंगलाचरण युधिष्ठिरके पास ऋषियोंका आना, राजाका पाप निवृत्त्यर्थ प्रश्न करना व्यासका श्रीकृष्णको उत्तर देनेके लिये कहकर निज आश्रमको जाना, २ श्रीकृष्ण युधिष्ठिर सम्वाद, ब्रह्माण्डोत्पत्ति वृत्तान्त, ३ भगवान्‌की मायाका वृत्तान्त, ४ जन्म संसार दोषका आख्यान, ५ अधर्म-पाप भेद कथन, ६ यमयातना प्रकार वर्णन, ७ शकट व्रत माहात्म्य वर्णन, ८ तिलक व्रत माहात्म्य, ९ अशोक व्रत माहात्म्य, १० करवीर व्रत, ११ कोकिला व्रत, १२ बृहत्तपो व्रत, १३ जातिस्मरत्वप्रद भद्रोपवास व्रत, १४ यमद्वितीया व्रत, १५ अशून्य शयन व्रत, १६ मधूक तृतीया व्रत, १७ मेघपाली तृतीया व्रत, १८ रम्भा तृतीया व्रत, १९ गोष्पद तृतीया व्रत, २० हरिकाली तृतीया व्रत, २१ ललिता तृतीया व्रत २२ अवियोग तृतीया व्रत, २३ उमा महेश्वर व्रत, २४ रंभा व्रत, २५ सौभाग्याष्टक तृतीया व्रत, २६ रसकल्याणिनी व्रत, २७ आर्द्रानन्दकरी तृतीया व्रत, २८ चैत्र भाद्रपद माघ तृतीया व्रत, २९ अनन्तर तृतीया व्रत, ३० अक्षय तृतीया व्रत, ३१ अंगारक चतुर्थी व्रत, ३२ विनायक स्नपन चतुर्थी व्रत, ३३ विनायक चतुर्थीव्रत, ३४ पंचम व्रतम शान्ति व्रत, ३५ सारस्वत व्रत ३६ नागपंचमीव्रत ३७ श्रीपंचमीव्रत, ३८ विशोकपष्ठीव्रत, ३९ कमलाषष्ठी व्रत, ४० मंदारषष्ठी व्रत, ४१ ललिता षष्ठी व्रत, ४२ कार्तिकेय पूजा षष्ठी व्रत, ४३ विजय सप्तमी व्रत, ४४ आदित्य मण्डल विधि, ४५ त्रयोदश वर्ज्य सप्तमीव्रत, ४६ कुक्कुट मर्कटी व्रत, ४७ उभय सप्तमी व्रत, ४८ कल्याण सप्तमी व्रत, ४९ शर्करा सप्तमी व्रत, ५० कमला सप्तमी व्रत, ५१ शुभ सप्तमी व्रत, ५२ स्नपन सप्तमी व्रत, ५३ अचला सप्तमी व्रत, ५४ बुधाष्टमी व्रत, ५५ जन्माष्टमी व्रत, ५६ दूर्वाष्टमी व्रत, ५७ कृष्णाष्टमी व्रत, ५८ अनघाष्टमी व्रत, ५९ सोमाष्टमी व्रत, ६० श्रवृिक्ष नवमी व्रत, ६१ ध्वज नवमी व्रत, ६२ उल्का नवमी व्रत, ६३ दशावतार चरित्र व्रत,

१३४ दमनक आन्दोलक रथयात्रा महोत्सव, १३५ मदन महोत्सव १३६ भूतमातृत्सव; १३७ श्रावण पूर्णिमा रक्षाबन्धन विधि, १३८महानवमी व्रत माहात्म्य, १३९ महेन्द्रध्वज महोत्सव, १४० दीपालिकोत्सव, १४१ नवग्रह लक्ष विधि, १४२ कोटिहोम विधि, १४३ महाशान्ति विधि, १४४ गणनाथ शान्ति विधि १४५ नक्षत्र होम विधि, १४६ अपराध शतव्रत, १४७ कांचन पुरीव्रत, १४८ कन्याप्रदान माहात्म्य, १४९ ब्राह्मण शुश्रूषा विधि, १५० वृषदान विधि, वर्णन, १५१ प्रत्यक्षधेनु दान विधि, १५२ तिलधेनु दान विधि, १५३ जलधेनु दान विधि, १५४ घृत धेनु दान विधि, १५५ लवणधेनु दान विधि, १५६ काञ्चनधेनु दान विधि, १५७ रत्नधेनु दान विधि, १५८ उभयमुखी गोदान विधि, १५९ गोसहस्र दान विधि, १६० वृषभ दान विधि, १६१ कपिलादान माहात्म्य, १६२ महिषी दान विधि, १६३ अविदान विधि, १६४ भूमिदान विधि, १६५ सौवर्ण पृथिवी दान विधि, १६६ हलपांक्तिदान विधि, १६७ आपाक दान विधि, १६८ गृहदान विधि, १६९ अन्नदान माहात्म्य, १७० स्थाली दान विधि १७१ दासी दान विधि, १७२ प्रपा दान विधि, १७३ अग्निष्टिका दान विधि, १७४ विद्या दान विधि, १७५ तुलापुरुष दान विधि, १७६ हिरण्यगर्भ दान विधि, १७७ब्रह्माण्ड दान विधि, १७८ कल्पवृक्ष दान विधि, १७९ कल्पलता दान विधि, १८० रथाश्व गज दान विधि, १८१ कालपुरुष दान विधि, १८२ सप्तसागर दान विधि, १८३ महाभूत घट दान विधि, १८४ शय्यादान विधि, १८५ आत्म प्रतिकृति दान विधि, १८६ हिरण्य अश्व दान विधि, १८७ सुवर्णके अश्व रथके दानकी विधि, १८८ कृष्णाजिन दान विधि, १८९ हेम हस्ति रथ दान विधि, १९० विश्वचक्र रथ दान विधि, १९१ भुवन प्रतिष्ठा माहात्म्य, १९२ नक्षत्रदान विधि, १९३ तिथि दान माहात्म्य, १९४ वाराह दान विधि, १९५ धान्य पर्वत

दान, १९६ लवण पर्वत दान, १९७गुडाचल दान, १९८हेमाचल दान, १९९ तिलाचल दान,२००कार्पासाचल दान,२०१ घृतपर्वतदान, २०२ रत्न पर्वत दान, २०३ रौप्य पर्वत दान,२०४ शर्करा पर्वत दान,२०५ सदाचार पर्वत दान, २०६ रोहिणी चन्द्रशयन व्रत माहात्म्य, २०७ कृष्ण युधिष्ठिर सम्वाद समाप्ति, श्रीकृष्णका द्वारका गमन, २०८ उत्तर पर्वकी संक्षित विषयानुक्रमणिका, ग्रन्थ समाप्ति.

नारदपुराणकी सूचीके अनुसार पांच पर्व तो इसमें नहीं मिलते परन्तु ब्राह्मणपर्व और भविष्य सहित प्रतिसर्ग पर्व इसमें लिखे गये हैं। प्रतिसर्ग-पर्वमें भविष्य कथन बहुतही अपूर्व है, यद्यपि भविष्यमें बहुतसी कथा आधुनिक दिखाई पडती हैं परन्तु श्रीमान् ठाकुर महानचंदर इस अमृत-सरके यहांकी बहुत पुरानी लिखी पोथीसे मिलाकर यह ग्रंथ छापा गया है। क्या आश्चर्य है ? भगवान् व्यासने अपनी दिव्य सामर्थ्यसे यह सब लिखा है और इसकी भविष्य संज्ञा विना भविष्यके चरितार्थ कैसे होगी, तथापि यह किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं किया जाता कि यह पुराण ज्योंका त्यों हो। इसके प्रतिसर्ग पर्वमें बहुतसा अंश प्रक्षिप्त होने पर भी पीछे जो चार भविष्य पुराण निर्देशकर आये हैं उनसे इसमें भविष्यके प्रायः विशेष लक्षण पाये जाते हैं और कथा भागभी प्रायः समस्तके लगभग पाया जाता है.

जहांतक हमसे बना है पुराणोंके लिये हमने विशेष खोज की है और जहां कहीं पुराण पुरातन लिखे विदित होते हैं वहां खोजभी करते हैं और जब कोई पूरा ग्रंथ हाथ लगेगा तो इसको फिर प्रकाशित करेंगे.

नारदपुराणमें भी इसीप्रकार भविष्यानुक्रमणिका पाई जाती है—

" अथातः संप्रवक्ष्यामि पुराणं सर्वसिद्धिदम् ।
भविष्यं भवतः सर्वलोकाभीष्टप्रदायकम् ॥
यत्राहं सर्वदेवानामादिकर्ता समुद्यतः ।

सृष्ट्यर्थं तत्र सञ्जातो मनुः स्वायम्भुवः पुरा ॥
स मां प्रणम्य पप्रच्छ धर्म्मं सर्वार्थसाधकम् ।
अहं तस्मै तदा प्रीतः प्रोवाच धर्म्मसंहिताम् ॥
पुराणानां यदा व्यासो व्यासञ्चक्रे महामतिः ।
तदा तां संहितां सर्वां पञ्चधा व्यभजन्मुनिः ॥
अघोरकल्पवृत्तान्तंनानाश्चर्य्यकथाचितम् ।
तत्रादिमं स्मृतं सर्वं ब्राह्मं यत्रास्त्युपक्रमः ॥
सूतशौनकसम्वादेपुराणप्रश्नसक्रमः ।
आदित्यचरितं प्रायः सर्वाख्यानसमाचितम् ॥
सृष्ट्यादिलक्षणोपेतः शास्त्रसर्वस्वरूपकः ।
पुस्तकलेखकलेख्यानां लक्षणञ्च ततः परम् ॥
संस्काराणाञ्च सर्वेषां लक्षणञ्चात्र कीर्त्तितम् ।
अक्षत्यादितिथीनाञ्च कल्पाः सप्त च कीर्त्तिताः ॥
अष्टम्याद्याः शेषकल्पा वैष्णवे पर्वणि स्थिताः ।
शैवेचकामतोभिन्नाः सौरेचान्त्यकथाचयः ॥
प्रतिसर्गाह्वयं पश्चान्नानाख्यानसमाचितम् ।
पुराणस्योपसंहारसहितं सर्वपञ्चमम् ॥
एषु पञ्चसु पूर्वस्मिन् ब्रह्मणो महिमाधिकः ।
धर्म्मे कामे च, मोक्षे तु विष्णोश्चापिशिवस्य च ॥
द्वितीय च तृतीये च सौरोवर्गचतुष्टये ।
प्रतिसर्वाह्वयंत्वन्त्यं प्रोक्तं सर्वकथाचितम् ॥
सभविष्यं विनिर्दिष्टं पर्व्व व्यासेन धीमता ।
चतुर्दशसहस्रन्तु पुराणं परिकीर्त्तितम् ।
भविष्यं सर्वदेवानांसाम्यं यत्रप्रकीर्त्तनम् ॥
गुणानां तारतम्येन समं ब्रह्मेतिहिश्रुतिः ॥

अनन्तर सर्वाभीष्ट और सर्व सिद्धिदायक भविष्यपुराण तुम्हारे निकट कहताहूं,जिस पुराणमें मैं ब्रह्मा सब देवगणोंका आदि कहकर उक्त हुआ हूं पूर्वकालमें स्वायम्भुव मनुने सृष्टिके निमित्त जन्मग्रहण किया। उन्होंने मुझको प्रणाम करके मेरे निकट सर्वार्थ साधक धर्म्म पूँछा उस काल मैंने प्रसन्न होकर उनके निकट धर्म्मसंहिता कही थी। महामति व्यासदेवने पुराणोंका विभाग किया उस समय मेरी कही वह संहिता पाँच प्रकारसे कही थी, उसमें अनेक प्रकारके आश्चर्य्य कथायुक्त अघोर कल्पका वृत्तान्त है.

इसके आदिमें ब्राह्मपर्व है,इस पर्वमेंही इसका उपक्रम है इसके प्रथममें सूत और शौनक सम्वादमें पुराण प्रश्न,सर्वाख्यानयुक्त आदित्य चरित्र, सृष्टि आदिके लक्षण युक्त शास्त्रस्वरूप, पुस्तक लेखक और लेख्यका लक्षण, संस्कार समुदायके लक्षण,प्रतिपदादि तिथियोंके सात कल्पपर्य्यंत वर्णित हुए हैं.

वैष्णव पर्वमें अष्टमी आदि शैवकल्प,शैवपर्वमें कामानुसार विभिन्नता, सौरपर्वमें अन्तकथा समह और पुराणके उपसंहारके साथ, प्रतिसर्ग पर्वमें नानाख्यान, इस प्रकार पञ्चपर्व कीर्त्तित हुए हैं.

द्वितीय विष्णुपर्वमें धर्म्म, काम और मोक्ष विषयमें,तृतीय पर्वमें शिवकी और चतुर्थमें सूर्य्यकी सर्व कथा एवं प्रतिसर्ग नामक शेषपर्वमें अवशिष्ट सम्पूर्ण कथा कही है। धीमान् व्यासने भविष्यमें इस प्रकार पर्व निर्दिष्ट किये हैं, यह पुराण चौदह सहस्र श्लोकपूर्ण है। इसमें सर्व देवकी कथा सम भावसे कही है.

उद्धृत प्रमाणके अनुसार ४ र्थ वा भविष्योत्तरके अतिरिक्त १ म २ य ३ य भविष्यमें कुछ कुछ प्राचीन भविष्यके लक्षण पाये जाते हैं इन तीन प्रकारके भविष्योंमें आदित्य माहात्म्य वर्णित होने परभी अघोर कल्प वृत्तान्त अथवा ब्रह्मकर्तृक मनुके निकट जगत् स्थितिका प्रसंग नहीं है.

नारद पुराणके अनुक्रमानुसार भविष्य पांच पर्वोंमें विभक्त है—ब्राह्म, वैष्णव, शैव, सौर और प्रतिसर्गपर्व । हमारी समझमें १ म भविष्यके उपक्रममें भी इन पांच पर्वोंकी कथा है । इस समय नारदीय मतसे इस १ म भविष्यके केवल ब्राह्म पर्वका सन्धान पाया जाता है । इस पोथीमें और चार पर्व नहीं हैं, मात्स्योक्त चतुर्मुख कथित आदित्य माहात्म्य इस ब्राह्मपर्वमें दीखता है.

नारदमतसे—अष्टमी कल्पसे वैष्णव पर्व आरम्भ, २ भविष्यके १५१ अध्यायसे विष्णु पर्व और अष्टमी कल्पका आरम्भ देखा जाता है । किन्तु इस २ य भविष्यमें उसके पूर्वमें जितनी कथा हैं, किसी २ स्थानमें १म भविष्यके साथ मेल होने परभी अधिकांश स्थलमें ही मेल नहीं है । संभवतः इसका अधिकांशही प्रक्षिप्त वा परवर्त्ती कालमें संयोजित है.

कहीं १ म भविष्यके ब्राह्म पर्वमें १३१ अध्याय हैं; किन्तु इस दूसर भविष्यमें विष्णुपर्वके पूर्वांशमें १५० अध्याय पाये जाते हैं अधिकांश पुराणोंके मतसे भविष्यकी श्लोकसंख्या चौदह हजार है । किन्तु द्वितीय भविष्यके प्रथम अध्यायमें लिखा है कि, भविष्य पुराणकी श्लोकसंख्या ५०००० है । शिवपुराणकी वायुसंहितामें परिवर्द्धित और नवकलेवर प्राप्त शिव पुराण जैसे लक्ष श्लोकात्मक कहा है,दूसरे भविष्यकी उक्ति वैसेही अत्युक्ती समझनी चाहिये.

इस अंशमें बहुतसे विषय संयोजित हुए हैं,इस कारण रुरुवध (२५० अ०) आदि कोई २ विषय एकसे अधिकार वर्णित देखाजाता है,ऊपर कह आये हैं कि,नारदपुराणके मतसे अष्टमीकल्पसे ही विष्णुपर्व आरंभ है, किंतु द्वितीयभविष्यमें अष्टमीकल्पसे ही विष्णुपर्व निर्दिष्ट होनेपरभी इस पर्वमें विशेषरूपसे रुद्रमाहात्म्य वर्णित होनेसे इसके साथ शैवपर्वभी सम्मिलित हुआ है, ऐसा ज्ञात होता है, शेषांशमें सौरपर्वके विषयका भी अभाव नहीं है, किंतु प्रतिसर्ग पर्व नहीं पाया गया.

पुराणप्रबन्धके उपक्रममें दिखाया है, आपस्तम्ब धर्म्मसूत्रमें भविष्य पुराणका प्रसंग है, द्वितीय भविष्यके द्वितीय अध्यायमें उक्तविषयका संधान पाया है, इससे जाना जाता है कि, इस अंशमें अनेकवस्तु प्रक्षिप्त होनेपरभी आदिपुराणकी अनेक कथा विद्यमान हैं.

उपरोक्त दोनों भविष्यकी अपेक्षा ३ य भविष्यमेंही कुछ विशेष मेल मिला है, इसमें भविष्यका कोई २ लक्षण होनेपरभी इसकी विशेषवर्ती कालकी रचना बोध होती है, जिस समय समस्तभारतमें तांत्रिकप्रभावने विस्तारलाभ किया था यह तृतीयभविष्य संभवतः उस समयकी रचना है, तीसरे भविष्यके सातवें अध्यायमें आगम तंत्र, जामल और डामरादिकी कथा विवृत हुई है.

मात्स्यमतसे भविष्यपुराणमें अनेक भविष्य कथा हैं, प्रथम और तृतीयभविष्यसे उसका कुछ २ परिचय पाया जाता है, तीसरे भविष्यके नवम अध्यायमें म्लेच्छोक्त शास्त्रादि परित्यागकी बात है, दशमअध्यायमें कलिमें निगमज्योतिष और वेदके संग्रहमें दोषकथन और मनसा, षष्ठी, दशहरा आदिकी पूजा कथा है, और एक वैज्ञानिकोंका ज्ञातव्य विषय है, वह "उद्भिज्जविद्याका वृत्तान्त Botny दूसरे किसी पुराणमें उद्भिज्ज विद्याका ऐसा प्रसंग नहीं है"

नारदपुराणका आश्रयलेकर कहना होता है १ म भविष्यमें अर्थात् ब्राह्मपर्वमें वह मेल नहीं चलता, इस ब्राह्मपर्वमें एक अतिगुरुतर ऐतिहासिक कथाकी आलोचना पाई गई है, वह यह है.

शाम्बने सूर्य्यमूर्त्तिकी प्रतिष्ठा की, किन्तु उनका उपयुक्त पूजक नहीं पाया, तब नारदके उपदेशसे वह शाकद्वीपसे १८ प्रकारके कुलीन ब्राह्मण लाये, यह 'मग' नामसे विख्यात हैं, श्रीकृष्णकी आज्ञासे इन सब मगब्राह्मणोंने यादवकन्याओंके साथ विवाह किया, उससे ही

भोजकगणोंकी उत्पत्ति एवं यही सूर्य्यपूजाके अधिकारी गिनेगये। प्राचीन कालमें अरब और पारस्य सौर वा अग्निपूजकगण "मग" नामसेही विख्यात थे, सम्भवतः उनकीही कोई शाखा भारतीयके साथ मिलकर शाकद्वीपी ब्राह्मण नामसे परिचित हुए.

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण १०.

प्रचलित ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें इस प्रकार विषयसूची है—

ब्रह्मखण्डमें—१ मंगलाचार, सौतिशौनक सम्वाद, २ परब्रह्म निरूपण, ३ सृष्टिनिरूपण, कृष्णदेहमें नारायणादिका आविर्भाव और श्रीकृष्णका स्तव, ४ सावित्र्यादिका आविर्भाव, ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति, महाविराट्जन्म कथन, ५ कालसंख्यान, रासमण्डलमें राधाकी उत्पत्ति, राधाकृष्ण शरीरमें गोपी गोप और गवादिका आविर्भाव, शिवादिका वाहनदान, गुह्यकादि उत्पत्ति कथन, ६ श्रीकृष्णका शंकरको वरदान, शिवनाम निरुक्ति कथन, सृष्टि निमित्त ब्राह्मणप्रति नियोग, ७ पृथिवी आदि ब्रह्मसृष्टि कथन, ८ ब्रह्मसर्ग, वेदादिशास्त्रकी उत्पत्ति, स्वायम्भुवमनु और ब्रह्ममानसपुत्र पुलस्त्यादिकी उत्पत्ति, ब्रह्मनारद शापोलम्भन, ९ कश्यपादिकी सृष्टि, पृथिवीगर्भमें मङ्गलकी उत्पत्ति, कश्यप वंशवर्णन, चन्द्रके प्रति दक्षका अभिशाप, शिवशरणापन्न चन्द्रके विष्णुवरलाभ और दक्षके साथ गमन, १० जातिनिर्णय प्रस्तावमें घृताची और विश्वकर्म्माका परस्पर शाप उपलम्भन, सम्बन्धनिरूपण, ११ आश्विनेय शापनिमोचन प्रस्तावमें विष्णु वैष्णव और ब्राह्मण प्रशंसा, १२ उपबर्हण गन्धर्वरूपमें नारदका जन्म, १३ ब्राह्मणके शापसे उपबर्हणके प्राण विसर्जन, मालावतीका विलाप, १४ ब्राह्मण बालक वेशमें विष्णुका मालावती समीपमें आगमन, ब्राह्मण और मालावती सम्वादमें कर्म्मफल कथन, १५ मालावती कालपुरुषादिका सम्वाद, १६ चिकित्साशास्त्र प्रणयन, १७ ब्राह्मण देववृन्द सम्वादमें विष्णुकी प्रशंसा, १८ मालावतीकृत महापुरुष-

स्तोत्र, उपबर्हणको पुनर्जीवन प्राप्ति, १९ महापुरुष ब्रह्माण्ड पावनकवच, बाणासुरकृत शंकरका स्तव, २० उपबर्हण गन्धर्वका शूद्रायोनिमें जन्म, २१ नारद आदिकी उत्पत्ति, नारदका शापविमोचन, २२ नारदादि ब्रह्मपुत्रगणोंकी नामनिरुक्ति, २३ ब्रह्म नारद सम्वाद, २४ मंत्रग्रहणके निमित्त शिवलोकमें गमन, नारदके प्रति ब्रह्माका उपदेश, २५ शिव और नारदसम्मिलन, २६ महादेवका नारदको कृष्णमंत्रदान, आह्निक प्रकरण कथन, २७ भक्ष्याभक्ष्यादि निरूपण, २८ ब्रह्मनिरूपण, प्राप्तवर नारदका शिवाज्ञासे नारदाश्रममें गमन, २९ नारायण और ऋषियोंके प्रति नारदका प्रश्न, ३० भगवत् स्वरूप कथन । मुम्बईके छपेमें २९ अध्याय हैं.

प्रकृतिखण्डमें—१ प्रकृतिचारितसूत्र, २ शक्त्यादि शब्दनिरुक्ति, ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति, देवदेवी गणोंका आविर्भाव, ३ विश्वनिर्णय वर्णन, ४ सरस्वतीपूजा विधि, ध्यान कवचादि कथन, ५ याज्ञवल्क्योक्त वाणीस्तव, ६ वाणी लक्ष्मी और गंगा परस्पर विवादकरके एकका अन्यके प्रति अभिशाप और उनको नदीरूप प्राप्ति, ७ काल कलीश्वर गुणनिरूपण, ८ वसुधाकी उत्पत्ति, उसकी पूजा विधि ध्यान और स्तोत्रादि कथन, ९ पृथिवीके उपाख्यानमें भूमिदानके पुण्यादिका कथन, १० भागीरथी उपाख्यानमें भगीरथका गंगा लाना और देवीका स्तव और पूजादि कथन, ११ गंगाको विष्णुपदी नामका कारण, श्रीकृष्णके प्रति राधाकी भर्त्सना और क्रोधपूर्वक राधाके गंगाको पान करनेमें उद्यत होनेपर गंगाका श्रीकृष्णचरण शरण ग्रहण और ब्रह्मादिकी प्रार्थनानुसार श्रीकृष्णके चरण—कमलसे गंगाकी निष्क्रान्ति, १२ गंगा और नारायणका विवाह, १३ तुलसीके उपाख्यानमें उसका अभिलाषादि कथन, १४ वेदवतीका उपाख्यान, समासमें रामायण कथन, १५ तुलसीका जन्म, बदरिकाश्रममें तपश्चरण और

ब्रह्माको वरलाभ, १६ तुलसीके आश्रममें शंखचूडका आगमन, उनका कथोपकथन, विवाह हृताधिकार देवगणोंका वैकुंठमें गमनपूर्वक विष्णुके निकट शंखचूडका वृत्तान्त निवेदन और उसके वधके निमित्त महादेवको विष्णुके निकटसे शूलप्राप्ति, १७–१८ युद्धके निमित्त शंखचूडके निकट महादेवका दूतप्रेरण, तुलसी और शंखचूडसम्भोग, शंखचूडका युद्धमें गमन तथा शिव और शंखचूडसम्वाद,१९देव और दानव सैन्यका द्वैरथयुद्धवर्णन,स्कन्दपराभव,काली और शंखचूडयुद्ध कथन, २०वृद्धब्राह्मणवेशमें विष्णुका शंखचूडसमीपमें गमन और कवचग्रहण; महादेवद्वारा शंखचूडवध और शंखचूडकी अस्थिसे शंखकी उत्पत्ति,२१ विष्णुका शंखचूडरूपधारण और तुलसीसम्भोग अभिशप्त तुलसीका उनके निकट वरदान, छलसे तुलसीपत्रका माहात्म्यकीर्त्तन, शालग्राम चक्रनिर्देश और उसके गुण वर्णन, २२ तुलसीके आठ नाम और उसकी पूजा विधि, २३ अश्वपतिके प्रति पराशरका उपदेश, सावित्रीका ध्यान और पूजाविधानादि कीर्त्तन, ब्रह्मकृत उसका स्तोत्र कथन, २४ सावित्रीसत्यवान्‌का विवाह, सत्यवान्‌को पञ्चत्व प्राप्ति और सावित्रीसमीपमें यमद्वारा कर्म्मही सबका हेतु है ऐसा प्रस्ताव,२५सावित्रीके और यमका सम्वाद, २६ । २७ यमका सावित्रीके प्रति वरदान, शुभकर्म्म विपाक कथन,२८ सावित्रीद्वारा यमका स्तव, २९ नरककुण्डकी संख्या, ३०–३१ पापभेद में नरकादिका भेद, ३२ श्रीकृष्णकी सेवामें कर्म्मच्छेद और लिंगदेह निरूपण, ३३ नरककुण्डलक्षण कथन, ३४ श्रीकृष्णका माहात्म्यादि कथन, सत्यवान्‌को जीवनलाभ और सावित्रीशब्द निरुक्ति, ३५ लक्ष्मी स्वरूप कथन और उनकी पूजाकीर्त्तन,३६ इन्द्रके प्रति दुर्वासाका शाप एवं श्रीभ्रष्ट इन्द्रको उनके निकट ज्ञानलाभ और वरलाभ, ३७ बृहस्पतिके निकट इन्द्रका गमन और उनके प्रति गुरुका प्रबोधदान,३८गुरुके साथ इन्द्र और देवगणोंका ब्रह्मलोकमें गमन, ब्रह्माके साथ उनका वैकुण्ठधाममें नारायणसमीपमें गमन,नारायणद्वारा लक्ष्मीस्थानकीर्त्तन और

उनके उपदेशमे समुद्र मन्थनपूर्वक लक्ष्मीप्राप्ति कथन, ३९ इन्द्रद्वारा लक्ष्मी-की पूजाप्रस्तावमें महालक्ष्मीका मंत्रध्यान, स्तव और पूजाकी विधि, ४० स्वाहोपाख्यान, ४१ स्वधोपाख्यान, ४२ दक्षिणोपाख्यान, यज्ञकृतदक्षिणा और स्तव आदि कथन, ४३ षष्ठीदेवीके उपाख्यानमें प्रियव्रतनृपकृत षष्ठीकी पूजा और स्तवादि कथन, ४४ मंगलचण्डीका उपाख्यान और उनकी ध्यान-पूजा मंत्र और स्तोत्रकथन, ४५ मनसा उपाख्यानमें उनके मनसा आदि बारह नामोंकी निरुक्ति, ४६ जरत्कारुका मनसादेवीके साथ विवाह, आस्तीकका जन्म, ब्रह्मशापग्रस्त परीक्षित्के परलोक गमनके पीछे जनमेजयद्वारा नागयज्ञ, आस्तीक द्वारा नागकुलरक्षण, महेन्द्रकृत मनसादेवीका स्तवआदि कथन, ४७ सुरभी उपाख्यान और उसका स्तव, ४८ पार्वतीके प्रति शिवका राधाशब्द निरुक्तिपूर्वक राधाका उपाख्यान वर्णन प्रारम्भ, ४९ विरजाके साथ विहारमें प्रवृत्त श्रीकृष्णका राधाके भयसे अन्तर्द्धान, विरजागोपीको नदीरूपत्व प्राप्ति, राधा और सुदामाका विवाद और परस्पर अभिसम्पात, ५० सुयज्ञराजाके प्रति ब्रह्मशाप, ५१–५२ अतिथिविनय, छलसे ऋषियोंका राजाके प्रति उपदेश, ५३ राजाद्वारा अतिथिका प्रसादन प्रत्युपदेश कथन, ५४ श्रीकृष्णस्वरूप वर्णन प्रसंगमें कालमासकथन, विप्रपादोदक प्रशंसा, तपद्वारा सुयज्ञका राधाकृष्ण साक्षात्कार, ५५ राधिकाकी पूजाविधि श्रीकृष्णकृत स्तव, ५६ राधिका कवच, ५७ दुर्गा उपाख्यान, दुर्गाके दुर्गा आदि सोलहनामोंकी निरुक्ति, ५८ देवीमाहात्म्यमें सुरथवंश-वर्णन प्रसङ्गमें ताराहरण वृत्तान्तकथन, शरणागतचन्द्रका पापविमोचन, ५९ श्रीकृष्णकी आज्ञासे शक्रादि देवगणकी नर्म्मदातटमें स्थिति और सुरगुरुका कैलासमें गमन, ६० शिव और जीवका कथोपकथन, उनका नर्म्मदातटमें गमन, विष्णुका और दौत्यकर्म्ममें नियुक्त ब्रह्माका

शक्रालयमें गमन, ६१ ब्रह्माकी प्रार्थनानुसार शुक्रका तारकाप्रत्यर्पण, बुधजन्म बृहस्पतिका तारालाभ, सुरथ और वैश्यवंशका परिचय, ६२ सुरथ और मेधसम्वाद, ६३ समाहित वैश्यका प्रकृति साक्षात्कारलाभ, अनन्तरमुक्ति, ६४ सुरथकृत प्रकृतिपूजा क्रमकीर्त्तन, ६५ प्रकृतिपूजाका फलकालपरिकीर्त्तन, ६६ दुर्गाका स्तव और उसका कवच व० छा० अ० ६७।

गणेशखण्डमें—१ हरपार्वती सम्भोगभङ्ग, २ शंकरके समीपमें पार्वतीका खेद, ३ पार्वतीके प्रति शंकरका पुण्यकव्रत उपदेश और गङ्गा तीर्थमें उनको हरिमंत्रदान, ४ पुण्यकव्रत विधानकथन, ५ व्रतकथा प्रकरण, ६ व्रतमहोत्सव और व्रत आज्ञा ग्रहण, ७ व्रतानुष्ठान, श्रीकृष्णकी आज्ञासे कुमारी पार्वतीको पतिदक्षिणादान और पतिप्राप्तिके निमित्त पार्वतीकृत पुनर्वार श्रीकृष्णका स्तव, ८ पार्वतीको श्रीकृष्णसमीपमें वरप्राप्ति, सनत्कुमारके निकट पुनर्वार शंकरप्राप्ति और गणेशजन्मकथन, ९ हरपार्वतीका गणेश सन्दर्शन, १० गणेशका मङ्गलके निमित्त मङ्गलाचार, ११ पार्वती और शनैश्चर सम्वाद, १२ गणेश विघ्नउपशमन, १३ गणेशका नामकरण, पूजा-स्तोत्र और कवचादि कथन, १४ कार्त्तिक प्रवृत्तिप्राप्ति, १५–१६ कार्त्तिक लानेके निमित्त नन्दिकेश्वरादि शिवदूतगणोंका कृत्तिकाभवनमें प्रेरण, कार्त्तिकेय और नन्दिकेश्वरका कथोपकथन, कार्त्तिकेयका कैलासमें आगमन, १७ कार्त्तिकेयका अभिषेक और कार्त्तिकेय गणेशका परिणय, १८ गणेशके शिव शून्यता कारण प्रदर्शन प्रसङ्गमें शंकरके प्रति कश्यपका अभिशाप, १९ श्रीसूर्य्यस्तव और कवचादि कथन, २० गणेशके गजाननत्वका कारण, २१ शक्रको लक्ष्मीप्राप्ति कथन, २२ शक्रको हरिका महालक्ष्मी स्तव और कवचादि दान, २३ लक्ष्मीचरित्र कथन, २४ गणेशके एकदन्त होनेका कारण कहनेमें जमदग्नि और कार्त्तवीर्य्य सम्वाद, २५ कापिलसैन्य युद्धमें कार्त्तवीर्य्यका पराभव कथन, २६ जमदग्नि समीपमें का-

र्त्तवीर्य्यका पराभव, २७कार्त्तवीर्य्य युद्धमें जमदग्निका प्राणत्याग और परशुरामकी प्रतिज्ञा, २८ भृगु और वेणुका सम्वाद, ब्रह्मलोकमें ब्रह्म और परशुरामका कथोपकथन,२९ब्रह्माके वरप्राप्त भार्गवका शिवलोक गमन;उस स्थानमें उनका कियाहुआ स्तव, ३० शंकर और परशुराम सम्वाद, ३१ भार्गवके प्रति शंकरका त्रैलोक्यविजयकवचदान,३२ भार्गवको शंकरका भगवन्मंत्र स्तवादि दान,३३ भार्गवकी युद्धयात्रा,स्वप्नदर्शन,३४कार्त्तवीर्य्य समीपमें भार्गवका दूतप्रेरण,स्वभार्य्यामनोरमाके प्रति कार्त्तवीर्य्यका स्वप्नदर्शन वृत्तान्त वर्णन, ३५ मनोरमाका परलोक गमन, भार्गव और कार्त्तवीर्य्य सम्वाद, मत्स्यराज और परशुरामयुद्धवर्णनावसरमें शिवकवच कथन, ३६ राजा सुचन्द्रके साथ परशुरामयुद्धवर्णनावसरमें भृगुकृत कालिकास्तव कथन, ब्रह्म और भार्गवसम्वाद,सुचन्द्रवधकथन, ३७भद्रकालीकवच कथन, ३८ पुष्कराक्ष और परशुराम युद्ध वर्णन प्रसङ्गमें महालक्ष्मीकवचकथन,३९दुर्गाकवच कथन,४०कार्त्तवीर्य्य और परशुरामके युद्धमें कार्त्तवीर्य्यके निकटसे महादेवका छलसे कवचहरण, राजा और भार्गवका कथोपकथन, कार्त्तवीर्य्यका परलोक गमन, ब्रह्म और परशुराम सम्वाद, ४१ परशुरामका कैलासमें गमन, ४२ गणेशभार्गव सम्वाद, ४३ भार्गवयुद्धमें गणेशका दन्तभंग,४४ पार्वतीद्वारा तिरस्कृत परशुरामके प्रति श्रीविष्णुका उपदेशकथन और गणेश स्तोत्रकथन, ४५ परशुरामकृत भगवतीका स्तव, ४६ तुलसीविना भार्गवकृत गणेशपूजा, कथन, प्रसंगमें तुलसी और गणेशका परस्पर अभिसम्पातकथन.

श्रीकृष्णजन्म खण्डमें—१ नारायणके प्रति नारदका हरिकथाविषयक प्रश्न और उनके प्रति नारायणके उक्त समस्त कथोपकथन प्रसंगमें विष्णु और वैष्णवगुण कथन, २ श्रीकृष्णका विरजाके साथ विहार, राधिकाके भयसे श्रीकृष्णका अन्तर्द्धान और विरजाको नदीरूपत्व प्राप्ति, ३ श्रीकृष्णके प्रति राधिकाका अभिशाप, राधिका और श्रीदा-

माका परस्पर अभिशाप, ४ निजभाग हरण करनेके प्रस्तावके निमित्त पृथिवीका ब्रह्मलोक गमन,ब्रह्मसमीपमें उसका निवेदन,देवसमूहकाहरिभवनमें गमन और गोलोकवर्णन,५ब्रह्मा आदिका गोलोकमें गमन, ब्रह्मकृत श्रीहरिका स्तव,श्रीकृष्णका आविर्भाव,ब्रह्मादि कर्तृक भगवान्का स्तव,भगवान्के साथ उनका कथोपकथन६—७पूर्वजन्म परिचयपूर्वक देवकी और वसुदेवका परिचयवृत्तान्त कीर्त्तन,कंसद्वारा उनके छःपुत्रनिधन,ब्रह्मादिद्वारा श्रीकृष्णका स्तव,भगवतीका जन्मवृत्तान्त वर्णन,वसुदेवकृत श्रीकृष्णका स्तव और योगमाया वृत्तान्त कथन,८जन्माष्टमी व्रतादि निरूपण,९नन्दीका स्तवकथन, १० पूतनामोक्षण प्रस्ताव, ११ तृणावर्त्तासुरवध, १२ शकटभञ्जन, कवच कथन,१३ गर्ग और नन्दसम्वाद,श्रीकृष्णका अन्नप्राशन और नामकरण प्रस्ताव,१४यमलार्जुन भञ्जन और कुवेरतनयका शापकारण,१५श्रीराधाकृष्ण सम्वाद, ब्रह्माभिगमन,ब्रह्मकृत श्रीराधाका स्तवकथन, राधाकृष्णका विवाहवर्णन,१६बक,केशी और प्रलम्ब सुर वध,वसुदेवादि गन्धर्वोंका शंकरशाप लम्भन,और वृन्दावन गमन प्रस्ताव,१७वृन्दावन निर्म्माण,कलावतीके साथ वृषभानुका परिणयवृत्तान्त,वृन्दावन नामकरण कथन,राधाकी षोडशनाम निरुक्ति,श्रीनारायणकर्तृक राधाका स्तव,१८विप्रपत्नी मोक्षण, विप्रपत्नीकृत कृष्णका स्तव, वह्निका सर्वभक्षत्व बीजकथन,१९कालीय दमन, कालीकृत श्रीकृष्णका स्तव,नागपत्नीकृत श्रीकृष्णका स्तव,दावाग्नि मोक्षण, गोप और गोपी कृत श्रीकृष्णका स्तव,२०ब्रह्माद्वारा गोवत्सादि हरण और ब्रह्मकृष्णका स्तव, २१ इन्द्रयागभञ्जन, नन्दकृत इन्द्रका स्तव, श्रीकृष्णका गोवर्द्धन धारण, इन्द्र और नन्दद्वारा श्रीकृष्णका स्तव, २२ धेनुकवध और धेनुककृत श्रीकृष्णका स्तव, २३ प्रसंगक्रमसे तिलोत्तमा और बलिपुत्रका ब्रह्मशाप विवरण, २४ दुर्वासाका विवाह और पत्नी वियोग,२५उर्वशीके शापसे दुर्वासका पराभव, उसके द्वारा श्रीकृष्णका

स्तव, और उसका माक्षण, २६ एकादशी व्रत विधान, २७ गोपकन्या-कृत श्रीकृष्णका स्तव, गौरीव्रत विधान व्रतकथा, पार्वतीका स्तव, व्रतान्तमें पार्वतीका वरदान, २८ रासलीला वर्णन, २९ अष्टावक्र मोक्षण उनके द्वारा श्रीकृष्णका स्तव, ३० राधिकाके प्रति श्रीकृष्णके अष्टावक्र उपाख्यान वर्णन प्रसंगमें असितकृत शिवस्तव कथन, और रम्भाके अभिशापसे देवलकी अष्टांग वक्रताकीर्त्तन, ३१ ब्रह्मा और मोहिनी समागममें मोहिनीकृत कामका स्तव, ३२ब्रह्मा और मोहिनीका कथोपकथन, ब्रह्मकृत श्रीकृष्णका स्तव, ३३ ब्रह्माके प्रति मोहिनीका अभिशाप, ब्रह्माका दर्पभंग, ३४ गंगाका जन्म, उनकी भागीरथ्यादि नाम निरुक्ति और उनका माहात्म्यकीर्त्तन, ३५ गंगास्नानमें ब्रह्माका शापमोचन, उनका भागीरथी सम्भोग, रति और कामका जन्म, कन्दर्पके बाणसे चित्त विकार उन समस्त ऋषियोंको नारायणका उपदेश प्रदान, ३६ हरका दर्प भंग कथन और उनका ऐश्वर्य्य वर्णन, ३७ पार्वतीके शापसे शिव नैवद्यकी अग्राह्यता कथन, और शिवद्वारा पार्वतीका स्तव, ३८ दुर्गा दर्पभंग प्रस्तावमें दर्पनाशके निमित्त सती देवीका देह त्याग, पार्वतीका जन्म और हरगिरिसमागम, ३९ हिमालयमें पार्वतीका शिवसन्दर्शन और मदनभस्म वृत्तान्त, ४० पार्वतीका तपश्चरण, विप्रबालक रूपसे उनके निकट शंकरका आगमन, उनका कथोपकथन, पार्वतीके पित्रालयमें जानेके पीछे शंकरका भिक्षुकवेशमें पार्वतीके निकट गमन, बृहस्पतिके साथ देवगणोंकी मंत्रणा, ४१ हिमालयके निकट ब्राह्मणवेशमें शंकरकी शिवनिन्दा, अरुन्धतीके साथ सप्तऋषिका हिमालय समीपमें गमन, उसके निकट कन्यादान कथा प्रसंगमें वसिष्ठका अनरण्योपाख्यान कथन, ४२ वसिष्ठका पद्मा और धर्म्मसम्वाद कथन, सतीका देहत्याग कथन, ४३ शंकर विरह शोकापनोद कथन, ४४ महादेवकी विवाहयात्रा, हिमालय द्वारा शिवका स्तव, ४५ शिवविवाह वर्णन, ४६ हरगौरीविलास

वर्णन और सर्वमङ्गल वर्णन, ४७ इन्द्रका दर्पभंग, ४८ सूर्यका दर्पभंग, ४९ वह्निका दर्पभंग, ५० दुर्वासाका दर्पभंग, ५१ धन्वन्तरिका दर्पभंग, ५२ और मनसा विजय, राधिकाका खेद, राधानामनिरुक्ति, ५३ राधाकृष्णका विहार ५४ संक्षेपसे श्रीकृष्णका चारित्रवर्णन, ५५ श्रीकृष्णका प्रभाववर्णन, ५६ महाविष्णु आदिका दर्पभंग, देवगण द्वारा लक्ष्मीका स्तव, ५७ कृष्ण विच्छेदसे प्राणत्यागमें उद्यत राधिकाके साथ ब्रह्माका वैकुण्ठधाममें गमन, ५८ संक्षेपसे राधाविरह कथन, ५९ विस्तृतरूपसे इन्द्रकी दर्पभञ्जन कथा प्रसंगमें शची और नहुष सम्वाद, ६० बृहस्पति और दूत सम्वाद, नहुषको सर्पत्व प्राप्ति और शक्रमोक्षण कथन, ६१ इंद्र और अहल्या सम्वाद, इंद्रका अहल्या धर्षण, उसका गौतमशाप उपलम्भन, ६२ संक्षेपसे रामायण वर्णन, ६३ कंसका दुःस्वप्नदर्शन ६४ कंसयज्ञ कथन, ६५ अक्रूरानन्द कथन, ६६ राधिकाशोक अपनोदन, ६७ राधिकाके प्रति श्रीकृष्णका आध्यात्मिक योग कथन, ६८ राधाशोक विमोचन, ६९ ब्रह्माके साथ श्रीकृष्णका कथोपकथन, और श्रीकृष्णके प्रति रत्नमाला वाक्य, ७० अक्रूर स्वप्नदर्शन वृत्तान्त वर्णन, उसके द्वारा श्रीकृष्णका स्तवकथन और गोपीविषय वर्णन, ७१ श्रीकृष्णका मथुरामें जानेके निमित्त मङ्गलाचार, ७२–७३ श्रीकृष्णका मथुराप्रवेश, पुरीदर्शन, रजकका निग्रह, कुब्जाका प्रसाद, कंसनिधन और देवकी तथा वसुदेवका मोचन, ७४ कर्म्म निगडच्छेद उपदेश, ७५ सांसारिकज्ञान उपदेश, ७६ शुभदर्शन, पुण्यकथन और दानफल कीर्त्तन, ७७ सुस्वप्न फलकथन, ७८ आध्यात्मिक उपदेश और अशुभ दर्शन, जन्मपाप कथन, ७९ सूर्य्यग्रहण बीज कथन, ८० चन्द्रग्रहणादि कारण कथनमें चन्द्रके प्रति उसका अभिशाप कथन, ८१ उसका उद्धारकीर्त्तन, ८२ दुःस्वप्न कथन, उसकी शांति कथन, ८३ चातुर्वर्ण्यका धर्म्म निरूपण, ८४ गृहस्थ धर्म्म निरूपण, स्त्रीचारित्र कीर्त्तन, भक्तलक्षण कथन और संक्षेपसे ब्रह्माण्डका वर्णन, ८५ भक्ष्याभक्ष्य निरूपण और कर्म्मविपाक कथन,

८६ केदारराज कन्याका वृत्तान्त, ब्राह्मणरूपी धर्म्मके प्रति उसका अभिसम्पात और उस स्थानमें उपस्थित देवगणोंके अनुरोधसे उसकी शापमुक्तिकरण, ८७ भगवान्‌के समीपमें पुलहादि ऋषिका समागम, और उनके साथ भगवान्‌का संलाप, ८८ नन्दराजाको भगवान्‌का महादेवकृत प्रकृति स्तोत्रदान, ८९ नन्दराजाके प्रति भगवान्‌की उक्ति, ९० यमधर्म कथन, ९१ भगवान्‌के साथ देवकी और वसुदेवका सम्वाद, ९२ श्रीकृष्ण प्रेरित उद्धवका वृन्दावनमें आगमन, वृन्दावन दर्शन और उनका किया श्रीराधिकाका स्तव, ९३ राधिका और उद्धवका कथोपकथन, ९४ उद्धवके प्रति राधाकी सखीकी उक्ति, उद्धवका कलावती उपाख्यान-कथन, ९५ राधिकाका खेदवर्णन, ९६ उद्धवके प्रति राधाका उपदेश, ९७ राधा और उद्धवका सम्वाद, ९८ मथुरामें उद्धवका प्रत्यागमन; भगवान्‌के समीपमें उनकी वृन्दावन वार्त्ताकथन, ९९ वसुदेवके समीपमें गर्गका राम और कृष्णका उपनयन प्रस्ताव, वहां ऋषियोंका गमन, वसुदेव द्वारा प्रकृति वृत्तान्त कथन, १०० वसुदेवके समीपमें देवदेवीका समागम, १०१ कृष्ण और बलरामका उपनयन, वहां आये हुओंका अपने २ घरमें गमन, १०२ सान्दीपनि मुनिके निकट कृष्ण और बलरामका वेदाध्ययन, मुनिपत्नीकृत उनका स्तव और गुरुदक्षिणा दान, १०३ द्वारावती निर्म्माणके निमित्त विश्वकर्माके प्रत्युपदेश कथन प्रसंगमें श्रीकृष्णका वास्तु शुभाशुभ विवरणादि कथन, १०४ श्रीकृष्णसमीपमें ब्रह्मा और सनत्कुमार आदि देवगणोंका समागम, श्रीकृष्णका द्वारका प्रवेशपूर्वक उग्रसेन आदिके साथ कथोपकथन, १०५ रुक्मिणीके विवाहमें भीष्मक राजाके प्रति शतानन्दवाक्य और उसके श्रवण करनेसे रुष्टरुक्मिणीका वाक्य, १०६ रेवती और बलदेवका विवाह, श्रीकृष्णका कुण्डिननगरमें गमन और शाल्वराजाका भगवदधिक्षेप, १०७ हलधर द्वारा रुक्मीका पराजय, श्रीकृष्णका अधिवास, विवाह प्रांगणमें शुभागमन,

भीष्मकराजकृत श्रीकृष्णका स्तव, १०८ रुक्मिणी सम्प्रदान, १०९ श्रीकृष्णके साथ अरुन्धती आदिका कथोपकथन, वरयात्रिगणोंका वधू और वर लेकर द्वारकामें गमन, ११० भगवान्के निकटसे नन्द और यशोदाका कदलीवनगमन, राधा और यशोदाका सम्वाद, १११ यशोदाके प्रति राधिकाका भक्तिज्ञानउपदेश और कृष्णकी राम आदिनाम निरुक्ति कथन, ११२ रुक्मिणीका गर्भाधान, काम जन्म, काम द्वारा शंबर दैत्यवध, रति और कामका द्वारकामें गमन, श्रीकृष्णका सोलहँ सहस्रकामिनियोंके साथ पाणिग्रहण, उनकी अपत्यसंख्या, दुर्वासाको श्रीकृष्णका कन्यासम्प्रदान और दुर्वासाद्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति, ११३ कैलाससे आये दुर्वासाका पार्वतीके उपदेशसे फिर द्वारकामें गमन, श्रीकृष्णका हस्तिनापुरमें गमन, जरासन्ध और शाल्ववध, शिशुपाल और दन्तवक्र वध, कुरुपाण्डवयुद्धमें भूभारहरण, सत्यभामाको पुण्यकव्रत अनुष्ठान कथन, ११४ ऊषा और अनिरुद्धका स्वप्न समागम, चित्रलेखा द्वारा अनिरुद्धहरण ऊषा और अनिरुद्धका गंधर्व विवाह, ११५ रक्षकों द्वारा ऊषाके गर्भ श्रवणसे रुष्ट बाणके प्रति महादेव आदिका हित उपदेश, बाणासुरकी युद्धयात्रा और अनिरुद्ध सम्वाद, ११६ बा०के प्रति अनिरुद्धका द्रौपदीके पञ्चस्वामित्व हेतु कीर्त्तन, शम्बरद्वारा रतिहरण वृत्तान्त कथन और अनिरुद्धद्वारा बाणपराजय, ११७ गणेशके प्रति महादेवका अनिरुद्धपराक्रम कीर्तन, ११८ दूतमुखसे श्रीकृष्णके आनेका सम्वाद सुनकर महादेव और पार्वतीका कर्तव्य विषयक परामर्श, ११९ बाणकी सभामें बलिका आगमन, हर, और बलिके कथोपकथनमें हरद्वारा वैष्णवोंकी प्रशंसा, हरि और बलिके कथोपकथनमें बलिकृत श्रीकृष्णका स्तव, और श्रीकृष्णका बलिको अभयदान, १२० यादव और असुरसेनाका युद्धवर्णन, वैष्णवज्वर उत्पत्ति कथन, और श्रीकृष्णके निकट बाणका पराभव, १२१ शृगालराज

मोक्षण, १२२ स्यमन्तक उपाख्यान, १२३ सिद्धाश्रममें राधाकर्तृक गणेश पूजा, १२४ राधिकाके प्रति गणेशवाक्य, उनको पार्वतीका वरदान, पार्वतीकी आज्ञासे सखियोंद्वारा राधाका सुवेशादि करण, राधिकाके तेजसे विस्मित होकर सिद्धाश्रमवासी देवगणोंका उनके समीपमें आगमन और ब्रह्मादिकृत राधिका स्तव, १२५ महादेवद्वारा वासुदेवका ज्ञानलाभ राजसूययज्ञका अनुष्ठान, १२६ राधाकृष्णका पुनर्वार सम्मिलन, राधाद्वारा श्रीकृष्णका स्तवादि कथन, श्रीकृष्णके प्रति राधिकाके विनयगर्भ विविधप्रश्न और उनके प्रति कृष्णका आध्यात्मिक ज्ञानोपदेश कथन, १२७ राधाकृष्णका विहार और यशोदाका आनन्द, १२८ नन्दके प्रति श्रीकृष्णका कलिधर्म्म कथन, गोकुलवासियोंका राधाके साथ गोलोकमें गमन, १२९ भाण्डीरवनमें प्राप्त ब्रह्मादिद्वारा श्रीकृष्णका स्तव, यदुकुलध्वंस, पाण्डवगणोंका स्वर्गारोहण, भागीरथी प्रति भगवतीका वरदान और गोलोकारोहण, १३० नारदका बदरिकाश्रमसे ब्रह्मलोकमें गमन, सञ्जयकन्याके साथ विवाह और विहार, सनत्कुमारके उपदेशसे तपस्यामें गमन, उनके प्रति शम्भुका उपदेशवाक्य और नारदकी मुक्ति, १३१ अग्नि और सुवर्णकी उत्पत्ति कथन, १३२ संक्षेपसे ब्रह्मादि खण्डचतुष्टयार्थ निरूपण, १३३ महापुराण और उपपुराणलक्षण कथन, महापुराणकी श्लोक संख्या, उपपुराणका नामकीर्तन, ब्रह्मवैवर्तकी नामनिरुक्ति कथन, उसका माहात्म्य वर्णन, श्रवणफल और श्रवणक्रमसे यथाक्रम अनुकीर्तन.

अब विचार यह है कि, उक्त ब्रह्मवैवर्तको प्रकृतपुराण वा आदि-ब्रह्मवैवर्तपुराण कहकर ग्रहण करसकते हैं या नहीं ?

मत्स्यपुराणके मतसे—

" रथन्तरस्य कल्पस्य वृत्तान्तमधिकृत्य च।
सावर्णिना नारदाय कृष्णमाहात्म्यमुत्तमम् ॥

यत्र ब्रह्मवराहस्य चरितं वर्ण्यते मुहुः ।
तदष्टादशसाहस्रं ब्रह्मवैवर्त्तमुच्यते ॥

रथन्तर कल्पके वृत्तांत प्रसङ्गमें जिस ग्रंथमें सावर्णिने नारदको कृष्णमाहात्म्य और ब्रह्मवराहका चरित विस्तृतभावसे वर्णन किया है, वही अठारह सहस्र ब्रह्मवैवर्त पुराण है.

शैवपुराणके उत्तरखण्डमें लिखाहै—

" विवर्त्तनाद्ब्रह्मणस्तु ब्रह्मवैवर्त्तमुच्यते ।

ब्रह्माके विवर्त प्रसंगके कारण इस पुराणको ब्रह्मवैवर्त कहा जाता है. नारदपुराणमें इस प्रकार अनुक्रमणिका दीगई है.

" शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि पुराणं दशमं तव ।
ब्रह्मवैवर्त्तकं नाम वेदमार्गानुदर्शकम् ॥
सावर्णिर्यत्र भगवान् साक्षाद्देवर्षयेऽर्थितः ।
नारदाय पुराणार्थं प्राह सर्वमलौकिकम् ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षाणां सारं प्रीतिर्हरौ हरे ।
तयोरभेदसिद्ध्यर्थं ब्रह्मवैवर्त्तमुत्तमम् ॥
रथन्तरस्य कल्पस्य वृत्तान्तं यन्मयोदितम् ।
शतकोटिपुराणे तत् संक्षिप्य प्राह वेदवित् ॥
व्यासश्चतुर्धा संव्यस्य ब्रह्मवैवर्त्तसंज्ञितम् ।
अष्टादशसहस्रन्तत् पुराणं परिकीर्त्तितम् ॥
ब्रह्मप्रकृतिविघ्नेशकृष्णखण्डसमाचितम् ।
तत्र सूतर्षिसम्वादे पुराणीयक्रमो मतः ॥
सृष्टिप्रकरणं त्वाद्यं ततो नारदवेधसोः ।
विवादः सुमहान् यत्र द्वयोरासीत् पराभवः ॥
शिवलोकगतिः पश्चाज्ज्ञानलाभः शिवान्मुनेः ।
शिववाक्येन तत्पश्चात् मरीचेर्नारदस्य च ॥

मननञ्चैव सावर्णेर्ज्ञानार्थं सिद्धसेविते ।
आश्रमे सुमहापुण्ये त्रैलोक्याश्चर्य्यकारिणि ॥
एतद्धि ब्रह्मखण्डं हि श्रुतं पापविनाशनम् ।
ततःसावर्णिसम्वादो नारदस्य समीरितः ॥
कृष्णमाहात्म्यसंयुक्तो नानाख्यानकथोत्तरः ।
प्रकृतेरंशभूतानां कलानाञ्चापि वर्णितम् ॥
माहात्म्यं पूजनाद्यञ्च विस्तरेण यथा स्थितम् ।
एतत् प्रकृतिखण्डं हि श्रुतिभूतिविधायकम् ॥
गणेशजन्मसंप्रश्नसपुण्यकमहाव्रतम् ।
पार्वत्याः कार्तिकेयेन सह विघ्नेशसम्भवः ॥
चरितं कार्त्तवीर्य्यस्य जामदग्न्यस्य चाद्भुतम् ।
विवादः सुमहान् पश्चाज्जामदग्न्यगणेशयोः ॥
एतद्विघ्नेशखण्डं हि सर्वविघ्नविनाशनम् ।
श्रीकृष्णजन्मसंप्रश्नो जन्माख्यानं ततोऽद्भुतम् ॥
गोकुले गमनं पश्चात् पूतनादिवधोऽद्भुतः ।
वाल्यकौमारजा लीला विविधास्तत्र वर्णिताः ॥
रासक्रीडा च गोपीभिः शारदी समुदाहृता ।
रहस्ये राधया क्रीडा वर्णिता बहुविस्तरा ॥
सहाक्रूरेण तत्पश्चान्मथुरागमनं हरेः ।
कंसादीनां वधे वृत्ते स्यादस्य द्विजसंस्कृतिः ॥
काश्यां सान्दीपनेः पश्चाद्विद्योपादानमद्भुतम् ।
यवनस्य वधः पश्चाद्द्वारकागमनं हरेः ॥
नरकादिवधस्तत्र कृष्णेन विहितोऽद्भुतः ।
कृष्णखण्डमिदं विप्र नृणां संसारखण्डनम् ॥"

हे वत्स ! सुनो तुम्हारे निकट ब्रह्मवैवर्त्त नामक वेदपथानुदर्शक दशम पुराण कहता हूं, जो कि साक्षात् भगवान् सावर्णिने प्रार्थित होकर देव-

र्षिनारदके निकट अलौकिक पुराणार्थ कहा था। धर्म्म, अर्थ, काम, और मोक्ष इन सबका सार और भगवान् हरि तथा हरकी प्रीति, इन दोनोंकी अभेदासिद्धिके निमित्तही यह उत्तम ब्रह्मवैवर्त प्रवर्तित हुआ है। मैंने रथन्तरकल्पका जो वृत्तान्त कहा था, वेदवित् व्यासने उसको शतकोटिक पुराणमें संक्षेपरूपसे वर्णन किया है, वेदवित् व्यासने इस ब्रह्मवैवर्त पुराणके ब्रह्म प्रकृति, गणेश और कृष्णखण्डनामक चारभागोंमें विभक्तकरके अठारह सहस्र श्लोकद्वारा कीर्तन किया है। सूत और ऋषिसम्वादमें पुराणका उपक्रम हुआ है.

इसके प्रथममें सृष्टिप्रकरण, फिर नारद और वेधाका विवाद, दोनोंकाही पराभव, शिवलोकमें गति, नारदमुनिको शिवसे ज्ञानलाभ और शिववाक्यसे, मरीचि और नारदके ज्ञानलाभार्थ सिद्धसेवित परम पवित्र त्रैलोक्याश्वर्य्यकारी आश्रममें गमन, पापनाशक इस ब्रह्मवैवर्त्तमें यह सब वर्णित हैं.

दूसरा प्रकृतिखण्ड इसमें सम्वाद, कृष्णमाहात्म्ययुक्त नाना आख्यान और प्रकृतिके अंशभूत कलासमुदायका माहात्म्य और पूजनादिका विस्तृतरूपसे वर्णन हुआ है, इस प्रकृतिखण्डके श्रवण करनेसे ऐश्वर्य्य प्राप्तहोता है.

गणेशजन्म प्रश्न पार्वतीका पुण्यकव्रत, कार्तिकेय और गणेशकी उत्पत्ति, कार्त्तवीर्य्य और जामदग्न्यका अद्भुत चरित, गणेश और जामदग्न्यका घोर विवादकथन, सर्व विघ्नविनाशक गणेश खण्डमें इतनी बातें हैं.

श्रीकृष्णजन्म संप्रश्न, फिर जन्माख्यान, गोकुलमें गमन, पूतनादि वध, बाल्य, कौमार विविधलीला, गोपियोंके संग श्रीकृष्णकी शारदी रासक्रीडा, निर्जनमें राधाके साथ क्रीडा, फिर अक्रूरके साथ हरिका मथुरागमन, कंसादिका वध, काशीमें सन्दीपनिके निकट विद्याग्रहण,

यवनका वध, हरिका द्वारकागमन और कृष्णका नरकासुरादिवध । यह सम्पूर्ण कथा कृष्णजन्म खण्डमें वर्णित हुई हैं । हे विप्र ! इस सब वृत्तांतके करनेसे मनुष्योंका संसारबंधन कट जाता है ।

मत्स्य शैव वा नारदोक्तलक्षणके साथ प्रचलित ब्रह्मवैवर्त्तकी एकता नहीं है । रथन्तरकथन सावर्णि नारद सम्वाद ब्रह्म वराहका वृत्तान्त वा ब्रह्मका विवर्तप्रसङ्ग,इनमेंसे कोई भी प्रचलित ब्रह्मवैवर्त पुराणमें नहीं पाया जाता । अधिक क्या नारदपुराणमें जो चार खण्डोंके नाम संक्षेपसे विषयानुक्रमें दिया गया है प्रचलित ब्रह्मववर्त इसी प्रकार चार खण्डोंमें विभक्त होने-पर भी अनेक विषयोंमें नहीं मिलता। नारदोक्त ब्रह्मखण्डीय सृष्टिप्रकरण, नारद ब्रह्माविवाद, नारदकी शिवलोकमें गति और शिवसे ज्ञानलाभ यह सब विषय इस समयके ब्रह्मवैवर्तमें होनेपर भी नारद और मरीचिका गमन तथा सिद्धाश्रममें गमन और सावर्णिकी कथा एक कालमें ही छोडदी गई है। इसी प्रकार नारदोक्त प्रकृतिखण्डमें सावर्णि नारदसम्वाद और मुख्यरूपसे कृष्णमाहात्म्यकी कथा होनेपर भी प्रचलित ब्रह्मवैवर्तमें नहीं है गौणरूपसे कृष्णकथा है। किन्तु प्रकृतिका माहात्म्य और पूजादि विस्तारसे वर्णित हुई है । नारदमें जैसे गणेशखण्ड और कृष्णजन्मखण्ड अनुक्रम-णिका है, प्रचलित ब्रह्मवैवर्त्तमें वह सब ही पाई जाती है.

अब संदेह यह है कि प्रचलित ब्रह्मवैवर्त्तको आदि ब्रह्मवैवर्त्त कहकर ग्रहण करसकते हैं या नहीं ?

ब्रह्मववत्तम ही लिखा है—

" विवृतं ब्रह्म कात्स्न्येंन कृष्णेन यत्र शौनक ।
ब्रह्मवैवर्त्तकं तेन प्रवदन्ति पुराविदः ॥
इदं पुराणसूत्रं च पुरादत्तं च ब्रह्मणे ।
निरामये च गोलोके कृष्णेन परमात्मना ॥

महातीर्थे पुष्करे च दत्तं धर्म्माय ब्रह्मणा ।
धर्म्मेणेदं स्वपुत्राय प्रीत्या नारायणाय च ॥
नारायणोऽयं भगवान् प्रददौ नारदाय च ।
नारदो व्यासदेवाय प्रददौ जाह्नवीतटे ॥
व्यासः पुराणसूत्रं तत्संव्यस्य विपुलं महत् ।
मह्यं ददौ सिद्धक्षेत्रे पुण्यदे सुमनोहरम् ॥
यदिदं कथितं ब्रह्मंस्तत् समग्रं निशामय ।
अष्टादशसहस्रन्तु व्यासेनेदं पुराणकम् ॥

(ब्रह्मखण्ड १–१०–६)

हे शौनक ! कृष्णद्वारा ब्रह्म विवृत होनेके कारण पुरातनलोग (इसको) ब्रह्मवैवर्त्त कहते हैं। निरामय गोलोकमें परमात्मा कृष्णने ब्रह्माको यह पुराणसूत्र दिया था, फिर पुष्कर महातीर्थमें ब्रह्माने धर्म्मको दान किया, धर्म्मने प्रसन्न होकर अपने पुत्र नारायणको, भगवान् नारायणने नारदको, नारदने व्यासदेवको गंगा तटपर.यह पुराण सूत्र अर्पण कियाथा। व्यासने पुण्यदायक सिद्धक्षेत्रमें इस मनोहर पुराणको मुझे दान किया था, यह जो पुराणकी कथा कही यह व्यासरचित १८००० श्लोकम सम्पूर्ण हुई है.

ब्रह्मवैवर्त्तकी निज उक्तिके अनुसारही इसको मात्स्य वा शैव वर्णित ब्रह्मवैवर्त कहकर ग्रहण नहीं किया जाता। इन दो पुराणोंकी वर्णनाके अनुसार इसको ब्राह्म वा ब्रह्मका माहात्म्य प्रकाशक पुराण कह सकते हैं। फिर स्कन्दपुराणीय शिवरहस्य खण्डके मतसे "सवितुर्ब्रह्मवैवर्तं " अर्थात् ब्रह्मवैवर्त सविताकी महिमा प्रकाश करता है। अधिक क्या मत्स्यके मतसे भी 'जो इस ब्रह्मवैवर्तको दान करता उसका ब्रह्मलोकमें वास होता है।' किन्तु प्रचलित ब्रह्मवैवर्तकी निज उक्तिके अनुसार इसको वैष्णव पुराणही समझा जाता है। इधर फिर ब्रह्मवैवर्तकी आलोचना करनेमें

ब्रह्मवैवर्तके उद्धृत वचनके साथभी सामञ्जस्य नहीं किया जाता। क्योंकि ब्रह्मवैवर्तके उपक्रममें लिखा है, 'कृष्णने इस पुराणमें ब्रह्मतत्त्व प्रकाश-किया था, इस कारणही उसका नाम ब्रह्मवैवर्त्त है।' किन्तु प्रचलित ब्रह्म-वैवर्तके इस विषयमेंही ऐसा नहीं पाया जाता। इसही कारण कोई कहते हैं कि इस समयका यह ब्रह्मवैवर्त पुराण दूसरी बारके संस्कारका है आदि ब्रह्मवैवर्त पुराणमें विस्तृत रूपसे ब्रह्मवाराहका माहात्म्य अथवा ब्रह्माका विवर्त विषय वर्णित था पश्चात् सावर्णि वसिष्ठ सम्वादमें कृष्ण चरित्र प्रविष्ट हुआ है उस समय वा उसके पीछे यह आदित्य माहात्म्य-वाला सौर ग्रंथ गिना गया पश्चात् संस्कारको प्राप्त होकर यह पुराण वैष्णव कहाया श्रीसम्प्रदायादि गौड वैष्णव पुराणकोही सात्त्विक कहते हैं पर यह पुराण तंत्रकाभी प्रकाशक है इस कारण राजस गिना गया प्रकृतिरूपी शक्तिका प्राधान्य होनेसे देवीयामलआदि ग्रन्थोंमें इस पुराणको शाक्त कहा है इस पुराणमें ऐसे श्लोक निश्चय बहुतकाल पीछेके हैं 'यथा म्लेच्छात् कुविन्दकन्यायां जोला जातिर्बभूव ह' १० । १२१ म्लेच्छके औरससे कुविन्द कन्यामें जोला (जुलाहा) जाति उत्पन्न हुई है वंगदेशमेंही यह जाति जोला कहाती है तो यह अंश वंगदेशमेंही सन्निविष्ट हुआ है तथा शंखचुडके युद्धमें राढीय और वारेन्द्र बंगाली नाम पाये जाते हैं भागवतके समान यह भी दशलक्षणवाला महापुराण कहा गया है.

हमारा इसमें यह कहना है कि यद्यपि ऐसे श्लोक इस पुराणमें प्रक्षिप्त भी हों और इसका दूसरा संस्करण हुआभी हो परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि कुछ थोडे लौट बदलको छोडकर इसका क्रम कथाभाग आदि ब्रह्म-वैवर्त पुराणकाही है इसमें सन्देह नहीं.

निर्णयसिंधुमें लघुब्रह्मवैवर्त पुराणका उल्लेख है किन्तु वह पाया नहीं जाता.

दाक्षिणात्योंमें एक ब्रह्मवैवर्तनाम पुराण प्रचलित है इस पुराणमें ही बहुतसे ब्रह्मवैवर्तके लक्षण हैं.

अलंकार दानविधि, अहीशकुटिमाहात्म्य, आदि रत्नेश्वर माहात्म्य, एकादशीमाहात्म्य, कृष्णस्तोत्र, गंगास्तोत्र, गणेशकवच, गरुडाचलमाहात्म्य, गर्भस्तुति घटिकाचलमाहात्म्य, तपस्तीर्थमाहात्म्य, तुलाकावेरी माहात्म्य, पञ्चानन्दमाहात्म्य, परशुरामप्रति शंकरोपदेश, पुष्पवनमाहात्म्य, वकुलारण्यमाहात्म्य, ब्रह्मारण्यमाहात्म्य, मुक्तिक्षेत्रमाहात्म्य, राधोद्धवसम्वाद, वृद्धाचलमाहात्म्य, श्रवणद्वादशीव्रत, श्रीगोष्ठीमाहात्म्य, सर्वपुरक्षेत्रमाहात्म्य, स्वामिशैलमाहात्म्य, इतने ब्रह्मवैवर्त्तके और काशीकेदारमाहात्म्य, काशीमाहात्म्य, चम्पकारण्यमाहात्म्य, जल्पेश्वरमाहात्म्य, तुलाकावेरीमाहात्म्य, दुर्गापुरीमाहात्म्य, देवीपुरीमाहात्म्य, पञ्चनदमाहात्म्य, पुष्पवनमाहात्म्य, बुद्धिगिरिमाहात्म्य, वेतालकवच, वेदारण्यमाहात्म्य, श्वेतारण्यमाहात्म्य, सुवर्णस्थानमाहात्म्य और स्वामी गिरिमाहात्म्य, यह क्षुद्रपोथी ब्रह्मवैवर्त्तके अन्तर्गत प्रचलित हैं. (१)

लिंगपुराण ११.

पूर्वभागमें—१ सूत और नैमिषेय सम्वाद, २ सूतका संक्षेपसे लिंग पुराण प्रतिपाद्यवर्णन, ३ प्राकृतसर्ग, ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति कथन, युगादि परिणाम कथन, ५ ब्रह्मकृतावियादि ब्रह्माण्डसर्गकथन, ६ वह्निपितृरुद्रकृतसृष्टिकथन, ७ शिवअनुग्रहसे निर्वृति कथन, ८ योगमार्गद्वारा शिवाराधनाविधि, अष्टाङ्गसाधनक्रमकथन, ९ योगियोंको विघ्न उपसर्गसिद्धिकथन, अष्टविधऐश्वर्यलाभकथन,

---

१ " सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं विप्र पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥
एतदुपपुराणानां लक्षणञ्च विदुर्बुधाः ।
महताञ्च पुराणानां लक्षणं कथयामि ते ॥
सृष्टिश्चापि विसृष्टिश्च स्थितिस्तेषांच पालनम् ।
कर्म्मणां वासनावार्त्तामनूनां च क्रमेण च ॥
वर्णनं प्रलयानां च मोक्षस्य च निरूपणम् ।—

पुरा।

१०, महेशप्रसाद पात्र कथन, लिंग पूजादि कथन, ११ श्वेत लोहित कल्पप्रसंगमें सद्योजात और तच्छिष्यसम्भवकथन, १२ रक्तकल्पप्रसंगमें वामदेव और तच्छिष्यसम्भववर्णन, १३ पीतमासकल्पप्रसंगमें तत्पुरुषगायत्रीसम्भववर्णन, १४ असितकल्पप्रसंगमें अघोरोद्भवकथन, १५ अघोरमंत्रविधिकथन, १६ विश्वकल्पप्रसंगमें ईशानसम्भव, पञ्चब्रह्मात्मकस्तोत्र, गायत्रीकी विचित्रमहिमावर्णन, १७सद्य आद्युद्भूत महिमा वर्णन ब्रह्मा और विष्णुके विवाद भञ्जनार्थ लिंगोत्पत्ति, १८ विष्णुकृत शिवस्तोत्र, उसकी फलश्रुतिकथन, १९ ब्रह्माविष्णुके वरप्राप्तिसे आह्लादित महेश्वरका मोह नाश वर्णन, २० पाद्मकल्पप्रसंगमें विष्णुके नाभिकमलसे ब्रह्माकी उत्पत्ति और रुद्रदर्शन, २१ ब्रह्मा और विष्णुकृत शिवस्तव, २२ ब्रह्मा और विष्णुके महेश्वरकी वरप्राप्ति सर्परुद्रसम्भव, २३ श्वेतकल्प प्रसङ्गमें ब्रह्माके प्रश्नानुरोधसे शिवकी सद्यआद्युत्पत्ति और गायत्री महिमा कथन, २४ ब्रह्माके निकट शिवका योगाचार्य्यावतार, विभिन्न द्वापरमें उसके शिष्य विभिन्न व्यास और भविष्य व्यासादिका कथन, २५ ऋषियोंद्वारा जिज्ञासित होकर सूतका संक्षेपसे स्नानविधि और क्रमकथन, २६ संध्या और पञ्चयज्ञादि विधि कथन, २७ लिङ्गार्चन विधि कथन २८ मानसशिवपूजादि कथन, २९ देवदारु वनवासी ऋषियोंके चरित्रवर्णन प्रसंगमें सुदर्शन उपाख्यान, ३० शंकरआराधनासे श्वेतकी मृत्यु ग्राससे मुक्ति, ३१ ब्रह्माकरके कहेहुए विधानमें तापसी ऋषियोंका शिवका साक्षात् कार, ३२ऋषियोंका किया हुआ शिवका स्तव, ३३ शिवद्वारा स्तव और शैवमाहात्म्यवर्णन, ३४ ऋषियोंके प्रश्नके

—"उत्कीर्त्तनं हरेरेव देवानाञ्च पृथक् पृथक् ॥
दशादिकं लक्षणं च महतां परिकीर्त्तितम् ।
संख्यानञ्च पुराणानां निबोध कथयामि ते ॥"

(कृष्णजन्मखण्ड १३२ अ०)

(भागवतके विवरणमें विष्णु भागवतोक्त पुराणलक्षणादि देखने चाहिये ।)
इस पुराणकी सूची हम संग्रह नहीं करसकते ।

अनुसार शिवकथितभस्मस्नानादि निरूपण, ३५ क्षुपताडित दधीचि द्वारा शिवप्रसादसे वज्रास्थि प्राप्त करके क्षुपका मुण्डताडन, ३६ क्षुपके द्वारा विष्णुका स्तव, देवगणके साथ विष्णु और दधीचिका पराभव, ३७ सनत्कुमार द्वारा जिज्ञासित होकर मन्दिर उत्पत्तिविवरणकथा, ३८ विधाताके समीपमें विष्णु और शिवका माहात्म्यवर्णन, सृष्टिप्रकरण, ३९ युगधर्म्म, पुराणक्रमादि कथन, ४० कलिधर्म्म, सत्ययुग आरम्भ, कल्प मन्वन्तरादिकीर्त्तन, ४१ ब्रह्माको देवीपुत्रत्वकथन, त्रिमूर्तिक परस्पर उत्पादकत्वकथन, ४२ तपःप्रीणितमहादेवके अनुग्रहसे शिलादको पुत्र लाभ, ४३ नन्दीको मनुष्याकार लाभ, और महादेवकी महाप्रसाद प्राप्तिकथन, ४४ नन्दीको शिवकृत गाणपत्याभिषेक और विवाह, ४५ ऋषियोंके निकट सूतका शिवकी रूप समष्टि वर्णन अधस्तलादि कथन, ४६ पृथिवी–द्वीप–सागरकथन, प्रियव्रतपुत्रको पृथिवीका आधिपत्यकीर्त्तन, ४७ जम्बूद्वीपक अन्तर्गत नववर्ष कथन, अग्नीध्र· वंशवर्णन, ४८ सुमेरुमान और सूर्य्याष्टिकादि कथन, ४९ जम्बूद्वीपमान, वर्षपर्वतादि कथन, ५० मितान्न शिखरादिको शक्रादिका पुण्यायतनकीर्त्तन, ५१ शिवके प्रधानचतुःस्थानका कीर्त्तन, ५२ गङ्गाउद्भवादि कथन, ५३ प्लक्षद्वीपादिकथन ऊर्ध्वलोक और नरकादिकीर्त्तन, ५४ सूर्य्यकी गतिनिरूपण, ध्रुवादिकथन, ५५ शिवरूपी सूर्य्यके चैत्रादि मासक्रमसे द्वादशभेदकथन, ५६ सोमरथादिवर्णन, ५७ बुधादि रथग्रहमण्डलमानादि कीर्त्तन, ५८ सूर्य्य आदिक ग्रहोंके आधिपत्यमें शिवका अभिषेचन, ५९ त्रिविधवह्नि और सूर्य्य रश्मि सहस्रकार्य्यादिकथन, ६० ग्रहप्रकृत्यादि कथन, ६१ ग्रहादिस्थानाभिमानिदेवकथन, ६२ ध्रुवचरित, ६३ दक्षदेववसिष्ठादि सर्गकथन, ६४ वसिष्ठका पुत्रशोक, पराशरकी उत्पत्ति, राक्षसगणदाहन, ६५ चन्द्र सूर्य्य वर्णन प्रसंगमें तण्डिकोक्त

शिवका सहस्रनाम कीर्त्तन, ६६ त्रिधन्वादि सूर्य्यवंशीय राजा ययाति पर्य्यन्त चंद्रवंशीय राजगणवर्णन, ६७ ययाति चरित, ६८ सात्वत और यदुवंशकीर्त्तन, ६९ कृष्णावतार कथा, ७० शिवकृत आदिसर्ग कथन, ७१ त्रिपुरवृत्तान्त, उनके नाशमें देवतागणोंका यत्न, ७२ त्रिपुरनाशके निमित्त ईश्वरका अभिप्राय, ७३ देवगणके प्रति ब्रह्माकी लिंगार्चनविधिकथन, ७४ लिंगभेद और लिंग संस्थापनफल कथन, ७५ निर्गुण शिवका योगागम्यत्वकथन, ७६ विविध शिवमूर्ति प्रतिष्ठाका फलकथन, ७७ शिवालय निम्मार्णफल कथन, शिवक्षेत्र मानादि कथन, ७८ वस्त्रपूतजलसे कार्य्य करनेका उपदेश, अहिंसा भक्ति फलकथन; ७९ उच्छिष्टादिगणकृत शिवपूजा, दीपदान आदिका फल कथन, ८० शिव देवगणसम्वाद, देवताओंका पशुत्वमोचन, ८१ पाशुपतव्रतकथन, ८२ व्यपोहन स्तवकथन, ८३ विविधशिवव्रतकथन, ८४ उमामहेश्वर व्रतकथन, ८५ पञ्चाक्षर विधि कथन, ८६ सर्वदुःख निवारक शिवकथित ध्यानादि कथन, ८७ शिवके अनुग्रहसे सनत्कुमारादिकोंको मायासे मुक्ति, ८८ अणिमाद्यष्टसिद्धि, त्रिगुणसंसारादिकथन; ८९ योगिसदाचार; द्रव्यशुद्धि, स्त्रीधर्म्मनिरूपण, ९० शिवोक्त यतिप्रायश्चित्त विधि, ९१ मृत्युचिह्न प्रणवमाहात्म्य और शिवोपासनादि कथन, ९२ वाराणसीमाहात्म्यकथन, ९३ अन्धकासुर निग्रह, बलराम गाणपत्यप्राप्ति, ९४ वाराहद्वारा हिरण्याक्षवध और उद्धार, ९५ नृसिंहका हिरण्यकशिपुवध, ९६ नृसिंह वीरभद्रसम्वाद, नृसिंह पराजय, *९७ जलन्धरवधादि कथन, ९८ शिवके सहस्रनाम सुनकर अपने नेत्रकमलद्वारा पूजाकरके विष्णुको सुदर्शनचक्रकालाभ, ९९ देवका शिववामाङ्गत्व और दक्ष हिमालय सम्भवत्वकथन प्रसङ्ग, १०० दक्षयज्ञध्वंस, १०१ पार्वतीकी तपस्या, मदनभस्म, १०२ देवीको शंकर

* यह अध्याय सांप्रदायिकता लिये हुये बोधहोता है यह चिन्त्य है।

प्रसादलाभ, १०३ शिवविवाह और पुत्रउत्पादन, १०४ गणेशसृष्टिके निमित्त सर्व देवताकृत शिवका स्तव १०५ गणेश उत्पत्ति, १०६ शिवके नृत्यारम्भ प्रसङ्गमें कालीकी उत्पत्ति, १०७ भक्त उपमन्युके प्रति शिवका प्रसाद, १०८ उपमन्युके निकट श्रीकृष्णको शैवदीक्षा ग्रहण.

उपरिभागमें—१ मार्कण्डेयाम्बरीष सम्वादमें कौशिक वृत्तांत कथन, २ विष्णु माहात्म्यकीर्त्तन, ३ नारदको गीतवाद्यलाभ, ४ विष्णुभक्तलक्षण और उनका माहात्म्यवर्णन,५अम्बरीष चरित, ६ अलक्ष्मी समुत्पत्त्यादि कथन,७अलक्ष्मी निराकरण, लक्ष्मीप्राप्तिके उपायकथन, ८ धौन्धुमूकचरित,९पशुनिरूपण,पाशकथन,शिवके पशुपतिनामकी निरुक्ति,१०शिवसाक्षात्में सर्वसृष्टिकथन, ११ शिवकी विभूति कथन; लिंग पूजामाहात्म्य-१२ अष्टमूर्ति कथन, १३ अष्टमूर्त्तिकी पृथक् २ संज्ञा स्त्रीपुत्रकथन, १४ शिवके पञ्चब्रह्मरूपवर्णन, १५ शिवके रूपनिरूपणमें ऋषियोंका मत, १६ शिवको अनेकप्रकारके नाम रूपकीर्तन, १७ सगुण रुद्रविग्रहमें विश्वकी उत्पत्ति कथन, १८ ब्रह्मादिकृत शिवका स्तव, १९ मण्डलमें शिवपूजाविधि,२०—२१ मण्डलपूजा अधिकारीगणोंको शिवदीक्षा विधि कथन, शिवपूजानियमादि कथन, २२ सौर स्नानादि निरूपण,२३मानस शिवपूजा, २४ शिवपूजा विशेष उक्ति, २५ शिवकथित अग्निकार्य्य कथन, २६ अघोर पूजा कथन, २७ जयाभिषेक कथन, २८ तुलादानकथन २९ हिरण्यगर्भ विधि, ३० तिल पर्वतदानविधि, ३१ स्वल्पतिलपर्वतदानविधि, ३२ सुवर्ण मेदिनी दानविधि, ३३ कल्पपादप दानविधि, ३४ गणेशदानविधि, ३५ हेमधेनुदानविधि, ३६ लक्ष्मीदान विधि, ३७ तिलधेनुदानविधि, ३८ गोसहस्रप्रदानविधि, ३९ हिरण्याश्वदानविधि, ४० कन्यादानकथन, ४१ हिरण्यवृषदानविधि, ४२ गजदानविधि, ४३ अष्टलोकपालदानविधि, ४४ श्रष्ठदानकथन, ४५ जीवश्राद्धकथन, ४६ ऋषियोंका प्रतिष्ठा विषयक प्रश्न, ४७ लिंग स्थापन, ४८ सूर्य्यादि देवता स्थापनाविधि, ४९ अघोरेश प्रतिष्ठा कथन,

५० शत्रुनिग्रहप्रकारकथन, ५१ वज्रवाहनिका विद्या कथन, ५२ तद्विनियोग प्रकार, ५३ मृत्युञ्जय विधि कथन, ५४ त्रियम्बक मंत्रद्वारा शिव पूजा कथन, ५५ योग कथन, लिंगपुराण पाठ, श्रवण और सुनानेका फल कथन.

अब विचार यह है कि, उक्त लिंगको प्रकृत पुराणमें गिनसकते हैं या नहीं ? मत्स्य पुराणके मतसे.

" यत्राग्निलिङ्गमध्यस्थः प्राह देवो महेश्वरः ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थमाग्नेयमधिकृत्य च ॥
कल्पान्तं लिङ्गमित्युक्तं पुराणं ब्रह्मणा स्वयम् ।
तदेकादशसाहस्रं फाल्गुन्यां यः प्रयच्छति ॥ "

जिस ग्रन्थमें देवमहेश्वरने अग्निलिंगमध्यस्थ होकर अग्निकल्पान्तर्मे धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षार्थ कथा प्रकाश की थीं, एकादश सहस्रयुक्त वह पुराणही ब्रह्माद्वारा लिंग नामसे वर्णित हुआ है.

फिर नारद पुराणमें लिंगपुराणकी इस प्रकार अनुक्रमणिका पाई जाती है.

" शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि पुराणं लिङ्गसंज्ञितम् ।
पठतां शृण्वतां चैव भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥
यच्च लिङ्गाभिधं तिष्ठन् वह्निलिङ्गे हरोऽभ्यधात् ।
मह्यं धर्म्मादिसिद्ध्यन्तं अग्निकल्पकथाश्रयम् ॥
तदेव व्यासदेवेन भागद्वयसमाचितम् ।
पुराणं लिङ्गमुदितं बह्वाख्यानं विचित्रितम् ॥
तदेकादशसाहस्रं हरमाहात्म्यसूचकम् ।
परं सर्वपुराणानां सारभूतं जगत्त्रये ॥
पुराणोपक्रमे प्रश्नं सृष्टिसंक्षेपतः पुरा ।
योगाख्यानं ततः प्रोक्तं कल्पाख्यानं ततः परम् ॥

लिङ्गोद्भवस्तदर्चा च कीर्त्तिता हि ततः परम् ।
सनत्कुमारशैलादि संवादश्चाथ पावनः ॥
ततो दधीचिचरितं युगधर्म्मनिरूपणम् ।
ततो भुवनकोषाख्यो सूर्य्यसोमान्वयस्ततः ॥
ततश्च विस्तरात् सर्गस्त्रिपुराख्यानकं तथा ।
लिङ्गप्रतिष्ठा च ततः पशुपाशविमोक्षणम् ॥
शिवव्रतानि च तथा सदाचारनिरूपणम् ।
प्रायश्चित्तान्यरिष्टानि काशीश्रीशैलवर्णनम् ॥
अन्धकाख्यानकं पश्चाद्वाराहचरितं पुनः ।
नृसिंहचरितं पश्चाज्जलन्धरवधस्ततः ॥
शैवं सहस्रनामाथ दक्षयज्ञविनाशनम् ।
कामस्य दहनं पश्चात् गिरिजायाः करग्रहः ॥
ततो विनायकाख्यानं नृत्याख्यानं शिवस्य च ।
उपमन्युकथा चापि पूर्वभाग इतीरितः ॥
विष्णुमाहात्म्यकथनमम्बरीषकथा ततः ॥
सनत्कुमारनन्दीशसम्वादश्च पुनर्मुने ॥
शिवमाहात्म्यसंयुक्तं स्नानयागादिकं ततः ।
सूर्य्यपूजाविधिश्चैव शिवपूजा च भुक्तिदा ॥
दानानि वहुधोक्तानि श्राद्धप्रकरणं ततः ।
प्रतिष्ठा तत्र गदिता ततोऽघोरस्य कीर्तनम् ॥
व्रजेश्वरी महाविद्यागायत्रीमहिमा ततः ।
त्र्यम्बकस्य च माहात्म्यं पुराणश्रवणस्य च ॥
एतस्योपरिभागस्ते लैङ्गस्य कथितो मया ।
व्यासेन हि निबद्धस्य रुद्रमाहात्म्यसूचितः । "

हे पुत्र ! सुनो, मैं तुम्हारे निकट लिंगपुराण कहता हूं भगवान् ने हर वह्नि लिंग मध्यस्थ रहकर मेरे निकट धर्म्मादि सिद्धिके निमित्त जो अग्नि-

कल्प कथाश्रय लिंगपुराण कहा था, व्यासदेवने उसको ही दोभागोंमें विभक्त किया है। यह लिंगपुराण अग्निके आख्यानमें विचित्रित हुआ है। यह हरमाहात्म्यसूचक ग्यारह सहस्र श्लोक परिपूर्ण और जगत्त्रयमें सर्व पुराणोंका सारस्वरूप है। इसमें प्रथमतः पुराणोपक्रम प्रश्न और संक्षेपसे सृष्टि वर्णन है। इस पूर्वभागमें यागाख्यान, कल्पाख्यान लिंगोत्पत्ति, और उसकी अर्चना, सनत्कुमार और शैलादिका पवित्रसम्वाद, दधीचि-चरित्र, युगधर्म्म निरूपण, भुवनकोपाख्यान, सूर्य्य और सोमवंश विस्तृत-रूपसे सृष्टि, त्रिपुराख्यान, लिंगप्रतिष्ठा, पशुपाश विमोक्षण, समुदय शिवव्रत, सदाचार निरूपण, सर्वविध प्रायश्चित्त और अरिष्ट काशी और श्रीशैलवर्णन, अन्धकाख्यान, वाराहचरित, नृसिंहचरित, जलन्धर वध, शिवसहस्रनाम, दक्षयज्ञ विनाश, मदनमोहन, गिरिजाका पाणिग्रहण, विनायकाख्यान, शिवका नृत्याख्यान और उपमन्युकथाआदिका वर्णन है.

हे मुने ! उत्तरभागमें विष्णुमाहात्म्य, अम्बरीषकथा, सनत्कुमार और नन्दीशसम्वाद, शिवमाहात्म्य, संयुक्त स्नानयागादि, सूर्य्यपूजाविधि, मुक्तिदायिनी शिवपूजा, बहुप्रकारदान, श्राद्ध प्रकरण, प्रतिष्ठा अघोर-कीर्त्तन, व्रजेश्वरी महाविद्या और गायत्रीकी महिमा, त्र्यम्बकमाहात्म्य, और पुराणश्रवण माहात्म्य यह समस्त वर्णित हुआ है.

फिर शिव पुराणके उत्तरखण्डमें लिखा है—

"लिङ्गस्य चरितोक्तत्वात् पुराणं लिङ्गमुच्यते"।

लिंगका चरित वर्णित होनेसे लिङ्गपुराण नाम हुआ है।

विभिन्नपुराणोंसे जो लिंगपुराणके लक्षण उद्धृत हुए, प्रचलित लिंग-पुराणमें उनका अभाव नहीं है.

प्रचलित लिंगपुराणमें ही लिखा है—

"ईशानकल्पवृत्तान्तमधिकृत्य महात्मना।
ब्रह्मणा कल्पितं पूर्वं पुराणं लैङ्गमुत्तमम् ॥" (२–१)

ईशानकल्पवृत्तान्त प्रसंगमें पूर्वकालमें महात्मा ब्रह्माद्वारा जो पुराणकल्पित हुआथा उसका नाम लैंग है । किन्तु पूर्वमेंही कहचुके हैं मात्स्य और नारदीयमतसे अग्निकल्पप्रसंगमें लैङ्गपुराण और ईशानकल्पप्रसङ्गमें अग्निपुराण वर्णित हुआ है, मत्स्यपु० ५३ अ० ऐसे स्थलमें ईशानकल्पाश्रयी लैंग एक है वा नहीं, अधिकसम्भव है बौद्धप्रभावखर्व और ब्रह्मण्यप्रभावके अभ्युदयके साथ जब पुराणोंका पुनः संस्कार होताथा उस समय आग्नेय पुराणोक्त ईशानकल्पकी कथा आकर लिंगपुराणमें प्रविष्ट हुई और आग्निकल्पका प्रसंग सम्भवतः अग्निपुराणका विषयीभूत समझकर लैंगमें अग्निकल्पकी कथाका स्पष्ट उल्लेख नहीं किया किन्तु लिंगपुराणकी प्रतिपाद्य और सब बातेंही अधिक क्या अग्निमयलिंगकी कथाभी विवृत हुई है जो कुछभी हो इस लैंगमें आदिलिंग पुराणकी सब कथा हैं तथापि परवर्तीकालमें शैवलोगोंके अभ्युदयमें बीच २ में शिवकी प्रशंसा और विष्णुकी कथाभी निवेशित हुई है। आदिपुराणसमूह किसी२विशेषसम्प्रदायकी सामग्री होनेपरभी उसमें सम्प्रदाय वा देवताविशेषकी निन्दाकी बात नहीं समझी जासक्ती । सम्प्रदायकी द्वेषाद्वेषीमें पुराणोंमें ऐसी विद्वेषसूचक श्लोकावली बहुत पीछे प्रविष्ट हुईथी । ऐसे स्थलमें सामान्य प्रक्षिप्तश्लोकसमूह छोडदेने पर इस लिंगपुराणको एक अति प्राचीन पुराण कहा जासकता है.

अरुणाचलमाहात्म्य, गौरीकल्याण, पञ्चाक्षरमाहात्म्य, रामसहस्रनाम, रुद्राक्षमाहात्म्य, और सरस्वती इत्यादि कई छोटी २ पोथी लिंगपुराणके अन्तर्गत हैं । इसके अतिरिक्त वासिष्ठलैंगनामक एक उपपुराणभी पायाजाता है । हलायुधका ब्राह्मणसर्वस्वमें बृहल्लिंगपुराणसे वचन उद्धृत हुआ है, किन्तु अब यह पुराण नहीं देखाजाता.

वराहपुराण १२ ।

१ मंगलाचरण, सूतकृत प्रस्तावना, पृथिवीकृत परमेश्वरस्तुति, २ सूतोक्ति, वराहकर्तृक पुराणलक्षण कथन पूर्वक सृष्टिकथा, आदिसर्ग

पृथिवीप्रश्न,वराहकर्तृक विस्तृतरूपसे आदिसर्गवर्णन,वराहद्वारा रुद्र सनत्कु-मार और मरीचि आदिकी उत्पत्तिकथा,प्रियव्रतकथा, और प्रियव्रत नारद सम्वाद, ३ नारदकर्तृक ब्रह्मपार कथन, ४वराहकर्तृक दशावतार कथन, पूर्वक नारायणका रूपवर्णन,अश्वशिराकाउपाख्यान,५अश्वशिरा और कपिलका सम्वाद,रैभ्य उपाख्यान, यज्ञतनुस्तोत्र, ६पुण्डरीकाक्ष-पार स्तोत्र और धर्म्मव्याध उपाख्यान,७ रैभ्य और सनत्कुमार सम्वाद, रैभ्यकर्तृक पितृदर्शन रैभ्यकृत गदाधरस्तोत्र,८धर्म्मव्याधका उपाख्यान,धर्म्मव्याधकृत पुरुषोत्तमाख्य स्तोत्र,९आदिकृत युगवृत्तान्त, १० विराट्रूपदर्शन और सुप्रतीक उपाख्यान,११ गौरमुख उपाख्यान,१२ दुर्ज्जयकृत नारायणका स्तोत्र, १३ गौरमुख मार्कण्डेयसम्वाद,श्राद्धकाल, पितृगीता, १४–१५ श्राद्धभोजनयोग्य व्यक्तियोंका नाम,श्राद्धमें वर्जनीयोंका नाम, श्राद्धानुष्ठानपद्धति, गौरमुखका पूर्वजन्मवृत्तान्त, गौरमुख नारायणका स्तोत्र, १६ दुर्ज्जयकृत स्वर्गजय, १७ प्रजागणका चरित्र, १८ अग्निकी उत्पत्तिकथा,१९ तिथिमाहात्म्यकथा, २० अश्विनीकुमारकी जन्मकथा, द्वितीयाकृत्य, २१ गौरीप्रादुर्भावकथा, दक्षयज्ञकथा, रुद्रसर्ग, २२ दक्षयज्ञविनाश, रुद्रस्तोत्र, रुद्रप्रसाद, पार्वतीजन्मकथा, हरपार्वतीका विवाह, तृतीयाकृत्य, २३ गणेश जन्मकथा, गणेशके प्रति महादेवका शाप, गणेशका स्तोत्र, चतुर्थीकृत्य, २४ नागोत्पत्तिकथा, पञ्चमीकृत्य, २५ कार्त्तिकेयकी उत्पत्ति कथा, देवगणकृत महादेवका स्तोत्र, २६ षष्ठीमाहात्म्य, आदित्योत्पत्ति कथा, सप्तमीकृत्य, २७ अन्धकासुरवधकथा, मातृगणोत्पत्ति कथन,अष्टमीकृत्य, २८ कात्यायनीकी उत्पत्तिकथा, वृत्रासुरवृत्तान्त, महेश्वरकृत कात्यायनीका स्तोत्र, नवमीकृत्य, २९ दिगुत्पत्तिकथा, दशमीकृत्य, ३० कुबेरोत्पत्तिकथा, एकादशीकृत्य, ३१ नारायणकृत मनुरूपग्रहण, द्वादशीकृत्य, ३२ धर्म्मोत्पत्तिकथा, त्रयोदशीकृत्य, ३३ रुद्रकी उत्पत्ति

कथा, देवगणकृत रुद्रस्तोत्र, रुद्रपशुपति कथा, चतुर्दशीकार्य्य, ३४ पितृसम्भवकथा, अमावस्याकार्य्य, ३५ चन्द्रके प्रति दक्षका शाप, पौर्णमासी कृत्य, ३६ माणिजनृपतिगणका वृत्तान्त, प्रजापालकृत गोविन्दका स्तोत्र, विष्णुकी आराधना प्रकार, ३७ आरुणिकवृत्तान्त, ३८ सत्यतपोनाम व्याधका वृत्तान्त, ३९ पृथिवीकृत व्रतोपाख्यान, ४० पौषशुक्ल दशमीव्रतकथा, ४१ माघशुक्लद्वादशीव्रत कथा; ४२ फाल्गुनशुक्लैकादशीव्रतकथा, ४३ चैत्रशुक्लैकादशीव्रत कथा, ४४ वैशाखशुक्लद्वादशी कृत्य, जामदग्न्यव्रत कथा, ४५ ज्येष्ठमासीय रामद्वादशीव्रतकथा; ४६ आषाढमासीय कृष्णद्वादशीव्रतकथा, ४७ श्रावणमासीय बुद्धद्वादशीव्रत कथा; ४८ भाद्रमासीय कल्किद्वादशीव्रतकथा, ४९ आश्विनमासीय पद्मनाभ द्वादशीव्रतकथा, ५० कार्त्तिकद्वादशीव्रतकथा, ५१–५५ अगस्त्यगीतारम्भ, उत्तमभर्तृलाभव्रत कथा, शुभव्रतकथा; वत्सश्रीनृपकृत नारायणका स्तोत्र, ५६ धन्यव्रतकथा, ५७ कान्तिव्रतकथा, ५८ सौभाग्यव्रतकथा ५९ विघ्नहरव्रतकथा, ६०–६३ पुत्रप्राप्तिव्रतकथा, ६४ शौर्य्यव्रतकथा, ६५ सार्वभौमव्रतकथा, ६६ नारद और विष्णुसम्वाद, ६७ अहोरात्र चन्द्रसूर्य्यादिकी रहस्यकथा, ६७ युगमें धर्म्मभेदकथा, गम्यागम्यनिरूपणकथा, अगम्यागमनके निमित्त प्रायश्चित्तविधि, ६९ अगस्त्यशरीर वृत्तांत, ७० अगस्त्यका अवदान, ७१–७२ त्रिदेवताभेदप्रसंगमें रुद्रोपदेश, गौतम, मारीच और शांडिल्यआदिका सम्वाद, कालभेदसे ब्रह्मादि तीनों देवताओंका प्राधान्यनिरूपण, ७३ रुद्रकर्तृक नारायणका माहात्म्य कीर्तन रुद्रद्वारा नारायणका स्तोत्र, ७४ भूमिप्रमाणादिकथन, जम्बूद्वीप प्रमाणादिकथा, ७५–७६ अमरावतीवर्णन, ७७ मेरुमूलवर्णन, ७८ चैत्ररथादि शैलचतुष्टयकी वर्णन, सुरोचनी प्रभृतस्थानवर्णन, ७९–८० पर्वतान्तर्मे देवगणोंका अवकाशवर्णन, निषधाचल पश्चिमवर्ती पर्वतादिकी वर्णना, भारतवर्षवर्णना, शाकद्वीपवर्णना, कुशद्वीप वर्णना, क्रौञ्चद्वीप

वर्णना शालमलीआदि द्वीपकी वर्णना, ब्रह्मादितीनदेवताओंका परा-परत्व विवेक,अन्धकासुरव्रतकथा, ९१ वैष्णवादिकी उत्पत्तिकथा, ब्रह्मकृतशक्तिका स्तोत्र, ९२ वैष्णवीचारित, ९३ वैष्णवीग्रहणके निमित्त महिषासुरके निजमंत्रियोंकी अभिमंत्रणा, वैष्णवीग्रहणके निमित्त महिषासुरका मेरुपर्वतकी तरफ प्रस्थान वर्णन, वैष्णवी और महिषासुरके समक्षमें दूतका सम्वाद, ९४ महिषासुर वध वृत्तान्त,देवगणकृत वैष्णवी स्तोत्र,९५रौद्रीचरित रुरुदैत्यका उपाख्यान, ९६ रुरुदैत्यवध, रुद्रकृत कालरात्रिस्तोत्र, चामुण्डा भेदकथन, ९७ रुद्रका कपालित्व रुद्रकृत कापालिकव्रतका अनुष्ठान;रुद्रका कपालमोचन, कपालव्रतका फलवर्णन, ९८ सत्यतपाकी सिद्धि, ९९ चैत्रासुरकथा, पञ्चपातकनाशका उपायकथन, विशेषप्रकारसे विष्णुपूजाका वर्णन,वराहपुराणश्रवणका फल,तिलधेनु दानका फल,१०० जलधेनु दानका फल,१०१ रसधेनुदानका फल,१०२ गुड़धेनुदानका फल, १०३ शर्कराधेनुदानफल,१०४ मधुधेनुदानफल,१०५ क्षीरधेनुदानफल, १०६दधिधेनुदानफल,१०७नवनीतधेनुदानफल,१०८लवणधेनुदानफल, १०९ कार्पासधेनुदानफल, ११० धान्यधेनुदानका फल, १११ कपिलाधेनुदानका फल, ११२ उभयमुखी धेनुदानका फल, वराहपुराणका प्रचारक्रम, पुराणसृष्टिके नामकी संख्या, ११३ पृथिवी और सनत्कुमारका सम्वाद, ११४ पृथिवीके प्रति नारायणका प्रसाद, ११५–११८ नारायण और पृथिवीका सम्वाद, ११९ विष्णुकी आराधना प्रकार वर्णन, सुखदुःखभेदकथा,बारहप्रकारके अपराधकी कथा,भक्तस्वरूपकथा, अपराधभञ्जन प्रायश्चित्त, प्रापणानिर्म्माणविधान, १२० त्रिसंध्याविष्णूपासना विधि, १२१ पुनर्जन्मवारण कर्म्मविधि, १२२ सनातन, धर्म्मस्वरूपकथन, गर्भोत्पत्ति वारण कर्म्मविधि, तिर्य्यग्योनिपतन वारण कर्म्मविधि, कोकामुखक्षेत्रप्रशंसा, १२३–१२४ गन्धपुष्पाविशेषमें दानमाहात्म्य, ऋतूपकरणदानका फल, १२५ मायास्वरूपकथन, १२६ कुब्जाम्रकमाहात्म्य, १२७ संसारमोक्ष कर्म्मकथन, १२८–१२९ क्ष-

त्रियोंकी दीक्षाविधि, वैश्योंकी दीक्षाविधि, शूद्रोंकी दीक्षाविधि, दीक्षित, कर्तव्यविधि, दीक्षितोंकी विष्णुपूजाविधि, १३०—१३६ अपराधप्रायश्चित्त विधि,दन्तकाष्ठभक्षके निमित्त प्रायश्चित्तविधि,मृतस्पर्शके निमित्त प्रायश्चित्त विधि, विष्ठात्यागके निमित्त प्रायश्चित्तविधि, दुष्कर्म्म करणके निमित्त प्रायश्चित्त, जालपादाद्यभक्षणके निमित्त प्रायश्चित्तविधि,१३७ प्रायश्चित्तकर्म्मका सूत्र,१३८ सौकरक्षेत्रका माहात्म्यवर्णन,गृध्र और शृगालीका इतिहास, वैवस्वततीर्थका माहात्म्यवर्णन, खञ्जरीट उपाख्यान, सौकर कृत कर्म्मफल कथन, गोमयलेपनादि फलकथन, चाण्डाल ब्रह्मराक्षस सम्वाद, १४० कोकामुखका श्रेष्ठत्व निरूपण, १४१ बदरिकाश्रमका माहात्म्य, १४२ रजस्वलाकर्तव्य गुह्यकर्म्मका आख्यान, १४३ मथुराक्षेत्र माहात्म्यवर्णन, शालग्रामका माहात्म्यवर्णन,१४४—१४५शालंकायनक उपाख्यान,१४६-१४७रुरुका उपाख्यान,रुरुक्षेत्रका माहात्म्य वर्णन,गोनिष्क्रमण माहात्म्य वर्णन, १४८ स्तुतस्वामितीर्थका माहात्म्यवर्णन, १४९ द्वारावतीमाहात्म्य वर्णन,१५०सानन्दूका माहात्म्यवर्णन,१५१—१५२लोहार्गलमाहात्म्य वर्णन, पञ्चसरः क्षेत्रमाहात्म्य वर्णन, १५३—१५४ मथुरा मण्डलमाहात्म्य वर्णन, १५५ मथुरामण्डलमें अक्रूरतीर्थका माहात्म्यवर्णन, १५६—१५७मथुरामण्डलमें मलयार्जुनतीर्थमाहात्म्यवर्णन,१५८मथुरापरिक्रमणफल, १५९ विश्रान्तितीर्थका माहात्म्यफल, १६० देववन प्रभाववर्णन,१६१—१६२चक्रतीर्थका माहात्म्यवर्णन,१६३ वैकुण्ठादितीर्थमाहात्म्य, कपिलचरित, १६४ गोवर्द्धनमाहात्म्य वर्णन, १६५ मथुरामण्डलमें कूपमाहात्म्य वर्णन, १६६ असिकुण्डमाहात्म्य वर्णन, १६७ विश्रान्तिक्षेत्र, १६८ क्षेत्रपालगण, १६९ अर्धचन्द्रक्षेत्र, १७० मथुरामण्डलमें गोकर्णमाहाम्य वर्णन, शुकेश्वरमाहाम्य वर्णन, महानस प्रेत संवाद, १७१ सरस्वती यमुना संगममें विष्णुपूजाकी फलकथा, कृष्ण गंगाका माहाम्य वर्णन, पांचाल ब्राह्मणोंका इतिहासवर्णन, सांबका उपाख्यान,१७२—१७८रामतीर्थमें द्वादशीव्रतमाहात्म्यफल, १७९ प्रायश्चित्त

निरूपणविधि, १८० सेतिहासध्रुवतीर्थका माहात्म्य वर्णन, १८१ काष्ठ प्रतिमास्थापनविधि, १८२ शैल प्रतिमा स्थापनविधि, १८३ मृण्मय प्रतिमा स्थापनविधि, १८४ ताम्रप्रतिमा स्थापनविधि, १८५–१८६ कांस्यप्रतिमा स्थापनविधि, रजतप्रतिमास्थापन विधि, १८७–१९० श्राद्धकी उत्पत्ति वर्णन, अशौच निरूपणविधि, मेधातिथि पितृसम्वाद, पिण्डसंकल्पप्रकार, १९१ मधुपर्क निरूपणविधि, मधुपर्कदान प्रकार कथन, १९२–१९६ यमालयादि स्वरूप कथन, नासिकेतका यमालयसे प्रत्यागमनवृत्तान्त, १९७ यमनगरके प्रमाणादिकथन, १९८ यमसभाका वर्णन, १९९ पापियोंकी गति वर्णन, २०० नरकवर्णन, २०१ यमदूतका स्वरूपवर्णन, २०२ चित्रगुप्तका प्रभाव वर्णन, २०३ चित्रगुप्तद्वारा प्रायश्चित्त निर्देश, २०४ चित्रगुप्त कर्तृक दूतप्रेरणावृत्तान्त, यम और चित्रगुप्तका सम्वाद, २०५ २०६ चित्रगुप्तद्वारा शुभाशुभ कर्म्मका फल निर्देश, २०७ नारदसन्दिष्ट, पुरुष विलोभनगुण, २०८ पतिव्रतोपाख्यान, २०९ यमनारद सम्वाद, २१० भास्करकर्तृक धर्म्म उपदेश, २११–२१२ प्रबोधिनी माहात्म्य कथन, २१३–२१४ गोकर्णेश्वर माहात्म्य वर्णन, नन्दिकेश्वरवरप्रदान, २१५ जलेश्वरका माहात्म्य वर्णन, २१६ शृंगेश्वरका माहात्म्य वर्णन, २१७ फलश्रुति वर्णन, २१८ विषयानुक्रमणिका.

ऊपर जो वराह पुराणकी सूची दीगई है, वही इस समय प्रचलित और मुद्रित देखी जाती है। यह गौडसम्मत वराह है। इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्यमें विरल प्रचार और एक वराह पाया जाता है। एक विषयक होने परभी गौडीय रामायण और दाक्षिणात्य रामायणमें जिस प्रकार बहुपाठान्तर और अध्यायान्तर देखे जाते हैं, इन दो वराहमें भी उसी प्रकार पाठान्तर दीखते हैं। एक विषयक वर्णनामें अनेकस्थलमें ऐसे भिन्नरूप श्लोक पाये जाते हैं. जिससे देखनेसेही भिन्न श्रेणीका ग्रन्थ और दूसरेका निर्मित बोध होता है। बार्लिनके राजपुस्तकालयकी तालिकामें भी इस

पुस्तकका सन्धान पाया गया है। दोनों पुस्तकोंमें अध्याय संख्या और पाठका मेल न होनेपरभी एकही विषयकी आलोचना है.

अब सन्देह यह है कि उपरोक्त विवरण मूलक वाराहको आदिवाराह पुराणमें गिना जाय या नहीं? पुराणका संस्कार होनेके पीछे नारदपुराणमें वाराहकी इस प्रकार अनुक्रमणिका दीगई है—

" शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि वराहं वै पुराणकम्।
भागद्वययुतं शश्वद्विष्णुमाहात्म्यसूचकम्॥
मानवस्य तु कल्पस्य प्रसंगं मत्कृतं पुरा।
निबबन्ध पुराणेऽस्मिंश्चतुर्विंशसहस्रके॥
व्यासो हि विदुषां श्रेष्ठ साक्षान्नारायणो भुवि।
तत्रादौ शुभसम्वादः स्मृतो भूमिवराहयोः॥
अथादिकृतवृत्तान्ते रैभ्यस्य चरितं ततः।
दुर्जयाय च तत् पश्चाच्छ्राद्धकल्प उदीरितः॥
महातपसआख्यानं गौर्य्युत्पत्तिस्ततः परम्।
विनायकस्य नागानां सेनान्यादित्ययोरपि॥
गणानाञ्च तथा देव्या धनदस्य वृपस्य च।
आख्यानं सत्यतपसो व्रताख्यानसमन्वितम्॥
अगस्त्यंगिरसोः पश्चात् रुद्रगीता प्रकीर्त्तिता।
महिषासुरविध्वंसे माहात्म्यञ्च त्रिशक्तिजम्॥
पर्वाध्यायस्ततः श्वेतोपाख्यानं गोप्रदानिकम्।
इत्यादिकृतवृत्तान्तं प्रथमोद्देशनामकम्॥
भगवद्धर्म्मके पश्चात् व्रततीर्थकथानकम्।
द्वात्रिंशदपराधानां प्रायश्चित्तं शरीरकम्॥
तीर्थानाञ्चापि सर्वेषां माहात्म्यं पृथगीरितम्।
मथुरायां विशेषेण श्राद्धादीनां विधिस्ततः॥
वर्णनं यमलोकस्य ऋषिपुत्रप्रसंगतः।

विपाकः कर्म्मणां चैव विष्णुव्रतनिरूपणम् ॥
गोकर्णस्य च माहात्म्यं कीर्त्तितं पापनाशनम् ।
इत्येष पूर्वभागोऽस्य पुराणस्य निरूपितः ॥
उत्तरे प्रविभागे तु पुलस्त्यकुरुराजयोः ।
संवादे सर्वतीर्थानां माहात्म्यं विस्तरात्पृथक् ॥
अशेषधर्म्माश्चाख्याताः पौष्करं पुण्यपर्व च ।
इत्येवं तव वाराहं प्रोक्तं पापविनाशनम् ॥"

हे वत्स ! सुनो,मैं वाराहपुराण कीर्तन करता हूं यह पुराण दो भागोंमें विभक्त और सदा विष्णुमाहात्म्य सूचक है । मानवकल्पका जो कुछ प्रसंग पूर्वमें मेरे द्वारा वर्णित हुआ है साक्षात् नारायणस्वरूप विप्रप्रवर व्यासने वह सब इस चौवीस सहस्रश्लोक पूर्ण पुराणमें ग्रथित किया है, इसके प्रथममें ही भूमि और वराहका शुभसंवाद, आदिवृत्तान्तमें रैभ्य-चरित, श्राद्धकल्प, महातपाका आख्यान, गौरीकी उत्पत्ति, विनायक-नागगण, सेनानी (कार्तिकेय) आदित्य गणसमुदाय; देवी धनद और वृषका आख्यान, सत्यतपाका व्रत, अगस्त्यगीता, रुद्रगीता, महिषासुर-ध्वंसमाहात्म्य, पर्वाध्याय, श्वेतोपाख्यान इत्यादि वृत्तान्त और फिर भगवद्धर्म्ममें व्रततीर्थ कथा, द्वात्रिंशत् अपराधका शारीरिक प्रायश्चित्त समुदाय, तीर्थका पृथक् २ माहात्म्य, मथुरामें विशेषरूपसे श्राद्धादिकी विधि, ऋषिपुत्रप्रसंगमें यमलोक वर्णन, कर्म्मविपाक, विष्णुव्रतनिरूपण और गोकर्णमाहात्म्य,यह सम्पूर्ण वृत्तान्त इसके पूर्वभागमें निरूपित हुआ है.

उत्तरभागमें पुलस्त्य और पुरुराजके संवादमें विस्तृतरूपसे सर्व-तीर्थका पृथक् २ माहात्म्य अशेषधर्माख्यान और पुष्कर नामक पुण्य-पर्व इत्यादि कथित हुए हैं । तुम्हारे निकट यह पापनाशक वाराहपुराण कीर्तन किया.

मत्स्यपुराणके मतसे—

" महावराहस्य पुनर्माहात्म्यमधिकृत्य च।
विष्णुनाभिहितं क्षोण्यै तद्वाराहमिहोच्यते॥
मानवस्य प्रसंगेन कल्पस्य मुनिसत्तमाः।
चतुर्विंशत्सहस्राणि तत्पुराणमिहोच्यते॥"

जिस ग्रन्थमें मानवकल्पप्रसंगमें विष्णुद्वारा पृथिवीके समक्षमें महावराहका माहात्म्य विवृत हुआ है वह २४००० श्लोकयुक्त पुराण वाराह नामसे विख्यात है.

नारदीयके लक्षणके साथ प्रचलित वाराहका बहुतसा मेल होनेपर भी मानव कल्प प्रसंगमें महावराहका माहात्म्य वर्णित नहीं है। अथवा इस समय वाराहमें बहुतसे व्रतादिका उल्लेख है, प्राचीन वाराहमें अथवा नारदीय पुराणके संकलनकालमें जो वराह प्रचलित था, उसमें यह सम्पूर्ण था वा नहीं सन्देह है। प्रचलित वाराह भविष्योत्तरके समान अनेक पुराणोंसे संकलित है, यह बात वाराहके पाठसे ही ज्ञात होती है, यथा—मथुरामाहात्म्यमें—

" शाम्बप्रख्याततीर्थे तु तत्रैवान्तरधीयत।
शाम्बस्तु सह सूर्य्येण रथस्थेन दिवानिशम्॥ ५०॥
रविं पप्रच्छ धर्म्मात्मा पुराणं सूर्य्यभाषितम्।
भविष्यपुराणमिति ख्यातं कृत्वा पुनर्नवम्॥"

(वराह० १७७ अ०)

किन्हींका मत है कि इस पुराणमें बुद्धद्वादशीका प्रसंग है, इससे भी ज्ञात होता है कि बुद्धदेवके हिन्दुसमाजम अवतार गिने जानेके पीछे वाराहने वर्त्तमानरूप धारण किया है परन्तु वास्तवमें भविष्यरूपसे द्वादशीव्रत लिखा है। यह वराहपुराण एसियाटिकसोसाइटीमें मुद्रित हुआ है, इसकी श्लोकसंख्या, १०७०० है किन्तु नारदपुराणकी वराहानुक्रमणिका पाठ करनेसे यह मुद्रित वराह भी असम्पूर्ण बोध होता है। इसके अनुसार पूर्वभागमात्र मुद्रित हुआ है। उत्तरभागके पुलस्त्य कुरुराज संवादमें विस्तृतभावसे

सम्पूर्ण तीर्थका पृथक् २ माहात्म्य, अनेक प्रकारके धर्माख्यान और पौष्कर पर्व इत्यादि मुद्रितवराहमें नहीं हैं।

सुप्रसिद्ध हेमाद्रि ग्रन्थमें खृष्टीय १३ शताब्दीमें चतुर्वर्गचिन्तामणिमें वराहोक्त बुद्धद्वादशीका उल्लेख और खृष्टीय १२ शताब्दीमें गौडाधिप बल्लालसेनके दानसागरमें इस वराहसे श्लोक उद्धृत किये हैं. इसके द्वारा चातुर्मास्यमाहात्म्य, त्र्यम्बकमाहात्म्य, भगवद्गीतामाहात्म्य, मृत्तिकाशौच-विधान,विमानमाहात्म्य, वेंकटमाहात्म्य, व्यतिपातमाहात्म्य और श्रीविष्णु-माहात्म्य,यह सम्पूर्ण क्षुद्रपुस्तकें वराहपुराणके अन्तर्गत कहकर प्रसिद्ध हैं.

स्कन्दपुराण १३.

इस समय स्कन्दपुराण कहकर कोई स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं पाया जाता है। अनेक संहिता, अनेकखण्ड और बहुसंख्यक माहात्म्य इस पुराणके अन्त-र्गत कहकर प्रसिद्ध हैं। यह सम्पूर्ण संहिता खण्ड और माहात्म्य समूह लेकर ही प्रचलित स्कन्दपुराण है,किन्तु इन सम्पूर्ण खण्डोंका कौन आगे वा कौन पीछे होगा, कौन माहात्म्य किस खण्ड वा संहिताके अन्तर्गत है, सो सहजमें स्थिर नहीं किया जाता। इस कारण स्कन्दपुराणकी विषयानु-क्रमणिका प्रकाशके पूर्वमें इन सम्पूर्ण खण्डादिका पारम्पर्य्य निर्णय करना सबसे प्रथम आवश्यक है.

स्कन्दपुराणीय शंकरसंहितामें हालास्यमाहात्म्यमें लिखा है—

" स्कान्दमद्यापि वक्ष्यामि पुराणं श्रुतिसारजम्।
षड्विधं संहिताभेदैः पञ्चाशत्खण्डमंडितम्॥
आद्या सनत्कुमारोक्ता द्वितीया सूतसंहिता॥६३॥
तृतीया शाङ्करी प्रोक्ता चतुर्थी वैष्णवी तथा।
पञ्चमी संहिता ब्राह्मी षष्ठी सा सौरसंहिता॥" (१।६४)

वेदके सारसे संकलित स्कन्दपुराण ६ संहिता और ५० खण्डोंमें विभक्त है, इसकी आदिसंहिताका नाम सनत्कुमार, द्वितीय सूतसंहिता,

तृतीय शंकरसंहिता, चतुर्थ वैष्णवसंहिता, पंचम ब्रह्मसंहिता और छठी सौरसंहिता है.

सूतसंहितामें भी इन छः संहिताओंका उल्लेख है,और प्रत्येक संहिताकी ग्रन्थसंख्या भी इसी प्रकार निर्दिष्ट हुई है—

" ग्रन्थेन चैव षट्त्रिंशत्सहस्रेणोपलक्षिता ।
आद्या तु संहिता विप्राः द्वितीया षट्सहस्रिका ॥
तृतीया ग्रन्थतस्त्रिंशत् सहस्रेणोपलक्षिता ।
चतुर्थी संहिता पञ्चसहस्रेणाभिनिर्म्मिता ॥
ततो ह्यन्या सहस्रेण ग्रन्थेनैव विनिर्मिता ।
अन्या सहस्रतःसृष्टा ग्रन्थतःपण्डितोत्तमाः॥"(१।२२।२४)

सनत्कुमारसंहिता की		ग्रन्थसंख्या	...	३६०००
सूतसंहिता	...	... "	...	६०००
शंकरसंहिता	...	... "	...	३००००
वैष्णवसंहिता	...	... "	...	५०००
ब्राह्मसंहिता	...	... "	....	३०००
सौरसंहिता	...	... "	...	१०००

स्कन्दपुराणीय प्रचलित प्रभासखण्डके मतसे—

" पुरा कैलासशिखरे ब्रह्मादीनां च सन्निधौ ।
स्कान्दं पुराणं कथितं पार्वत्यग्रे पिनाकिना ॥
पार्वत्या षण्मुखस्याग्रे तेन नंदिगणाय वै ।
नन्दिनाऽत्रिकुमाराय तेन व्यासाय धीमते ॥
व्यासेन तु समाख्यातं भवद्भ्योऽहं प्रकीर्त्तये । " (१अ.)

उसके पीछेके अध्यायमें लिखा है—

"स्कान्दं तु सप्तधा भिन्नं वेदव्यासेन धीमता ।
एकाशीतिसहस्राणि शतं चैकं च संख्यया ॥

तस्यादिमो विभागस्तु स्कन्दमाहात्म्यसंयुतः ।
माहेश्वरसमाख्यातो द्वितीयो वैष्णवस्य च ॥
तृतीयो ब्रह्मणः प्रोक्तः सृष्टिसंक्षेपसूचकः ।
काशीमाहात्म्यसंयुक्तश्चतुर्थः परिपठ्यते ॥
रेवायां पञ्चमो भाग उज्जयिन्याः प्रकीर्त्तितः ।
षष्ठः कल्पार्चनं विश्वं तापीमाहात्म्यसूचकः ॥
सप्तमोऽथ विभागोऽयं स्मृतः प्राभासिको द्विजाः ।
सर्वं द्वादशसाहस्रं विभागाः साधिकाः स्मृताः ॥ „

(प्रभासखण्ड)

पूर्वकालमें कैलासशिखरपर ब्रह्मादिके समक्षमें पिनाकीने पार्वतीको स्कन्दपुराण कहा था। पार्वतीने षडानन कार्त्तिकेयके निकट, कार्त्तिकेयने नन्दीके निकट, नन्दीने अग्निकुमारको, उसने व्यासको और व्यासदेवने मेरे (सूतके) निकट कीर्त्तन किया था.

यह स्कन्दपुराण वेदव्यासकर्तृक सात भागमें विभक्त और ८११०० श्लोकयुक्त है। इसके आदिभागका नाम स्कन्दमाहात्म्यसंयुक्त" माहेश्वर-खण्ड" दूसरा "वैष्णवखण्ड" तीसरा संक्षेपसे सृष्टिवर्णनासूचक "ब्रह्म-खण्ड" चौथा काशीमाहात्म्यसंयुक्त "काशीखण्ड" पाँचवां उज्जयिनीकी कथायुक्त "रेवाखण्ड" षष्ठ कल्पपूजा, विश्वकथा और तापीमाहात्म्य-सूचक "तापीखण्ड" और सप्तम प्रभासकी कथायुक्त "प्रभासखण्ड" है। इन सम्पूर्ण खण्डोंमें द्वादशसहस्राधिक विभाग निर्दिष्ट हैं.

नारदपुराणकी स्कन्दोक्तमणिकासे ऐसा आशय पाया जाता है—

" शृणु वक्ष्ये मरीचे च पुराणं स्कन्दसंज्ञितम् ।
यस्मिन् प्रतिपदं साक्षान्महादेवो व्यवस्थितः ॥
पुराणे शतकोटौ तु यच्छैवं वर्णितं मया ।
लक्षितस्यार्थजातस्य सारो व्यासेन कीर्तितः ॥
स्कन्दाह्वयस्तत्र खण्डाः सप्तैव परिकल्पिताः ।

एकाशीतिसहस्रं तु स्कान्दं सर्वाघकृन्तनम् ॥
यः शृणोति पठेद्वापि स तु साक्षाच्छिवः स्थितः ।
(१) यत्र माहेश्वरा धर्म्माः षण्मुखेन प्रकाशिताः ॥
कल्पे तत्पुरुषे वृत्ताः सर्वसिद्धिविधायकाः ।
तस्य माहेश्वरश्चाद्यः खण्डः पापप्रणाशनः ॥
किञ्चिन्न्यूनार्कसाहस्रो बहुपुण्यो बृहत्कथः ।
सुचरित्रशतैर्युक्तः स्कन्दमाहात्म्यसूचकः ॥
यत्र केदारमाहात्म्ये पुराणोपक्रमः पुरा ।
दक्षयज्ञकथा पश्चाच्छिवलिङ्गार्चने फलम् ॥
समुद्रमथनाख्यानं देवेन्द्रचरितं ततः ।
पार्वत्याः समुपाख्यानं विवाहस्तदनन्तरम् ॥
कुमारोत्पत्तिकथनं ततस्तारकसंगरः ।
ततः पाशुपताख्यानं चण्डाख्यानसमाचितम् ॥
द्यूतप्रवर्त्तनाख्यानं नारदेन समागमः ।
ततः कुमारमाहात्म्ये पञ्च तीर्थकथानकम् ॥
धर्म्मकर्म्मनृपाख्यानं नदीसागरकीर्त्तनम् ।
इन्द्रद्युम्नकथा पश्चान्नाडीजंघकथाचिता ॥
प्रादुर्भावस्ततो मह्या कथा दमनकस्य च ।
महीसागरसंयोगः कुमारेशकथा ततः ॥
ततस्तारकयुद्धं च नानाख्यानसमाहितम् ।
वधश्च तारकस्याथ पञ्चलिङ्गनिषेवणम् ॥
द्वीपाख्यानं ततः पुण्यं ऊर्द्ध्वलोकव्यवस्थितिः ।
ब्रह्माण्डस्थितिमानं च वर्करेशकथानकम् ॥
महाकालसमुद्भूतिः कथा चास्य महाद्भुता ।
वासुदेवस्य माहात्म्यं कोटितीर्थं ततः परम् ॥

नानातीर्थसमाख्यानं गुप्तक्षेत्रे प्रकीर्तितम् ।
पाण्डवानां कथा पुण्या महाविद्याप्रसाधनम् ॥
तीर्थयात्रासमाप्तिश्च कौमारमिदमद्भुतम् ।
अरुणाचलमाहात्म्ये सनकब्रह्मसंकथा ॥
गौरीतपःसमाख्यानं ततस्तीर्थनिरूपणम् ।
महिषासुरजाख्यानं वधश्चास्य महाद्भुतः ॥
शोणाचले शिवास्थानं नित्यदा परिकीर्तितम्
इत्येष कथितः स्कान्द खण्डे माहेश्वरोऽद्भुतः ॥
(२.) द्वितीयो वैष्णवः खण्डस्तस्याख्यानानि मे शृणु ।
प्रथमं भूमिवाराह समाख्यानं प्रकीर्तितम् ॥
यत्र रोचककुध्रस्य माहात्म्यं पापनाशनम् ।
कमलायाः कथा पुण्या श्रीनिवासस्थितिस्ततः ॥
कुलालाख्यानकं यत्र सुवर्णमुखरीकथा ।
नानाख्यानसमायुक्ता भारद्वाजकथाद्भुता ॥
मतंगाञ्जनसंवादः कीर्तितः पापनाशनः ।
पुरुषोत्तममाहात्म्यं कीर्तितं चोत्कले ततः ॥
मार्कण्डेयसमाख्यानमम्बरीषस्य भूपतेः ॥
इन्द्रद्युम्नस्य चाख्यानं विद्यापतिकथा शुभा ॥
जैमिनेः समुपाख्यानं नारदस्यापि वाडव ।
नीलकण्ठसमाख्यानं नारसिंहोपवर्णनम् ॥
अश्वमेधकथा राज्ञो ब्रह्मलोकगतिस्तथा ।
रथयात्राविधिः पश्चाज्जपस्नानविधिस्तथा ।
दक्षिणामूर्त्तेराख्यानं गुण्डिचाख्यानकं ततः ॥
रथरक्षाविधानञ्च शयनोत्सवकीर्तनम् ॥
श्वेतोपाख्यानमंत्रोक्तं वह्न्युत्सवनिरूपणम् ।
दोलोत्सवो भगवतो व्रतं सांवत्सराभिधम् ॥

पूजा च कामिभिर्विष्णोरुद्दालकनियोगकः ।
मोक्षसाधनमंत्रोक्तं नानायोगनिरूपणम् ॥
दशावतारकथनं स्नानादि परिकीर्तितम् ।
ततो बदरिकायाश्च माहात्म्यं पापनाशनम् ॥
अग्न्यादितीर्थमाहात्म्यं वैनतेयशिलाभवम् ।
कारणं भगवद्वासे तीर्थकापालमोचनम् ॥
पञ्चधाराभिधं तीर्थं मेरुसंस्थापनं तथा ।
ततः कार्त्तिकमाहात्म्ये माहात्म्यं मदनालसम् ॥
धूम्रकाशसमाख्यानं दिनकृत्यानि कार्तिके ।
पञ्चभीष्मव्रताख्यानं कीर्त्तिदं भुक्तिमुक्तिदम् ॥
तद्व्रतस्य च माहात्म्ये विधानं स्नानजं तथा ।
पुंड्रादिकीर्त्तनं चात्र मालाधारणपुण्यकम् ॥
पञ्चामृतस्नानपुण्यं घण्टानादादिजं फलम् ।
नैवेद्यस्य च माहात्म्यं हरिवासरकीर्त्तनम् ।
अखण्डैकादशी पुण्या तथा जागरणस्य च ॥
मत्स्योत्सवविधानञ्च नाममाहात्म्यकीर्त्तनम् ।
ध्यानादिपुण्यकथनं माहात्म्यं मथुराभवम् ॥
मथुरातीर्थमाहात्म्यं पृथगुक्तं ततः परम् ।
वनानां द्वादशानाञ्च माहात्म्यं कीर्त्तितं ततः ॥
श्रीमद्भागवतस्यात्र माहात्म्यं कीर्त्तितं परम् ।
वज्रशाण्डिल्यसंवादो ह्यन्तर्लीलाप्रकाशकः ॥
ततो माघस्य माहात्म्यं स्नानदानजपोद्भवम् ।
नानाख्यानसमायुक्तं दशाध्याये निरूपितम् ॥
ततो वैशाखमाहात्म्ये शय्यादानादिजं फलम् ।
जलदानादिविषयः कामाख्यानमतः परम् ॥

श्रुतदेस्य चरितं व्याधोपाख्यानमद्भुतम् ।
तथाक्षयतृतीयादेर्विशेषात् पुण्यकीर्त्तनम् ॥
ततस्त्वयोध्यामाहात्म्ये चक्रब्रह्माह्वतीर्थके ।
ऋणपापविमोक्षाख्ये तथाधारसहस्रकम् ॥
स्वर्गद्वारं चन्द्रहरिधर्म्महर्य्युपवर्णनम् ।
स्वर्णवृष्टेरुपाख्यानं तिलोदासरयूयुतिः ॥
सीताकुण्डं गुप्तहरिः सरयूघर्घराह्वयः ।
गोप्रचारं च दुग्धोदं गुरुकुण्डादिपञ्चकम् ॥
घोपार्कादीनि तीर्थानि त्रयोदश ततः परम् ।
गयाकूपस्य माहात्म्यं सर्वाङ्ग विनिवर्त्तकम् ॥
माण्डव्याश्रमपूर्वाणि तीर्थानि तदनन्तरम् ।
अजितादिमानसादितीर्थानि गदितानि च ॥
इत्यप वैष्णवः खण्डो द्वितीयः परिकीर्त्तितः ॥
(३) अतः परं ब्रह्मखण्डं मरीचे शृणु पुण्यदम् ।
यत्र वै सेतुमाहात्म्ये फलं स्नानेक्षणोद्भवम् ॥
गालवस्य तपश्चर्य्या राक्षसाख्यानकं ततः ।
चक्रतीर्थादिमाहात्म्यं देवीतपनसंयुतम् ॥
वेतालतीर्थमहिमा पापनाशादिकीर्त्तनम् ।
मंगलादिकमाहात्म्यं ब्रह्मकुण्डादिवर्णनम् ॥
हनुमत्कुण्डमहिमागस्त्यतीर्थभवं फलम् ।
रामतीर्थादिकथनं लक्ष्मीतीर्थनिरूपणम ॥
शंखादितीथमहिमा तथा साध्यामृतादिकः ।
धनुष्कोट्यादिमाहात्म्यं क्षीरकुण्डादिजं तथा ।
गायत्र्यादिकतीर्थानां माहात्म्यं चात्र कीर्त्तितम् ॥
रामनामस्य महिमा तत्त्वज्ञानोपदेशनम् ।
यात्राविधानकथनं सेतौ मुक्तिप्रदं नृणाम् ॥

धर्म्मारण्यस्य माहात्म्यं ततः परमुदीरितम् ।
स्थाणुः स्कन्दाय भगवान् यत्र तत्त्वमुपादिशत् ॥
धर्म्मारण्यसुसंभूतिस्तत्पुण्यपरिकीर्त्तनम् ।
कर्म्मसिद्धेः समाख्यानमृषिवंशनिरूपणम् ॥
अप्सरस्तीर्थमुख्यानां माहात्म्यं यत्र कीर्त्तितम् ।
वर्णानामाश्रमाणां च धर्म्मतत्त्वनिरूपणम् ॥
देवस्थानविभागश्च बकुलार्ककथा शुभा ।
छत्रानन्दा तथा शान्ता श्रीमाता च मतंगिनी ॥
पुण्यदात्र्यः समाख्याता यत्र देव्यः समास्थिताः ।
इन्द्रेश्वरादिमाहात्म्यं द्वारकादिनिरूपणम् ॥
लोहासुरसमाख्यानं गंगाकूपनिरूपणम् ।
श्रीरामचरितञ्चैव सत्यमन्दिरवर्णनम् ॥
जीर्णोद्धारस्य कथनं शासनप्रतिपादनम् ।
जातिभेदप्रकथनं स्मृतिधर्म्मनिरूपणम् ॥
ततस्तु वैष्णवा धर्माः नानाख्यानैरुदीरिताः ।
चातुर्मास्ये ततः पुण्ये सर्वधर्म्मनिरूपणम् ॥
दानप्रशंसा तत्पाश्चद्व्रतस्य महिमा ततः ।
तपसश्चैव पूजायाः सच्छिद्रकथनं ततः ॥
प्रकृतीनां भिदाख्यानं शालग्रामनिरूपणम् ।
तारकस्य वधोपायस्तार्क्ष्यार्चामहिमा तथा ॥
विष्णोः शापश्च वृक्षत्वं पार्वत्यनुनयस्ततः ।
हरस्य ताण्डवं नृत्यं रामनामनिरूपणम् ॥
हरस्य लिंगपूजा च कथा वैजवनस्य च ।
पार्वतीजन्मचरितं तारकस्य वधोऽद्भुतः ॥
प्रणवैश्वर्य्यकथनं तारकाचरितं पुनः ।
दक्षयज्ञसमाप्तिश्च द्वादशाक्षररूपणम् ॥

ज्ञानयोगसमाख्यानं महिमाद्वादशार्कजः ।
श्रवणादिकपुण्यञ्च कीर्तिदं धर्मदं नृणाम् ॥
ततो ब्रह्मोत्तरे भागे शिवस्य महिमाऽद्भुतः ।
पञ्चाक्षरस्य महिमा गोकर्णमहिमा ततः ॥
शिवरात्रेश्च महिमा प्रदोषव्रतकीर्त्तनम् ।
सोमवारव्रतञ्चापि सीमन्तिन्याः कथानकम् ॥
भद्रायूत्पत्तिकथनं सदाचारनिरूपणम् ॥
शिवधर्म्मसमुद्देशो भद्रायूद्वाहवर्णनम् ।
भद्रायुमहिमा चापि भस्ममाहात्म्यकीर्तनम् ।
क्षवराख्यानकं चैव उमामाहेश्वरव्रतम् ॥
रुद्राक्षस्य च माहात्म्यं रुद्राध्यायस्य पुण्यकम् ।
श्रवणादिकपुण्यं च ब्रह्मखण्डोऽयमीरितः ॥
(४) अतःपरं चतुर्थं च काशीखण्डमनुत्तमम् ।
विन्ध्यनारदयोर्यत्र संवादः परिकीर्त्तितः ॥
सत्यलोकप्रभावश्चागस्त्यावासे सुरागमः ।
पतिव्रताचरित्रञ्च तीर्थचर्य्याप्रशंसनम् ॥
ततश्च सप्तपुर्य्याख्या संयमिन्या निरूपणम् ।
ब्रध्नस्य च तथेन्द्राग्न्योर्लोकाप्तिः शिवशर्म्मणः ॥
अग्नेः समुद्भवश्चैव क्रव्याद्वरुणसम्भवः ॥
गन्धवत्यलकापुर्य्यारीश्वर्य्याश्च समुद्भवः ॥
चन्द्रोडुबुधलोकानां कुजेज्यार्कभुवां क्रमात् ।
सप्तर्षीणां ध्रुवस्यापि तपोलोकस्य वर्णनम् ॥
ध्रुवलोककथा पुण्या सत्यलोकनिरीक्षणम् ।
स्कन्दागस्त्यसमालापो मणिकर्णीसमुद्भवः ॥
प्रभावश्चापि गङ्गाया गङ्गानामसहस्रकम् ।
वाराणसीप्रशंसा च भैरवाविर्भवस्ततः ॥

दण्डपाणिज्ञानवाप्योरुद्भवः समनन्तरम् ।
ततः कलावत्याख्यानं सदाचारनिरूपणम् ।
ब्रह्मचारिसमाख्यानं ततः स्त्रीलक्षणानि च ।
कृत्याकृत्यविनिर्देशो ह्यविमुक्तेशवर्णनम् ॥
गृहस्थयोगिनो धर्म्माः कालज्ञानं ततः परम् ।
दिवोदासकथा पुण्या काशीवर्णनमेव च ॥
योगिचर्य्या च लोलार्कोत्तरसम्बार्कजा कथा ।
द्रुपदार्कस्य तार्क्ष्याख्यारुणार्कस्योदयस्ततः ॥
दशाश्वमेधतीर्थाख्यो मन्दराच्च समागमः ।
पिशाचमोचनाख्यानं गणेशप्रेषणं ततः ॥
मायागणपतेश्चाथ भुवि प्रादुर्भवस्ततः ।
विष्णुमायाप्रपञ्चोऽथ दिवोदासविमोक्षणम् ॥
ततः पञ्चनदोत्पत्तिर्बिन्दुमाधवसम्भवः ।
ततो वैष्णवतीर्थाख्यो शूलिनः कौशिकागमः ॥
जैगीषव्येन संवादो ज्येष्ठेशाख्या महेशितुः ।
क्षेत्राख्यानं कन्दुकेशव्याघ्रेश्वरसमुद्भवः ।
शैलेशरत्नेश्वरयोः कृत्तिवासस्य चोद्भवः ।
देवतानामधिष्ठानं दुर्गासुरपराक्रमः ॥
दुर्गाया विजयश्चाथ ओंकारेशस्य वर्णनम् ।
पुनरोङ्कारमाहात्म्यं त्रिलोचनसमुद्भवः ।
केदाराख्या च धर्म्मेशकथा विश्वभुजोद्भवः ।
वीरेश्वरसमाख्यानं गङ्गामाहात्म्यकीर्त्तनम् ॥
विश्वकर्म्मेशमहिमा दक्षयज्ञोद्भवस्तथा ।
सतीशस्यामृतेशादे र्भुजस्तम्भः पराशरे ॥
क्षेत्रतीर्थकदम्बश्च मुक्तिमण्डपसंकथा ।
विश्वेशविभवश्चाथ ततो यात्रापरिक्रमः ॥

(५) अतः परं त्ववन्त्याख्यं शृणु खण्डञ्च पञ्चमम् ।
महाकालवनाख्यानं ब्रह्मशीर्षच्छिदा ततः ॥
प्रायश्चित्तविधिश्चाग्नेरुत्पत्तिश्च सुरागमः ।
देवदीक्षा शिवस्तोत्रं नानापातकनाशनम् ॥
कपालमोचनाख्यानं महाकालवनस्थितिः ।
तीर्थं कलकलेशस्य सर्वपापप्रणाशनम् ॥
कुण्डमप्सरसंज्ञञ्च सर्गं रुद्रस्य पुण्यदम् ।
कुटुम्बेशश्च विरूपकर्कटेश्वरतीर्थकम् ॥
दुर्गद्वारं चतुःसिन्धुतीर्थं शङ्करवापिका ।
सकरार्कगन्धवतीतीर्थं पापप्रणाशनम् ॥
दशाश्वमेधैकानंशतीर्थञ्च हरिसिद्धिदम् ।
पिशाचकादियात्रा च हनूमत्कं यमेश्वरौ ॥
महाकालेशयात्रा च वाल्मीकेश्वरतीर्थकम् ।
शुक्रेशभेशोपाख्यानं कुशस्थल्याः प्रदक्षिणम् ॥
अक्रूरमन्दाकिन्यङ्कपादचन्द्रार्कवैभवम् ।
करभेशकुक्कुटेशलड्डुकेशादितीर्थकम् ॥
मार्कण्डेशं यज्ञवापीसोमेशं नरकान्तकम् ।
केदारेश्वररामेशसौभाग्येशनरार्ककम् ॥
केशार्कं भक्तिभेदं च स्वर्णाक्षरमुखानि च ।
ओंकारेशादितीर्थानि अन्धकस्तुतिकीर्त्तनम् ॥
कालारण्ये लिंगसंख्या स्वर्णशृङ्गाभिधानकम् ।
पद्मावतीकुमुद्वत्यमरावतीतिनामकम् ॥
विशाला प्रतिकल्पा च विधाने ज्वरशान्तिकम् ।
क्षिप्रास्नानादिकफलं नागोद्गीता शिवस्तुतिः ॥
हिरण्याक्षवधाख्यानं तीर्थं सुंदरकुण्डकम् ।
नीलगंगा पुष्कराख्यं विन्ध्यावासनतीर्थकम् ॥

पुरुषोत्तमाधिमासं तत तीर्थञ्चाघविनाशनम् ।
गोमती वामने कुण्डे विष्णोर्नामसस्रहकम् ॥
वीरेश्वरसरः कालभैरवस्य च तीर्थके ।
महिमानागपञ्चम्या नृसिंहस्य जयन्तिका ॥
कुटुम्बेश्वरयात्रा च देवसाधककीर्त्तनम् ।
कर्कराजाख्यतीर्थञ्च विघ्नेशादिसुरोहणम् ॥
रुद्रकुण्डप्रभृतिषु बहुतीर्थनिरूपणम् ।
यात्राष्टतीर्थजा पुण्या रेवामाहात्म्यमुत्तमम् ॥
धर्म्मपुत्रस्य वैराग्ये मार्कण्डेयेन सङ्गमः ।
प्राग्लयानुभवाख्यानममृतापरिकीर्त्तनम् ॥
कल्पे कल्पे पृथङ्नाम नर्मदायाः प्रकीर्तितम् ।
स्तवमार्ष नार्मदं च कालरात्रिकथा ततः ॥
महादेवस्तुतिः पश्चात् पृथक्कल्पकथाद्भुता ।
विशाल्याख्यानकं पश्चाज्जालेश्वरकथा तथा ॥
गौरीव्रतसमाख्यानं त्रिपुरज्वालनं ततः ।
देहपातविधानं च कावेरीसङ्गमस्ततः ॥
दारुतीर्थं ब्रह्मवर्त्त यत्रेश्वरकथानकम् ।
अग्नितीर्थं रवितीर्थं मेघनादं श्रीदारुकम् ॥
देवतीर्थं नर्म्मदेशं कपिलाक्षं करञ्जकम् ।
कुण्डलेश पिप्पलेशं विमलेशञ्च शूलभित् ॥
शचीहरणमाख्यातमन्धकस्य वधस्ततः ।
शूलभेदोद्भवो यत्र दारधर्म्माः पृथग्विधाः ॥
आख्यानं दीर्घतपस ऋष्यशृंगकथा ततः ।
चित्रसेनकथा पुण्या काशिराजस्य मोक्षणम् ॥
ततो देवशिलाख्यानं शबरीचरितोचितम् ।
व्याधाख्यानं ततः पुण्यं पुष्करिण्यर्कतीर्थकम् ॥

आदित्येश्वरतीर्थञ्च शक्रतीर्थकरोटिकम् ।
कुमारेशमगस्त्येशं च्यवनेशं च मातृजम् ॥
लोकेशं धनदेशं च मंगलेशं च कामजम् ।
नागेशं चापि गोपारं गौतमं शङ्खचूडजम् ॥
नारदेशं नन्दिकेशं वरुणेश्वरतीर्थकम् ।
दधिस्कन्दादितीर्थानि हनूमन्तेश्वरस्ततः ॥
रामेश्वरादितीर्थानि सोमेशं पिंगलेश्वरम् ।
ऋणमोक्षं कपिलेशं पूतिकेशं जलेशयम् ॥
चण्डार्कयमतीर्थं च कह्लोडीशं च नान्दिकम् ।
नारायणं च कोटीशं व्यासतीर्थं प्रभासिकम् ।
नागेशं शङ्खपर्णकं मन्मथेश्वरतीर्थकम् ।
एरण्डं संगमं पुण्यं सुवर्णशिलतीर्थकम् ॥
करञ्जं कामदं तीर्थं भाण्डारं रोहिणीभवम् ।
चक्रतीर्थं धौतपापं स्कान्दमांगीरसाह्वयम् ॥
कोटितीर्थमयोन्याख्यमंगराख्यं त्रिलोचनम् ।
इन्द्रेशं कम्बुकेशं च सोमेशं कोहलेशकम् ॥
नार्मदं चार्कमाग्नेयं भार्गवेश्वरसत्तमम् ।
ब्राह्मं दैवं च भागेशमादिवाराहणं रवेः (?) ॥
रामेशमथसिद्धेशमाहल्यं कंकटेश्वरम् ।
शाक्रं सौमं च नान्देशं तापेशं रुक्मिणीभवम् ॥
योजनेशं वराहेशं द्वादशीशिवतीर्थके ।
सिद्धेशं मंगलेशं च लिंगवाराहतीर्थकम् ॥
कुण्डेशं श्वेतवाराहं भार्गवेशं रवीश्वरम् ।
शुक्लादीनि च तीर्थानि हुंकारस्वामितीर्थकम् ॥
संगमेशं नारकेशं मोक्षं सार्पं च गोपकम् ।
नागं शांबं च सिद्धेशं मार्कण्डाक्रूरतीर्थके ॥

कामोदशूलारूपाख्ये माण्डव्यं गोपकेश्वरम् ।
कपिलेशं पिंगलेशं सूतेशं गांगगौतमे ॥
आश्वमेधं भृगुकच्छं केदारेशं च पापनुत् ।
कनखलेशं जालेशं शालग्रामं वराहकम् ॥
चन्द्रप्रभासमादित्यं श्रीपत्याख्यं च हंसकम् ।
मूलस्थानं च शूलेशमाग्नेयं चित्रदैवकम् ॥
शिखीशं कोटितीर्थं च दशकन्यं सुवर्णकम् ।
ऋणमोक्षं भारभूतिरत्रास्ते पुंखमुण्डितम् ॥
आमलेशं कपालेशं शृंगेरण्डीभवं ततः ।
कोटितीर्थं लोटनेशं फलस्तुतिरतः परम् ॥
कृमिजंगलमाहात्म्ये रोहिताश्वकथा ततः ।
धुन्धुमारसमाख्यानं वधोपायस्ततोऽस्य च ॥
वधो धुन्धोस्ततः पश्चात् ततश्चित्रवहोद्भवः ।
महिमास्य ततश्चण्डीशप्रभावो रतीश्वरः ॥
केदारेशं लक्षतीर्थं ततो विष्णुपदीभवम् ।
मुखारं च्यवनधाख्यं ब्रह्मणश्च सरस्ततः ॥
चक्राख्यं ललिताख्यानं तीर्थं च बहुगोमखम् ।
रुद्रावर्त्तं च मार्कण्डं तीर्थं पापप्रणाशनम् ॥
रुक्मेशं शुद्धपटं लवान्धुमेततीर्थकम् ।
जिह्वोदतीर्थसम्भूतिः शिवोद्भेदं फलश्रुतिः ॥
एप खण्डो ह्यवन्त्याख्याःशृण्वतां पापनाशनः ।
(६) अतः परं नागराख्यः खण्डः षष्ठोऽभिधीयते ॥
लिंगोत्पत्तिसमाख्यानः हरिश्चन्द्रकथा शुभा ।
विश्वामित्रस्य माहात्म्यं त्रिशंकुस्वर्गतिस्तथा ॥
हाटकेश्वरमाहात्म्ये वृत्रासुरवधस्तथा ।
नागविलं शंखतीर्थमचलेश्वरवर्णनम् ॥

चमत्कारपुराख्यानं चमत्कारकरं परम् ।
गयशीर्षं वालशाख्यं वालमण्डं मृगाह्वयम् ॥
विष्णुपादं च गोकर्णं युगरूपं समाशयः ।
सिद्धेश्वरं नागसरः सप्तर्षेयं ह्यगस्त्यकम् ॥
भ्रूणगर्त्तं नलेशञ्च भीष्मदूर्वैरमर्कंकम् ।
शार्मिष्ठं शोभनाथञ्च दौर्गमानर्तकेश्वरम् ॥
जलमग्निवधाख्यानं नैःक्षत्रियकथानकम् ।
रामह्रदं नागपरं जडलिङ्गञ्च यज्ञभूः ॥
मुण्डीगदित्रिकार्कञ्च सतीपरिणयस्तथा ।
बालखिल्यं च योगेशं बालखिल्यञ्च गारुडम् ॥
लक्ष्मीशापः साप्तविशः सोमप्रासादमेव च ।
अम्बावृद्धं पादुकाख्यं आग्नेयं ब्रह्मकुण्डकम् ॥
गोमुख्यं लोहयष्ट्याख्यमजापालेश्वरी तथा ।
शानैश्चरं राजवापी रामेशो लक्ष्मणेश्वरः ॥
लवणाख्यं कुशेशाख्यं लिङ्गं सर्गोत्तमोत्तमम् ।
अष्टसृष्टिसमाख्यानं दमयन्त्यास्त्रिजातकम् ॥
ततोऽम्बारेवती चात्र भट्टिकातीर्थसम्भवम् ।
क्षेमङ्करी च केदारं शुक्लतीर्थं मुखारकम् ॥
सत्यसन्धेश्वराख्यानं तथा कर्णोत्पला कथा ।
अटेश्वरं याज्ञवल्क्यं गौर्य्यं गाणेशमेव च ॥
ततो वास्तुपदाख्यानं अजागृहकथानकम् ।
मिष्टान्नदेश्वराख्यानं गाणपत्यत्रयं ततः ॥
जाबालिचरितञ्चैव वारकेशकथा ततः ।
कालेश्वर्य्यन्धकाख्यानं कुण्डमाप्सरसं तथा ॥
पुष्यादित्यं रोहिताश्वं नगरोत्पत्तिकीर्त्तनम् ।

भार्गवं चरितञ्चैव वैश्वामित्रं ततः परम् ॥
सारस्वतं पैप्पलादं कंसारीशञ्च पैण्डिकम् ।
ब्रह्मणो यज्ञचरितं सावित्र्याख्यानसंयुतम् ॥
रैवतं भर्तृयज्ञाख्यं मुख्यतीर्थनिरीक्षणम् ।
कौरवं हाटकेशाख्यं प्रभासं क्षेत्रकत्रयम् ।
पौष्करं नैमिषं धार्म्ममरण्यत्रितयं स्मृतम् ।
वाराणसी द्वारकाख्यावन्त्याख्यति पुरीत्रयम् ॥
वृन्दावनं खाण्डवाख्यमद्वैताख्यं वनत्रयम् ।
कल्पः शालस्तथा नन्दो ग्रामत्रयमनुत्तमम् ॥
आसिशुक्ला पितृसंज्ञं तीर्थत्रयमुदाहृतम् ।
अर्बुदोरैवतश्चैव पर्वतत्रयमुत्तमम् ॥
नदीनां त्रितयं गंगा नर्म्मदा च सरस्वती ।
सार्द्धकोटित्रयफलमेकैकञ्चैषु कीर्त्तितम् ॥
कूपिकाशखताथञ्चामरकं बालमण्डनम् ।
हाटकेशक्षेत्रफलप्रदं प्रोक्तं चतुष्टयम् ॥
शम्बादित्यः श्राद्धकल्पो यौधिष्ठिरमथान्धकम् ।
जलशायिचतुर्म्मास्यमशून्यशयनव्रतम् ॥
मंकणेशः शिवरात्रिस्तुलापुरुषदानकम् ।
पृथ्वीदानं बाणकेशं कपालं मोचनेश्वरम् ॥
पापपिण्डं साप्तलैङ्गं युगमानादिकीर्त्तनम् ।
निम्बेशशाकम्भर्य्याख्या रुद्रैकादशकीर्त्तनम् ॥
दानमाहात्म्यकथनं द्वादशादित्यकीर्त्तनम् ।
इत्येष नागरः खण्डः प्रभासाख्योऽधुनोच्यते॥
(७म)–सोमेशो यत्र विश्वेशोऽर्कस्थलः पुण्यदो महत् ।
सिद्धेश्वरादिकाख्यानं पृथगत्र प्रकीर्त्तितम् ॥

अग्नितीर्थं कपर्दीशं केदारेशं गतिप्रदम् ।
भीमभैरवचण्डीश-भास्करांगारकेश्वराः ॥
बुधेज्यभृगुसौरेन्दु-शिखीशा हरविग्रहाः ।
सिद्धेश्वराद्याः पंचान्ये रुद्रास्तत्र व्यवस्थिताः ॥
वरारोहा ह्यजापाला मंगला ललितेश्वरी ।
लक्ष्मीशो वाडवेशश्चार्घीशः कामेश्वरस्तथा ॥
गौरीशवरुणेशाख्यमुपीशं च गणेश्वरम् ।
कुमारेशं च शाकल्यं नकुलोत्तंकगौतमम् ॥
दैत्यघ्नेशं चक्रतीर्थं सन्निहत्याह्वयं तथा ।
भूतेशादीनि लिंगानि आदिनारायणाह्वयम् ॥
ततश्चक्रधराख्यानं शाम्बादित्यकथानकम् ॥
कथा कण्टकशोधिन्या महिषघ्न्यास्ततः परम् ॥
कपालीश्वरकोटीश-बालब्रह्माह्वसत्कथा ।
नरकेशसम्वर्त्तेश-निधीश्वरकथा ततः ॥
बलभद्रेश्वरस्याथ गंगाया गणपस्य च ।
जाम्बवत्याख्यसरितः पाण्डुकूपस्य सत्कथा ॥
शतमेघलक्षमेघकोटिमेघकथा ततः ।
दुर्वासार्कयदुस्थाने हिरण्यसंगमोत्कथा ॥
नगरार्कस्यकृष्णस्य संकर्षणसमुद्रयोः ।
कुमार्य्याः क्षेत्रपालस्य ब्रह्मेशस्य कथा पृथक् ॥
पिंगलासंगमेशस्य शंकरार्कघटेशयोः ।
ऋषितीर्थस्य नन्दार्कत्रितकूपस्य कीर्त्तनम् ॥
शशोपानस्यपर्णार्कन्यंकुमत्योः कथाद्भुता ।
वराहस्वामिवृत्तान्तं छायालिंगाख्यगुल्फयोः ॥
कथा कनकनन्दायाः कुन्तीगंगेशयोस्तथा ।
चमसोद्भेदविदुरत्रिलोकेशकथा ततः ॥

मंकणेशत्रैपुरेशषण्डतीर्थकथा तथा।
सूर्यप्राचीत्रीक्षद्वयोरुमानाथकथा तथा॥
भूद्वारशूलस्थलयोश्च्यवनार्केशयोस्तथा।
अजापालेशबालार्ककुबेरस्थलजा कथा।
ऋषितोयाकथा पुण्या संकालेश्वरकीर्त्तनम्।
नारदादित्यकथनं नारायणनिरूपणम्॥
तप्तकुण्डस्य माहात्म्यं मूलचण्डीशवर्णनम्।
चतुर्वक्त्रगणाध्यक्षकलम्बेश्वरयोः कथा॥
गोपालस्वामिबकुलस्वामिनोर्मरुती तथा।
मोक्षार्कोन्नतविघ्नेशजलस्वामिकथा ततः।
कालमेघस्य रुक्मिण्या उर्वशीश्वरभद्रयोः।
शङ्खावर्तमोक्षतीर्थगोष्पदाच्युतसेवनम्॥
मालेश्वरस्य हुंकारकूपचण्डीशयोः कथा।
आशापुरस्थविघ्नेशकलाकुण्डकथाद्भुता॥
कपिलेशस्य च कथा जरद्गवशिवस्य च।
नलककोंटेश्वरयोर्हाटकेश्वरजा कथा॥
नारदेशमंत्रभूतीदुर्गाकूटगणेशजा।
सुपर्णलाख्यभैरव्योर्भल्लतीर्थभवा कथा॥
कीर्त्तनं कर्दमालस्य गुप्तसोमेश्वरस्य च।
बहुस्वर्णेश-शृङ्गेश-कोटीश्वरकथा ततः॥
मार्कण्डेश्वर-कोटीशदामोदरगृहोत्कथा।
स्वर्णरेखाब्रह्मकुण्ड कुन्तीभीमेश्वरौ तथा॥
मृगीकुण्डस्य सर्वस्वं क्षेत्रे वस्त्रापथे स्मृतम्।
दुर्गाबिल्वेशगङ्गेशरेवतानां कथाद्भुता॥
ततोर्बुदे शुभ्रकथा अचलेश्वरकीर्त्तनम्।
नागतीर्थस्य च कथा वसिष्ठाश्रमवर्णनम्॥

भद्रकर्णस्य माहात्म्यं त्रिनेत्रस्य ततः परम् ।
केदारस्य च माहात्म्यं तीर्थागमनकीर्त्तनम् ॥
कोटीश्वरं रूपतीर्थहृषीकेशकथास्ततः ।
सिद्धेशशुक्रेश्वरयोर्मणिकर्णीशकीर्त्तनम् ॥
पङ्कुतीर्थं यमतोथ वाराहीतीर्थवर्णनम् ।
चन्द्रप्रभासपिण्डोदश्रीमातुः शुक्लतीर्थजम् ॥
कात्यायन्याश्च माहात्म्यं ततः पिण्डारकस्य च ।
ततः कनखलस्याथ चक्रमानुषतीर्थयोः ॥
कपिलाग्नितीर्थकथा तथा रक्तानुबन्धजा ।
गणेश-पार्टेश्वरयोर्यात्राया मुद्गलस्य च ॥
चण्डीस्थानं नागभवं शिरः कुण्डमहेशजा ।
कामेश्वरस्य मार्कण्डेयोत्पत्तेश्च कथा ततः ॥
उद्दालकेशसिद्धेशगर्त्ततीर्थकथा पृथक् ॥
श्रीमद्देवमतोत्पत्तिर्व्यासगौतमतीर्थयोः ।
चन्द्रोद्भेदेशानलिंगब्रह्मस्थानोद्भवोहनम् ॥
त्रिपुष्करं रुद्रह्रदं गुहेश्वरकथा शुभा ।
अविमुक्तस्य माहात्म्यमुमामाहेश्वरस्य च ॥
महौजसः प्रभावस्य जम्बूतीर्थस्य वर्णनम् ।
गङ्गाधरमित्रकयोः कथा चाथ फलस्तुतिः ॥
द्वारकायाश्च माहात्म्ये चन्द्रशर्म्मकथानकम् ॥
जागराद्याख्यव्रतञ्च व्रतमेकादशीभवम् ॥
महाद्वादशिकाख्यानंप्रह्लादर्षिसमागमः ।
दुर्वासस उपाख्यानं यात्रोपक्रमकीर्त्तनम् ॥
गोमत्युत्पत्तिकथनं तस्यां स्नानादिजं फलम् ।
चक्रतीर्थस्य माहात्म्यं गोमत्युदधिसंगमः ॥
सनकादिह्रदाख्यानं नृगतीर्थकथा ततः ।

गोप्रचारकथा पुण्या गोपीनां द्वारकागमः ॥
गोपीश्वरसमाख्यानं ब्रह्मतीर्थादिकीर्त्तनम् ।
पञ्चनद्यागमाख्यानं नानाख्यानसमाचितम् ॥
शिवलिंगमहातीर्थकृष्णपूजादिकीर्त्तनम् ।
त्रिविक्रमस्य मूर्त्याख्या दुर्वासःकृष्णसंकथा ॥
कुशदैत्यवधोऽर्चाख्या विशपार्चनजं फलम् ।
गोमत्यां द्वारकायाञ्च तीर्थागमनकीर्त्तनम् ॥
कृष्णमन्दिरसंप्रेक्षं द्वारवत्यभिषेचनम् ।
तत्रतीर्थावासकथा द्वारकापुण्यकीर्त्तनम् ॥
इत्येष सप्तमः प्रोक्तः खण्डः प्राभासिको द्विज ।
स्कान्दे सर्वोत्तरकथा शिवमाहात्म्यवर्णने ॥" *

हे मरीचे ! सुनो, मैं तुम्हारे निकट स्कन्दनामक पुराण कहता हूं, इसके प्रतिपदमें साक्षात् महादेव वर्तमान हैं। मैने शतकोटि पुराणमें जो शैव वर्णन किया था, उस लक्षित अर्थ समूहका सार व्यासने कीर्तन किया है। यह स्कन्द नामक पुराण सात खण्डोंमें विभक्त है। यह इक्यासी सहस्रश्लोकोंमें परिपूर्ण और सम्पूर्ण पापोंके नाश करनेमें समर्थ है। जो व्यक्ति इसका श्रवण वा पाठ करता है, वह साक्षात् शिवरूपमें अवस्थान करता है। इसमें षण्मुखकर्तृक तत्पुरुपकल्पमें सर्वसिद्धि विधायक माहेश्वरके सम्पूर्ण धर्म्म प्रकाशित हुए हैं.

(१ म माहेश्वरखण्डमें) बृहत् कथायुक्त माहेश्वरखण्डही इस पुराणका आदि और सर्वपापनाशक है। यह माहेश्वर खण्ड पुण्यजनक और कुछ कम बारह सहस्र श्लोकोंमें परिपूर्ण है। यह स्कन्दमाहात्म्य सूचक है। इसके केदारमाहात्म्यके आदिमें पुराणोपक्रम हुआ है। पश्चात् दक्षयज्ञ कथा, शिवलिंगार्चनमें फल, समुद्रमंथनाख्यान, देवेन्द्रचरित, पार्वतीका उपाख्यान और विवाह, कुमारोत्पत्ति, तारकायुद्ध, पाशुपतिका आख्यान, चण्डीका आख्यान, दूतप्रवर्तनाख्यान, नारदका समागम, कुमारमाहात्म्यमें

* हस्तलिपीकी अशुद्धितासे अनेक श्लोकोंमें सन्देह है।

पंचतीर्थ कथा, धर्म्मवर्म्मनृपाख्यान, महीसागर कीर्त्तन, इन्द्रद्युम्न कथा, नाडीजंघकथा, महीप्रादुर्भाव, दमनकथा, महीसागरसंयोग, कुमारेशकथा, तारकयुद्ध, तारकवध, पंचलिंग निवेशन, दीपाख्यान ब्रह्माण्डस्थितिमान, वर्करेशकथा, वासुदेव माहात्म्य कोटितीर्थ, नानातीर्थ समाख्यान.पाण्डवोंकी कथा,महाविद्याप्रसाधन, तीर्थयात्रासमाप्ति, अरुणाचलमाहात्म्य, सनक ब्रह्म सम्वाद, गौरीतपोवृत्तान्त, और उस २ तीर्थका निरूपण, महिषासुरजाख्यान और वध तथा शोणाचलमें शिवानस्थान वर्णित हुआ है.

(२ य वैष्णवखण्डमें)—इसके प्रथममें भूमिवराहसमाख्यान, रोचककुभ्रक माहात्म्य, कमलाकी कथा और श्रीनिवासस्थिति, फिर कुलाल आख्यान, सुवर्णमुखरी कथा, नानाख्यानयुक्त भरद्वाज कथा, मतंगाञ्जन सम्वाद,पुरुषोत्तममाहात्म्य, मार्कण्डेय और अम्बरीष आदिका समाख्यान, इन्द्रद्युम्नाख्यान, विद्यापतिकथा, जैमिनीय उपाख्यान, नारदोपाख्यान, नरसिंह उपाख्यानवर्णन,अश्वमेधकथा, ब्रह्मलोकगति,रथयात्राविधि,जन्मस्थानविधि,दक्षिणामूर्तिका उपाख्यान,गुण्डिचा आख्यान, रथरक्षाविधान, वह्न्युत्सवनिरूपण, भगवान्का दोलोत्सव, सम्वत्सरनामकव्रत, कामियोंकी विष्णुपूजा,उद्दालकनियोग,मोक्षसाधन,नानायोगनिरूपण,दशावतार कथन, स्नानादिकीर्तन, पापनाशन बदरिकामाहात्म्य, अग्निआदि तीर्थमाहात्म्य, वैनतेयशिलाभव, भगवद्वासका कारण, कपालमोचनतीर्थ,पञ्चधारानामक तीर्थ, मेरुसंस्थापन, मदनालसमाहात्म्य,धूम्रकोशसमाख्यान,कार्त्तिकमासीय दिनकृत्य,पञ्चभीष्मव्रताख्यान और व्रतमाहात्म्यमें स्नानविधि,पुंड्रादिकीर्तन, मालाधारण,पुण्यपञ्चामृतस्नानपुण्य,घंटानाद आदिके निमित्तफल, नानापुष्प और तुलसीदलार्चन फल, नैवेद्यमाहात्म्य,हरिवासरकीर्त्तन,अखण्डैकादशी पुण्य, जागरणपुण्य,मत्स्योत्सव विधान,नाममाहात्म्यकीर्तन,ध्यानादिपुण्यकथा, मथुरामाहात्म्य,मथुरातीर्थमाहात्म्य,द्वादशवनमाहात्म्य, श्रीमद्भागवत-

माहात्म्य, व्रजशाण्डिल्यमाहात्म्य,स्नानदान,और जपका फल,जलदानादि विषय,कामाख्यान,श्रुतदेवचरित, व्याधोपाख्यान,अक्षय्यतृतीयादिकी कथा और विशेषपुण्यकीर्त्तन,चन्द्रहरि और धर्महरि वर्णन,स्वर्णवृष्टिका उपाख्यान, तिलोदा सरयू सङ्गममें सीताकुण्ड, गुप्तहरि-गोप्रचार,दुग्धोद,गुरुकुण्डादिपंचक,घोषार्कादिक त्रयोदशतीर्थ,सर्वपापनाशक गयाकूप माहात्म्य,मांडव्याश्रमप्रमुख तीर्थ और मासादितीर्थ, यह संपूर्ण विषय वर्णित हैं.

(३ य ब्रह्मखंडमें)—हे मरिचे ! पुण्यप्रद ब्रह्मखंडभी श्रवण करो इसके सेतुमाहात्म्य स्नान और दर्शनका फल गालवकी तपश्चर्या, राक्षसाख्यान, चक्रतीर्थादिमाहात्म्य, वेतालतीर्थ महिमा, मङ्गलादि माहात्म्य,ब्रह्मकुंडादि वर्णन, हनुमत्कुंड महिमा,अगस्त्यतीर्थफल, रामतीर्थादिकथन,लक्ष्मीतीर्थनिरूपण,शंखादितीर्थमहिमा,धनुष्कोट्यादिमाहात्म्य,क्षीरकुंडादिकी महिमा, गायत्र्यादितीर्थमाहात्म्य, रामनाथमहिमा, तत्त्वज्ञानोपदेश यात्रा विधान; धर्मारण्यमाहात्म्य,धर्मारण्यसमुद्भव,कर्मसिद्धि समाख्यान,ऋषिवंशनिरूपण, अप्सरातीर्थका माहात्म्य वर्णन और आश्रम समुदायका धर्मनिरूपण, देवस्नानविभाग बकुलार्ककथा, इन्द्रेश्वरादिमाहात्म्य, द्वारकादिनिरूपण, लोहासुरका आख्यान, गंगाकूपनिरूपण, श्रीरामचरित,सत्यमन्दिरवर्णन, जीर्णोद्धारकथन, शासनप्रतिपादन जातिभेद कथन, स्मृतिधर्मनिरूपण, वैष्णवधर्म कथन,चातुर्मास्य सर्वधर्मनिरूपण,दानप्रशंसा,व्रतमहिमा तपस्या और पूजाका सच्छिद्रकथन, प्रकृतिका भिन्नाख्यान, शालग्रामनिरूपण, तारकवधोपाय, त्र्यक्षरार्चनमहिमा, विष्णु वृक्षत्वशाप और पार्वतीय अनुनय, हरका तांडवनृत्य रागनामनिरूपण, यवनकथाके निमित्त हरका लिङ्गपतन, पार्वती जन्म, तारकाचरित, दक्षयज्ञ समाप्ति, द्वादशाक्षर निरूपण, जन्मयोगसमाख्यान और श्रवणादि पुण्य,यह संपूर्ण वर्णितहुआ है।

ब्रह्मखण्डके उत्तरभागमें शिवमहिमा, पंचाक्षर महिमा, गोकर्ण माहात्म्य, शिवरात्रमहिमा, प्रदोषव्रतकीर्तन, समाचारव्रत सीमन्तिनीकथा,

भद्रायूत्पत्तिकथन, सदाचारनिरूपण, शिववर्म्मसमुद्देश, भद्रायुका विवाह वर्णन, भद्रायुमहिमा, भस्ममाहात्म्यकीर्तन, शबराख्यान, उमामाहेश्वरव्रत, रुद्राक्ष माहात्म्य, रुद्राध्याय और श्रवणादिक पुण्य, यह सम्पूर्ण कीर्त्तित हुआ है.

इसके अनन्तर अनुत्तम चतुर्थ काशीखण्ड कहा जाता है। इसमें प्रथमतः विन्ध्य और नारदका सम्वाद, सत्यलोकप्रभाव, अगस्त्यावासमें सुरागमन, पतिव्रताचरित्र और तीर्थचर्य्याप्रशंसा, पश्चात् सप्तपुरी, संयमनी निरूपण, शिवशर्म्माको सूर्य्य इन्द्र और अग्निलोकप्राप्ति, अग्निकी उत्पत्ति, वरुणोत्पत्ति, गन्धवती, अलकापुरी और ईश्वरीकी समुत्पत्ति क्रममें चन्द्र, बुध, कुज, बृहस्पति और सूर्य्यलोक, सप्तर्षि, ध्रुव, तथा तपोलोकका वर्णन, पवित्रध्रुवलोककथा, सत्यलोकवर्णन, स्कन्ध और अगस्त्यका आलापन, मणिकर्णिकासमुद्भव, गंगाका प्रभाव, गंगाके सहस्रनाम, वाराणसीप्रशंसा, भैरवाविर्भाव, दण्डपाणि और ज्ञानवापीका उद्भव, कलावतीका आख्यान, सदाचारनिरूपण, ब्रह्मचारी आख्यान, स्त्रीलक्षण, कृत्याकृत्यनिर्देश, अविमुक्तेश्वरवर्णन, गृहस्थ और योगियोंका धर्म्म कालज्ञान, दिवोदासकथा, काशीवर्णन, योगाचर्य्या, लोलार्क और शाल्वार्ककी कथा, द्रुपदार्क, तार्क्ष्याख्य, अरुणार्कका उदय, दशाश्वमेधतीर्थाख्यान, मन्दरसे यातायात, पिशाचमोचनाख्यान, गणेशप्रेरण, मायागणपतिका पृथिवीमें प्रादुर्भाव, विष्णुमायाप्रपञ्च, दिवोदासविमोक्षण, पञ्चनदोत्पत्ति, बिन्दुमाधवसम्भव, वैष्णवतीर्थाख्यान, शूंगिका कौशिकागम, ज्येष्ठेश जैगीषव्यके साथ सम्वाद क्षेत्राख्यान, कुन्दकेश और व्याघ्रेश्वरोत्पत्ति, शैलेश, रत्नेश और कृत्तिवासाका सम्वाद, देवताओंका अधिष्ठान, दुर्गासुरका पराक्रम, दुर्गाकी विजय, ओंकारेशवर्णन, ओंकारमाहात्म्य, त्रिलोचन समुद्भव, केदाराख्यान, धर्म्मेशकथा, बिल्वभुजकथा, वीरेश्वरसमाख्यान, गंगामाहात्म्य कीर्त्तन, सत्येश और अमृतेशादि पाराशरका भुजस्तम्भ, क्षेत्रतीर्थसमूह,

मुक्तिमण्डपकथा, विश्वेशविभव और यात्रा, यह सम्पूर्णविषय निरूपित हुए हैं.

इसके अनन्तर अवन्तीनामक पञ्चमखण्ड सुनो । इसमें महाकालाख्यान, ब्रह्मशीर्षच्छेद, प्रायश्चित्तविधि, अग्निउत्पत्ति, सुरागमन, देवदीक्षा शिवस्तोत्र, कपालमोचनाख्यान, महाकालवनस्थिति, कलकलेशतीर्थ, अप्सरानामक कुण्ड, मर्कटेश्वरतीर्थ, स्वर्गद्वार, चतुःसिन्धुतीर्थ, शंकर वापिका, सकरार्कगन्धर्वतीर्थ, दशाश्वमेधतीर्थ, पिशाचकादि यात्रा, महाकालेश यात्रा, वाल्मीकेश्वरतीर्थ, शुकेश और नक्षत्रेशका उपाख्यान, कुशस्थलीप्रदक्षिण और अक्रूरमन्दाकिनी, अक्षपाद, चन्द्रसूर्यका वैभव, करभेश, कुक्कुटेश और लड्डुकेशआदि तीर्थ, मार्कण्डेयेश, यज्ञवापी, सोमेश, नरकान्तक, केदारेश्वर, रामेश, सौभाग्येश-नरार्क, केशार्क और शक्तिभेद आदि तीर्थ, अन्धकस्तुतिकीर्त्तन, क्षिप्रास्नानादि फल, शिवस्तुति, हिरण्याक्षवधाख्यान, सुन्दरकुण्ड, अघनाशन, पुरुषोत्तमतीर्थ, विष्णुके सहस्रनाम, वीरेश्वर सरोवर, कालभैरवतीर्थ, नागपंचमी महिमा, नृसिंह, जयन्तिका मुकुटेश्वर यात्रा, देवमाधककीर्त्तन, कर्कराजतीर्थ, रुद्रकुण्ड आदिमें बहुतीर्थ निरूपण, रेवामाहात्म्य, धर्म्मपुण्यका मार्कण्डेयके साथ मिलन पूर्वलयानुभवाख्यान अमृतकीर्त्तन, कल्प २ में नर्मदाके नाम का पृथक्त्व ऋषि और नर्म्मदाका स्तव कालरात्रिकथा, महादेवस्तुति, पृथक् कल्पकथा, विशल्याख्यान, त्रिपुरदहन देहपातविधान, कावेरीसंगम, दारुतीर्थ, अग्नितीर्थ, रवितीर्थ, नर्म्मदेशआदि शचीहरण, अन्धकासुरवध, शूलभेदोद्भव, भिन्न २ दानकर्म्म, दीर्घतपाका आख्यान, ऋष्यशृंगकथा, चित्रसेनकथा, काशिराजाका मोक्षण, देवशिलाख्यान, शबरीचरित्र, व्याधाख्यान, पुष्करिण्यर्कतीर्थ; आदित्येश्वरतीर्थ शक्रतीर्थ, करोटिक, कुमारेश, अगस्त्येश, च्यवनेश मातृज लोकेश, धनेश, मंगलेश कामज, नारदेश, नन्दिकेश और वरुणेश्वर आदि तीर्थ, दधिस्कन्दादितीर्थ, रामेश्वरादि तीर्थ सोमेश, पिंगलेश्वर ऋणमोक्ष कपिलेश पूतिकेश जले-

शय,और चण्डार्कादितीर्थ,कह्लोडीप, नान्दिक, नारायण,कोटिश और व्यासतीर्थ,प्रभासिक,नागेश, संकर्षणक और मन्मथेश्वरतीर्थ,एरंडीसंगम,सुवर्णशिला,करञ्ज और कामहतीर्थ, भाण्डीरतीर्थ, चक्रतीर्थ, स्कान्द आंगिरस, अंगराख्य, त्रिलोचन,इन्द्रेश,कंबुकेश सोमेश,कोहलेश, नार्मद, देवभागेश, आदिवाराह, रामेश, सिद्धेश, अहल्य,कॅकटेश्वर शात्रु,सौम, नान्देश,तापेश, रुक्मिणीभव, योजनेश, वराहेश, मंगलेश और लिंग वराह आदितीर्थ कुण्डेश,श्वेतवाराह,भार्गवेश,रवीश्वर और शुक्लआद तीर्थ,हुंकारस्वामितीर्थ, संगमेश,नारकेश मोक्ष, सार्प,गोप,नाग, शाम्ब, सिद्धेश, मार्कण्ड और अक्रूर आदितीर्थ कामोद शूलारोप,मांडव्य गोपकेश्वर,कपिलेश, भूतेश,गांग गौतम, अश्वमेध,भृगुकच्छ, केदारेश, कनखलश,जालेश,शालग्राम वराह,चन्द्रप्रभा श्रीगत्याख्य हंसक मूलस्थान शूलेश, चित्रदेवक शिल्पीशकोटि तीर्थ, दशकन्या, सुवर्णक ऋणमोक्ष आदितीर्थ कमिजंगलमाहात्म्य, रोहिताश्वकथा, धुन्धुमारसमाख्यान,धुन्धुमारवधोपाख्यान, चित्रमहोद्भव, चण्डीशप्रभाव और केदारेश लक्षतीर्थ, विष्णुपदीतीर्थ, च्यवन, अन्धाख्य ब्रह्मसरोवर,चक्राख्य, ललिताख्यान,बहुगोमय, रुद्रावर्त्त, मार्कण्डेय रावणेश शुद्धपट देवान्धु प्रेततीर्थ जिह्वोदतीर्थोद्भव और शिवोद्भवआदि तीर्थ यह संपूर्ण वर्णितहुए हैं इसके श्रवण करनेसे सम्पूर्ण पाप नष्ट होते हैं.

(६ ष्ठ नागरखण्ड) इसमें लिंगोत्पत्ति, हरिश्चन्द्रकथा, विश्वामित्रमाहात्म्य, त्रिशंकुकी स्वर्गगति, हाटकेश्वरमाहात्म्य, वृत्रासुरवध, नागबिल शंखतीर्थ अचलेश्वरवर्णन, चमत्कारपुराख्यान, गयशीर्ष, बालशाख्य, बालमण्ड, मृगाह्वय, विष्णुपाद, गोकर्ण, युगरूप, सिद्धेश्वर, नागसर, सप्तार्षेय अगस्त्यकथा, भ्रूणगर्त, नलेश शार्म्मिष्ठ, शोभनाथ और जमदग्निवधोपाख्यान, निःक्षत्रियकथा, रामह्रद, नागपुर, जडलिंग, मुण्डीरादित्रिकार्क, सतीपरिणय, बालखिल्य, योगेश, गारुड, लक्ष्मीशाप

सोमप्रसाद अम्बावृद्ध पादुकाख्य आग्नेय ब्रह्मकुण्ड गोमुख्य लोहयष्ट, आख्य, अजापालेश्वरी, शनैश्वर, राजवापा, रामेश, लक्ष्मणेश, कुशेश, और लवेशलिंग, रेवती आदितीर्थ, सत्यसन्धेश्वराख्यान, कर्णोत्पलकथा; अटेश्वर, याज्ञवल्क्य, गौर्य्य, गणेश और वास्तुसमाख्यान अजागहकथा, मिष्टान्नदेश्वराख्यान, और गाणपत्यत्रय, वाजिलचरित, मकरेशकथा, कालेश्वरी, अन्धकाख्यान, अप्सराकुण्ड, पुष्पादित्य, रोहिताश्व और नागरोत्पत्ति कीर्त्तन, भार्गव और विश्वामित्रचरित सारस्वत पैप्पलाद, कंसारीश, पैण्डिक और ब्रह्माकी यज्ञकथा सावित्र्याख्यान रैवत भर्तृयज्ञमुख्य तीर्थ निरूपण कौरव हाटकेश और प्रभासक्षेत्र पौष्कर नैमिष और धर्म्मारण्य वाराणसी द्वारका और अवन्त्याख्य तीन पुरी वृन्दावन खाण्ड और अद्वैतारण्य तीनवन कल्पशाख्य और नन्दाख्य तीनग्राम, असिशुक्ला और पितृसंज्ञक तीनतीर्थ, श्री अर्बुद और रैवतनामकतीनपर्वत; गंगा नर्मदा और सरस्वतीनामक तीन नदी, कूपिका शंखतीर्थ अमरक और वालमण्डनतीर्थ, साम्बादित्य, श्राद्धकल्प यौधिष्ठिर सम्वाद, अन्धक, जलशायी, चातुर्मास्य अशून्यशयनव्रत, मंकणेश शिवरात्रि तुलापुरुषदान, पृथ्वीदान, वालकेश कपालमोचनेश्वर पापिण्डप सप्तलिंग और युगमानादिकीर्त्तन शाकम्भर्य्याख्यान एकादशरुद्रकीर्त्तन दानमाहात्म्य और द्वादशादित्य कीर्त्तन यह सम्पूर्ण वर्णित हुए हैं। अब प्रभासाख्य सातवाँ खण्ड कहा जाता है.

(७ म प्रभासखण्डमें) सोमेश विश्वेश अर्कस्थल, सिद्धेश्वरादिकाआख्यान, अग्नितीर्थ, कपर्दीश, केदारेश तीर्थ, भीम, भैरव, चण्डीश भास्कर और अंगारकेश्वर आदि हरविग्रह उस स्थानमें सिद्धेश्वरादिके निमित्त औरभी पंचरुद्रका अवस्थान, वरारोहा, अजपाला, मंगला, और ललितेश्वरी, लक्ष्मीश, वाडवेश, अर्घ्येश, कामेश्वर, गौरीश, वरुणेश गणेश्वर कुमारेश, साकल्य, शकुन, उत्तंक, गौतम, दैत्यघ्नेश और चक्र तीर्थ; भूतेशादि लिंग आदिनारायण चन्द्रधराख्यान शाम्बादित्य-

कथा, कण्टक शोधिनी कथा, महिषघ्नीकी कथा, कपालीश्वर कोटीश और बालब्रह्म नामक कथा, नरकेश, सम्वर्तेश और निधीश्वरकथा, बलभद्रेश्वर कथा, गंगा, गणपति, जाम्बवती नामक नदी और पाण्डुकूपकी कथा, शतमेध, लक्षमेध और कोटिमेध कथा, दुर्वासादिकी कथा, नगरार्क, कृष्ण, संकर्षण, समुद्र, कुमारी, मोक्षपाल और ब्रह्मेशकी कथा, पिंगला, संगमेश, संकरार्क, घटेश, ऋषितीर्थ और नन्दार्क त्रित कूपकीर्त्तन, शाशोपान, पर्णार्क और न्यंकुमतीकी कथा, वाराह स्वामी वृत्तान्त, छाया लिंगाख्य और गुल्फ कथा, कनक नन्दी, कुम्भी और गंगेश कथा, चमसोद्भेद, विदुर और त्रिलोकेश कथा मंकणेश, त्रिपुरेश और पण्डतीर्थ कथा, सूर्य्य, प्राची, त्रीक्षण, और उमानाथ कथा, शृंगार, शूलस्थल, च्यवन और अर्केशकी कथा अजापालेश, बालार्क और कुबेरस्थल कथा, पवित्र ऋषितोया कथा, संगमेश्वर कीर्त्तन, नारदादित्य कथन, नारायण निरूपण, तप्तकुण्ड माहात्म्य, मूलचण्डीश वर्णन, चतुर्वक्र, गणाध्यक्ष और कलम्बेश्वर कथा, गोपालस्वामी और बकुलस्वामी, मरुती कथा, क्षेमार्क, विघ्नेश, और जलस्वामी कथा, कालमेध, रुक्मिणी, उर्वशीश्वर, भद्र, शंखावर्त्त, मोक्षतीर्थ, गोष्पद, अच्युत गृह, मालेश्वर, हुंकार और कूपचण्डीश कथा, कापिलेश कथा, जरद्गव शिवकथा, नल, कर्कटेश्वर और हाटकेश्वर, जरद्गवेशा आदिकी कथा,सुपर्णश, भैरवी और भट्टतीर्थ कर्दमाल और गुप्तसोमेश्वरका कीर्त्तन, बहु स्वर्णेश, शृंगेश और कोटीश्वर कथा, मार्कण्डेश, कोटीश दामोदर कथा, स्वर्णरेखा, ब्रह्मकुण्ड, कुन्तीश, भीमेश, मृगीकुण्ड; सर्वस्व क्षेत्र, छत्रा निल्वेथ, गंगेश, रैवतादिकी कथा, स्वभ्रकथा, अचलेश्वर कीर्त्तन, नागतीर्थ कथा, वसिष्ठाश्रम वर्णन, कर्ण माहात्म्य, त्रिनेत्र माहात्म्य, केदार माहात्म्य, तीर्थागमन कीर्त्तन, कोटीश्वर, रूपतीर्थ, हृषीकेश कथा, सिद्धेश, शुक्रेश और मणिकर्णीश कीर्त्तन, पंकुतीर्थ, यमतीर्थ और वाराही तीर्थ-

वर्णन, चन्द्रप्रभा, सपिण्डोद, स्त्री माहात्म्य और शुक्लतीर्थ माहात्म्य, कात्यायनी माहात्म्य, पिण्डारक, कनखल, चक्र, मानुष और कपिलाग्नि तीर्थ कथा, चण्डीस्थानादि कथा, कामेश्वर और मार्कण्डेयोत्पत्ति कथा, उद्दालकेश और सिद्धेशतीर्थ कथा, श्रीदेव माता-की उत्पत्ति, व्यास और गौतमतीर्थकी कथा, कुलसन्ताका माहात्म्य, चन्द्रोद्भेदादि कथा, काशीक्षेत्र, उमा और महेश्वरका माहात्म्य, महौजा-का प्रभाव, जंबूतीर्थवर्णन, गंगाधर और मिश्रककी कथा, द्वारकामाहात्म्य चन्द्रशर्म कथा, जागराधाख्यव्रत, एकादशीव्रत, महाद्वादशी आख्यान, प्रह्लादर्षिसमागम, दुर्वासाका उपाख्यान, यात्रोपक्रमकीर्त्तन, गोमतीकी उत्पत्ति कीर्त्तन, चक्रतीर्थमाहात्म्य, गोमतीका समुद्रसंगम, सनकादि-ह्रदाख्यान नृपतीर्थकथा, गोप्रचारकथा, गोपियोंका द्वारकागमन, गोपि-योंका समाख्यान, ब्रह्मतीर्थादि कीर्त्तन, पंचनद्यागमाख्यान, शिवलिंग, महातीर्थ और कृष्णपूजादि कीर्त्तन, त्रिविक्रममूर्त्त्याख्यान, दुर्वासा और कृष्णकथा, कुशदैत्यवध, विशेपार्चनमें फल, गोमती और द्वारकामें तीर्थ गमनकीर्त्तन, श्रीकृष्णमंदिरसंप्रेक्षण, द्वारवत्यभिषेचन, उन स्थानम तीर्थवासकथा, एवं द्वारका पुण्यकीर्त्तन, हे द्विज ! यह प्रभासनामक सप्तमखण्ड कहा गया.

ऊपर जितने प्रमाण उद्धृत हुए हैं उनसे स्कन्दपुराणको प्रधानतः संहिता और खण्ड इन दो प्रधानभागोंमें विभक्त किया जासकता है, उनमें संहिता, ६ और खण्ड ७ हैं,संहिता और खण्डमें कोई २ अनेक भागोंमें विभक्त हैं, स्कन्दपुराण ८१००० श्लोक ग्रथित होने परभी इन संपूर्ण संहिता और खण्डोंके एकत्र करनेसे लक्षश्लोकोंसे भी अधिक होता है.

संहिताओंमें अनेक शैवदार्शनिकमत और शैवसंप्रदायके आचार व्यवहार तथा अनुष्ठानादिका परिचय है, छः संहिताओंमेसे सनत्कुमार मत शंकर और सौरसंहिता तथा शंकर संहिताके कितनेही

अंश पाये गए हैं विष्णु और ब्रह्मसंहिताकी टीकाके सहित उत्तर पश्चिमाचलमें विरलप्रचार है.

जितनी संहिताओंका सन्धान पाया गया है, नीचे उनकी विषयानुक्रमणिका दी जाती है-

१म सनत्कुमार संहिता ।

१ विश्वेश्वर गणानुवर्णन, २ काश्यपवर्णन, ३ मोक्षोपायनिरूपण, ४ विश्वेश्वर लिंगाविर्भावकथन, ५ पापहरणोपायवर्णन, ६ भवानीवर्णन, ७ यात्रावर्णन और प्रशंसा, ८देवगणोंका अविमुक्तक्षेत्र प्रवेशवर्णन, ९ तीर्थावली परिवृत भागीरथी प्रवेश वर्णन, १० शिवनृत्यकथा, ११ हिरण्यप्रशंसा, १२ प्रभाकरका काशीप्रवेश, १३ पाशुपतव्रतोपदेश १४ प्रभाकरका काशीवास प्रदान, १५ गरुडेश्वरयात्रावर्णन, १६ कलिव्याकुलव्यासका वाराणसी प्रवेश कथन, १७ व्यासभिक्षाटनवर्णन, १८ व्यासक्षेत्र कथा, १९ अदाभ्येश्वरमाहात्म्य वर्णन,२० काशीधर्म्मनिरूपण, २१ व्यासचरित्रवर्णन ।

२य सूतसंहिता ।

शिवमाहात्म्यखण्डमें-१ ग्रन्थावतार, २ पाशुपतव्रत, ३ नन्दीश्वरविष्णु संवादमें ईश्वरप्रतिपादन, ४ ईश्वरपूजाविधान, और तत्पूजाफल कथन, ५ शक्तिपूजाविधि, ६ शिवभक्तपूजा, ७ मुक्तिसाधन; ८ कालपरिमाण तदवच्छिन्न स्वरूपकथन, ९ पृथिवीका उद्धरण, १० ब्रह्मकर्तृक सृष्टिकथा, ११ हिरण्यगर्भादि विशेषसृष्टि,१२ जातिनिर्णय, १३ तीर्थमाहात्म्य.

२य ज्ञानयोग खण्डमें-१ ज्ञानयोगसंप्रदाय परंपरा, २ आत्मसृष्टि, ३ ब्रह्मचर्य्याश्रमविधि,४ गृहाश्रमविधि, ५ वानप्रस्थाश्रमविधि, ६ संन्यासावाध, ७ प्रायश्चित्तकथा, ८ दानधर्म्म, ९ पापकर्म्मफल, १० पिण्डोत्पत्ति, ११ नाडीचन्द्र १२ नाडीशुद्धि, १३ अष्टाङ्गयोगमें यम-

विधि, १४ नियमविधि, १५ आसनविधान, १६ प्राणायामविधि, १७ प्रत्याहारविधान, १८ धारणविधि, १९ ध्यानविधि, २० समाधि.

३ य मुक्तिखण्डमें—१ मुक्ति, मुक्त्युपाय मोचक और मुक्तिप्रदच-तुर्विधप्रश्न, २ मुक्तिभेदकथन, ३ मुक्त्युपायकथन, ४ मोक्षकथन, ५ मोचनप्रदकथन, ६ ज्ञानोत्पत्ति कथन, ७ गुरुप्रसादन और शुश्रूषणमहिमा, ८ व्याघ्रपुरमें देवगणोंका उपदेश, ईश्वरका नृत्यदर्शन.

४ र्थ यज्ञवैभवखण्डके अधोभागमें—१ वेदार्थप्रश्न, परापर वेदार्थ विचार, ३ कर्म्मयज्ञ वैभव, ४ वाचिकयज्ञ, ५ प्रणवविचार, ६ गायत्री प्रपञ्च, ७ आत्ममंत्र, ८ षडक्षर विचार, ९ ध्यानयज्ञ, १० ज्ञानयज्ञ, ११–१५ ज्ञानयज्ञविशेषादि, १६ ज्ञानोत्पत्तिकारण, १७ वैराग्यविचार, १८ अनित्यवस्तु विचार, १९ नित्यवस्तुविचार; २० विशिष्ट धर्म्म विचार; २१ मुक्तिसाधन विचार; २२ मार्गप्रामाण्य; २३ शंकर प्रसाद, २४–२५ प्रसादवैभव; शिवभाक्तिविचार; २७ परपद स्वरूपविचार; २८ शिवलिंग स्वरूपकथन, २९ शिवस्थान विचार, ३० भस्मधारण वैभव, ३१ शिवप्रीतिकर ब्रह्मैक्य विज्ञान, ३२ भक्ताभाव कारण; ३३ परतत्त्व नाम विचार, ३४ महादेवप्रसादकारण ३५ संप्रदाय परंपरा विचार, ३६सद्यो मुक्तिकर क्षेत्र महिमा, ३७ मुक्त्युपायविचार, ३८ मुक्तिसाधन विचार; ३९ वेदादिका अविरोध, ४० सर्वसिद्धकर कर्म्म विचार, ४१ पातक विचार, ४२ प्रायश्चित्त विचार, ४३ पापशुद्ध्युपाय, ५४ द्रव्यशुद्ध्युपाय, ४५ अभक्ष्यनिवृत्ति, ४६ मृत्युसूचक, ४७ अवशिष्ट पापस्वरूप कथन.

उपरिभागमें—१ ब्रह्मगीता, २ वेदार्थविचार, ३ साक्षिस्वरूपकथन, ४ साक्ष्यस्तित्वकथन, ५ आदेशकथन, ६ हरोपासन, ७ वस्तुस्वरूप विचार, ८ तत्त्ववेदविधि, ९ आनन्दस्वरूपकथन, १० आत्माका ब्रह्म तत्त्वप्रतिपादन, ११ ब्रह्माकी सर्वशरीरमें स्थितिकथा, शिवका अहं प्रत्ययाश्रयत्व १३ सूतगीता, १४ आत्माकर्तृक सृष्टि; १५ सामान्य,

सृष्टि, १६ विशेषसृष्टि, १७ आत्मस्वरूपकथन, १८ सर्वशास्त्रार्थसंग्रह, १९ रहस्यविचार, २० सर्ववेदान्तसंग्रह.

२ य शंकरसंहिता।

यह शंकरसंहिता अनेकखण्डोंमें विभक्त है, उसमें शिवरहस्य खण्डही प्रधान है। इस शिवरहस्यखण्डमें लिखा है.

" तत्र या संहिता प्रोक्ता शांकरी वेदसम्मिता।
त्रिंशत्सहस्रैर्ग्रन्थानां विस्तरेण सुविस्तृता ॥ ६० ॥
आदौ शिवरहस्याख्यं खण्डमद्य वदामि वः।
तत्रयोदशसाहस्रैः सप्तकाण्डैरलंकृतम् ॥ ६१ ॥
पूर्वः सम्भवकाण्डाख्यो द्वितीयस्त्वासुरः स्मृतः।
माहेन्द्रस्तु तृतीयो हि युद्धकाण्डस्ततः स्मृतः ॥ ६२ ॥
पञ्चमो देवकाण्डाख्यो दक्षकाण्डस्ततः परम्।
सप्तमस्तु मुनिश्रेष्ठा उपदेश इति स्मृतः ॥ ६३ ॥ "

इस स्कन्दपुराणमें वेदसम्मित शंकरसंहिता ३०००० ग्रन्थमें सविस्तर वर्णित हुई है। इसके प्रथमखण्डका नाम शिवरहस्य है उनकी श्लोकसंख्या १३००० और सातकांडोंमें विभक्त है। प्रथम संभवकांड, द्वितीय आसुरकांड; तृतीय माहेन्द्रकांड, चतुर्थ युद्धकांड; पञ्चम देवकांड, षष्ठ दक्षकांड और सप्तम उपदेशकांड है.

१ म संभवकांडमें—१ सूतशौनकसंवाद, शिवकी आज्ञासे विष्णुका व्यासरूपमें अवतार और अष्टादश पुराणसंकलन, जिस २ पुराणमें ब्रह्मादि देवगणोंके अन्यतमका माहात्म्य कथित हुआ है उस २ पुराणका नामकीर्त्तन स्कन्दपुराणान्तर्गत षट्संहिताके नामकथन, २—३दाक्षायणीका शिवनिन्दाश्रवणसे निज देहत्याग और मायामयी हिमालयकन्यारूपमें आविर्भाव, ४ शूरपद्म आदि असुरोंके उपद्रवसे पीड़ित इन्द्रादि देवगणोंकी ब्रह्माके निकट गमनकथा, ५ ब्रह्माके निकट शूरपद्म सिंहवक्त्र और

तारकासुर आदिका पराक्रम और इंद्रादिका क्लेशविज्ञापन, ६ इंद्रादि देवगणके साथ ब्रह्माका वैकुंठमें गमन, और विष्णुके निकट असुरोंका उपद्रव कथन, ७ ब्रह्मादिके साथ नारायणका कैलासमें गमन; और शिवके निकट असुरकर्तृक देवपराभववर्णन; ८ कार्तिक उत्पादनपूर्वक असुरसंहार करूंगा इत्यादि वाक्यसे विष्णुआदिको आश्वासन देकर शिवका समाधि अवलंबन; ९–१० शिवकी समाधि भंग करनेके निमित्त देवादेशसे मदनका कैलासमें गमन और समाधिभंगका उपाय चिन्तन; ११–१२ शिवकी समाधिभंग और मदनभस्म; मदनके पुनर्जीवनके निमित्त रतिकी प्रार्थना, पार्वतीको छलना करनेके निमित्त वृद्धब्राह्मणरूपमें शिवका हिमालयगमन, १३–१४ वृद्धब्राह्मणरूपी शिवकी पार्वतीके निकट शिवनिन्दा, उसके सुननेसे पार्वतीका क्रोध, तथा उनको प्रसन्न करके शिवका कैलासमें गमन, १५ महादेवका सप्तर्षियोंको स्मरण करना और पार्वतीका विवाह करनेके निमित्त उनको हिमालयके निकट भेजना, १६ सप्तर्षि हिमालय सम्वाद, १७ सपत्नी हिमालयकी गौरी दानम सम्मति, सप्तर्षिका शिवके निकट आगमन, १८–२२ हरपार्वतीके विवाहांग कर्म्मका अनुष्ठान और हरपार्वतीका मिलन, २३ पार्वतीके साथ शिवका कैलासमें गमन, २४–२६ गणेशकी उत्पत्ति विवरण, २७ वीरबाहु वीरकेशरी, वीरमहेन्द्र, वीरचन्द्र, वीरमार्त्तण्ड, वीरान्तक और वीरनामक शिवपुत्र गणका जन्मवृत्त, २८ शरवनमें कार्त्तिकेयका जन्म और उनको कैलासमें लाना, २९ क्रीडाच्छलसे कार्त्तिकेयका विक्रमवर्णन, ३० इन्द्रादि देवगणका कार्त्तिकेयके साथ युद्ध और इन्द्रादिका पराभव, ३१ बृहस्पतिकी प्रार्थनासे कार्त्तिकेयकर्तृक देवगणको पुनर्जीवदान और आत्माका विश्वात्मकरूपप्रदर्शन, ३२ कार्त्तिकेयका देवसेनापतित्वमें अभिषेक, नारदानुष्ठितयज्ञमें प्राप्तपशवंगसम्भूत एक छागद्वारा त्रिलोकव्याकुलीकरण और उस छागको कार्त्तिकेयके वाहनत्वमें वरण, ३३ कार्त्तिकेयद्वारा ब्रह्माका कारागारावरोधकथन,

३४ शिवकर्तृक ब्रह्माका कारारोध मोचन, ३५-३६ कार्तिकेयकी रूप वीर्य्य और विभूति कथन, ३७ शूरपद्मआदि असुरोंका विनाशकरनेके निमित्त कार्तिकेयकी और वीरबाहु आदिकी युद्धयात्रा, ३८-३९ तारकासुरके साथ वीरबाहु आदिका युद्धवर्णन, ४० वीरबाहुकी पराजय, ४१-४३ कार्तिकेय और तारासुरका युद्धवर्णन, ४४ क्रौञ्च और तारकासुरका वध कथन, ४५ क्रौंचतारकासुरवध दिवसमें ब्रह्मा विष्णु आदि देवगणके साथ कार्तिकेयकी हिमालय पर्वतमें अवस्थिति कथन; ४६ तारकासुरकी पत्नियोंका विलाप, तारकासुर पुत्र असुरेन्द्रका पिताकी अन्त्येष्टि क्रियाशेषकरके पितृव्यशूरपद्मके निकट जाकर कार्त्तिकेयके हाथमें पितृवृत्तान्तकथन, ४७ कार्तिकेयका बलविक्रमादि जाननेके निमित्त उनके निकट शूरपद्मासुरद्वारा गुप्तचरप्रेरण, ४८-५० कार्तिकेयादि देवगणोंका वाराणसी तीर्थादिगमन वृत्तान्त.

२ आसुर काण्डमें-१ शूरपद्म, सिंहास्य, तारकतारक, गजवक्रादिकी उत्पत्ति कथन, २ शूरपद्म, सिंहवक्र और तारकासुरकी तपस्या कथन, ३ महादेवके निकट उनको वरप्राप्ति, ४-७ शूरपद्मादि असुर द्वारा देवगणका पराजय, ८ इन्द्रादिकर्तृकशूरपद्मका राज्याभिषेक वर्णन, ९ शूरपद्मादिका विवाह और वंशविस्तार कथन, १० शूरपद्मका दौरात्म्यवर्णन, ११ विन्ध्यपर्वतका पतन और वातापिवध, १२ शूरपद्मभयसे श्रीकोशानगरमें शचीके साथ इन्द्रका पलायन और देवगणका उनके समीपमें आगमन, १३गण्डकीकी उत्पत्ति, महामल कर्तृकशूर पद्मभगिनीका हस्तच्छेद, १४शूरपद्मासमीपमें अजवक्रद्वारा हस्तच्छेदन विवरण, १५इन्द्रपुत्रजयन्तादि देवगण और शूरपद्म सुतभानुकोपाख्यान, असुरोंका युद्धवृत्तांत.

३ य वीरकाण्डमें-१-७, शूरपद्मासुरके बलवीर्य्यादि दर्शनार्थ वीरबाहुका प्रत्यागमन, वीरबाहुमुखसे शूरपद्मका बलवीर्य्य जानकर युद्धार्थ कार्तिकेयका लङ्कागमन.

४ युद्धकाण्डमें—१—३५ विस्तार पूर्वक कार्त्तिकेय वीरबाहु आदिके साथ शूरपद्म भानुकोपादिकका युद्धवृत्तान्त, शूरपद्म भानुकोपादिका निधन कीर्त्तन.

५ म देवकाण्डमें—१—१६ कार्तिकेयका विवाह वर्णन, मुचकुन्दनृपति-चारिताख्यान, प्रसङ्गमें कार्त्तिकेयका माहात्म्य कीर्त्तन.

दक्षखण्डमें—१—४ ब्रह्मादक्षसम्वादमें शम्भुको जगत् कारणत्व कथन, शिवको सर्वव्यापित्वादि निरूपण, जगत्को ब्रह्मात्मत्व कथन, शिवको पतित्व और ब्रह्मादि सम्पूर्ण जीवोंको पशुत्व कथन, शिवाराधनार्थ दक्षका मानससरोवरादि गमन वृत्तान्त, शिवलब्धवरमें दक्षका पुरीनिर्म्माण विवरण, दक्षपुत्रोंकी सृष्टित्व प्राप्तिकी इच्छासे मानससरोवरमें तपस्यादि, नारद समागममें विवेकोदयके कारण उनका मोक्षाभिलाषादि विवरण, इस बातके सुननेसे दक्षकी पुनर्वार शतपुत्रसृष्टि, मोक्षकामनासे शतपुत्रोंकी नारदोपदेशसे तपश्चारणा, दक्षका क्रोध और तेईस कन्यासृष्टि, वसिष्ठात्रिप्रमुख ऋषियोंको वह कन्या प्रदान, फिर सत्ताईस कन्यासृष्टि और चन्द्रको सम्प्रदान कृत्तिकाके प्रति निरन्तर अनुरक्तिके कारण दक्षद्वारा चन्द्रको अभिशाप और क्षयरोगप्राप्ति कथा, चन्द्रका शिवाराधनादि वृत्तान्त, ५—९ हरपार्वती सम्वादमें जगत् कारणादि कथा, शिवके उपदेशसे देवीका कन्यारूपसे पद्मवनमें अवस्थान, दक्षद्वारा कन्यात्वमें उनका ग्रहण, पशुपतिको पतिरूपमें पानेकी आशासे गौरीकी दक्षगृहमें रहकर तपश्चर्य्या, वृद्धब्राह्मण वेषमें शिवका तपोरता गौरीके समीपमें आगमन, शिवदुर्गाका विवाहोत्सववर्णन, अन्धकरिपुकी अकस्मात् अन्तर्धानमें देवीकी पुनर्वारतपस्या, शिवसमागम वर्णन, दुहितृजामातृ दर्शनाभिलाषसे दक्षका कैलासगिरिमें आगमन, शिवनिन्दादि वृत्तान्त, ब्रह्माकर्तृक यज्ञानुष्ठान विवरण, नन्दीके साथ दक्षका विवाह वर्णन, १०—१४ दक्षयज्ञ, यज्ञसभामें शिवभक्तोंके न आनेमें दक्षकी चेष्टा, दक्षदधीचिसम्वाद, उस प्रसङ्गमें शिवको परब्रह्मत्वकीर्त्तन, रुद्रनाम-

विवरण, दक्षद्वारा शिवचरित्रमें दोषारोपण, महादेवके दिगम्बरत्वका कारण निर्देश, तपस्वियोंके मोहनार्थ मोहनीवेषमें श्रीधरका और योगी-वेषमें महेश्वरका दारुकवनमें प्रवेश, व्याघ्रचर्म्मादि और पशुमृगादि भगवद्भूषण धारणका कारण निर्देश । १५–२० विधातृलब्धवरण-प्रभावसे गजासुरकर्तृक देवगणकी दुरवस्थावर्णन, निरूपाक्षकर्तृक गजनिपात और उसका धर्म्मधारणादि वृत्तान्त, वराहरूपसे विष्णुकर्तृक हिरण्याक्षनाश और दन्तघातमें चराचर विनाश, ब्रह्मादिकी प्रार्थनासे महादेवद्वारा तद्दन्तोत्पाटन और निजहस्तमें धारण विवरण,समुद्रमन्थन-कालमें शिवकर्तृक मन्दराघातमें चञ्चल कूर्म्मका पृष्ठास्थिग्रहणादि विवरण, विषाग्निदग्ध विष्णुकृष्ण स्वकथनसे शिवकृतविषपान, देवग-णकृत नीलकण्ठस्तोत्र, शिवकी भिक्षा वृत्ति कारण निर्देश,पद्मनाभ और ब्रह्माका जगत्कर्तृत्व लेकर परस्परमें विवाद और शिवसमीपमें आवि-र्भावादि, कालभैरवोत्पत्ति, तत्कर्तृकब्रह्माका शिरच्छेदन विष्णुआदिका रुधिरग्रहणवृत्तांत, २१–२५ वृषरूपधारी हरिका हरवाहनत्व प्राप्तिकारण, शिवका कपालभस्म धारणादि विवरण, हररोपानलमें जालन्धरकी उत्प-त्तिकथा, तदुपद्रुतकेशवादि देवगणकी प्रार्थनासे महादेवकर्तृक जालन्धर वधवृत्तान्तकथन, जालंधर कामिनी वृन्दाके प्रति कामयमान विष्णुकर्तृक जालन्धरके मृतशरीरमें प्रवेश और वृन्दाके साथ सम्भोगादि ब्रह्मवा-क्यमें वृन्दावीजसे श्मशानोपरभूमिमें (उत्पन्न) तुलसीका आधिक्यविवरण पार्वतीकरतलजातस्वेदसलिलसे गङ्गाका उत्पत्तिवृत्तान्त, २६–३४ शुक्राचार्य्योपदिष्ट मृतसेनके आदेशसे मागधाख्ययोगिवरके मोहनार्थ विभुति नाम्नी असुरकामिनीका मेरु प्रदेशमें गमन; करिणीरूपधारिणी विभूतिके साथ करिरूपधारी मागधका विहार, गजमुखदैत्यकी उत्पत्ति कथन, पार्वतीपरमेश्वरकी अक्षक्रीडामें विष्णुका साक्षिरूपमें अवस्थान-कथन, पार्वतीशापसे विष्णुकी अजगररूप प्राप्ति और वटद्वीपमें अवस्थान, गणेशके साथ गजमुखमित्र मृतसेनका युद्ध, गणेशबाणविद्ध

गजमुखका मूषिकरूपग्रहण विवरण, गणेशद्वारा उसका वाहनत्वमें ग्रहण और तदारोहणादिकीर्तन, शुक्राचार्य्य मृतसेन आदिका पक्षिरूपमें पलायन, गणेशदर्शनसे अजगररूपी हरिको स्वरूपत्वप्राप्ति, ३५-४० शिवमाहात्म्य श्रवणसे दक्षको सुमति उत्पन्न होते न देखकर दधीचिका प्रस्थान, नारदमुखमें पितृगृहसे यज्ञानुष्ठान सुनकर शिवकी आज्ञासे दाक्षायणी का पितृभवनमेंगमन, दक्षसे शिवकी निन्दा सुनकर विमानारोहणद्वारा देवीका फिर कैलासमें गमन और शिवसमीपमें तद्वृत्तान्तकथन, शिव और शिवाके क्रोधसे भद्रकाली और वीरका आविर्भाव प्रस्ताव, पार्वतीकी आज्ञासे डाकिनी, शाकिनी, हाकिनी आदिके साथ वीरभद्रादिका दक्षालयमें गमन, दक्षका शिरश्छेद, वीरभद्रकृत ब्रह्मा और इन्द्रादिकी दुरवस्था, विष्णुके साथ उनका समरसम्भव, विष्णुकृत उनका स्तोत्र, देवगणको जीवन प्राप्ति, दक्षका पुनरुज्जीवन, दक्षसमीपमें ब्रह्माद्वारा शिवमाहात्म्यकीर्त्तन, पृथिवीस्थापनादिकथन भूगोलकथन.

७ उपदेशकाण्डमें-१-२-कैलास वर्णन, ३-५ असुरादिका द्वेषोत्पत्ति कारण निर्देश, ६-७ अजमुखकी आसुरदेहोत्पत्तिका कारण और पूर्वजन्मकर्म्म कथन, ८-१२ भस्ममाहात्म्यकीर्त्तन, १३-१९ रुद्राक्षमाहात्म्य कीर्तन, २०-२६ शिवनाममाहात्म्य कथन, २७सोमवारव्रतविधि और उसका माहात्म्यकीर्त्तन, २८ आर्द्राव्रतविधि, २९-३० उमामाहेश्वर व्रतविधि, ३१ केदारव्रतविधि, ३२कल्याणव्रतविधि, ३३शूलव्रतविधि, ३४ ऋषभव्रतविधि, ३५ शुक्रवार विधि, ३६ विघ्नेश्वरव्रतविधि, ३७ कृत्तिकादिव्रतमाहात्म्यकथन, ३८ माघमासके प्रथमदिवसमें और चैत्राश्विनमासके भरणी नक्षत्रमें शिवव्रतविधान, ३९-४७ शिवभक्तके लक्षणादि, ४८ शिवपुराणश्रवणफल, ४९-५७ शिवद्रोहफलकीर्त्तन, ५८-६० शिवनिन्दाफलकीर्त्तन, ६१-८४ शिवपूजामाहात्म्य कथन, ८५ शिवकी पंचविंशति मूर्तिकथन,

६ ष्ठ सौरसंहिता ।

१ सूतके साथ ऋषियोंके सम्वादमें अष्टादशपुराणकीर्त्तन, उपपुराणकथन, व्यासकृत शिवाराधनविवरणकथन. तत्कर्तृकवेद-विभागकथन, ऋग्वेदकी इक्कीसशाखाका विवरण, यजुर्वेदकी एकसौ एक शाखाका विवरण, सामवेदकी सहस्रशाखाका विवरण, विभागपूर्वक जैमिनी आदिको वेददानविवरणकथन, मुनियोंके निकट कृष्णद्वैपायनका परब्रह्मका रूपवर्णन, उनके शिव शम्भु महादेवआदिनामकथन, धर्म्मके प्रेरणलक्षणत्वकथन, प्रेरणा प्रामाण्य निरूपण, पुराणलक्षणकथन, २-५ याज्ञवल्क्यकृत सूर्य्यकी उपासनाविवरण कथन, उनको सूर्य्यका तत्त्वज्ञानोपदेशकथन, अभेदवादकथन, जगत् सृष्टिकथन, हिरण्यगर्भके उपाधिभेदसे सप्त पातालका स्वरूपकथन, स्वर्गका संस्थानादिकथन, पुष्करद्वीपका निरूपण, प्रवहादि सप्तवायु नेमिनिरूपण नक्षत्रमण्डल, सप्तर्षिमण्डल, ध्रुवमण्डल और सुरत्वादिकथन, सूर्य्यचन्द्रमण्डलआदिका मण्डल विस्तारादि प्रमाणकथन, सदाशिवलोकसंस्थानकथनपूर्वक विस्तृतरूपसे सदाशिव रूपवर्णन, जगत्कारणनिरूपणप्रसङ्गमें मायावादनिरूपण, वेदान्तप्रशंसा, ब्रह्मकारणतावादका अभ्यर्हितत्वकथन, अर्हण, बौद्ध, पाञ्चरात्र, विनायकआदितंत्रोंकी निन्दाकीर्त्तन, ६-१० भस्मत्रिपुण्ड्रादिधारणमाहात्म्य कथन, शापक्षयोपायकथन, अविमुक्तमाहात्म्यकथन, विश्वेश्वरमहिमा, वाराणसीवर्णन, शिवगङ्गामाहात्म्यवर्णन, गंगादिनानातीर्थमाहात्म्यकथन, अध्यारोपादिस्वरूपानिरूपण, अज्ञानलक्षणादिकथन, आत्मस्वरूपादिकथन, परमात्मा और जीवात्माका उपाधिभेदनिरूपण, विज्ञानमाहात्म्यकथन, उसका उपायकथन, उसका स्वरूपकीर्त्तन, ज्ञानकारणनिरूपण, ११-१६ सत्त्व रज तमोगुणादिकी प्रकृतिनिरूपण, जीवस्वरूपविवेचना, निर्गुणआत्माका बन्धहेतुनिरूपण, देह, इन्द्रिय, मन, प्राण, विज्ञान और शून्यादिका आत्मकत्ववादकथन, मोक्षोपायकथन,

मोक्षस्वरूपनिरूपण,श्रुतिकल्पनायोग्यविषयनिरूपण,याज्ञवल्क्यकर्तृक सूर्य्य-स्तोत्रकीर्त्तन ।

प्रभासखण्ड और नारदपुराणमें जिस प्रकार सात खण्डके पीछे२ विवरण दियागया है, उसीके अनुसार सप्तखण्डकी सूची दीगई ।

अम्बिकाखण्ड ।

१ कार्त्तिकेयका जन्म,२ अनुक्रमणिका,३ नैमिषारण्यकी उत्पत्ति विवरण,४ ब्रह्मका प्राजापत्याभिषेक,५ रुद्रका जन्म,६ ब्रह्माका शिरश्छेद, ७ कपालसंस्थापन, ८ देवगणकर्तृक रुद्रदर्शनवृत्तांत, ९ सुवर्णाक्षोत्पत्तिवर्णन, १० दक्षशापकथा,११ उमातपस्यावर्णन,१२ ग्रहकर्तृक बालमोक्षण;१३ उमाका विवाह,१४ उमाविवाहस्तव, १५ वसिष्ठवरप्रदान,१६ शक्तिनामक वसिष्ठपुत्रोत्पत्तिकथा;१७ कल्माषपादशापविवरण, १८ राक्षससत्रनिरूपण; १९विश्वामित्रकर्तृक वसिष्ठके प्रति वैर निवर्त्तन,२०नन्दीका तपस्याप्रवेश, २१ नन्दीकर्तृक महादेवकी स्तुति, २२ जायेश्वरक्षेत्रमाहात्म्यकथन, २३ नन्दीश्वरके अभिषेकार्थ महादेवका इन्द्रादिदेवताह्वान,२४ नन्दीश्वराभिषेक स्तुतिकथन,२५नन्दीश्वरविवाहकथन,२६मेनकाकथितपतिनिन्दा, अवतारसे दुःखिता पार्वतीका शिवसमीपमें आगमनवृत्तांत, २७ शिवका गोहिरण्यादिदान फल,२८ शिवपूजाविधि,२९ कुबेरचूडावरप्रदान, ३० वाराणसीमाहात्म्य, ३१ दधीचमाहात्म्य,३२ दक्षयज्ञविनाशवर्णन, ३३ वृषोत्पत्तिवर्णन ३४ उपमन्युवरप्रदान, ३५ सुकेशवरप्रदान,३६ पितृप्रश्न,३७ नरककी संख्याकीर्त्तन, नरकभीतिवर्णन, ३८ शाल्मलीनामक नरकवर्णन, ३९ कालसूत्रनरक कथन, ४० कुम्भीपाकनरकवर्णन, ४१ असिपत्रवनाख्यान नरकवर्णन,४२ वैतरणीनरक वर्णन, ४३ अमोघनरकवर्णन, ४४ पद्माख्यनरक वर्णन, ४५ महापद्माख्यनरकवर्णन, ४६ महारौरव नरकवर्णन, ४७ तमोनाम नरकवर्णन, ४८ तमस्तमोनाम नरकवर्णन, ४९ यमगीता कथन, ५० संसारपारिवर्त्तनकथन; ५१ सुकेशमाहात्म्य; ५२ काष्ठकूट-

कथा, ५३ दुर्गातपोवर्णन, ५४ब्रह्मप्रयाणवृत्तान्त,५५ब्रह्मागमन वृत्तान्त, ५६ दुर्गावरप्रदान,५७सत्यव्याधोपाख्यान,५८ब्रह्मदत्तराजाका उपाख्यान, ५९ कौशिकीसम्भववृत्तान्त,६० कौशिकीका विन्ध्यागिरिगमनवृत्तान्त,६१ दैत्योद्योगवर्णन,६२सुन्दरदैत्यवधवर्णन,६३ असुरविजयवर्णन, ६४ असुरोद्यमवर्णन, ६५–६६ देवीकौशिकीके साथ असुराका युद्धवृत्तान्त, ६७ कौशिकीका अभिषेचन,६८ कौशिकीदेहसम्भवा देवियोंके देश और नगरादिमें अवस्थानवृत्तान्त,६९ पार्वतीके साथ हरका मन्दरगमन, ७०–७१ नरसिंहकर्तृक हिरण्यकशिपु वधवृत्तान्त,७२स्कन्दोत्पत्तिवर्णन, ७३ अन्धोत्पत्तिविवरण,७४अन्धकवरप्रदान, ७५ हिरण्याक्षका स्वपुरप्रवेश वृत्तान्त, ७६ हिरण्याक्षका सभाप्रवेशवृत्तान्त, ७७ असुरयाग वर्णन,७८–१०६ देवासुर युद्ध वर्णन,१०७ वराहोत्सववर्णन,१०८वराहप्रयाणवृत्तान्त,१०९ महादेवका सुमेरुगमन,११०दानफलनिरूपण, १११ उमासावित्रीसम्वादमें कृच्छ्रादिव्रतफलकथन, ११२ स्त्रीधर्म्म निरूपण,११३ अमृताक्षेप वर्णन, ११४अमृतमन्थनप्रसंगमें नीलकण्ठोपाख्यान,११५विष्णुकर्तृक अमृतापहरण और देवासुरयुद्ध,११६–११७वामनप्रादुर्भाव,११८ शुक्रवासव संवाद, ११९–१२१ वामनप्रादुर्भावमें तीर्थ यात्रावर्णन,१२२ सैंहिकेयवधवर्णन, १२३ हारिश्चन्द्रनिर्देश,१२४महादेवनिकटसे परशुरामको वरप्राप्ति,१२५ वसुधाप्रतिष्ठा वर्णन, १२६–१२८ गंगावतरण वृत्तान्त, १२९–१४८ अन्धकादि असुरपराजयकीर्त्तन,१४९–१५१ पार्वतीद्वारा अशोकवृक्षको पुत्रत्वपरिग्रहण,१५२ शूलीकर्तृकधर्म्मपद्धतिव्याख्या, १५३ विषके कारण महादेवके कण्ठमें नीलत्वकथन,१५४पार्वतीकर्तृक भस्मरजसादिका विलेपत्वप्रश्न और महादेवका उत्तरदेना,१५५जगत् प्रभुके श्मशानवासित्व संबन्धमें पार्वतीका प्रश्न और शिवोत्तर, १५६ सुगंधजलादिद्वारा शिव स्नानका फल, १५७–१५९ पुण्यायतनफल, १६० भैरवोत्सवकथा, १६१

विनायकोत्पत्ति, १६२ स्कंदोत्पत्ति, १६३ स्कंददर्शनार्थ देवगणका आगमन, १६४ स्कंदविनाशार्थ इंद्रद्वारा मातृगणका प्रेरण, १६५ स्कंदके साथ इंद्रयुद्ध वृत्तांत, १६६–१६७ स्कंदको देवसेनापतित्व कथन, १६८–१६९ स्कंदाभिषेक वर्णन, १७०–१७३ तारकासुरवध विवरण, १७४ स्कंदके प्रति इंद्र वाक्य, १७५ महिषासुर वध, १७६ महेश्वर नाम कथन, १७७ महेश्वर स्तुति, १७८ शंख कर्णकर्तृक यमदूतोंका प्रत्याख्यान, १७९–१८१ कालअरायतन वृत्तांत, १८२ देवायतनोद्देश, १८३ भद्रेश्वराख्यान, १८४ देवदारु वनमें महादेवस्थान माहात्म्य, १८५ आयतन वर्णन, १८६ मय वरदान, १८७ त्रिपुर वर्णन, १८८–१९५ त्रिपुर वध, वृत्तान्त, १९६ क्रौंच वध, १९७ क्रौंच सञ्जीवन, १९८–१९९ प्रह्लाद युद्ध, २०० प्रह्लाद विजय, २०१ हिमवत् संभाषण, २०२ गिरिवाक्य, २०३ –२०४ गिरि पक्षच्छेद वृत्तांत, २०५ मेघोत्पत्ति, २०६ पक्षच्छेदन श्रवण फल, २०७–२०८ नारायणके साथ प्रह्लादका युद्धोद्योग, २०९ अनुह्लाद वध, २१० नारायण कर्तृक चक्रसृष्टि, २११ प्रह्लादामरसंगम, २१२ परम दैवत वचन, २१३ देवदानव युद्ध, २१४ प्रह्लादका तपश्चरण, २१५ असुर प्रयाणोत्पत्ति विवरण, २१६ प्रह्लाद नारायण युद्धमें इंद्रागमन.

१ माहेश्वर खण्ड ।

केदार खण्डमें *–१ लोमश शौनकादि सम्वाद. २–३ दक्षका शिवरहित यज्ञानुष्ठान, सती देहत्याग और वीरभद्र कर्तृक दक्ष यज्ञ विनाश, ४–५ वीरभद्रके साथ इंद्रोपेंद्रादि देवगणका युद्ध वर्णन, दक्षको छाग मुण्डप्राप्ति, शिव पूजा और शिवालय निर्म्माण फल, त्रिपु·

* नारद पुराणके मतसे प्रथम है, किन्तु प्रभासके मतसे नहीं ।

०इ और विभूति माहात्म्य, इद्रसेन राजाका उपाख्यान, अवन्ती पुर-वासी नन्दिनामक वैश्यका उपाख्यान, और नन्द तथा किरातका शिव-लोकमें आगमन, ६–७ ऋषिशापसे शिवको खण्डत्व प्राप्ति और लिङ्ग-पतन, तत् स्वरूप कथन और अर्चन माहात्म्य कीर्त्तन, पाशुपत धर्म्म कीर्त्तन और काशिराज दुहिता सुन्दरीके साथ उद्दालक ऋषिका सप-र्य्याकरण, ८ रत्न मुक्ता ताम्रमयादि लिङ्गपूजा कथन, गोकर्ण पर्वतमें रावणकी लिङ्गपूजा, नन्दिके साथ रावणका विरोध और शाप प्राप्ति; देवगणका वानररूपमें जन्म ग्रहण, रामावतार कथन, ९–११ बलिक-र्तृक शक्रैश्वर्य्य हरण, समुद्र मन्थन कालकूटोत्पत्ति, उनके द्वारा ब्रह्माण्ड भस्म, गणेशकी उत्पत्ति और पूजाविधि, समुद्रमन्थनमें चन्द्रादिका उद्भव और नाना रत्नोत्पत्ति, १२ लक्ष्मी और अमृतोत्पत्ति, विष्णुका मोहिनी रूप धारण, १३ देवासुर युद्ध, १४ बलिमुख सर्व दैत्योपस्थापन दैत्यको जय लाभ, राहुभयसे चन्द्रका शिवसमीपमें गमन, विष्णु कर्तृक कालनेमि वध, इन्द्र बृहस्पतिका विरोध; इन्द्रकर्तृक विश्वकर्म्म सत्रमें विश्वरूपका मस्तक च्छेद, विश्वरूपके मुखसे कपिञ्जलकी उत्पत्ति, १५ नहुष और ययाति राजाका उपाख्यान, १६ वृत्रासुरका जन्म, दधीचिका उपाख्यान, पिप्पलादकी उत्पत्ति, १७ वृत्रासुर वध, १८ बलिद्वारा अमरावती रोध और इन्द्रादि देवगणका मयूरादि रूपमें पलायन, वामनावतार कथन, बलिका यज्ञ, १९ वामनरूपी विष्णुकी छलना, त्रिपाद भूमि भिक्षा और बलिका पातालमें गमन; १० गिरि-जोत्पत्ति, २१ गिरिराज शिव शुश्रूषा और मदन दाहनादि उपाख्यान, २२ पार्वती तपःफल कथन; २३–२५ शिव विवाह वर्णन और चण्डीके आविर्भावकी कथा, २६ गन्धमादन पर्वतमें शिव दुर्गाका विहार, अग्निका हंसरूपमें वहां आना; नारदवाक्यसे वालखिल्यका जन्म, २७–२८ कार्ति-केयकी जन्म कथा और सेनापतित्वमें वरण; कार्तिकेयका तारकासुर,

युद्ध वृत्तान्त, २९ तारकासुर संग्राम, ३० तारकासुर वध और कार्तिकेयका माहात्म्य कथन, ३१ यमकर्तृक शिवकी ज्ञानयोग स्वरूप जिज्ञासा और अध्यात्म निरूपण, ३२ श्वेतराजोपाख्यान, ३३ शिवरात्रि व्रत माहात्म्य और पुक्कस वृत्तान्त कथन, ३४ तिथ्यादि निरूपण, शिव पार्वतीकी द्यूत क्रीडा, पराजित शिवका कौपीन ग्रहण रहस्य, पश्चात् कैलास त्याग और वन गमन, ३५ पार्वतीका शबरीरूप धारण पूर्वक शिव समीपमें गमन.

कुमारिकाखंड—१ उग्रश्रवा मुनिगण सम्वादमें दक्षिण समुद्र तीरवासी कुमारेश, स्तंभेश, चर्करेश्वर, महाकाल और सिद्धेश आदि पञ्चशिव तीर्थ माहात्म्य और स्नानादि फल कथन, सौभद्र मासादि तीर्थ माहात्म्य वर्णन, धनञ्जयकृत तीर्थ भ्रमण प्रसंगमें स्नान समय जलसे ग्राहका उत्तोलन, दोनोंका युद्ध और ग्राह विस्फुरण, कल्याणी नारीका आविर्भाव, जलचारिणी कामिनीका पूर्वशाप और प्रशंसा जन्मादि कथन, हंसतीर्थ और काकादि तीर्थ प्रसङ्ग, अप्सराकी शापमुक्ति और स्वर्गलोक गमन, २ अप्सरा प्रश्नमें अर्जुनका नारदके निकट गमन, द्वादश वार्षिकी महायात्रा कथा, फाल्गुन तीर्थ यात्रा माहात्म्य कथा, सरस्वती तटपर कात्यायन मुनिके प्रश्नमें सारस्वत मुनि कर्तृक सारस्वत धर्म्म कथा प्रसंगमें वृषभ वाहन, महादेव पूजाका श्रेष्ठत्व कथन, दान माहात्म्य कीर्तन, काशीपति प्रतर्दनकी दाननिष्ठा, ब्राह्मणको दान करनेसे रुद्रलोक गति, ३–४ पार्थद्वारा बहुदेशनगरादि पर्य्यटन और कल्पस्मरावरा रेवतीका समागम, तदुत्तर तीरवर्ती मृग मुनिका आश्रम समाख्यान, मृगाश्रममें भृगुसमागम, भृगुकर्तृक विप्रयोग्य स्थान कथन. भृगुनारद सम्वाद, महीनदी तटवर्ती तीर्थ समाख्यान और मही सागर संगम माहात्म्य कथा, देवशर्म्मा और सुभद्र मुनि सम्वाद, ५ सविस्तर महीसागर संगम माहात्म्य कथन, दानमाहात्म्य कथन प्रसंगमें द्वौपाक दान, चतुर्द्धा वैदिक दान

गृहादिदान अन्न और हव्य वाहनादि दान फल कीर्तन, अर्जुन नारद सम्वादमें ब्राह्मण स्थानप्रतिष्ठा कथन, संसारवर्णन; कलापग्राम माहात्म्य कीर्तन,५ ब्राह्मण प्रशंसा, ॐकारवर्णन,स्वायम्भुव स्वारोचिषादि चौदा मनु आदित्य और रुद्रादि कथन,शुक्र शोणित सङ्गममें जीवोत्पत्ति कारण और गर्भावस्थादि निर्देश, लोभ निन्दा ब्राह्मणको श्रोत्रियत्व कथन मासादि क्रमसे भास्करपूजा, पुण्यदिन निर्णय; ६ नारद शातातप सम्वादमें स्तम्भतीर्थ प्रशंसा, कलापग्रामकथा, कोलम्बाकूप दान प्रसङ्गमें पितृ और मातृकामाहात्म्य, ७ महीसागर माहात्म्य प्रसंगमें इन्द्रद्युम्न राजाख्यान, ८ इन्द्रद्युम्न नाडीजंघ संवाद, ९ उलूकको निशाचरत्व प्राप्ति कथा, १० शिवका दमनकोत्सव और शिवकी दोलायात्रा कथन, अग्निवेश्या कन्याका आख्यान, ११ इन्द्रद्युम्न और देवदूत संवाद, १२ इन्द्रद्युम्न कूर्म्म संवादमें शाण्डिल्या विप्राख्यान, शिवपूजा माहात्म्य कथन, दशयोजन विस्तृत कूर्मोत्पत्ति कथा, १३ इन्द्रद्युम्न और लोमश संवादमें वैष्णवीमाया कथन, शरीरक्षय कथन, लोमशका शूद्ररूप पूर्व जन्माख्यान और शिवपूजा प्रभावसे उनको जातिस्मरत्व कथन, शिवभक्ति प्रशंसा, १४ बक, गृध्र, कच्छप,उलूक और इन्द्रद्युम्नकी लोमशके निकट शिवदीक्षाविधानमें लिंगपूजा कथन, सम्वर्त मार्कण्डेय सम्वाद, मालवदेशमें महीनदीकी उत्पत्ति और उसमें सर्व तीर्थका आविर्भाव कथन, महीसागर सङ्गममें शिवपूजा माहात्म्य,कापिल वालुकादिका बहुतसे लिंग नाम कथन, १५ कुमारेश्वर माहात्म्य प्रसंगमें काश्यपीयसर्ग, मारुतोत्पत्ति, वज्रांगोत्पत्ति, १६–१८ वारांगी और वज्रांग सम्वाद,तारकाख्यान, तारकासुरके साथ इंद्रादिका संग्राम, १९ देवगणका विष्णुके निकट आगमन और साहाय्य प्रार्थना, २० इंद्रद्वारा जम्भासुर वध, तारकके युद्धमें देवगणका पराजय, देवगणके रक्षणार्थ विष्णुका मर्कटरूप धारण और दैत्यपुरमें गमन, २१ देवगणका मर्कटरूप धारण पूर्वक ब्रह्मलोकमें गमन, और देवगण कर्तृक ब्रह्मस्तव,पार्वतीगर्भमें कुमारोत्पत्ति-

प्रसंग, २२ तारक प्रभाव वर्णन, २३ हरगौरीकी विवाह लीला, २४ हरपार्वतीका विवाह, वीरनामक पुत्र जन्म,२५ दैत्यराजका पार्वती रूपमें शिवके निकट आगमन, शिवका क्रोध, "शिल हो जाओ" कहकर माताके प्रति गणेशका अभिशाप, कौशिकीका सिंहवाहिनी रूप प्रसंगमें विश्वामित्रद्वारा शिवके अष्टोत्तर शत नाम, कुमारोत्पत्ति, २६ कार्त्तिकेयका देवसेनापतित्वमें अभिषेक, महीसागर स्नान फल और कार्त्तिकेयके पार्षद गणका वर्णन, २७ दैत्यसेनापतिका और तारकासुरके साथ कार्त्तिकेयका युद्ध, तारकवध, २८ लिङ्गनाम निरुक्ति, लिंगस्थापन फल, कपालेश और छिद्रमाहात्म्य, २९ कुमारेश्वर माहात्म्य, ३० स्तम्भेश्वर माहात्म्य, ३१ पञ्चलिंगोपाख्यान, ३२ शतशृंग, नृपात्मजा कुमारीके चरित प्रसंगमें सप्तद्वीपादि वर्णन, ३३ सूर्य्यमण्डलादि व्योमलोक कथन, ३४ सप्तपाताल वर्णन, ३५ शतशृंग राजकन्या कुमारीचरित, भारतखण्डके कुलाचल और नद नद्यादिका विवरण, ३६ बर्बरेश्वर माहात्म्य, ३७ महाकाल प्रादुर्भाव, ३८ अष्टादश पुराण नाम वराह कल्पके धर्म्मशास्त्रकार व्यासगणका नाम, विक्रमादित्य, शूद्रक, बुद्ध आदिका आविर्भावकाल निर्णय, युग व्यवस्था, ३९ करन्यास सम्वादमें पापकार्य्य निर्णय, युगव्यवस्था, करन्धम महाकाल सम्वादमें पाप कार्य्य निर्णय, लिंगपूजा और पूजामंत्रादि कथन,महाकाल माहात्म्य,४० मृत्यु कथन, वासुदेवमंत्र, वासुदेव माहात्म्य, ४१ आदित्य माहात्म्य, ४२ दिव्य वर्णन, ४३ कपीश्वर प्रतिष्ठा, स्तम्भतीर्थमें कार्त्तिकेय कर्तृक कुमारेश लिंगस्थापन कथा, ४४ बहूदक कुण्ड, और नन्दभद्रादित्य माहात्म्य, ४५ देवुपाख्यान, ४६ सोमनाथोत्पत्ति, ४७ मही नगरस्थ जयादित्यादि तीर्थ कथन, ४८ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ परलोकादि निर्णय, ४९ कर्म्मफल निर्णय, कमठ कृत जयादित्य स्तोत्र, ५० बर्बरीकाख्यान, ५१ प्राग्ज्योतिष प्रसंगमें घटोत्कचके साथ भगदत्त कन्या विवाह, बर्बरीका नाम निरुक्ति, ५२ घटोत्कच और उसके पुत्रकी

द्वारका यात्रा, श्रीकृष्णकर्तृक वर्ण धर्म्म और महाविद्या साधन, ५३ क्षेत्रनाथ माहात्म्य प्रसंगमें कालिका चरित, ५४ घटोत्कच पुत्र बर्बरीकाख्यानमें अपराजिता स्तोत्र, अंग सिद्धि कथन, ५५ भीमेश्वर माहात्म्य, ५६ पद्माक्षी स्तोत्र, देवीका नन्दगोप कन्यारूपमें आविर्भाव प्रसंग, देव कर्तृक निजभावी अवतार कथन, कालेश्वरी वत्सेश्वरी और गायत्री माहात्म्य, ५७ गुप्तक्षेत्र माहात्म्य, ५८ कपिला माहात्म्य.

नारद पुराणके मतसे माहेश्वर-खण्डका शेषांश अरुणाचलमाहात्म्य है, किन्तु इस समय वह माहात्म्य दृष्टिगोचर नहीं होता.

२ वैष्णवखण्ड ।

नारद वैष्णव खण्ड स्वतंत्र नहीं पाया जाता । नारदीय विवरणके अनुसार भूमिखण्ड, उत्कल खण्ड, बदरिका माहात्म्य, कार्त्तिकमाहात्म्य मथुरा माहात्म्य, माघ माहात्म्य, वैशाख माहात्म्य, अयोध्या माहात्म्य और गयाकूप माहात्म्य वैष्णव खण्डमें विवृत हुआ है । यह उपखण्ड स्वतंत्र पाया जाता है उत्कल खण्डके अतिरिक्त और कोई उपखण्ड वैष्णव खण्डके अन्तर्गत कहकर प्रचलित नहीं देखा जाता, अधिक क्या बदरिका माहात्म्य और कार्त्तिक माहात्म्य स्पष्टही स्कन्द पुराणीय सनत्कुमार संहिताके अन्तर्गत कहकर प्रत्येक पोथीमेंही निर्दिष्ट हुआ है, इस कारण केवल उत्कल खण्डके अध्याय क्रमानुसार सूची दी गई.

उत्कल खण्डमें १ जैमिनी आदि मुनियोंके सम्वादमें जगन्नाथ प्रसंग, ब्रह्मा विष्णु सम्वाद, सागरके उत्तरमें और महानदीके दक्षिणमें भगवत् क्षेत्र निर्णय, २ नीलमाधव व्याख्यान, यमकर्तृक नीलमाधव स्तव, ३ मार्कण्डेय आख्यान, ४ यमेश्वर नीलकण्ठ कामख्यान, विमला नृसिंह, अष्टशक्ति और अष्टलिंगमाहात्म्य इन्द्रद्युम्नाख्यान, इन्द्रद्युम्नका नीलाचल माहात्म्य श्रवण और उस स्थानमें ब्राह्मण प्रेरण, ५ ब्राह्मण क्षत्रियका नीलाचल दर्शन, पुण्डरीक कर्तृकपुरुषोत्तम स्तोत्र, अम्बरीष

कर्तृक स्तव, भगवानकी विभूति वर्णन, ६ उत्कल प्रशंसा, ७ इन्द्रद्युम्नका आख्यान आरम्भ, इन्द्युम्नके नील गिरिका माहात्म्य श्रवण कर्तृक नीलाचलमें निज पुरोहित प्रेरण विश्वावसु शबर और पुरोहित सम्वाद, ८ शिवद्वारकरोहिण्यादि तीर्थ प्रदर्शन, पुरोहितका अवन्तिपुरमें इन्द्रद्युम्नके निकट आगमन, ९ पुरोहित द्वारा इन्द्रद्युम्नके नीलमाधवका वर्णन, इन्द्रद्युम्न कर्तृक नीलमाधवादिका स्तव, विद्यापति कर्तृक नीलमाधवका रूप वर्णन, १० विद्यापति कर्तृक क्षेत्र और देवताका मान कथन, इन्द्रद्युम्न नारद सम्वाद, नारद कर्तृक विष्णुभक्ति कथन, ११ नारदके साथ इन्द्रद्युम्नका नीलाचल यात्रा प्रसंग, इन्द्रद्युम्नका नीलाचलमें आगमन और उत्कलाधिपके साथ सम्भाषण, १२ नारदद्वारा एकाम्र कानन माहात्म्य कथन, १३ इन्द्रद्युम्न और नारदका एकाम्रवनमें आगमन, बिन्दुतीर्थमें और लिंगादि दर्शन, १४ कपोतेशस्थली और बिल्वेश माहात्म्य, १५ विद्यापतिके द्वारा नील माधवका अन्तर्द्धान सुनकर इन्द्रद्युम्नका मोह, नारदका आश्वास श्वेतद्वीपसे नारदकी मूर्ति लानेका प्रसंग, १६ इन्द्रद्युम्नकृत पुरुषोत्तमस्तव, १७ राजाभिप्रायसे विश्वकर्म्मा कर्तृक नरसिंह प्रासाद निर्माण, इन्द्रद्युम्न द्वारा नरसिंह स्तव और नरसिंह क्षेत्रमाहात्म्य, १८ इन्द्रद्युम्नका अश्वमेध, सहस्र अश्वमेधके अन्तम ध्यानसे इन्द्रद्युम्नका पुरुषोत्तमादि मूर्ति दर्शन और तत्कर्तृक स्तोत्र, १९ समुद्र तटपर महावृक्ष दर्शन पूर्वक राजाके प्रति सेवकका निवेदन, नारद कर्तृक श्वेतद्वीपस्थ विष्णुके रोमसे वृक्षोत्पत्ति कथन, इन्द्रद्युम्नका चतुर्भुज रूप वृक्ष दर्शन और महोत्सव पूर्वक दीवेमें लाकर स्थापन, वृद्धब्राह्मण वेषमें विष्णुकी मूर्ति निर्माणार्थ आगमन जगन्नाथ, बलराम, सुभद्रा और सुदर्शनकी मूर्ति वर्णन, २० इन्द्रद्युम्नकृत स्तव, नारदके उपदेशसे इन्द्रद्युम्नकी वासुदेव, बलभद्र और सुभद्राकी पूजा, २१ नारद कर्तृक तारक ब्रह्मकी अपौरुषेय मूर्ति और

श्रुति प्रमाणता कथन, इन्द्रद्युम्न कर्तृक जगन्नाथका प्रासादनिर्म्माण, और उसकी प्रतिष्ठा करनेके निमित्त ब्रह्मलोकमें जानेका उद्योग,२२इन्द्रद्युम्नका ब्रह्मलोकमें गमन,२३ नारदके साथ इन्द्रद्युम्नका ब्रह्मदर्शन और दारु ब्रह्म प्रतिष्ठा करनेके निमित्त राजाका निवदन, देवगण कर्तृक ब्रह्माके निकट नीलमाधवका दारु ब्रह्मरूपत्वका कारण पूछना,२४ देवगण और इन्द्रद्युम्न सम्वाद, २५ तीन रथोंका निर्म्माण, विभिन्न रथ लक्षण और रथ प्रतिष्ठा-विधि,२६ गालनामक राजा और तत्कर्तृक माधवका प्रस्तरमय प्रासाद निर्म्माण कथन, गाल और इन्द्रद्युम्नका सम्भाषण, २७ वासुदेवादिकी रथयात्रा और तीन मूर्तियोंका स्तव, भरद्वाज कर्तृक प्रासादमें देवप्रतिष्ठा, २८ ब्रह्मकर्तृक नृसिंह स्तोत्र, ब्रह्मकर्तृक नृसिंह प्रशंसा, २९ दारु ब्रह्मकर्तृक नीलाचलक्षेत्रमें अवस्थान काल और गुण्डिआदि चांदिकी महायात्रा कथन, ३० भगवान्‌की ज्येष्ठ स्नान विधि,३१ नरसिंह स्नान विधि, स्नान यात्रा फल, ३२ दक्षिणा मूर्ति विधि, ३३ विभिन्नरथ प्रतिष्ठा विधि,३४अश्वमेध सरोमाहात्म्य, महावेदी माहात्म्य,३५ रथ रक्षा विधि,३६ शयनोत्सव, दक्षिणायन विधि,श्वेतराजोपाख्यान,३७ भगवान्‌के निर्म्माल्यका माहात्म्य, ३८ युगधर्म्म,३९ यात्रान्तर फल निर्णय, ४० प्रावरणोत्सव, उत्तरायणोत्सव,४१ वैष्णव अग्निसंस्कार विधि,४२ दोलारोहण विधि,४३ साम्वत्सर व्रत कथन,४४ दमन भञ्जिका, अक्षय यात्रा, दक्षाख्यान,जगत्कृत जगन्नाथस्तव,४५ भगवान्‌की भूति और महाभूतिका उपाय निर्णय, ४६ क्षेत्रमाहात्म्य,४७ मोक्ष स्वरूप निर्णय,४८ मुक्ति द्वारा माहात्म्य,४९ दुर्वासाका क्षेत्रमें गमन, ५० दुर्वासाका विस्मय, ५१ नाम और स्नान माहात्म्य, ५२ महामाघी स्नान विधि, ५३ महामाघीस्नान माहात्म्य, ५४ कर्तृनामक मुनिकी कथा, महादेवोक्त अर्द्धोदय और महादान माहात्म्य, ५५ स्कन्द महादेव सम्वादमें दशावतार माहात्म्य, इन्द्रादिकी अवतारकथा.

२ ब्रह्म खण्ड । *

२ य धर्म्मारण्य माहात्म्यमें—१ धर्म्मारण्य कथन विषयक सूत नारदादि प्रसंग धर्म्मारण्य कथा प्रसंग श्रोद्घाटन,२धर्म्मारण्य वर्णन, तन्माहात्म्य और नामार्थकथन; ३धर्म्मारण्यमें धर्म्मराजकीतपश्चर्य्या,धर्म्मराज तपोभीत ब्रह्मादि देवकृत महादेव स्तुति, धर्म्मराजके तपमें विघ्न करनेके निमित्त इन्द्रका अप्सरा प्रेरण, अनेक भूषणोंसे भूषित वर्द्धिनी अप्सराका वीणा हाथमें लेकर धर्म्मराजके निकट गमन,स्त्री माहात्म्य वर्णनादि,४ वर्द्धिनी अप्सराका यम सम्वाद, धर्म्मराजाका फिर तपकरना,महादेवसे धर्म्मराजकी वरप्राप्ति,धर्म्म कृत महादेव स्तुति,धर्म्मारण्य माहात्म्यादि,५–६ धर्म्मारण्य निवासि जन-कर्त्तव्य, धर्म्मवापीमें श्राद्धकी कर्त्तव्यता, युगधर्म्म कथनादि, ७ ब्रह्माकी उत्पत्ति,तत्कृत सृष्टि,८विष्णुके सहित देवता सम्वाद,आत्रेय वासिष्ठ—कौशिकादिके गोत्र और प्रवरादिकी उक्ति, ९ विश्वावसु गन्धर्वकी कन्यागणका धर्म्मारण्यस्थ वणिकोंके साथ विवाह, १० लोलजिह्वाख्य राक्षसका धर्म्मारण्यमें उपद्रव, विष्णुकृत तच्छान्ति; तथाकार सत्यमन्दिरमें धर्म्मेश्वर स्थापन वृत्तान्त, ११ सत्यमन्दिर रक्षार्थ दक्षिणद्वारमें गणेश स्थापन, १२ सत्यमन्दिर पश्चिममें बकुलाप्यर्क स्थापन और रविकुण्डोत्पत्ति; १३ हयग्रीवको हयमुखकी रमणीयता सम्पादनार्थ धर्म्मारण्यमें तपश्चरण, हयमुखोत्पत्ति कथन,१४–१५ हयग्रीवोपाख्यान, राक्षसादिके भयके नाशार्थ आनन्दा देवी स्थापन; १६ श्रीमातृदेवी माहात्म्य कथन, १७ कर्णाटक नामक दैत्योपाख्यान, १८ इन्द्रेश्वर, जयन्तेश्वर महिमादि वर्णन; १९ धर्म्मारण्यस्थ शिवतीर्थ, धराक्षेत्र तीर्थादि वर्णन २० भट्टारिका छत्राम्बिकादि कुलदेवी गण गणका गोत्र प्रवर कथन,

* नारदके मतसे सेतु माहात्म्य, धर्म्मारण्य माहात्म्य और ब्रह्मोत्तर खण्ड लेकर ब्रह्मखण्ड, किन्तु ब्रह्मखण्डीय सेतु माहात्म्य नहीं पाया जाता । वह धर्म्मारण्य माहात्म्य पातालखण्ड नामसे विख्यात है ।

२१ धर्म्मारण्य दिग्देवता स्थापन,२२देवासुर युद्ध,देवपराजय,धर्म्मारण्य-स्थ ब्राह्मणादिका पलायन,धर्म्मारण्यमें लोहासुरादि दैत्योंका प्रवेश कथन, २३ रामचरित वर्णन,२४रामकी तीर्थ यात्रा,तत्तीर्थ स्नान फलादि कथन, २५ धर्म्मारण्यस्थ देवमन्दिरादि जीर्णोद्धारकरणार्थ रामके प्रति देवीका आदेश,२६ ताम्रपत्रमें धर्म्म शासन पत्र लिखनादि, २७ धर्म्मारण्यमें राम कर्तृक दान यज्ञादि करण, २८ कलिधर्म्म कथन,रामदत्त ब्रह्मस्वहरणोद्यत कुमारपाल राजाके साथ विप्र सम्भाषण, सेतुबन्धमें विप्रका गमन, उस स्थानमें हनूमानका समागम, हनूमानके साथ द्विजका कथोपकथन, २९ ब्राह्मण वृत्तिके उद्धारार्थ हनूमानका उपाय, ३० ब्राह्मण वृत्ति प्राप्ति,३१ रामदत्त वृत्ति भोगी ब्राह्मणोंकी परस्पर विरोधोत्पत्ति कथनादि, ३२ उन ब्राह्मणोंका अतिवृत्तान्त कथन, इस ग्रन्थके श्रवणादिका फल.

३ य ब्रह्मोत्तर खण्डमें–१–२ सन्त और ऋषियोंके सम्वादमें शिव माहात्म्य कीर्त्तन, शिव पञ्चाक्षर मंत्र, रिरंसकी सहधर्म्मिणी कलावतीके प्रार्थनाकारी दनोहमादक यादवके उपाख्यान प्रसंगमें शैव मंत्र माहात्म्य कथन, शान्त चतुर्दशीमें शिवार्चन माहात्म्य कथन प्रसंगमें इक्ष्वाकु कुलमें उत्पन्न हुए मित्रके साथ राजाका उपाख्यान, नर-मांस दानके कारण वसिष्ठका कोप, उनके शापसे राजाको राक्षस योनित्व प्राप्ति, स्वस्थान गमन कथन, राजाको कल्मापपदत्व प्राप्ति-कथन, तत्कृत मुनि किशोर भक्षणादि वृत्तान्त, ३–४ गोकर्ण माहात्म्य कीर्त्तन,गोकर्णसे लौटते समय महर्षि शौनक कर्तृक कुष्ठरोगिणी काञ्चन चण्डाली दर्शन और तद्विवरण कथन, शिवपूजा माहात्म्य, विमर्षण राजाका उपाख्यान और उसकी पत्नीके निकट पूर्व जन्ममें अपना सारमेयत्व विवरण कथन, और राजाकाभी पूर्वजन्ममें कपोतीत्व वृत्तान्त कीर्तन, ५–६ उज्जयिनी देशस्थ महाकाल शिव-

लिंगका माहात्म्य,उज्जयिनिनाथचन्द्रसेन राजाकेराज्यमें मणिलुब्ध प्रतिकूल राजगणका युद्धार्थ आगमन वृत्तान्त,शिवभक्त पाँच वर्षके गोपाल बालकका वृत्तांत,प्रदोषकालमें गिरिशार्चन माहात्म्य,विदर्भाधिपति सत्यरथ राजाका उपाख्यान,समर संरम्भमें पुत्र प्रसवान्तर सत्यरथपत्नी विद्रुताका जलपान करनेके निमित्त जलावतरण और ग्राहोदरमें प्रवेशादि वर्णन,७–८शाण्डिल्योक्त शिवपूजा विधि,शिवको तुलसीपत्र दानमें अनावश्यकता,शिवस्तोत्र कीर्त्तन,द्विजनन्दन और राज नन्दनको निधान कलश प्राप्ति कथन,गन्धर्वकुमारीके साथ धर्म्मगुप्त नामक राजकुमारका विवाहादि कथन,उपोष्य सोमवारमें शिवपूजा फल श्रुति,चित्रवर्म्म दुहिताके साथ नलपौत्र चित्रांगदका विवाह वर्णन, सोमवार व्रत माहात्म्य,नौकामें चढकर चित्रांगदका नौका-विहार,राजाका जल निमज्जन और नागराजके साथ साक्षात्कार,९–१० विदर्भवासी सामविद और वेदविदनामक दो ब्राह्मणकुमारोंका धनलाभार्थ दंपतिवेषमें निषेध राजपत्नीके निकट जाना और एकको स्त्रीत्वप्राप्ति विवरण, सीमन्तिनीका प्रस्तावकीर्त्तन पिंगलानाम्नीवेश्याके अनुरक्त नन्दननामक द्विजपुत्रका उपाख्यान,चन्द्रकी कन्यारूपमें पिंगलका जन्मग्रहणवृत्तान्त, ११–१६शिवचिन्तन प्रकार कथन,शिवकवचकीर्त्तन,ऋषभकर्तृक भद्रायुको शंखादिदान, भद्रायुके साथ मगधोंका युद्ध, कीर्तिमालिनीके साथ उनका विवाह, भद्रायुका जन्मवृत्तांत,उनका माहात्म्यकीर्त्तन,वामदेवमुनिका क्रौंचारण्यप्रवेश वृत्तान्त, वामदेव ब्रह्मराक्षस संवादमें भस्ममाहात्म्यकीर्तन,सनत्कुमारके निकट शिवका त्रिपुण्ड्रधारणविधिकथन और तीन रेखामें प्रत्येककोही नारदत्त कथन, १७–१९ अभ्यर्हितत्वकथन,सिंहकेतु कर्तृक वनमें जीर्ण देवालय दर्शन और उसके भीतर प्रविष्ट गृहीत शिवलिङ्ग शबरराज संवादमें शिवपूजा विधिकथन, उमामहेश्वरव्रतविधान, सर्पदशनमें मृतभर्तृका देवरथ दुहिता शबरदाके साथ अन्धमुनिसंवादादि

कथन, पार्वतीकर्तृक उसको वरदान, २०–२२ रुद्राक्षमाहात्म्य अंगविशेषमें रुद्राक्ष धारणमाहात्म्य, एकमुखादिरुद्राभेदकथन, काश्मीरस्थ सुधर्म्मतारकनामक राजा सत्यकुमारका उपाख्यान, शिवव्रतवैश्यका उपाख्यान, रुद्राध्याय माहात्म्य, काश्मीरराजाका उपाख्यान, शिवमाहात्म्य प्रधान पुराण श्रवणमाहात्म्य, पुराणज्ञकी प्रशंसा,पुराण निन्दाकरणमें दोषकथन, दानमाहात्म्य कथन, विदुरनामकब्राह्मण वेश्यापतिका उपाख्पान तुम्बुरु पिशाचका सम्वाद, ब्रह्माण्डखण्ड माहात्म्यकथन, पुराणश्रवणफलानुवर्णन.

४ काशीखण्ड ।

पूर्वार्द्धमें–१ विन्ध्यवर्णन, विन्ध्यनारद सम्वाद और विन्ध्यवर्द्धन, २ सूर्य्यगतिरोध और देवगणका सत्यलोकमें गमन, ३ अगस्त्यके आश्रममें देवगणका आगमन और आश्रमवर्णन, ४ पतिव्रताख्यान, ५ काशीसे अगस्त्यका प्रस्थान, ६ तीर्थप्रशंसा, ७ शिवशर्म्मानामक ब्राह्मणकी उत्पत्ति कथन,और सप्तपुरीवर्णन,८यमलोकवर्णन, ९–१० अप्सरा और सूर्य्यलोकवर्णन,११–१२ इन्द्र और अग्निलोक वर्णन,१३वायु और अलकापुरी वर्णन, १४–१५ चन्द्रलोक वर्णन, नक्षत्र और बुधलोकवर्णन,१६ शुक्रलोकवर्णन, १७ मंगल, गुरु और शनिलोकवर्णन, १८ सप्तर्षिलोकवर्णन, १९ध्रुवोपदेशकथन,२०ध्रुवोपाख्यान और ध्रुवका भगवद्दर्शन, २१ ध्रुवस्तुति,२२ काशी प्रशंसा, २३ चतुर्भुजाभिषेक कथन, २४ शिवशर्म्माको निर्वाणप्राप्ति, २५ स्कन्द और अगस्त्यका दर्शन, २६ मणिकर्णिकाख्यान कथन, २७ गंगामहिमावर्णन और दशहरास्तोत्र, २८ गंगामहिमा, २९ गंगाके सहस्रनाम, ३० वाराणसीमहिमा, ३१ कालभैरवप्रादुर्भाव, ३२ दण्डपाणिप्रादुर्भाव, ३३ ज्ञानवापीवर्णन, ३४ ज्ञानवापीप्रशंसा, ३५ सदाचारकथन, ३६ सदाचारनिरूपण, ३७ स्त्री-

लक्षणवर्णन, ३८ सदाचार प्रसंगमें विवाहादिकथन, ३९–४० अविमुक्तेश्वर धर्म्मवर्णन और गृहस्थ धर्म्मकथन, ४१ योगकथन, ४२ मृत्युलक्षण कथन, ४३ दिवोदासराजका प्रतापवर्णन, ४४ मृत्युलक्षणकथन, ४५ काशीमें चौसठ योगिनियोंका आगमन, ४६ लोलार्क वर्णन, ४७ उत्तरार्कवर्णन, ४८ शाम्बादित्य मांहात्म्यकथन, ४९ द्रौपदादित्य और मयूखादित्यवर्णन, ५० गरुडेश्वर और खखोल्कादित्यवर्णन.

परार्द्धमें ५१ अरुणादित्य वृद्धादित्य केशवादित्य विमलादि, गंगादित्य और समादित्यर्णन, ५२ दशाश्वमेधवर्णन, ५३ वाराणसीवर्णन और काशीमें गणप्रेरणं, ५४ पिशाच मोचन माहात्म्यकीर्त्तन, ५५ काशी वर्णन और गणेशप्रेषण, ५६ गणेशमायाकथन, ५७ ढुण्ढिविनायक प्रादुर्भाव, ५८ विष्णुमाया और दिवोदासराजाको निर्वाणप्राप्तिकथन, ५९ पञ्चनदोत्पत्तिकथन, ६० बिन्दुमाधवप्रादुर्भावकथन, ६१ बिन्दुमाधवाविर्भाव और माधवाग्निबिन्दुसम्वाद तथा वैष्णवतीर्थमाहात्म्य कथन, ६२ मन्दर पर्वतसे विश्वेश्वरका काशीमें आगमन और वृषभध्वज माहात्म्य कथन, ६३ जैगीषव्यासम्वाद और ज्येष्ठसाख्यान कथन, ६४ वाराणसीक्षेत्र रहस्य कथन, ६५ पराशरेश्वरादि लिंग और बिन्दुकेश तथा व्याघ्रेश्वर लिङ्गकथन, ६६ शिलेश्वर लिङ्ग कथन, ६७ रत्नेश्वर लिंग कथन, ६८ कृत्तिवास समुद्भव ६९ अडसठ आयतन समागमकथन, ७० वाराणसीमें देवगणका अधिष्ठान, ७१ दुर्गविनामक असुरका पराक्रम, ७२ दुर्गविजय कथन, ७३ ओंकारेश्वर महिमा वर्णन, ७४ ओंकारेश्वर लिंगमाहात्म्य कथन, ७५ त्रिलोचनमाहात्म्य कथन, ७६ त्रिलोचन प्रादुर्भावकथन, ७७ केदारेश्वर माहात्म्य कथन, ७८धर्म्मेश्वर महिमाकथन,७९धर्म्मेश्वर कथाप्रसंगमें पक्षियोंकी कथा, ८० मनोरथतृतीया व्रताख्यान, ८१दुर्द्दमका धर्म्मेश्वरमें आगमन और धर्म्मेश्वर लिंगकथन, ८२, वीरेश्वराविर्भावमें अमित्रजित् पराक्रमकथन, ८३ वीरेश्वराविर्भावकथन, ८४ वीरेश्वर महिमाकथन,

८५ दुर्वासाको वरप्रदान कथन, ८६ विश्वकर्मेश्वर प्रादुर्भाव कथन, ८७ दक्षयज्ञप्रादुर्भावकथन, ८८ सतीदेह विसर्जन कथन,८९दक्षेश्वर प्रादुर्भावकथन, ९० पार्वतीश्वर वर्णन, ९१ गंगेश्वर महिमा, ९२ नर्मदेश्वराख्यान, ९३ सतीश्वराविर्भाव कथन, ९४ अमृतेशादिलिंग प्रादुर्भावकथन, ९५ व्यासदेवका भुजस्तम्भकथन, ९६ व्यासदेवका शाप विमोक्षण, ९७ क्षेत्रतीर्थवर्णन ९८ विश्वेवरका मुक्तिमण्डपमें गमन, ९९ विश्वेश्वर लिंगमहिमाख्यान, १०० अनुक्रमणिकाख्यान, और पंचतीर्थादि यात्राकथन.

५ रेवाखण्ड ।

१–२कथारम्भ, आदिकल्प, ३–४अवतार वर्णन, ५–६नर्मदामाहात्म्य कथन, ७ अश्वतीर्थ, ८ त्रिपुरी, ९ मर्कटीतर्थि, १०–११ मतङ्ग (ऋषि) व्याख्यान, १२ गङ्गाजलतर्थि, १३–१७ मत्स्येश्वर तीर्थ, १८ जनकयज्ञ, १९ सप्तसारस्वततीर्थकथा, २० ब्रह्महत्यापारिच्छेद, २१ कुब्जा, २२ बिल्वाम्रकोत्पत्ति, २३ हारिकेश कथन, २४ रेवाकुब्जा संगम, २५ माहेश्वरतीर्थ, २६ गर्द्दभेश्वरतीर्थ, २७ करमर्द्देश्वर तीर्थ, २८ मान्धाताका उपाख्यान, २९ अमरेश्वर तीर्थ, ३० चतुःसंगम, ३१ पंचलिंगतीर्थ, ३२ जाबालीब्राह्मणका सशांक स्वर्गारोहण, ३३ पातालेश्वर तीर्थ, ३४ इन्द्रद्युम्नयज्ञमें नीलगंगावतार, ३५वैडूर्य्यपर्वत, ३६ कपिलावतार, ३७ कल्पान्तदर्शन ३८ चक्रस्वामिवर्णन, ३९ विमलेश्वर तीर्थ, ४० सत्रयागवर्णन ४१ कावेरीमाहात्म्य, ४२ चण्डवेगामाहात्म्य, ४३ एरण्डीसंगम, ४४ दुर्वासाचरित, ४५ शल्योविशल्यानदी, ४६ भृगुपतन, ४७ ओंकारमहिमा कथन, ४८ पंचब्रह्मात्मकस्तव, ४९ वाराहस्वर्गारोहण, ५० कपिलासंगममें धुन्धुमारोपाख्यान,

* प्रभासखण्डके मतसे ५ म रेवाखण्ड है, किन्तु नारद पुराणके मतसे ५ म अवन्ती खण्ड है इस कारण प्रथम रेवा और पश्चात् अवन्तीखण्डकी सूची दीगई है।

५१ मुचुकुन्द कुवलयाश्व आदिका स्वर्गारोहण, ५२ नरकवर्णन, ५३ नरकलक्षण, ५४ यमकर्तृककर्म्मगतिविवर्णन ५५ गोदानमाहिमा, ५६ मतंगाश्रमतीर्थ, ५७ नर्म्मदामाहात्म्य, ५८ शिवलोकवर्णन, ५९ शिव-महिमाकीर्तन, ६० वानर हेमदेह, ६१ रन्तिदेवराजोपाख्यान, ६२ मातृस्तुति, ६३ कुब्जकानन, ६४ विष्णुकीर्त्तन, ६५ नर्म्मदामाहात्म्य, ६६ अशोकवनिका, ६७ वागीश्वरपुर, ६८ वाराह महिमा, ६९ शम्भु-स्तुति, ७० ययातिशुक्रतीर्थ, ७१ द्वीपेश्वरतीर्थ, ७२ विष्णुस्तुति, ७३ मेघनादलिंग, ७४ दारुतीर्थ, ७५ देवतीर्थ, ७६ दारुवचनप्रसंगमें नर्म्मदेश्वर माहात्म्यकीर्त्तन, ७७ करञ्जेश्वर तीर्थ, ७८ कुण्डलेश्वर तीर्थ, ७९ पिप्पलेश्वर तीर्थ, ८० गुह्यावतीर्थ, ८१ पंचलिंगमाहिमा, ८२मृकण्डा-श्रम, ८३ हरिणेश्वर, वाणेश्वर, लुब्धकेश्वर, धनुरीश्वर और रामेश्वर पञ्चलिंगमहिमाकथन, ८४ अन्धकवध, ८५ अन्धकवधवर-प्रदान, ८६ शूलभेदोत्पत्ति, ८७ शूलभेदमहिमा, ८८ दीर्घतपाकपि चारितवर्णन ८९ चित्रसेनमाहात्म्य, नन्दिगणकथा, ९० शवर स्वर्गारो-हण, ९१ भानुमतीका स्वर्गारोहण, ९२ अर्कतीर्थ, ९३ आदित्येश्वर-तीर्थ ९४ अगस्त्यतीर्थ, ९५ भस्माक्षवध, ९६ मणिनागतीर्थ, ९७ गोपालेश्वरतीर्थ, ९८ शंखचूडातीर्थ ९९ पराशरेश्वरतीर्थ, १०० नन्दी तीर्थ, १०१ हनूमदीश्वर, १०२ उरसंगममें सोमनाथ तीर्थवर्णन १०३ कपिलेश्वरतीर्थ,१०४चक्रतीर्थ,१०५ चन्द्रादित्येश्वरतीर्थ,१०६यमहासतीर्थ, १०७ व्यासतीर्थ, १०८प्रभासतीर्थ,१०९ मार्कण्डेयेश्वरलिंग,११०मन्मथे-श्वरतीर्थ, १११ एरण्डतीर्थ, ११२ चक्रतीर्थ,११३ रेवाचरित्रकथा ।

अवन्तीखण्ड ।

१–२ ईश्वरसम्वादमें श्राद्धदानयोग्य पुण्यनदी वनआदि निरूपणप्रसं-गमें असीसंख्यकलिंगमाहात्म्यकीर्त्तन, अवन्तीदेशस्थमहाकालवर्णन, ३ अगस्त्येश्वर माहात्म्यादिवर्णन, असुरोंसे पीडितदेवगणके मुखमालिन्य

दर्शनसे सन्तमहृदय, अगस्त्यकर्तृक निजतेजसे दानवकुलभस्मीकरण, अगस्त्येश्वर लिंगप्रतिष्ठाविवरण, ४ गुह्येश्वर लिंगमाहात्म्यकीर्त्तन, मकरमहर्षिका वृत्तांत, ५ ढुण्ढेश्वर लिंग माहात्म्य, गणनायक ढुण्ढेश्वर वृत्तांत, ६ डमरुकेश्वर लिंगमाहात्म्य, रुरुपुत्रकर्तृक सुरपुरसे निकाले हुए इंद्रादिदेवगणका खेद और महाकालवनमें उनका पलायन, ७ अनादिकल्पेश्वर लिंगमाहात्म्य, पद्मनाभ और पद्मयोनिका विवाद और परस्परका ऊर्ध्व और अधोलोकमें गमनादिकथन, ८ स्वर्गद्वारेश्वर माहात्म्यकीर्त्तन, वह्निमुखनिहित सुवर्णकी उत्पत्तिआदिकथन, उसकी प्राप्तिके निमित्त दैत्यदानवोंका परस्परप्रहार और निधनादि, ९ विष्टपेश्वरलिंगमाहात्म्य, नारदके साथ इन्द्रका महाकालवनमें गमन, १० कपालेश्वरमाहात्म्य, महाकालवनमें कापालिकवेषमें प्रविष्ट कपालीके प्रति ब्राह्मणोंका लोष्ठादि फेंकना, ११ स्वर्गद्वारेश्वर लिंगमाहात्म्यकीर्त्तन, १२ विष्णुकर्तृक सुदर्शनद्वारा ताडित वीरभद्रके मृत्यु वृत्तांतश्रवणसे शूल हाथमें लेकर शिवका दक्षयज्ञमें प्रवेश, १३ उपेन्द्रादिका अंतर्द्धान, महेश्वरकर्तृकस्वर्गद्वारनिरोध, १४ कर्कोटेश्वर लिंगमाहात्म्य, १५ महाकालवनमें प्रवेशपूर्वक सिद्धोंका तपश्चरण, १६ लोकपालेश्वर लिंगमाहात्म्य दानवकुलसे पीडित लोकपालोंका विष्णुके उपदेशसे महाकालवनमें गमन, १७ कामेश्वर लिंगकीर्त्तन, ब्रह्मशरीरसे कामकी उत्पत्ति कथन, कामके प्रति ब्रह्माका शापदानादि, १८ कुटुम्बेश्वर लिंगमाहात्म्य, भगवान् नीलकण्ठकर्तृक समुद्रसे निकले कालकूटका पान और महाकालवन प्रवाहित क्षिप्राजलमें उसके प्रक्षेपादिका विवरण, १९ इंद्रद्युम्नेश्वर लिंगमाहात्म्य कथन, इंद्रद्युम्नराजाकी हिमालयपार्श्वमें तपस्यादि, २० ईशानेश्वर लिंगमाहात्म्य, कुकुण्डदानवकर्तृक ताडित देवगणका नारदोपदेशसे महाकालवनमें प्रवेश, २१ अप्सरेश्वर लिंगमाहात्म्यकीर्त्तन, इंद्रका रंभाके प्रति अभिशाप, नारदोपदेशसे अभिशप्ता रंभाका महाकालवनमें प्रवेश, २२ कलकलेश्वर लिंगमाहात्म्यकीर्तन,

माहात्म्य, घंटाख्यगणका विधातृद्वारा देशमें सम्वत्सर अवस्थान कथन, ६० प्रयागेश्वर माहात्म्य, नारदकर्तृक प्रियव्रत समीपमें श्वेतद्वीपस्थ सरोवरोदरस्थ किसी कामिनीका वृत्तान्त, ६१ सिद्धेश्वर लिंगमाहात्म्य अश्वशिरनामक राजाके साथ जैगीषव्य कपिलादिका सम्वाद, ६२ मातंगेश्वर लिंग माहात्म्य, गर्द्धभी कर्तृक मातंगनामक किसी द्विजपुत्रका पूर्वजन्म वृत्तांत कथन, ६३ सौभाग्येश्वर लिंग माहात्म्य, प्राग्ज्योतिष पुराधिपतिकी कन्या दुभगा अनंगमञ्जरीको स्वामी सौभाग्य प्राप्ति विवरण, ६४ रूपेश्वर लिंग माहात्म्य, पद्मकल्पमें पद्मनामकराजाका मृगयार्थ वनप्रवेश और कण्वदुहिताके साथ परिणयादि कथन, ६५ धनुःसहस्रेश्वर लिंग माहात्म्य, वनमें कुजम्भदानवका गृह विवर देखकर अंकित हृदय, विदूरथराजाके साथ ब्राह्मणका सम्वाद, ६६ पशुपालेश्वर लिंगमाहात्म्य, पशुपालनामक दस्युकर्तृक आक्रमणवृत्तान्त, ६७ ब्रह्मेश्वर लिंगमाहात्म्य, पुलोमदैत्यकर्तृक क्षीरसागरशायी पद्मनाभस्थित पद्मोद्भवका आक्रमण और तपस्यार्थ महाकालवनमें गमन, ६८ जल्पेश्वर लिंगमाहात्म्य, जल्पराजकुमार सुबाहु शत्रुमर्द्दन, जय विजय और विक्रान्तादिका विवरण, ६९ केदारेश्वर लिंगमाहात्म्य ब्रह्मपुरःसर शीतजर्ज्जरित देवगणका पुरारि समीपमें गमन, ७० पिशाचेश्वर माहात्म्य, जन्मान्तरमें नास्तिकताके कारण पिशाचत्व प्राप्ति, लोमशनामक किसी शूद्रका शाकटायनके साथ सम्वादकथनादि, ७१ संगमेश्वर माहात्म्य, कलिंगविषयमें सुबाहुनामक किसी राजाका रानीके निकट अपना पूर्ववृत्तान्त कहना , ७२ दुर्द्धर्षनामक राजाका मृगयार्थ वन प्रवेश और उनको भर्तृरूप जानकर किसी द्विजकन्याका उपस्तानादिविवरण, ७३ प्रयागेश्वर लिंगमाहात्म्य, शत्रुञ्जयनामक हस्तिनापुरराजका वनम मनुष्यरूपधारी गंगाका पाणिग्रहण, ७४ चन्द्रादित्येश्वर लिंगमाहात्म्य, शम्बरासुर कर्तृक क्रतुभुक् देवगणका रणभूमिमें जाना, राहुभयसे पीडित सूर्य्यचन्द्रका विष्णुके निकट गमनवृत्तान्त, ७५ करभे-

श्वर लिंग माहात्म्य, मृगयार्थ वनमें प्राप्तहुए अयोध्याधिपति वीरकेतु-कर्तृक बाणनिक्षेपद्वारा करभरूपी ऋषभदेववधवृत्तांत, ७६ राजस्थलेश्वर लिंगमाहात्म्य,ब्रह्माज्ञासे अवंतीदेशमें गायकत्वप्राप्ति, रिपुञ्जयके पृथिवी पालनसमयमें पृथिवीमें वह्न्यभावादि कथन, ७७ वडवेश्वरलिंगमाहात्म्य, नरवाहनोद्यानमें विरहमाण मणिभद्रसुत वडलका उपाख्यान, ७८ अरुणेश्वर लिंगमाहात्म्य, अरुणेश्वरं प्रति विनताका शापदान,७९ पुष्पदन्तेश्वर लिंगमाहात्म्य, निमिनामक ब्राह्मणकी पुत्रलाभार्थ तपस्या, शिवपार्षद पुष्पदंतकी अधोगति, ८० अविमुक्तेश्वर लिंगमाहात्म्य, शाकलनगरके राजा चित्रसेनका उपाख्यान, ८१ हनूमंतेश्वर लिंगमाहात्म्य, रावणवधानंतर राजपदमें प्रतिष्ठित रामचंद्रकी सभामें आएहुए पुलस्त्यादि ऋषियोंका अञ्जनीनंदनकी प्रशंसा करना और बालकपनमें रविधारणार्थ हनुमानका कृतोद्यम तथा इन्द्रके वज्रपातसे म्रियमाण-हनूमानको वरलाभादि,८२ स्वमेश्वर लिंगमाहात्म्य,इक्ष्वाकुवंशीय कल्माष-राजाके प्रति राक्षस होजाओ कहकर वसिष्ठका शापदान,८३ पिंगलेश्वरमाहात्म्य,पिंगलेश्वर उपाख्यान,८४ बिल्वेश्वर माहात्म्य,कपिलबिल्व वृक्षसंवाद, ८५ कायावरोहणेश्वर लिंगमाहात्म्य, चन्द्रके प्रति दक्षको कायाहीन होजाओ कहकर अभिशाप, ८६ पिण्डेश्वर लिंगमाहात्म्य, इक्ष्वाकुकुलतिलक अयोध्यापति परीक्षित कर्तृक मृगयार्थ गहन वनमें प्रवेश और स्मराविर्भूत किसी अपूर्व सुन्दरीकामिनीके साथ रमण, विहारके अन्तमें स्त्रीका अन्तर्द्धानादि प्रसंग.

६ तापीखण्ड । *

१ गोकर्ण मुनिगण संवादमें तापीके उभयतीरवर्ती महालिंगकथा, तपतीके २१ नामकीर्तन, २ रामेश्वरक्षेत्रमाहात्म्य, ३ शरभंगतीर्थ और

* प्रभासखण्डके मतसे ६ ष्ठ तापीखण्ड है, किन्तु नारदपुराणके मतसे ६ष्ठ खण्डका नाम नागरखण्ड है, जो कुछभी हो दोनों खण्डकी अध्यायानुक्रमणिका दीजाती है ।

पार्वतीके साथ शिवका कलहवृत्तांत, २३ चण्डेश्वर लिंगमाहात्म्य, नारदके साथ देवगणका महाकालउद्देशसे गमन और मार्गमें नागचण्डाख्य गणनायकके साथ सम्वादकथन, २४ प्रतिहारोपलिंगमाहात्म्य, हंसरूपधारी जातवेदाका द्वारपालनन्दीको ठगना और रमण करते हुए शिवपार्वतीके समीपमें उपस्थापन, विरूपाक्षका नंदीको शाप देना, २५ कुक्कुटेश्वर लिंगमाहात्म्यकथन, रातमें कुक्कुटरूपधारी कौशिकाख्यराजाका वृत्तांत, २६ कर्कटेश्वरमाहात्म्य, धर्म्ममूर्तिनामक राजाके निकट वसिष्ठकर्तृक राजाका पूर्वजन्म और शूद्रत्वजाति कीर्त्तन, २७ मेघनादेश्वर लिंगमाहात्म्य, मदान्धनामक असुरकर्तृक उपद्रुतब्रोहिगणकी, भगवद्दर्शनार्थ श्वेतद्वीपगमनादि कथा, २८ महालयेश्वर लिंगमाहात्म्यकीर्तन, २९ मुक्तीश्वर लिंगमाहात्म्यकीर्त्तन, मुक्तिनामक ब्राह्मणके साथ उसका वधोद्यतव्याधसम्वाद, ३० सोमेश्वर लिंगमाहात्म्यकीर्त्तन, दक्षकन्याको परित्यागपूर्वक चंद्रकी रोहिणीमें अनुरक्ति देखकर दक्षका शापदान, ३१ नरकेश्वर माहात्म्यकीर्त्तन, पुराकल्पीय कलियुगमें जीवोंकी नरकयंत्रणावर्णन, प्रसंगक्रमसे निमिनामक राजाके साथ यमकिंकरका संवादकथन, ३२ जटेश्वर लिंगमाहात्म्यकीर्तन, रथन्तर कल्पीय वीरधन्वानामक राजाका उपाख्यान, ३३ परशुरामेश्वर लिंगमाहात्म्य, परशुरामकर्तृक अश्वमेधयज्ञानुष्ठान और नारदसम्वाद, ३४ च्यवनेश्वर माहात्म्यकथन, वितस्ताके किनारे तपश्चर्य्याकृत और वल्मीकभावसे प्राप्त च्यवन और शर्य्याति कामिनियोंका वृत्तान्त, ३५ पण्डेश्वर लिंगमाहात्म्य, भद्राश्व अगस्त्य सम्वाद, ३६ पतनेश्वर लिंगमाहात्म्य, देवदेव देवर्षि सम्वाद, ३७ आनन्देश्वर लिंगमाहात्म्य, रथन्तरकल्पीय अनमित्रपुत्र आनन्दराजाका उपाख्यान, ३८ कंकटेश्वर लिंगमाहात्म्य, प्रेतराजको जीतनेके अभिप्रायसे दरिद्र द्विजशिशुकी तपस्या, ३९ इन्द्रेश्वर लिंगमाहात्म्य, पुत्रनिपात सुनकर शतक्रतुका क्रोध और जटा तोड़कर अग्निमें निक्षेप, उसके प्रभावसे वृत्रकी उत्पत्ति-

कथन,४०–४१मार्कण्डेयेश्वर लिंगमाहात्म्य,ब्राह्मकल्पीय रिपुञ्जय राजाका उपाख्यान,४२ कुसुमेश्वर लिङ्गमाहात्म्य, गणेशकी कुसुमक्रीडादिकथन ४३ अक्रूरेश्वर लिंगमाहात्म्य, भृंगिरिटके निकट अर्चना न जानसकनेके कारण पार्वतीका क्रोध, उनके समीप उसका अपने शरीरसे मातृभागरूप मांसशोणितादि परित्यागकथन, ४४ कुण्डेश्वर लिंगमाहात्म्यकथन, पुत्रवीरको महाकालवनमें तपोरतसुनकर दर्शनार्थ पार्वती परमेश्वरके उस देशमें गमन और गणाध्यक्ष कुण्डके साथ सम्वाद, ४५ लुम्पेश्वर लिंग माहात्म्यकीर्त्तन, म्लेच्छराजलुम्पकर्तृक बलात्कारपूर्वक होमधेनुग्रहण, ४६ गणेश्वर माहात्म्यकथन, गंगाके प्रति समुद्रका शापदान, ४७ अंगारकेश्वर माहात्म्य, शिवशरीरसे अंगारककी उत्पत्तिकथा, अंगारकको मंत्रमालादिक नामप्राप्तिकथन, ४८ उत्तरेश्वर लिंगमाहात्म्य इन्द्राज्ञासे मेघादिका वर्षणकालकथन, ४९–५० नूपुरेश्वरमाहात्म्य, कमलजके अश्रुविन्दुसे हेरम्बकालाख्यदानवकी उत्पत्ति, ५१ पृथुकेश्वर लिंगमाहात्म्य वेणशरीरसे पृथुकी उत्पत्ति, तत्कृतधरादोहन, ५२ स्थावरेश्वर माहात्म्यकीर्त्तन, छायाके गर्भसे शनिकी उत्पत्तिकथा शनिभयसे देवगणका महादेवसमीपमें गमन, ५३ शूलेश्वर लिंगमाहात्म्य, जंभासुरकर्तृक वासवादिका पराजय, गौरीप्रार्थनासे गिरीशसमीपमें अंधककी दूतप्रेषणादिकथा, ५४ ओंकारेश्वर लिंगमाहात्म्य, ओंकारनामककपिलापतिका उपाख्यान, ५५ विश्वेश्वर लिंगमाहात्म्य, ५६ कण्टकेश्वर लिंगमाहात्म्य सूर्य्यवंशी सत्यविक्रमराजाका महाकालवनमें गमन, उस स्थानमें हुंकारद्वारा अलौकिकसृष्टिसमर्थ मित्रचरनामक ब्राह्मणका उपाख्यान,५७ सिंहेश्वरलिंगमाहात्म्य, पशुपतिको पतिरूपमें पानेकी आशासे पार्वतीकी तपस्या, पार्वतीके निकट ब्रह्माकृत शिवनिन्दा और पार्वतीके कोपसे सिंहादिकी उत्पत्ति, ५८ रेवन्तेश्वर लिंगमाहात्म्य वड़वारूपधारिणी संज्ञाके गर्भसे दो अश्विनीकुमार और रेवन्तका जन्म ग्रहण वृत्तान्त, ५९ घण्टेश्वर

गोलनदीमहिमा, ४ सनंदतीर्थ, ५ उच्चैःश्रवेश्वरक्षेत्र,६ स्थानेश्वर लिंग, ७ प्रकाशकक्षेत्र,८गौतमेश्वर,९गौतमेश्वर और अक्षमालातीर्थ, १० करस्कपावनतीर्थ,११खञ्जनमुनिका आश्रमवर्णन, १२ ब्रह्मेश्वरलिंग,१३ भीमेश्वर लिंग, १४ शिवतीर्थ, १५ चक्रतीर्थ, काश्यपीसारित और अक्षरेश्वरतीर्थ, १६ शाम्बादित्यतीर्थ,१७ गंगेश्वरतीर्थ, १८अर्जुनेश्वर तीर्थ,१९ वासवेश्वर, २० महिषेश्वर, २१ धारेश्वर, २२ अग्निकेश्वर, २३ आमर्दकेश्वर, २४ रामक्षेत्र, २५ कपिलेश्वर, २६ बधिरेश्वर, २७ व्याघ्रेश्वर, २८ विरहानदी, २९ पिंगलप्रस्थमें वैद्यनाथतीर्थ और धन्वन्तारितीर्थ, ३० रामेश्वरतीर्थ, ३१ गौतमेश्वरतीर्थ, ३२ गलितेश्वर, और नारदेश्वर तीर्थ, ३३ सोमेश्वरतीर्थ, ३४ रत्नेश्वरतीर्थ, ३५ उल्केश्वरतीर्थ, ३६ वरुणेश्वरतीर्थ ३७ शंखतीर्थ, ३८ काश्यपेश्वर, ३९ शाम्बतीर्थ, ४० मोक्षेश्वरतीर्थ, ४१ भैरवीभुवनेश्वरीक्षेत्र, ४२ कपालेश्वरतीर्थ, ४३ चन्द्रेश्वरतीर्थ, ४४ कोटीश्वर, और एकवीरातीर्थ,४५ भवमोचनलिंगमाहात्म्य, ४६ हारिहर क्षेत्र, ४७ अम्बरीषेश्वर, ४८ अश्वतीर्थ, ४९ भरतेश्वर, ५० गुप्तेश्वर, ५१ वारितापक्षेत्र ,५२ कुरुक्षेत्र, ५३ अट्ठ्येश्वर, ५४ सिद्धेश्वर,५५शीतलेश्वर, ५६ नागेश्वर, ५७ जगत्कारेश्वर, पातालबिल और तापीसागरसंगमेत्यादिमाहात्म्य.

६ ष्ठ नागर खण्ड ।

प्रचलित नागर खण्ड, ३ परिच्छेदोंमें विभक्त है-१-विश्वकर्म्मोपाख्यान, २ य विश्वकर्म्म वंशाख्यान और ३ य हाटकेश्वर माहात्म्य.

१ म विश्वकर्म्मोपाख्यानमे १म शिव षण्मुख सम्वादमें देवीप्रणयकथा २यविश्वकर्म्म प्रपञ्चसृष्टि, ३ य जगदुत्पत्ति प्रकरण; ब्राह्मण्यगायत्रीनिर्णय; ५ उपनयनसंस्कार, ६उपनयनविधि, ७ समस्तप्राणियोंकी उत्पत्ति, ८ विश्वकर्म्माके पुत्रकी उत्पत्ति, ९ जगदुत्पत्तिनिर्णय, १० ज्योतिषग्रह नक्षत्र राशिनिर्णय, ११ हनूमत्प्रभाव, १२ विश्वकर्म्मोपाख्यान,

२ य विश्वकर्म्मवंशवर्णनमें—१ गायत्रीमहिमावर्णन, २ विश्वकर्म्म-कुलाचार ३—४ विश्वकर्म्मकुलाचारविधि, ५ विश्वकर्म्मवंशानुवर्णन, ६ षण्मतस्थापन.

३ य हाटकेश्वरमाहात्म्यमें—१ लिंगोत्पत्ति,२ त्रिशंकुका उपाख्यान,३ हरिश्चंद्रका राज्यत्याग, ४ विश्वामित्रमोह, ५ विश्वामित्र प्रभाव,६ विश्वामित्रको वरप्राप्ति, ७ त्रिशंकुको स्वर्गलाभ,८हाटकेश्वर माहात्म्य प्रारम्भ,९ नागविलपूर्ति विवरण, १० आनर्त्ताधिपचमत्कार सम्वाद, ११ शंखतीर्थोत्पत्तिकथा, १२ चमत्कारपुरोत्पत्ति; १३ अचलेश्वर माहात्म्य, १४—१५ चमत्कारपुरप्रदक्षिणमाहात्म्य, १६ चमत्कारपुरक्षेत्रमाहात्म्य, १७ गयाशिरश्वेतमोक्ष, १८ चमत्कारतीर्थस्नानसे लक्ष्मणको विशुद्धितालाभ,१९ वालखिल्यतीर्थोत्पत्ति, २० बालमंडलमाहात्म्य, २१ मगतीर्थमाहात्म्य, २२ विष्णुपदोत्पत्ति, २३ विष्णुगंगा माहात्म्य, विष्णुपदीगंगामाहात्म्य, २४ गोकर्णतीर्थोत्पत्ति, २५ युगस्वरूपकथन, २६ तीर्थसमाश्रयनामकीर्त्तन२७ षडक्षरमंत्र और सिद्धेश्वरमाहात्म्य, २८ श्रीहाटकेश्वरमाहात्म्य, २९ नारद माहात्म्यकथन,३०सप्तर्षिगणका आश्रममाहात्म्यकथन, ३१ अगस्त्याश्रममाहात्म्यकीर्त्तन,३२देवदानवयुद्धविवरण, ३३अगस्त्यदेवोंके सम्वादमें समुद्रशोषण आर सगरभागीरथादिका जन्म प्रसंग, ३४अगस्त्यनिर्म्मित चित्रेश्वरीपीठमाहात्म्य, ३५ दुःशीलप्रासादोत्पत्ति, ३६धुन्धुमारेश्वरमाहात्म्य,३७ ययातीश्वरमाहात्म्य,३८ चित्रशिलामाहात्म्य, ३९ जलशायीकी उत्पत्ति, ४० चैत्रतृतीयाको उस जलमें स्नातस्त्रीपुरुषोंको दिव्यरूपप्राप्ति विवरण,४१ मेनकातापससम्वादमें पाशुपतव्रतमाहात्म्यकीर्त्तन, ४२ विश्वामित्रमाहात्म्य, और तीर्थोत्पत्ति, ४३ त्रिपुष्करमाहात्म्य, ४४ सरस्वतीतीर्थमाहात्म्य, ४५ महाकालमाहात्म्य, ४६ उमामाहेश्वरसम्वाद, ४७ चमत्कारपुरक्षेत्रमाहात्म्यमें कलशेश्वराख्यान, कलशशापदानकथन, ४८—४९ कलशेश्वरमाहात्म्यकीर्त्तन, ५० रुद्रकोपमाहात्म्य, ५१ भूगगर्तमाहात्म्य,

५२ नलकृतचर्म्मगुण्डास्तुति, ५३ नलेश्वरमाहात्म्य, ५४ सांबादित्य-माहात्म्य, ५५ गांगेयोपाख्यान, ५६ शिवगंगामाहात्म्य, ५७ विदुरा-गमनोत्पत्ति ५८ नगरादित्यमाहात्म्य,५९ कर्म्मवृद्धिसे मानवादिका जन्म और कर्म्मक्षयसे जीवको निर्वाणप्राप्ति कथन, ६० शर्म्मिष्ठातीर्थ माहात्म्य, ६१ सोमनाथोत्पत्ति, ६२ दुर्गामाहात्म्य,६३ आनर्त्तकेश्वर और शूद्रकेश्वर माहात्म्य,६४जमदग्निवधाख्यान,६५ सहस्रार्जुनवध, ६६परशु-रामोपाख्यनमें समुद्रके निकट स्थानप्रार्थना,६७ रामहृदोत्पत्ति,६८ तारका-सुरकी उत्पत्ति देवदानवयुद्ध, कार्त्तिकेयोद्भवप्रसंग; ६९ शक्तिमाहात्म्य;७० तिलतर्पण, और दानमाहात्म्य,७१आनर्तविषयमें हाटकेश्वरक्षेत्रोद्भवकथन, क्षेत्रस्थप्रासादपद्धतिकथन, ७२ यादवलिंगप्रतिष्ठा, ७३ यज्ञभूमिमाहात्म्य, ७४हाराश्रय वेदिका माहात्म्य,७५रुद्रशिरजागेश्वरमाहात्म्य, ७६वालखि-ल्याश्रमकथन७७सुपर्णाख्यमाहात्म्यमें गरुडनारद विष्णुदर्शनसम्वाद, ७८ सुपर्णाख्योत्पत्तिमाहात्म्य, ७९-८०श्रीकृष्णचरिताख्यान, और हाटकेश्वर माहात्म्य,८१ महालक्ष्मीमाहात्म्य,८२ सप्तविंशतिका माहात्म्य,८३सोमप्रा-साद माहात्म्य; ८४ आम्रवृद्धमाहात्म्यमें कालादियवनका अभ्युत्थान और देवगणकर्तृकहनन, श्रीमाताका पादुकामाहात्म्य, प्रथम और द्वितीयखण्डसमाप्ति, ८५ वसोर्द्धारामाहात्म्य, ८६ अग्नितीर्थोत्पत्ति, ८७ ब्रह्मकुण्डमाहात्म्य, ८८ गोमुखमाहात्म्य, ८९ मोहयष्टिमाहात्म्य; ९० अजपालीश्वरमाहात्म्यमें शंकको व्याधरूपत्वकथन, ९१ दशरथ शनैश्चर सम्वाद, ९२ राजवापीमाहात्म्यमें रामेश्वर लक्ष्मणेश्वर और सीतादेवीकी मूर्तिप्रतिष्ठाकथन, ९३ रामका दुर्वासाको अर्घ्यदान और चातुर्मास्यव्रतान्तमें दुर्वासाका पारणकथन, ९४ कुशको राज्यदान पूर्वक रामकिष्किन्धागमन, और सुग्रीवादिवानरोंके साथ सम्भाषण, ९५ रामका पुष्पकमें चढकर लंकागमन और बिभीषणसम्वाद रामकर्तृक सेतुप्रांतमें रामेश्वर लिंगप्रतिष्ठा; ९६ रामचरितप्रसंगमें लक्ष्मणेश्वर-

माहात्म्य, ९७ आनर्तमाहात्म्यमें विष्णुकुशिका प्रशंसा, ९८ कुशलवच-रितप्रसंगमें कुशेश्वर और लवेश्वर लिंगमाहात्म्य, ९९ राक्षसालिंगच्छेदन, १०० लुप्ततीर्थ कथा, १०१ चित्रशर्म्माका लिंगस्थापन, १०२ अडसठ तीर्थोंके नाम, १०३ अडसठतीर्थस्थलिंगनाम और उनका माहात्म्य कथन, १०४ अडसठ तीर्थ स्नानमाहात्म्य, १०५ दमयन्तीका उपाख्यान, १०६ दमयन्ती चरितमें ऊषरोत्पत्ति, १०७ आनर्ताधिपका पुरनिर्म्माण, चौसठगोत्रज ब्राह्मणस्थापन, पुरमें महाव्याधिका प्रकोप, राज्यध्वंस होनेका उपक्रम, ब्राह्मणगणकर्तृक शान्तिकार्य, त्रिजात-नामक ब्राह्मणकर्तृक द्रव्यदूषणकी कथा, अग्निकुण्डमाहात्म्य, यज्ञकुण्ड-स्पर्शसे त्रिजातके शरीरमें विस्फोटक उत्पत्ति, १०८ त्रिजातका वनगमन और महेश्वरप्रसाद लाभ, मौद्गल्यगोत्र देवराज पुत्र क्राथकी नागपञ्चमीमें नागहत्या, क्रुद्ध नागगणका चमत्कारपुरमें आगमन, ब्राह्मणगणका चमत्कार-पुरत्याग, चमत्कारपुरवासी एक ब्राह्मणका वनमें त्रिजातके साथ साक्षात् और नागहाथसे चमत्कारपुरकी दुर्दशा वर्णन, शिवके निकट त्रिजातका नागहरमंत्रलाभ, त्रिजातका चमत्कारपुरमें आगमन नगर मंत्रप्रभावसे सर्पगणकी निर्विषता, चमत्कारपुरका नगर नाम वहांके ब्राह्मणोंकी नागर संज्ञा, १०९ नागर ब्राह्मणोंका गोत्रनिर्णय, ११० अन्वारवतीमाहात्म्य, १११ भट्टिकातीर्थोत्पत्ति, ११२ क्षेमंकरी और रैवतेश्वरोत्पत्ति, ११३ देवीसैन्यपराजय, महिषासुरप्रभाव, ११४ कात्यायनी उत्पत्ति, ११५ महिषासुर पराजयसे कात्यायनी माहात्म्य, ११६ केदारोत्पत्ति, ११७ शुक्रतीर्थमाहात्म्य, ११८ वाल्मीकिनाग निरुक्ति, मुखारतीर्थोत्पत्ति, ११९ कर्णोत्पलातीर्थ प्रसंगमें सत्यसन्धकथा, १२० सत्यसन्धेश्वर माहात्म्य, १२१ कर्णोत्पलातीर्थ माहात्म्य, १२२ हाटकेश्वरोत्पत्ति, १२३ याज्ञव-ल्क्याश्रममाहात्म्य, १२४ पञ्चपिंडिका गौरीकी उत्पत्तिकथा, १२५ पञ्च-पिण्डिकागौरीमाहात्म्य, ईशानोत्पत्ति; १२६ वास्तुपदोत्पत्ति, १२७

अजागृहोत्पत्ति, १२८ खण्डशिला सौभाग्यकूपिकोत्पत्ति, १२९ वर्द्धमान पुरीयपतिव्रतावरलाभ, १३० दीर्घिकामाहात्म्य, १३१ धर्म्म-राजेश्वरोत्पत्ति, १३२ धर्म्मराजेश्वर माहात्म्य, १३३ धर्म्म-राजसुतोत्तवकथा, १३४ आनासुधिपवसुसेन चरित प्रसंगमें मिष्टान्न-देश्वरमाहात्म्य, १३५ गणपतिव्रतमाहात्म्य, १३६ जाबालिआख्यानमें जाबालिक्षोभ, १३७, जाबालि फलवती आख्यानमें चित्रांगदेश्वर माहात्म्य, १३८ अमरकेश्वर माहात्म्य, १३९ अमरकुण्डमाहात्म्य, १४० व्यासशुकसम्वाद, १४१ वटेश्वरमाहात्म्य, १४२ अन्धकाख्यान, १४३ अन्धकाख्यानमें केलीश्वरमाहात्म्य, १४४ अन्धकाख्यानमें भैरवमाहात्म्य, १४५ युधिष्ठिरार्जुन सम्वादमें चक्रपाणि माहात्म्य, १४६ अप्सरस कुंडोत्पत्ति, १४७ आनन्देश्वर माहात्म्य, १४८ पुष्पादित्योत्पत्ति, १४९ पुष्पादित्यमाहात्म्य, १५० पुष्पवरलाभ कथन, १५१ मणिभद्रोपाख्यान, १५२ पुष्पाविभवप्राप्ति, १५३ पुष्पागमन, १५४ पुष्पादित्यमाहात्म्य, १५५ पुरश्चरण सप्तमी, १५६ बाह्यनागर संज्ञक ब्राह्मणोत्पत्ति, १५७ नगरादित्य, नगरेश्वर और शाकम्भरीकी उत्पत्ति, १५८ अश्वतीर्थोत्पत्ति; १५९ परशुरामोत्पत्ति, १६० विश्वामित्र राज्यपरित्याग, १६१ धारोत्पत्ति, १६२ धारामाहात्म्य, १६३ नागर ब्राह्मणोंके कुलदेवतावर्णन, १६४ सरस्वतीका अभिशाप, १६५ सरस्वत्युपाख्यान, १६६ पिप्पलादोत्पत्ति, १६७ याज्ञवल्क्येश्वरोत्पत्ति, १६८ कंसारीश्वरोत्पत्ति, १६९ पञ्चपिण्डिकोत्पत्ति, १७० पञ्चपिण्डिकागौरी-उत्पत्ति, १७१ पुष्करोत्पत्ति, और यज्ञसमारम्भ; १७२ ब्रह्मयज्ञारम्भ, १७३ नागरब्राह्मणोंको गर्त्ततीर्थमें प्रेरण, गायत्री विवाह और गायत्रीतीर्थोत्पत्ति, १७४ प्रथमयज्ञदिवसमें रूपतीर्थोत्पत्ति, १७५ नागतीर्थोत्पत्ति, १७६ द्वतीयदिवसमें पिंगलाख्यान, तृतीयदिवसमें अतिथितीर्थोत्पत्ति, १७७ अतिथिमाहात्म्य, १७८ राक्षसश्राद्धकथन, १७९ मातृगणागमन, १८० उदुम्बरीकी उत्पत्ति, १८१ ब्रह्मयज्ञावभृथ

यक्षीतीर्थोत्पत्ति, १८२ सावित्री माहात्म्य, १८३ गायत्रीवरप्रदान, १८४ ब्रह्मज्ञानसूचना; १८५ आनर्तराजकन्या रत्नवतीकी कथा, १८६ रत्नवतीआख्यानमें वृहद्बलराजसम्वाद, १८७परावसुनामक नागर ब्राह्मण सम्वाद, भर्तृयज्ञ, १८८ रत्नवतीके पाणिग्रहणलाभाशासे दशार्णाधिपतिका आगमन, रत्नवतीकी विवाहमें अनिच्छा और तपस्यामें इच्छा, शूद्राब्राह्मणीमाहात्म्य, १८९ कुरुक्षेत्र,हाटकेश्वर, प्रभास, पुष्कर, नैमिष, धर्म्मारण्य, वाराणसी, द्वारका और अवन्ती आदि क्षेत्रान्तर्गत पुण्यतीर्थ निरूपण, विशेषदिनमें तीर्थस्नानफल,कुशका शासनवर्णन, भर्तृयज्ञप्रसंगमें विश्वामित्रकाथित कुम्भकयज्ञाख्यान, १९० अन्त्यजप्रभाववणन, भर्तृयज्ञमर्य्यादाकथन, १९१ शुद्धनागर और देशान्तर्गतनागरकी शुद्धि और श्राद्धकथन, विश्वामित्रका नागरप्रश्न निर्णय, १९२ भर्तृयज्ञप्रसंगमें नागर ब्राह्मणोंका अथर्वणवेद निर्णय, १९३ नागर विशुद्धिकथन, १९४ नागर ब्राह्मणोंका प्रेतश्राद्धादि कथन, १९५ इन्द्र विष्णु सम्वादमें प्रेतकृत्य,१९६–१९८ बालमण्डमाहात्म्य,१९९ नागरखेद और शंखादित्योत्पत्ति, २०० शंखतीर्थमाहात्म्य, २०१ रत्नादित्यमाहात्म्य, २०२ विश्वामित्रप्रभावमें शाम्बादित्यप्रभाव, २०३ गणपतिपूजामाहात्म्य, २०४ श्राद्धकल्प, २०५ श्राद्धोत्सव, २०६ श्राद्धकालनिर्णय, २०७ नागर शाखा और श्राद्धमें भोज्यनिर्णय, २०८ काम्यश्राद्धनिर्णय, २०९ गजच्छायामाहात्म्य, २१० श्राद्धकल्पपरीक्षा; २११ श्राद्धकल्पमें चतुर्दशीशस्त्रहत निर्णय,२१२ बारहप्रकारके पुत्र, श्राद्धमें अधिकारी और अनधिकारी पुत्रनिर्णय, २१३ पितृपरितोषार्थ मंत्रकथन,२१४ एकोद्दिष्ट और सपिण्डीकरणविधि, २१५ भीष्मयुधिष्ठिरसम्वादमें नरकगतिकथन, २१६ भीष्मयुधिष्ठिरसम्वादमें नरकवारणकार्य्य, २१७ जलशायिमाहात्म्य, २१८ भृङ्गरीटकी उत्पत्ति; २१९ अन्धकपुत्रवृकको इन्द्रराज्यलाभ, २२० वृकासुरप्रभाव, अशून्यशयनव्रत प्रसंगमें जलशायीकी उत्पत्ति, २२१ चातुर्मास्यव्रतनियम, २२२ अशून्यशयनव्रतकथा,

२२३ हाटकेश्वरान्तर्गत मंकणकशुकेश्वरादि मुख्यतीर्थकथन, २२४ शिवरात्रि माहात्म्य, २२५ तुलापुरुषदान माहात्म्य, २२६ पृथ्वीदान माहात्म्य, २२७ वाताप्येश्वर और कपालमोचनेश्वरोत्पत्ति, २२८ इन्द्रद्युम्नाख्यानमें सप्तलिंगोत्पत्ति विवरण, २२९ युगस्वरूपकथन, २३० दुःशीलोपाख्यानमें मासक्रमसे देवदर्शनफल, २३१ एकादशरुद्रोत्पत्ति और उनका माहात्म्य, २३२ द्वादशार्क तथा रत्नादित्योत्पत्तिकथा, हाटकेश्वरमाहात्म्य समाप्ति, पुराणश्रवणफल.

७ प्रभासखण्ड ।

१ लोमहर्षणमुनिगणसम्वाद, ओंकार-प्रशंसा, पुराण और उपपुराणकी संख्यानिर्णय, प्रत्येकपुराणका लक्षण और दानविधिकथन, सात्त्विकराजसादि पुराणनिर्णय, स्कन्दपुराणके खण्डनिर्णय, २ सूतर्षिसम्वादमें कैलासवर्णन, देवीकृत शिवस्तव, शिवका निजस्वरूपकथन, ३ शिवपार्वती सम्वादमें तीर्थसंख्या, तीर्थयात्रा, और तीर्थमाहात्म्य वर्णन प्रभासक्षेत्र प्रशंसा, ४ प्रभासक्षेत्रकी सीमा, परिमाण और संक्षेपसे तन्मध्यगत प्रधान २ तीर्थ, भैरव और विनायकादि कथन, ५ सोमेश्वर वर्णन, ६ सोमेश्वर माहात्म्य, ७ प्रभासका पीठस्थान निर्णय, शिवकथित प्रधान, २ तीर्थस्थान निर्णय, रुद्र विभाग, ८ जम्बूद्वीप और तदन्तर्गतवर्ष विवरण, कूर्मलक्षण, प्रभास नाम निरुक्ति कथन, वसिष्ठादिऋषिकथित ईश्वरस्तव, अर्कस्थल माहात्म्य, राजभट्टारकोत्पत्ति कथन, ९ परमेश्वरोत्पत्ति, १० पवित्रनाम करण और अर्कस्थल उत्पत्ति, ११ सिद्धेश्वरोत्पत्ति, १२ पापनाशनोत्पत्ति, १३ पातालविवरण और सुनन्दादिमातृगणोत्पत्ति; १४ अर्कस्थलमाहात्म्य समाप्ति, १५ विष्णुका अवतार कथन, १६ चन्द्रोत्पत्तिकथन, १७ सोमेश्वरोत्पत्ति कथन, १८ सोमनाथमाहात्म्य, १९ सोमेश्वरप्रतिष्ठाकथन, २० सोमेश्वर महिमा वर्णन, २१ सोमेश्वरव्रत, २२ गन्धर्वेश्वरमाहात्म्य और यात्रा विधान, २३ सागरके प्रति अभिशाप वर्णन, २४ सोमेशयात्रा और तीर्थस्नान

कथन, २५ वडवानलोत्पत्ति, २६ वडवानलवर्णन, वडवानल प्रभाव, २७ सरस्वत्यवतार, २८ सरस्वती नदी महिमा, २९ सरस्वती सागर संगममें अग्नितीर्थ माहात्म्य, ३० प्राचीसरस्वतीमाहात्म्य, ३१ कंकणमाहात्म्य, ३२ कपर्द्दीशमाहात्म्य, ३३ केदारेश्वरमाहात्म्य, ३४ भीमेश्वरमाहात्म्य, ३५ भैरवेश्वर, ३६ चण्डीश, ३७ भास्करेश्वर, ३८ अनरकेश्वर, ३९ बुधेश्वर, ४० बृहस्पतीश्वर, ४१ शुक्रेश्वर, ४२ शनीश्वर, ४३ राह्वीश्वर, ४४ केत्वीश्वर, ४५ सिद्धेश्वर, ४६ कपिलेश्वर, ४७ विमलेश्वर आदि पंचालिंगमाहात्म्य, ४८ वरारोहमाहात्म्य, ४९ अजपालेश्वरीमाहात्म्य, ५० तीनरुद्रशाक्तियोंका संकेत, ५१ मंगलामाहात्म्य, ५२ ललितामाहात्म्य, ५३ चतुर्देवीमाहात्म्य, ५४ लक्ष्मीश्वर, ५५ वाडवेश्वर, ५६ अटेश्वर, ५७ कामेश्वरमाहात्म्य, ५८ गौरीतपोवनमाहात्म्य, ५९ गौरीश्वर, ६० वरुणेश्वर, ६१ ऊषेश्वर, ६२ जलवासगणेश्वर, ६३ कुमारेश्वर, ६४ साकल्येश्वर, ६५ कल्कलेश्वर, ६६ नकुलेश्वर, ६७ उतंकेश्वर, ६८ वैश्वानरेश्वर, ६९ गौतमेश्वर, ७० दैत्यघ्नेश्वरमाहात्म्य, ७१ चक्रतीर्थ, ७२ योगेशादि लिंगमाहात्म्य, ७३ आदिनारायण, ७४ सन्निहत्या, ७५ पाण्डवेश्वर, ७६ एकादशरुद्रमाहात्म्य भूतेश्वर, ७७ नीलरुद्र, ७८ कपालेश्वर, ७९ वृषभेश्वर, ८० त्र्यम्बकेश्वर, ८१ अघोरेश्वर, ८२ भैरवेश्वर; ८३ मृत्युञ्जयेश्वर, कामेश्वर, ८४ योगेश्वर, ८५ चन्द्रेश्वर; ८६ एकादश माहात्म्यसमाप्ति, ८७ चक्रधर माहात्म्य प्रसंगमें पौंड्रक वासुदेवाख्यान, ८८ शाम्बादित्यकथा, ८९ शाम्बादित्यप्रभावमें शाम्बकी रोगमुक्ति, ९० कण्टकशोधिनी और महिषघ्नीमाहात्म्य, ९१ कपालीश्वर, ९२ कोटीश्वर, ९३ बालब्रह्ममाहात्म्य, ९४ ब्राह्मणप्रशंसा, ९५ ब्रह्ममाहात्म्य, ९६ प्रत्यूषेश्वर, ९७ अनिलेश्वर, ९८ प्रभासेश्वर, ९९ रामेश्वर, १०० लक्ष्मणेश्वर, १०१ जानकीश्वर, १०२ वामनस्वामी, १०३ पुष्करेश्वर १०४ कुण्डेश्वरी गौरी, १०५ गौर्य्यादित्य, १०६ बलातिबल दैत्यघ्नी और

गोपीश्वर, १०७ जामदग्न्येश्वर, १०८ चित्रांगदेश्वर, १०९ रावणेश्वर, ११० सौभाग्येश्वर, १११ पौलोमीश्वरी, ११२ शाण्डिल्येश्वर, ११३ सागरादित्य, ११४ उग्रसेनेश्वर, ११५ पाशुपतेश्वर, ११६ ध्रुवेश्वर, ११७ महालक्ष्मी, ११८ महाकाली, ११९ पुष्करावर्त्त-नदी, १२० दुःखान्तगौरी, १२१ लोमेश्वर, १२२ कंकालभैरवक्षेत्र-पाल, १२३ चित्रादित्य, १२४ चित्रपथानदी, १२५ चित्रेश्वर, १२६ कनिष्ठपुष्कर, १२७ ब्रह्मकुण्ड, १२८ रूपकुण्डल, १२९ भैरवेश्वर, १३० सावित्रीश्वर, १३१ नारदेश्वर, १३२ हिरण्येश्वर भैरवमाहात्म्य, ब्रह्मकुण्डमाहात्म्यसमाप्ति, १३३ गायत्रीश्वर, १३४ रत्नेश्वर, १३५ सत्यभामेश्वर, १३६ अनङ्गेश्वर १३७ रत्नकुण्ड, १३८ रेवन्त, १३९ अनन्तेश्वरमाहात्म्य, १४० अष्टकुलेश्वर, १४१ नासत्येश्वर, १४२ सावित्री माहात्म्यआरम्भ, १४३ सावित्रीका प्रभासमें आगमन, १४४ सावित्रीमाहात्म्यसमाप्ति, १४५ भूतमातृका, १४६ शालकंकटा, १४७ वैवस्वतेश्वर, १४८ मातृगणबल, १४९ दशरथेश्वर, १५० भारतेश्वर, १५१ कुशकेश्वरादिचारालिंग, १५२ कुन्तीश्वर, अर्कस्थल, सिद्धेश्वर, नकुलीश, भार्गवेश्वर, माण्डवेश्वर, पुष्पदन्तेश्वर, क्षेत्रपाल, वस्तु नन्दामातृगण मुखविवरण, त्रिसंगम, महीश्वर, देवपातागौरी, नागस्थान, प्रभासेश्वर, १५३ रुद्रेश्वर, मोक्षस्वामी अजीर्णेश्वर, विश्व-कर्मेश्वर, अनरेश्वर, वृद्धप्रभास १५४ जलप्रभास, जमदग्नीश्वर महा-प्रभास, १५५ दक्षयज्ञविध्वंस, १५६ कामकुण्ठ, कालभैरव, रामेश्वर, १५७ मंकीश्वर, १५८ सरस्वतीसंगम, १५९ श्राद्धकल्प, १६० सरस्वतीसागरसंगमें श्राद्धविधि, १६१ ब्राह्मधर्म्ममें पात्रापात्रविभेद, १६२ श्राद्धकल्पसमाप्ति, १६३ मार्कण्डेयेश्वर, पुलहेश्वर, क्रत्वीश्वर, काश्यपेश्वर, कौशिकेश्वर, कुमारेश्वर, गौतमेश्वर, देवराजेश्वर, मानवेश्वर मार्कण्डेयेश्वर माहात्म्यसमाप्ति, १६४ वृषध्वजेश्वर ऋणमोचन पुरुषोत्तम,

शृंगारेश्वर, प्रकीर्णस्थानलिंग, १९६ दामोदर वस्त्र पथक्षेत्र, गंगेश्वरभव, १९७ वस्त्रापथक्षेत्रमाहात्म्य, १९८ अन्धकासुर, दक्षयज्ञविध्वंस, १९९ स्वर्णरेखा २०० रैवत, २०१ सोमेश्वरोत्पत्ति, २०२ सरस्वतीतीर्थयात्रा, २०३ शिवरात्रिमहिमा, २०४ वस्त्रापथक्षेत्रमाहात्म्यमें बलिनिग्रह, वस्त्रापथ क्षेत्रमाहात्म्यसमाप्ति, २०५ प्रभासक्षेत्रयात्रा प्रशंसा और प्रभासखण्ड समाप्ति.

प्रचलित स्कन्दपुराणीय सप्तमखण्डसे अध्यायके अनुसार जो विषयानुक्रमणिका दीगई है, उसके अनुसार नारदीय पुराण वर्णित ब्रह्मखण्ड और वैष्णव खण्डका प्रथमांश छोडकर स्कन्दपुराणका प्रायः सब अंशही पाया जाता है। नारदपुराणमें स्कन्दपुराणका जो रूप विचित्रित हुआ है, प्रचलित स्कन्दमें उपरोक्त सप्तम खण्डमें उसका अभाव नहीं है। ऐसे स्थलमें कहा जा सकता है कि, नारद पुराणकी पुराणानुक्रमणिका जिस समयमें संकलित हुई थी उस समय सात खण्ड युक्त स्कन्द पुराण प्रचलित था इसमें सन्देह नहीं हैं। अध्यापक विलसनसाहब आदि जो उत्कल खण्डको और काशीखण्डको, ११ वीं शताब्दीका कहते हैं और जगन्नाथ माहात्म्य होनेसे अर्वाचीन कहते हैं उनको इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि ऋग्वेद अष्टक, ८ अदो यद्दारु प्लवते० इस मंत्रमें जगन्नाथजीका प्रसंग है और जब कि नारदपुराणमें इसकी अनुक्रमणिका विद्यमान है तब व्यासको रचनम सन्देह क्या और आधुनिक गवेषणा करनेवालोंका मन, इसीसे खण्डित होता है कि स्कन्दपुराणीय काशिखण्डकी एक ९३० शककी हस्तलिपि विश्वकोष कार्य्यालयमें रक्खी है, उसके साथ प्रचलित काशीखण्डका किसी विषयमेंही प्रायः अनैक्य नहीं है, इस कारण जब १००८ खृष्टाब्दकी पोथी पाई जाती है; तब काशीखण्डका रचना काल उसक बहुत वर्ष पहले हुआ है; यह सहजमेंही स्वीकार किया जासकता है.

महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री महाशय और बेनडल साहेब नेपालके राजपुस्तकागारमें खृष्टीय ७ म शताब्दीकी हाथकी लिखी एक स्कन्दपुराणकी पोथी देख आये हैं। शास्त्री महाशयने नेपालके राज-पुस्तकालयकी प्राचीन पोथियोंकी जो सूची प्रकाश की है उसमें उक्त स्कन्द पुराणकी पोथीके प्रत्येक अध्यायकी पुष्पिका उद्धृत हुई है किन्तु यह पोथी स्कन्दपुराणके किस खण्डके अन्तर्गत है इस विषयमें कोई बात नहीं लिखी,तथापि हमने उक्त अध्यायपुष्पिकाकी आलोचना करके उसको स्कन्द पुराणका अम्बिका खण्ड स्थिर किया है अम्बिका खण्डकी विषयानुक्रमणिका और उक्त नेपालकी पोथीकी अध्याय पुष्पिका परस्पर मिलाकर देखनेसे इस विषयमें फिर कोई भी सन्देह नहीं रहेगा। बडेही आश्चर्य्यका विषय है नारदीय पुराणमें यह अम्बिका खण्ड सप्तम खण्डमें नहीं गिना है किन्तु अम्बिका खण्डकी पोथी और शंकर संहिता निर्दिष्ट खण्डादिका विषय आलोचना करने-से इस खण्डको स्कन्द पुराणके अन्तर्गत कहकर ग्रहण करनेमें आपात्ति नहीं रहती। अबतक जितनी पौराणिक पोथी आविष्कृत हुई हैं उनमें नेपालकी उक्त पोथीही सबसे प्राचीन हैं जो लोग प्रचलित पुरा-णोंको आधुनिक समझते हैं उनकी शंका निवृत्त करनेके निमित्त अपने संगृहीत अम्बिका खण्डके दूसरे अध्यायसे इसकी अनुक्रमणिका उद्धृत करते हैं—

सनत्कुमार उवाच।

प्रपद्ये देवमीशानं सर्वज्ञमपराजितम्।
महादेवं महात्मानं विश्वस्य जगतः पतिम्॥
शक्तिरप्रतिघातस्य ऐश्वर्य्यं चैव सर्वगम्।
स्वामित्वञ्च विभुत्वञ्च मुनिश्चापि प्रचक्ष्यते॥
तस्मै देवाय सोमाय प्रणम्य प्रयतः शुचिः।

पुराणाख्यानजिज्ञासोर्वक्ष्ये स्कन्दोद्भवं शुभम् ॥
देहावतारो देवस्य रुद्रस्य परमात्मनः ।
प्रजापत्यभिषेकश्च हरणं शिरसस्तथा ॥
दर्शनं पट्कुलीयानि चक्रस्य च विसर्जनम् ।
नैमिषस्योद्भवश्चैव सत्रस्य च समापनम् ॥
ब्रह्मणश्चागमस्तत्र तपसश्चरणं तथा ।
सर्वस्य दर्शनं चैव देव्याश्चैव समुद्भवम् ॥
सत्याविवादश्च तथा दक्षशापस्तथैव च ।
मुनयोश्च समुत्पत्तिस्तथा देव्याः स्वयम्वरः ॥
देवानां वरदानञ्च वसिष्ठस्य च धीमतः ।
पाराशर्य्यसुतोत्पत्तिर्व्यासस्य च महात्मनः ॥
वसिष्ठकौशिकाभ्याञ्च वैराद्भवसमापनम् ।
वाराणस्याश्च शून्यत्वं क्षेत्रमाहात्म्यवर्चसम् ॥
रुद्रस्य चात्र सान्निध्यं नन्दिनश्चाप्यथ ग्रहः ।
गणानां दर्शनं चैव कथनं चाप्यशेषतः ॥
कलिव्याहरणं चैव तपश्चरणमेवच ।
सोमनन्दिसमाख्यानं वरदानं तथैव च ॥
गौरीत्वं पुत्रलोभाच्च देव्या उत्पत्तिरेव च ।
कौशिक्याभूतमातृत्वं सिंहत्वं रथिनस्तथा ॥
गौर्य्याश्च निलयो विन्ध्ये विन्ध्यसूर्य्यसमागमः ।
अगस्त्यस्य च माहात्म्यं वधं सुन्दोपसुन्दयोः ॥
निशुम्भशुम्भनिर्य्याणं महिषस्य वधस्तथा ।
अभिषेकश्च कौशिक्या वरदानमथापि च ॥
अन्धकस्य तथोत्पत्तिः पृथिव्याश्चैव वर्णनम् ।
हिण्याक्षवधश्चैव हिरण्यकशिपोस्तथा ॥

वलेः संयमनश्चैव देव्याः समर एव च ।
देवानामागमश्चैवअग्नेर्भूतत्वमेव च ॥
देवानां वरदानं च शक्रस्य च विसर्जनम् ।
व्रतस्य च तथोत्पत्तिर्देव्याश्चान्धकदर्शनम् ॥
शैलादेश्चापिसम्मर्दोदेव्याश्चाप्यनुरूपता ।
आर्य्यावरप्रदानञ्च शैलादेश्चापि वर्णनम् ॥
देवस्यागमनं चैव मित्रस्य कथनं तथा ।
पतिव्रतायाश्चाख्यानं गुरुशुश्रूषणस्य च ॥
आख्यानं पञ्चचूडायास्तेजसश्चात्तधृष्यता ।
दूतस्यागमनं चैव सम्वादोथविसर्जनम् ॥
अन्धकासुरसम्वादो मन्दरागमनं तथा ।
गणानामागमश्चैव संख्यानं श्रवणी तथा ।
रुद्रस्य नीलकण्ठत्वं तथायतनवर्णनम् ॥
उत्पत्तिर्यक्षराजस्य कुबेरस्य च धीमतः ।
निग्रहोभुजगेन्द्राणां शिखरस्य च पातनम् ॥
त्रैलोक्यस्य सशक्रस्य वशीकरणमेव च ॥
देवसेनाप्रदानं च सेनापत्यभिषेचनम् ॥
नारदागमनं चैव तारकप्रेषणं तथा ।
वधश्च तारकस्याजौ यात्रारुद्रजटस्य च ॥
महिषस्य वधश्चैव क्रौञ्चस्य च निवर्हणम् ।
शक्तेरुद्धरणं चैव कालस्य च वधः शुभः ॥
देवासुरभयोत्पत्तिस्त्रिपुरं युद्धमेव च ।
प्रह्लादविग्रहश्चैव कृतप्राख्यानमेव च ॥
महाभाग्यं ब्राह्मणानां विस्तरेणानुकीर्तनम् ।
कूटे विरूपकरणं योग्यस्य च परो विधिः ॥

एतज्ज्ञात्वायथावद्धिकुमारानुचरो भवेत् ।
बलवान्मतिसम्पन्नं पुत्रमाप्नोतिसम्मतम् ॥ "

अब शंका यह है कि, ऊपर जिस स्कन्द पुराणका परिचय दिया है उसीको आदिस्कन्द पुराण कहकर ग्रहण कर सकते हैं या नहीं ? धर्म्म सूत्र रचना कालमें स्कन्द पुराण प्रचलित था अथवा नहीं, इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं पाया जाता, तथापि मत्स्यपुराणसे स्कन्दपुराणका इस प्रकार परिचय पाया जाता है कि—

" यत्रमाहेश्वरान् धर्म्मानधिकृत्य च षण्मुखः ।
कल्पेतत्पुरुषेवृत्तं चरितैरुपबृंहितम् ॥
स्कान्दं नामपुराणं तदेकाशीति निगद्यते ।
सहस्राणिशतं चैकमितिमर्त्येषु गद्यते ॥ "

जिस पुराणमें षडानन (स्कन्द) ने तत्पुरुष कल्प प्रसंगमें अनेक चरित और उपाख्यान तथा माहेश्वर निर्दिष्ट धर्म्म प्रकाश किये हैं वही मर्त्य लोकमें ८११०० स्कन्द पुराण नामसे विख्यात हुआ है.

मत्स्यपुराणके उक्त वचनपर दृष्टि डालनेसे पूर्ववर्णित छः संहिता और सात खण्डात्मक स्कन्दपुराणको सहसा मात्स्योक्त नहीं कह सकते किन्तु उपरोक्त केदार खण्डमें नन्दिकुमार सम्वाद और—

"धर्म्मा नानाविधाः प्रोक्ता नन्दिनं प्रति वै तदा ।
कुमारेण महाभागाः शिवशास्त्रविशारदाः " ॥

उक्त श्लोक पाठकरनेसे प्रचलित स्कन्द पुराणमेंभी जो आदि लक्षण समूह है, वह स्पष्टही जाने जाते हैं.

इस प्रकार अनेक विषयोंसे संयुक्त होनेपर यह स्कन्दपुराण प्राचीन कालका है हां इसमें संदेह नहीं कि एकही कथा पुराणके खण्डोंमें वार २ आई है परन्तु हमको इसका उत्तर यही प्रतीत होता है कि पुराण कर्त्ताकी यह शैली है यदि पुराण खण्डात्मक वा भागात्मक हो तो

किसी २ कथाका दोवार आना संभव है, तत्पुरुप कल्प प्रसंगमें माहेश्वर धर्म और स्कन्दका चरित्र ही विस्तृत भावसे पूर्व स्कन्दपुराणमें वाण तथा शिवपुराणके उत्तर खण्डमें भी इसी प्रकार स्कन्द पुराणका परिचय पाया जाता है.

" यत्र स्कंदः स्वयं श्रोता वक्ता साक्षान्महेश्वरः ।
तत्र स्कान्दं समाख्यातम् ॥ "

अर्थात् जिस पुराणमें स्वयं स्कन्द श्रोता और साक्षात् महेश्वर वक्ता है वही स्कन्द पुराण नामसे विख्यात है पर इस समय स्कन्द-पुराणमें दूसरा संस्कार हुआ हो तो कुछ आश्चर्य नहीं कारण कि अभीतक यह बहुत ग्रन्थ खण्डात्मकही है और एक स्थलमें इसकी पूर्ण पोथी विरलही है तथापि इसके प्रसंगमें हम भेद नहीं पाते तथापि यह वृहत् ग्रंथ तत्र पुराणोंमें बृहत् और विविध आश्चर्योपाख्यानोंसे पूरित और शिवोपासकोंका परम धर्म.और वर्णाश्रमधर्मी मनुष्योंको परमादरकी सामग्री है । हमने जो पुराणोंका विचार सर्व साधारणके सामने उपस्थित किया है, इसका यही आशय है कि धर्मात्मा गण उनके विषयोंको विचार कर सनातन धर्म्मपर श्रद्धा करें और प्राचीन पुरुषाओंके धर्मका आदर करें.

उपरोक्त संहिता और खण्डोंके अतिरिक्त औरभी बहुतसे माहात्म्य और खण्ड, स्कन्द पुराणके अन्तर्गत प्रचलित हैं । यथा–

सह्याद्रि खण्ड, अर्बुदाचल खण्ड, कनकादि खण्ड, काश्मीर खण्ड, कौशल खण्ड, गणेश खण्ड, उत्तर खंड, पुष्कर खंड, बदरिका खंड, भीम खंड, भू खण्ड, भरत खण्ड, मलयाचल खण्ड,मानस खण्ड, कालिका खण्ड, श्रीमाल खण्ड, पर्वत खंड, सेतु खंड, हालास्य खंड, हिमवत् खंड, महाकाल खंड, अगस्त्यसंहिता, ईशानसंहिता, उमासंहिता, सदाशिव संहिता, प्रह्लाद संहिता इत्यादि । अदुःख नवमी कथा, अधिमास माहात्म्य, अभिलाषाष्टक, अम्बिका माहात्म्य, अयोध्या-

माहात्म्य, अरुन्धती व्रत कथा, अर्द्धोदय व्रत, अर्बुद, आदिकालाश, आलम्पुरि, आषाढ, इन्द्रावतार क्षेत्र, इषुपात क्षेत्र, उत्कंठ एकादशी, ओंकारेश्वर, कदम्बवन, कनकादि, कमलालय, कलस क्षेत्र, कात्यायनी, कान्तेश्वर, कालेश्वर, कुमार क्षेत्र, कुरुका पुरी, कृष्णनाम, कैवल्य रत्न, केश्वर क्षेत्र, कोटीश्वरीव्रत, गणेश, गरल पुर, गोकर्ण, गो, चन्द्रपाल, परमेश्वरी, चातुर्मास्य, चिदम्बर जगन्नाथ, जयन्ती, तञ्जापुरी, विष्णुस्थली, तपस तीर्थ, तल्प गिरि, तिकनलवाडी, तुंगभद्रा, तुंगशैल, तुलजा, त्रिशिरगिरी, त्रिशूल पुरी, नन्दी क्षेत्रादि, नन्दीश्वर, पञ्चपार्वती, पराशर क्षेत्र, पाण्डुरंग, पुराण श्रवण, पावकाचल, पेरलस्थल, प्रबोधिनी, प्रयाण पुरी, पकुलारण्य, बदारिका वन, बिल्ववन, भागवत, भीमेश्वर, भैरव, मथुरा, मन्दाकिनी, धराचल, मलारि, महालक्ष्मी, मायाक्षेत्र, मार्गशीर्ष, मौनी, मुनिपुरी, रामशिला, रामायण, रुद्रकोटी, रुद्रगया, लिंग वटतीर्थ, वरलक्ष्मी, वाञ्छेश्वर, वानर वीर, वानवासी, विनायक, विरजा, वृद्धगिरि, वेदपाद शिव, वैशाख्य, बिल्वारण्य, वैशाख, शम्भल, ग्राम, शम्भु गिरि, शम्भु, महादेवक्षेत्र, शालग्राम, शीतला, शुद्धपुरी, शृंगवेर पुर, शूलटंकेश्वर, श्रीमाल, श्रीमुष्णि, श्रीशैल, श्रीस्थल, सिंहाचल, सिद्धिविनायक, सुब्रह्मण्यक्षेत्र, सुरभिक्षेत्र, स्वयम्भुक्षेत्र, हेमेश्वर और हृदायल, माहात्म्य इत्यादि बहुसंख्यक माहात्म्य हैं इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्यके मन्दिर समूहमें जितने पुराण पाये जाते हैं उनमें अधिकांशही स्कन्द पुराणके अन्तर्गत कहकर प्रचलित हैं जो कुछभी हो इन बहुतसे स्कन्दपुराणके माहात्म्योंसे हमने भारतके प्राचीन कालके भूवृत्तान्तका यथेष्ट परिचय पाया है; इस कारण यह सब भौगोलिकके आदरके पदार्थ हैं.

वामनपुराण १४.

१ पुलस्त्य नारायण सम्वादमें वामन प्रसंग, हर पार्वती सम्वाद, २ दक्षयज्ञशंकरके कपाली नामका कारण, ३ शंकरका तीर्थ भ्रमण, ४

शंकर कपाली प्रयुक्त दक्षका शिव रहित यज्ञ, मन्दर पर्वतमें सतीका देह त्याग, शंकरका क्रोध और शरीरसे प्रमथ गणकी उत्पत्ति, दक्षालयम् युद्ध, राशि चक्रकी सृष्टि,६ नर और नारायणका उपाख्यान, सतीके विरहानलमें शंकरका भ्रमण, देवगणका स्तव, ७ नारायणके योगभंगकी चेष्टा,च्यवन मुनिका पाताल गमन,नर नारायणके साथ प्रह्लादका युद्ध,८ नर नारायणका पराजय स्वीकार, प्रह्लादको वरदान, ९ अन्धकको राज्याभिषेक, १० देवगणके साथ अंधकका संग्राम,११ सुकेशी निशाचरका उपाख्यान,१२ नरक वर्णन, जिस कार्य्यसे जो नरक होता है तिसका निर्णय, पुष्करद्वीप वर्णन,१३ जम्बूद्वीप वर्णन,पर्वत वर्णन, नदी वर्णन १४ सुकेशीको धर्म्मोपदेश, १५ सात्विक कार्य्य,१६ वाराणसीकी उत्पत्ति, १७ कात्यायनी और विष्णुका उत्पत्तिकाल, रक्तबीजका जन्म वृत्तांत, महिषासुरके युद्धमें देवगणकी पराजय,१८देवगणके शरीरसे भगवतीकी उत्पत्ति,१९ विन्ध्याचलमें देवीका अधिष्ठान, २०,कात्यायनीके साथ महिषासुरका युद्ध, २१ शुंभ आर निशुंभ विनाशके निमित्त देवीका पुनर्वार जन्म,पृथूदकका वृत्तांत शम्बरके साथ तपतीका परिणय, २२ कुरुराजाका उपाख्यान, २३ पार्वतीकी तपस्या, २४ पार्वतीके आश्रममें छद्मवेशमें शंकरका गमन और कथोपकथ, २५ शंकरका विवाह सम्बन्ध, शंकरका विवाह, शंकरका महामैथुनभंग, २६ गणेशका जन्म वृत्तांत, शुंभ, निशुंभका सैन्य संग्रह, देवीके निकट दूत प्रेरण; धूम्रलोचन वध, चण्ड मुण्डका युद्ध और विनाश, २७ रक्तबीजका युद्ध और विनाश, निशुम्भका युद्ध और विनाश, शुम्भका युद्ध और विनाश देवगणका स्तव, २८ कार्त्तिकेयका जन्म और सेनापतित्वमें वरण,२९कार्तिकेयके साथ दानवों का युद्ध, तारकासुर निधन, क्रौञ्चभेद और महिषासुर विनाश, ३० अंधकासुरका भ्रमण और गौरीके रूपलावण्यमें मुग्धता, ३१ मुर दानवका उपाख्यान, पुन्नाम नरक निर्णय, ३२ भिन्न नरक और पाप

निर्णय; पुत्र निर्णय, केशवका द्वादश पुत्राख्य योग, ३३ मुरदानवनिधन; शंकरका योग, अंकनका नृत्य और स्वर्ग गमन, ३४ भार्गवका मृत सञ्जीवनीविद्यादान अंधकासुरके साथ शंकरका विवाद, ३५ दंडक राजाका उपाख्यान, ३६ नीलकंठका स्तव, ३७ अंधकासुरके साथ शंकरका युद्ध; ३८–४२ अधकासुर निधन और भृंगित्व प्रदान, ४३ मरुत्की उत्पत्ति; ४४ बलिका राज्य ग्रहण; ४५ देवगणके साथ संग्राम देवगणकी पराजय, प्रह्लादके साथ बलिकी मंत्रणा; ४६ देवगणकी मंत्रणा, पुरन्दरकी तपस्या, अदितिकी तपस्या, ४७ प्रह्लादके साथ बलिका कथोपकथन, प्रह्लादका क्रोध और अभिसम्पात; ४८ प्रह्लादका तीर्थ गमन धुन्धुका उपाख्यान, धुन्धुका अश्वमेध यज्ञ, देवगणका स्तव; वामन रूपमें धुन्धुके निकट त्रिपाद भूमि प्रार्थना, धुन्धु निधन, बलिका अश्वमेधयज्ञ; ४९ देवगणका स्तव, वामनका जन्म आर जातकर्म्मादि, ५० स्थानविशेषमें भगवान्का रूपधारण, ५१ बलिके यज्ञमें वामनका गमन, कोपकारका उपाख्यान, ५२ बलिके निकट त्रिपाद भूमि प्रार्थना, वामनको त्रिपाद भूमि दान, विराट मूर्त्ति दर्शन, बलिका वर्णन, बाणके साथ कथोपकथन; ५३ बलिका पातालमें गमन; ब्रह्माका स्तव; ५४ पातालपुरीमें सुदर्शन चक्रका प्रवेश; सुदर्शनचक्रका स्तव, बलिके प्रति प्रह्लादका धर्म्मोपदेश, ब्राह्मणके प्रति भक्ति, ५५ द्वादश मासमें विष्णुपूजाका नियम, वृद्धकी प्रशंसा.

ऊपर प्रचलित वामनपुराणकी सूची दीगई है। अब देखना चाहिये कि दूसरे पुराणोंमें वामनपुराणका किस प्रकार लक्षण निर्देश किया है.

नारद पुराणके मतसे.

" शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि पुराणं वामनाभिधम्।
त्रिविक्रमचरित्राढ्यं दशसाहस्रसंख्यकम्॥
कूर्म्मकल्पसमाख्यानं वर्गत्रयकथानकम्।

भागत्रयसमायुक्तं वक्तृश्रोतृशुभावहम् ॥
पुराणप्रश्नः प्रथमं ब्रह्मशीर्षच्छिदा ततः ।
कपालमोचनाख्यानं दक्षयज्ञविहिंसनम् ॥
हरस्य कालरूपाख्या कामस्य दहनं ततः ।
प्रह्लादनारायणयोर्युद्धं देवासुराह्वयम् ॥
सुकेश्यर्कसमाख्यान ततो भुवनकोषकम् ।
ततः काम्यव्रताख्यानं श्रीदुर्गाचरितं ततः ॥
तपतीचरितं पश्चात् कुरुक्षेत्रस्य वर्णनम् ।
सुरमाहात्म्यमतुलं पार्वतीजन्मकीर्त्तनम् ॥
तपस्तस्या विवाहश्च गौर्य्युपाख्यानकं ततः ।
ततः कौशिक्युपाख्यानं कुमारचरितं ततः ॥
ततोऽन्धकवधाख्यानं साधोपाख्यानकं ततः ।
जाबालिचरितं पश्चादरजायाः कथाद्भुता ॥
अन्धकेश्वरयोर्युद्धं गणत्वं चान्धकस्य च ।
मरुतां जन्मकथनं बलेश्च चरितं ततः ॥
ततस्तु लक्ष्म्याश्चरितं त्रैविक्रममतः परम् ।
प्रह्लादतीर्थयात्रायां प्रोच्यन्ते तत्कथाः शुभाः ॥
ततश्च धुन्धुचरितं प्रेतोपाख्यानकं ततः ।
नक्षत्रपुरुषाख्यानं श्रीदामचरितं ततः ॥
त्रिविक्रमचरित्रान्ते ब्रह्मप्रोक्तः स्तवोत्तमः ।
प्रह्लादबलिसंवादे सुतले हरिशंसनम् ॥
इत्येष पूर्वभागोऽस्य पुराणस्य तवोदितः ।
शृणु तस्योत्तरं भागं बृहद्वामनसंज्ञकम् ॥
माहेश्वरी भागवती सौरी गाणेश्वरी तथा ।
चतस्रः संहिताश्चात्र पृथक्साहस्रसंख्यया ॥

माहेश्वर्य्यान्तु कृष्णस्य तद्भक्तानाञ्चकीर्त्तनम् ।
भागवत्यां जगन्मातुरवतारकथाद्भुता ॥
सौर्य्यां सूर्य्यस्य महिमा गदितः पापनाशनः ।
गाणेश्वर्य्यां गणेशस्य चरितञ्च महेशितुः ॥
इत्येतद्वामनं नाम पुराणं सुविचित्रितम् ।
पुलस्त्येन समाख्यातं नारदाय महात्मने ॥
ततो नारदतः प्राप्तं व्यासेन सुमहात्मना ।
व्यासात्तु लब्धवान् वत्स तच्छिष्यो रोमहर्षणः ॥
स चाख्यास्यति विप्रेभ्यो नैमिषीयेभ्य एव च ।
एवं परम्पराप्राप्तं पुराणं वामनं शुभम् ॥ "

हे वत्स ! सुनो—मैं तुम्हारे निकट वामन नामक पुराण वर्णन करता हूं । यह पुराण त्रिविक्रम चरित संवलित और दशसहस्र श्लोक परिपूर्ण है । यह दो भागमें विभक्त है और इसमें कूर्म्मकल्पका समाख्यान और तीन वर्गकी कथा निरूपित हुई है । इसके सुननेसे वक्ता और श्रोताका मंगल होता है.

इसके प्रथममें पुराण प्रश्न, ब्रह्मशीर्ष छेद और कपाल मोचनाख्यान, पश्चात् दक्षयज्ञ ध्वंस, हरकी कालरूपाख्या, मदनदहन, प्रह्लाद और नारायणका युद्ध, सुकेशी और अर्क समाख्यान, भुवनकोश, कामव्रताख्यान, श्रीदुर्गा चरित, तपती चरित, कुरुक्षेत्र वर्णन, सरो: माहात्म्य, पार्वती जन्म कीर्तन, सतीकी तपस्या और विवाह, गौरीका उपाख्यान, कौशिकी उपाख्यान, कुमारचरित, अन्धकवधाख्यान, साधोपाख्यान, जाबालिचरित, अन्धक और ईश्वरका युद्ध, अन्धकको गणत्व प्राप्ति, देवगणकी जन्म कथा, बलिचरित, लक्ष्मी चरित, त्रिविक्रम चरित, प्रह्लादकी तीर्थयात्रा उपलक्षमें उसकी कथा, धुन्धु चरित, प्रेतोपाख्यान, नक्षत्र पुरुषाख्यान, श्रीदाम चरित, त्रिविक्रमचरितान्तमें ब्रह्मप्रोक्त उत्तम

स्तव, तथा प्रह्लाद और बलिसंवादमें सुतलम हरिका वास, यह सम्पूर्ण विषय पूर्वभागमें हैं.

इसका बृहद्वामन नामक उत्तर भाग सुनो—इसमें माहेश्वरी, भागवती, सौरी और गाणेश्वरी नामक चार संहिता हैं, प्रत्येक संहिता एक सहस्र श्लोकसे पूर्ण है, माहेश्वरीमें कृष्ण और उनके भक्तोंका कीर्त्तन, भागवतीमें जगन्माताके अवतारकी कथा, सौरीमें पापनाशन सूर्य्य माहात्म्य और गाणेश्वरीमें गणेशचरित वर्णित है.

यह वामन पुराण प्रथम पुलस्त्यने नारदके निकट कहा था, पश्चात् नारदके निकटसे महात्मा व्यास मुनिने प्राप्त किया । हे वत्स ! व्यासके निकटसे उनके शिष्य रोमहर्षणने इसको पाया और उन्होंने ही नैमिषारण्यवासी ऋषियोंके निकट इसको प्रगट किया, इस प्रकार यह परम्परासे चला आता है.

मत्स्यपुराणके मतसे—

" त्रिविक्रमस्य माहात्म्यमधिकृत्य चतुर्मुखः ।
त्रिवर्गमभ्यधात्तच्च वामनं परिकीर्तितम् ।
पुराणं दशसाहस्रं कूर्मकल्पानुगं शिवम् ॥"

जिस पुराणमें चतुर्मुख ब्रह्माने त्रिविक्रम वामनका माहात्म्य अवलम्बन करके त्रिवर्गका विषय कीर्त्तन किया था, और पश्चात् शिवकल्प वर्णित हुआ है, वही दशसहस्र श्लोकयुक्त वामनपुराण है.

ऊपर जो वामनपुराणका लक्षण उद्धृत हुआ है, केवल नारदोक्ति साथ प्रचलित वामन पुराणका मेल देखा जाता है किन्तु उत्तरभाग इस समय नहीं पाया जाता.

" श्रीवेंकटेश्वर" प्रेसके छपे वामनपुराणका अध्याय क्रम इस प्रकार है—१ हरललित, २ नरोत्पत्ति प्रलय कथन, ३ विष्णु महादेव सम्वाद, ४ विष्णुजीका वीरभद्रसे युद्ध, ५ शिवजीका कालस्वरूप कथन, ६ काम-

दहन, ७ महायुद्ध ८ प्रह्लादवर प्रदान, ९ देवासुर युद्ध, १० अन्धक-विजय, ११ पुष्कर द्वीप वर्णन, १२ कर्मविपाक, १३ भुवनकोश वर्णन, १४ सुकेशी अनुशासन, १५ सुकेशी चारित्र और लोलार्क जनन, १६ अशून्य शयन द्वितीया कालाष्टमीव्रत, १७ महिषासुरकी उत्पत्ति, १८–१९ देवीमाहात्म्य, २० महिषासुर वध, २१ पार्वतीजीकी उत्पत्ति, २२ सरोमाहात्म्य, २३ बलिवंश राज्यवर्णन, २४ बलिसे भीत देवताओंका ब्रह्मलोकमें गमन, २५ कश्यपादि ऋषियोंका क्षीरसागर तटमें गमन, २६ कश्यपका भगवान्‌की स्तुति करना, २७ अदितिका भगवान्‌की स्तुति करना, २८ आदितिको वरदान, २९ प्रह्लादकृत बलिनिन्दा और शाप, ३० ब्रह्मकृत वामन स्तुति, ३१ वामन बलि चारित्र, ३२ सरस्वती स्तोत्र, ३३ सरस्वती माहात्म्य, ३४–३७ अनेक तीर्थ माहात्म्य, ३८ मंकणकृत शिव-स्तुति, ३९ औशनसादि तीर्थ माहात्म्य, ४० अरुणा सरस्वती संगम-माहात्म्य, ४१ ऋणमोचनादि तीर्थमाहात्म्य, ४२ दुर्गादि तिथि और स्थाणुवट माहात्म्य, ४३ सृष्टि वर्णन, धर्म निरूपण, ४४ ब्रह्मादि देवकृत शिवस्तुति, ४५ स्थाणुलिंगमाहात्म्य, ४६ शिवलिंग स्थापन माहात्म्य, ४७ वेनचारित्र,वेनकृत शिवस्तुति, ४८ शिवजीका वेनको वरदान, ४९ ब्रह्मकृत शिवस्तुति, ५० कुरुक्षेत्र माहात्म्य, ५१ भिक्षुकरूपमें शिव-पार्वती संवाद, ५२ पार्वतीके साथ शंकरका विवाह होनेकी हिमालयसे देवताओंकी प्रार्थना, ५३ पार्वती विवाह, ५४ गणेश जन्म, ५५ चण्डमुण्ड वध, ५६ शुंभनिशुंभ वध, ५७ कार्तिकेय जन्म, ५८ तारक द्वारा क्रौंचभेदन, ५९ अन्धक पराजय, ६० मुरदानवका चारित्र, ६१ मुरका वध, ६२ देवताओंका विष्णुके हृदयमें शिवजीका दर्शन करना, ६३ राजा दण्डका उपाख्यान, ६४ जाबालिको बंधनसे छुडाना, ६५ चित्रांगदका विवाह, ६६ राजा दण्डका भस्म होना, ६७ सदाशिवका दर्शन, ६८ अन्धककी सेनाका पराजय, ६९ जम्भ-

कुजम्भाका वध, ७० अन्धककी पराजय, अन्धकको वर, ७१–७२ मरुतकी उत्पत्ति, ७३ कालनेमिवध, ७४ राजा बलिके प्रति प्रह्लादका उपदेश, ७५ राजा बलिकी महिमाका वर्णन, ७६ अदितिको वर देना, ७७ प्रह्लादका राजा बलिको शिक्षा देना, ७८ धुन्धु दैत्यका पराजय, ७९ पुरूरवाका उपाख्यान, ८० नक्षत्र पुरुषका व्रत वर्णन, ८१ जलोद्भवका वध, ८२ श्रीदाम चरित्र वर्णन, ८३–८४ प्रह्लादजीकी तीर्थ यात्राका वर्णन, ८५ गजेन्द्र मोक्षण, ८६ सारस्वत स्तोत्र, ८७–८८ पापशमन स्तोत्र, ८९ वामनजीका जन्म वर्णन, ९० वामनजीके विविध स्वस्थान कथन, ९१ शुक्र और बलि संवाद, ९२ राजा बलिका बंधन, ९३ वामनजीका प्रगट होना, ९४ भगवत्प्रशंसा, ९५ पुलस्त्य और नारद संवाद, पुराणकी पूर्त्ति.

इस वामन पुराणके साथ नारद पुराणके सूचीका बहुत कुछ मेल पाया जाता है परन्तु इसम भी दश सहस्र श्लोक नहीं हैं। श्लोक समूह किस प्रकार नष्ट हुए सो कुछ जाना नहीं जाता। प्रत्येक द्वापरयुगमें व्यास होते हैं और वह पुरातन पुराणोंको संकलन करते हैं, उसमें भी श्लोकोंका न्यूनाधिक होना संभव है और यह भी संभव है कि किसी समय व्यासजीने कुछ कथाओंका संग्रह किया है और किसी समय कुछ कथाओंका संग्रह किया है, जो पुराण दो द्वापर युगके विद्यमान रह गये वह दो प्रकारके मिलते हैं, और जो एक ही है उसके लिये कुछ कहना ही नहीं और व्यास भी एक पदवी है, किसी मुख्यका नाम नहीं है। इस समयके पुराण संकलन करनेवाले व्यासजीका नाम कृष्ण-द्वैपायन है, आगेको अश्वत्थामा व्यास होंगे इत्यादि अब २८ वां कलि-युग इस मन्वन्तरमें है, अट्ठाईस बार द्वापर बीत चुका है उसमें २८ व्यास पीछे होगये हैं, और सबने ही पुराण संकलन किये हैं कारण कि "युगान्तेऽन्तर्हितान् वेदान्सेतिहासान् महर्षयः। लेभिरे तपसेत्यादि" युगान्तमें अन्तर्हित हुए वेद और इतिहासको ऋषि तपसे प्राप्त करते

हुए उन्हींको फिर सबने लिखा इसीसे कथाओंमें भेद पड गया है इससे कथाभेदमें शंका नहीं करना, ग्रंथ बनानेवाला दो वार ग्रंथको दुहरावे तो उसमें भेद पड जाता है.

मत्स्यपुराणका कहा त्रिविक्रम चरित्र रहनेपर भी ब्रह्मा द्वारा वर्त्तमान वामन पुराण वर्णित नहीं हुआ है, ऐसे स्थलमें प्रचलित वामनको आदि वामन ग्रहण करनेमें सन्देह नहीं होता है। आदि वामनकी कथा उस वामनमें है, इसमें सन्देह नहीं कि नारदपुराणकी पुराणोपक्रमणिका रचित होनेसे पहिले यही वामन पुराण था.

करक चतुर्थी कथा, कोयज्वली व्रत कथा, गङ्गाका मानसिक स्नान, गङ्गा माहात्म्य, दधिवामन स्तोत्र, वराहमाहात्म्य और वेंकटगिरि माहात्म्य इत्यादि कितनी छोटी२पोथी वामनपुराणके अन्तर्गत कहकर प्रचलित हैं.

कूर्मपुराण १५.

पूर्वभागमें—१ सूत और नैमिषेय संवादमें इन्द्रद्युम्न कथा प्रसंग कूर्मपुराण कथन, २ वर्णाश्रम कथन, ३ आश्रमक्रम कथन, ४ प्राकृत सर्ग, ५ कालकथन, ६ भूमण्डल उत्पत्ति, ७ तमोमय सर्गादि कथन, ८ मिथुनसर्ग कथन, ९ पद्मोद्भवप्रादुर्भाव, १० रुद्रसर्ग, ११ देव्यवतार, १२ देवगणका सहस्रनामस्तव, हिमवतके प्रति देवगणका उपदेश, १३ भृग्वादि सर्गकथन, १४ स्वायम्भुवमनुसर्ग कथन, १५ दक्षयज्ञध्वंस, १६ दाक्षायणीवंश कीर्त्तन, हिरण्यकशिपुवध और अन्धक पराजय, १७ वामनवतार—लीला, १८ बलिपुत्रादि कथाप्रसंगमें बाणपुरदाहविवरण, १९ ऋषिवंशकीर्त्तन, २० सूर्य्यवंश कीर्त्तन प्रसंगमें त्रिधन्वापर्य्यन्त राजगणकीर्त्तन, २१ इक्ष्वाकु वंशवर्णन समाप्ति, २२ पुरूरवाका वंशवर्णन, २३ जयध्वजवंश कथन, २४ क्रोष्टुवंश कथन, राम और कृष्णावतार वर्णन, २५ श्रीकृष्णकी तपश्चर्या, २६ श्रीकृष्णको रुद्रदर्शन, कृष्णमार्कण्डेयसंवादमें

लिंगमाहात्म्य कथन, २७ वंशानुकीर्त्तिन समाप्ति, २८ व्यासार्जुनसंवादमें सत्य त्रेता द्वापरयुग कथन, २९ कलियुग स्वरूप कथन, ३० वाराणसी माहात्म्यमें जैमिनि और व्यास संवाद, ३१ लिंगादि माहात्म्य कथन, ३२ व्यासको कपर्द्दीश्वरादि लिंग दर्शन, ३३ मध्यमेश्वर माहात्म्य, ३४ जैमिनिप्रमुख शिष्यपरिवृत व्यासका प्रयाग विश्वरूपादितीर्थ पर्य्यटन, ३५ प्रयाग माहात्म्य कथन, ३६ प्रयाग मरण माहात्म्य, ३७ माघमासमें प्रयागमें फलाधिक्य इत्यादि कथन, ३८ यमुना माहात्म्य, ३९ भुवनकोश संस्थानमें सप्तद्वीप कथन, ४० त्रैलोक्यमान कथन, ज्योतिःसन्निवेश, ४१ बारह आदित्य और उनका अधिकार काल कथन, ४२ सूर्य्यकी ग्रहयोनि और सप्तरश्मिकथन, ४३ महर्लोकादि कीर्त्तन, ४४ भूलोक निर्णयमें द्वीप सागर और पर्वतोंका कथन, ४५ मेरुके ऊपर स्थित ब्रह्मपुरीका कथन, ४६ केतुमाल वर्षादि भूमिस्वरूप कथन, ४७ हेमकूट वर्णन, ४८ प्लक्षद्वीपादि कथन, ४९ पुष्करद्वीपादि कथन, ५० मन्वन्तर कीर्त्तन, ५१ व्यासकीर्त्तन, ५२ महादेव अवतार कथन।

उपरिभागमें—१ ईश्वरी गीतामें ऋषियोंका प्रश्न, २ वक्तव्यज्ञान प्रशंसा, ३ अव्यक्तादिज्ञानयोग, ४ देवमाहात्म्यज्ञानयोग, ५ देवदेवका ताण्डवकालीन स्वरूपदर्शन, ६ ईश्वरकी निजरूप उक्ति, ७ ईश्वरको प्रधानस्वरूपत्व कीर्त्तन, ८ गुह्यतम ज्ञानकथन, ९ ईश्वर ज्ञानकथन, १० लिंगब्रह्म ज्ञानयोग, ११ अष्टांग योगकथन, १२ ब्रह्मचारीका धर्म्म, १३ गमनादि कर्मयोग कथन, १४ अध्ययनादि प्रकार कथन, १५ स्नातक धर्म्म कथन, १६ आचाराध्याय, १७ भक्ष्याभक्ष्य निर्णय, १८ नित्यक्रियाविधि, १९ भोजनादि विधि, २० श्राद्धकल्पारम्भ, श्राद्धीय द्रव्य निर्णय, २१ श्राद्धकल्पमें ब्राह्मण विचार, २२ श्राद्धकल्प समाप्ति, २३ अशौच प्रकरण, २४ अग्निहोत्रादि विधि, २५ वृत्तिकथन, २६ दानधर्म्म कथन, २७ वानप्रस्थ धर्म कथन, २८ यतिधर्म्म कथन, २९ यतिभिक्षादि प्रकार कथन, ३० प्रायश्चित्त कथन, ३१ कपाल मोचन-

माहात्म्य, ३२ सुरापानादि प्रायश्चित्त कथन, ३३ मनुष्य स्त्री गृह हरणादिका प्रायश्चित्त, ३४ विविध तीर्थ माहात्म्य कथन, ३५ रुद्रकोट्यादि तीर्थकथन, ३६ महालयादि तीर्थकथन, ३७ महेश्वरकी देवदारुवनलीला, ३८ नर्मदा माहात्म्य, ३९ नार्मद भद्रेश्वरादि तीर्थ कथन, ४० भृगुतीर्थ कथन, ४१ नैमिष जाप्येश्वर, माहात्म्य, ४२ तीर्थ माहात्म्य समाप्ति, ४३ प्रलयकथन, ४४ प्राकृत प्रलयादि कथन कूर्म्म पुराणका षट् संवाद कथन.

अब देखना चाहिये कि दूसरे पुराणमें कूर्म्मपुराणका किस प्रकार लक्षण निर्दिष्ट किया है ? नारद पुराणके मतसे--

" शृणु वत्स मरीचेऽद्य पुराणं कूर्म्मसंज्ञितम् ।
लक्ष्मीकल्पानुचरितं यत्र कूर्म्मवपुर्हरिः ॥
धर्मार्थकाममोक्षाणां माहात्म्यं च पृथक् पृथक् ।
इन्द्रद्युम्नप्रसङ्गेन प्राहर्षिभ्यो दयान्तिकम् ॥
तत् सप्तदशसाहस्रं सुचतुःसहितं शुभम् ।
यत्र ब्राह्म्या पुराप्रोक्ता धर्मा नानाविधा मुने ॥
नानाकथाप्रसंगेन नृणां सद्गतिदायकाः ।
तत्र पूर्वविभागे तु पुराणोपक्रमः पुरा ॥
लक्ष्मीप्रद्युम्नसंवादः कूर्मर्षिगणसंकथा ।
वर्णाश्रमाचारकथा जगदुत्पत्तिकीर्त्तनम् ॥
कालसंख्या समासेन लयान्ते स्तवनं विभोः ।
ततः संक्षेपतः सर्गः शांकरं चरितं तथा ॥
सहस्रनाम पार्वत्या योगस्य च निरूपणम् ।
भृगुवंशसमाख्यानं ततः स्वायम्भुवस्य च ॥
देवादीनां समुत्पत्तिर्दक्षयज्ञ इतिस्मृतः ।
दक्षसृष्टिकथा पश्चात् कश्यपान्वयकीर्त्तनम् ॥

आत्रेयवंशकथनं कृष्णस्य चरितं शुभम् ॥
मार्कण्डकृष्णसंवादो व्यासपाण्डवसंकथा ।
युगधर्म्मानुकथनं व्यासजैमिनिकी कथा ॥
वाराणस्याश्च माहात्म्यं प्रयागस्य ततः परम् ।
त्रैलोक्यवर्णनं चैव वेदशाखानिरूपणम् ॥
उत्तरेऽस्य विभागे तु पुरा गीतेश्वरी ततः ।
व्यासगीता ततः प्रोक्ता नानाधर्मप्रबोधिनी ॥
नानाविधानां तीर्थानां माहात्म्यञ्च पृथक् ततः ।
नानाधर्म्मप्रकथनं ब्राह्मीयं संहिता स्मृता ॥
अतः परं भागवती संहितार्थनिरूपणे ।
कथिता यत्र वर्णानां पृथक् वृत्तिरुदाहृता ॥
(तदुत्तरभागीयभागवत्याख्यद्वितीयसंहितायाःपञ्चपादेषु)
पादेऽस्याः प्रथमे प्रोक्ता ब्राह्मणानां व्यवस्थितिः ॥
सदाचारात्मिका वत्स भोगसौख्यविवर्द्धनी ।
द्वितीये क्षत्रियाणान्तु वृत्तिः सम्यक् प्रकीर्त्तिता ॥
यया त्वाश्रितया पापं विधूयेह व्रजेच्छिवम् ।
तृतीये वैश्यजातीनां वृत्तिरुक्ता चतुर्विधा ॥
यया चरितया सम्यक् लभते गतिमुत्तमाम् ।
चतुर्थेऽस्यास्तथा पादे शूद्रवृत्तिरुदाहृता ॥
यदा सन्तुष्यति श्रीशो नृणां श्रेयोविवर्द्धनः ।
पञ्चमेऽस्य ततः पादे वृत्तिः संकरजोदिता ॥
यया चरितमाप्नोति भाविनीमुत्तमांजनिम् ।
इत्येषा पञ्चपद्युक्ता द्वितीया संहिता मुने ॥
तृतीयात्रोदिता सौरी नृणां कामविधायिनी ।
षोढा षट्कर्म्मसिद्धिं सा बोधयन्ती च कामिनाम् ॥

चतुर्थी वैष्णवी नाम मोक्षदा परिकीर्तिता ।
चतुष्पदी द्विजादीनां साक्षात् ब्रह्मस्वरूपिणी ॥
ताः क्रमात् षट्चतुर्थीषु सहस्राः परिकीर्तिताः ।

हे वत्स मरीचे ! लक्ष्मीकल्पानुचरित कूर्म्म नामक पुराण सुनो–जिसमें हरि कूर्म्मरूपमें वर्णित और धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन सबका माहात्म्य पृथक् २ रूपसे कीर्त्तित हुआ है। यह पुराण इन्द्रद्युम्न प्रसंगमें ऋषियोंके निकट कथित और सतरह सहस्र श्लोक पूर्ण है.

(पूर्वभागमे)इसके प्रथममें पुराणोपक्रम; फिर लक्ष्मी और प्रद्युम्न संवाद, कूर्म और ऋषियोंका संवाद, वर्णाश्रमाचार कथा, जगदुत्पत्ति कीर्त्तन, संक्षेपसे कालसंख्या, लयान्तमें भगवान्का स्तव, संक्षेपसे सृष्टि, शंकरचरित, पार्वतीके सहस्रनाम, योगनिरूपण, भृगुवंशसमाख्यान, स्वयंभु और देवादिकी उत्पत्ति, दक्षयज्ञध्वंस, दक्षसृष्टिकथा कश्यपवंश कीर्त्तन, आत्रेय वंश कथन, कृष्णचरित्र, मार्कण्डेय और कृष्ण संवाद व्यास और पाण्डव संवाद, युगधर्मानुकथन, व्यास और जैमिनीकी कथा, वाराणसी और प्रयाग माहात्म्य, त्रैलोक्य वर्णन और वेदशाखा निरूपण,

(उत्तर भागमें) इसमें प्रथमतः ईश्वरी गीता, व्यासगीता, नानाविध तीर्थमाहात्म्य, अनेक धर्म्मकथा और ब्रह्मसंहिता और पश्चात् भागवती संहितार्थ निरूपण तथा सवर्ण समुदायकी पृथक् वृत्ति निरूपित हुई है.

(उत्तर भागकी भागवत्याख्य दूसरी संहितामें) इसके प्रथम पादमें ब्राह्मणोंकी व्यवस्थिति, द्वितीयपादमें क्षत्रियोंकी सम्यक्रूपसे वृत्ति-निरूपण, तृतीयपादमें वैश्यजातिकी वृत्तिका कथन, चतुर्थपादमें शूद्रोंकी वृत्तिका कथन और पञ्चमपादमें संकरोंकी वृत्ति कल्पित हुई है, हे मुने ! यह पञ्चपदीद्वितीयसंहिता कही गई । इसकी तीसरी सौरीसंहिता मनुष्योंको कामदायिनी और चौथी वैष्णवीसंहिता मोक्षदायिका है.

मत्स्यपुराणके मतसे—

" यत्र धर्म्मार्थकामानां मोक्षस्य च रसातले ।
माहात्म्यं कथयामास कूर्मरूपी जनार्दनः ॥
इन्द्रद्युम्नप्रसंगेन ऋषिभ्यः शक्रसन्निधौ ।
अष्टादशसहस्राणि लक्ष्मीकल्पानुषङ्गिकम् ॥ "

जिस पुराणमें कूर्म्मरूपी जनार्दनने रसातलमें धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षका माहात्म्य इन्द्रद्युम्नके प्रसंगमें इन्द्रके निकट और ऋषियोंके निकट वर्णन किया था और जिसमें लक्ष्मीकल्पका विषय वर्णित हुआ है वही अठारह सहस्र श्लोकयुक्त कूर्म्मपुराण है.

नारद और मात्स्यमें कूर्म्मका जो लक्षण निर्दिष्ट हुआ है, प्रचलित कूर्म्मपुराणमें उसका आधा है, और मूल श्लोक भी कम हैं । प्रचलित कूर्मपुराणमें केवल ६००० मात्र पाये जाते हैं । इस पुराणके उपक्रममें ही लिखा है.

" इदन्तु पञ्चदशमं पुराणं कौर्म्ममुत्तमम् ।
चतुर्धा संस्थितं पुण्यं संहितानां प्रभेदतः ॥
ब्राह्मी भागवती सौरी वैष्णवी च प्रकीर्त्तिता ।
चतस्रः संहिताः पुण्या धर्म्मकामार्थमोक्षदाः ॥
इयं तु संहिता ब्राह्मी चतुर्वेदैश्च सम्मिता ।
भवान्तषट्सहस्राणि श्लोकानामत्र संख्यया ॥
यत्र धर्म्मार्थकामानां मोक्षस्य च मुनीश्वराः ।
माहात्म्यमखिलं ब्रह्म ज्ञायते परमेश्वरः ॥ " (१।२५)

उक्त श्लोकोंके अनुसार प्रचलित कूर्म्मपुराण ब्राह्मी, भागवती, सौरी और वैष्णवी इन चार संहिताओंमें विभक्त है और ६००० मात्र श्लोक युक्त है.

पूर्वोक्त लक्षणके अनुसार कूर्म्मपुराणमें आदि पुराणकी भी बहुतसी सामग्री है, तो भी इसमें तंत्रकी अनेक बातें हैं और मूल विषय छूट जानेसे क्षुद्राकार धारण किया है, इसमें सन्देह नहीं.

मत्स्यपुराण १६.

१ मनु विष्णु संवाद, २ ब्रह्माण्ड दलन, ३ ब्रह्ममुखोत्पत्ति वृत्तान्त, ४ आदि सृष्टि विवरण, ५ देवादि सृष्टि विवरण, ६ कश्यप वंश विवरण, ७ मदन द्वादशी व्रतोपाख्यान, ८ आधिपत्याभिषेचन, ९ मन्वन्तरानुकीर्तन, १० वैश्यचरित, ११ सोम सूर्य्य वंश वर्णन वृत्तान्त, १२ सूर्य्यवंशानुकीर्त्तन, १३ पितृवंश वर्णनमें अष्टोत्तरशत गौरी नाम कीर्त्तन, १४– १५ पितृवंश वर्णन, १६ श्राद्धकल्प, १७ साधारण अभ्युदय कीर्तन, १८ सपिण्डीकरण कल्प, १९ श्राद्धकल्पमें फलानुगमनकथन, २० श्राद्ध माहात्म्य प्रसंगमें पिपीलिकावहास वृत्तान्त, २१ श्राद्ध कल्पमें पितृमाहात्म्य कथन, २२ श्राद्धकल्प समाप्ति, २३ सोमवंशाख्यानमें सोमोपचार वर्णन, २४ ययाति चरित्र कथनारंभ, २५ कचको सञ्जीवनीविद्यालाभ, २६ कच और देवयानीका परस्पर शापदान, २७ शर्म्मिष्ठा और देवयानीकी कलह, २८ शुक्र और देवयानीसंवाद, २९ शर्म्मिष्ठाका देवयानीको दासित्व करण, ३० देवयानीका विवाह, ३१ ययाति और शर्म्मिष्ठा सङ्गम, ३२ ययातिके प्रति शुक्रका शाप, ३३ पुरुका पितृजराके ग्रहणमें अंगीकार, ३४ पुरुका राज्याभिषेक, ३५ ययातिका स्वर्गारोहण, ३६ इन्द्र और ययातिका संवाद, ३७ पुण्यक्षयके कारण स्वर्गसे पतित ययातिके प्रति अष्टकोंकी उक्ति, ३८ अष्टक और ययातिका संवाद, ३९ ययाति उपदेश, ४० ययातिका आश्रमधर्म्म कथन, ४१ दूसरेके पुण्यसे ययातिका स्वर्गारोहणमें अंगीकार, ४२ ययातिका उद्धार, ४३ यदुवंशकीर्तन, ४४ कार्तवीर्य्यादिकी कथा, ४५ वृष्णि वंशकी कथा आरंभ, ४६ वृष्णि-

वंशकी वर्णना, ४७ असुरशाप, ४८ तुर्वसु आदि वंश वर्णना, ४९ पुरुवंश वर्णना, ५० पौर वंश वर्णना, ५१ अग्निवंश वर्णना, ५२ योग माहात्म्य, ५३ पुराणानुक्रम कथन, ५४ दान धर्म्ममें नक्षत्र - पुरुष व्रत, ५५ आदित्य शयन व्रत, ५६ कृष्णाष्टमी व्रत, ५७ रोहिणी चन्द्र शयन व्रत, ५८ तडाग विधि, ५९ वृक्षोद्भव विधि, ६० सौभाग्य शयन व्रत, ६१ अगस्त्यकी उत्पत्ति और पूजाविधि कथन, ६२ अनन्त तृतीया व्रत, ६३ रस कल्याणिनीव्रत, ६४ आर्द्रानन्दकरी तृतीया व्रत, ६५ अक्षय्य तृतीया व्रत, ६६ सारस्वत व्रत, ६७ चन्द्र सूर्य्य ग्रहण स्नान विधि, ६८ सप्तमी व्रत, ६९ भैमी द्वादशी व्रत, ७० अनंग दान व्रत, ७१, अशून्य शयन व्रत, ७२ अंगारक व्रत, ७३ गुरु और शुक्र पूजा विधि, ७४ कल्याण सप्तमी व्रत, ७५ विशोक सप्तमी व्रत, ७६ फलसप्तमी व्रत, ७७ शर्करा व्रत, ७८ कमल और सप्तमी व्रत, ७९ मन्दर सप्तमी व्रत, ८० शुभ सप्तमी व्रत, ८१ विशोक द्वादशी व्रत, ८२ विशोक द्वादशी व्रतमें गुडधेनु विधान, ८३ दान माहात्म्य, ८४ लवणाचल कीर्त्तन, ८५ गुड पर्वत कीर्त्तन, ८६ सुवर्णाचल कीर्त्तन, ८७ तिलाचल कीर्त्तन, ८८ कर्पास शैल कीर्त्तन, ८९ घृताचल कीर्त्तन, ९० रत्नाचल कीर्त्तन, ९१ रौप्याचल कीर्त्तन, ९२ पर्वतप्रदान माहात्म्य, ९३ नवग्रहका होम और शांति विधान, ९४ ग्रहका उपाख्यान, ९५ शिवचतुर्दशी व्रत, ९६ सर्व फलत्याग माहात्म्य, ९७ आदित्यवार कल्प, ९८ संक्रान्ति उद्यापन विधि, ९९ विष्णुव्रत, १०० विभूति द्वादशी व्रत, १०१ षष्ठी व्रत माहात्म्य, १०२ स्नानफल और विधि कथन; १०३ प्रयागमाहात्म्य कथन, १०४ प्रयागनिरूपण, प्रयाग स्मरणादि फल कथन, १०५ प्रयाग मरणादि फल कथन, १०६ प्रयाग स्मरणादि कर्म्म भेदसे फल कथन, १०७प्रयाग माहात्म्यमें विविध धर्म्म कथन, १०८ प्रयागमें अनशनादि फल कथन; १०९ प्रयागको तीर्थ राजत्वकथन ११० प्रयागमें सर्वतीर्थका अभि-

स्थान कथन, १११ प्रयाग माहात्म्य श्रवणका फल, ११२वासुदेव कर्त्तृक प्रयागकी प्रशंसा, ११३ द्वीपादि वर्णन, ११४ भारत निरुक्ति संस्थान निर्देश, ११५ पुरूरवाके पूर्वजन्म विवरणमें तपोवन गमन कथन, ११६ ऐरावती तीर्थ वर्णन, ११७ हिमालय वर्णन, ११८ आश्रम वर्णन ११९ आयतन वर्णन, अत्रि प्रतिष्ठित वासुदेवमूर्त्ति कथन, १२० पुरुरवाकी तपश्चर्य्या कथन, १२१ जम्बूद्वीप वर्णन, १२२ शाकद्वीपादि वर्णन, १२३ षष्ठ सप्तम द्वीप वर्णन, १२४—१२५ खगोल कथनमें सूर्य्य और चन्द्र मण्डल विस्तारादि कथन, १२६ सूर्य्यकी गतिकथन, १२७ बुध भौमादिका रथ विवरण और ध्रुव प्रशंसा, १२८ सूर्य्य मण्डल ग्रह स्थान और सन्निवेशादि कथन, १२९ त्रिपुरका उपाख्यान और त्रिपुरकी उत्पत्ति, १३० त्रिपुर दुर्ग प्राकारादि कथन, १३१ त्रिपुर प्राबल्य मयदुस्स्वप्न विवरण, १३२ देवगणकृत शिवका स्तव, १३३ अद्भुत रथ निर्माण, १३४ नारदका त्रिपुरमें गमन, १३५ देवासुरयुद्ध, १३६ प्रमथगणकर्तृक त्रिपुरवासी दानव गणका मर्दन, १३७ त्रिपुराक्रम, १३८ तारकाक्ष वध, १३९ दानव मय संवाद, रात्रि समागम, १४० त्रिपुर दाह, १४१ ऐल सोम समागम, श्राद्ध भोजी पितरोंका कीर्त्तन, १४२ मन्वन्तरानुकल्प, १४३ यज्ञप्रवर्त्तन, ऋषियोंके संवादमें वसुदेवका पक्षपात, उसके प्रति ऋषियोंका अभिशाप, १४४ द्वापर कलियुग कीर्त्तन, १४५ युगभेदसे आयुरादि कथन, धर्म्मकीर्त्तन, १४६ संक्षेपसे तारक वध कथन, १४७ तारककी उत्पत्ति, १४८ तारकवरलाभ, १४९ देवदानव समरोद्योग, १५० महासंग्राममें कालनेमिकी पराजय, १५१ग्रसन दैत्य वध, १५२ मथनादि संग्राम, १५३ तारक जय लाभ, १५४देवगणकी मंत्रणा पार्वतीकी तपस्या, मदन भस्म, शिवका विवाह, १५५ गौरीत्वलाभके निमित्त कालिका पार्वतीका तपस्यामें गमन, १५६ आडिवध, १५७ वीरक शाप, १५८ कार्त्तिकेयकी उत्पत्ति, १५९ देवगणका रणोद्योग, १६० तारकवध, १६१ हिरण्य-

कशिपु वधप्रसङ्गमें नरसिंह प्रादुर्भाव; १६२ नरसिंहके प्रति दैत्योंका विक्रम प्रकाश; १६३ हिरण्यकशिपु वध, १६४ पाद्मकल्प कथन प्रसङ्ग, १६५ युगपरिमाणादिकीर्त्तन, १६६ संहार कर्म्म; १६७ मार्कण्डेय और विष्णु संवाद, १६८ नाभिपद्म उत्पादन, १६९ ब्रह्मसृष्टि, १७० मधुकैटभ वध, १७१ ब्राह्मणोंकी सृष्टि, १७२ विविधात्मकत्व कथन, १७३ दानवोंके युद्धका उद्योग, १७४ देवगणका समरयोजन, १७५ पर्व विवरण, १७६ देवदानव युद्ध, १७७ कालनेमिका पराक्रम, १७८ कालनेमि वध १७९ अन्धक वध, १८० काशीमाहात्म्यमें दण्डपाणि वरप्रदान, १८१ हरपार्वतीके संवादमें अविमुक्तमाहात्म्य कथन, १८२ कार्तिकेयद्वारा अविमुक्त माहात्म्य कथन, १८३ अविमुक्तक्षेत्र विषयमें पार्वतीके प्रश्नानुसार महादेवका उत्तरदान, १८४ अविमुक्तक्षेत्रमें मरणका फल कथन, १८५ वाराणसीके प्रति वेदव्यासका शाप देनेमें उद्योग, १८६ नर्मदाका माहात्म्य और उस स्थानमें स्नानका फलकथन, १८७ बाण त्रिपुर दर्शनका उद्योग, १८८ त्रिपुर मर्द्दन, १८९ कावेरी संगम माहात्म्य कथन, १९० मंत्रेश्वरादि तीर्थ फल कथन, १९१ शूलभेद तीर्थादि कथन, १९२ भार्गवेशादि कथा, १९३ अनर्कादि तीर्थप्रस्ताव, १९४ अंकुरोश्वर दर्शन फलादिकथा, १९५ भृगुवंश प्रवर कीर्त्तन, १९६ अङ्गिरावंश कीत्तन, १९७ अत्रिवंश विवरण, १९८ विश्वामित्र-वंश विवरण, १९९ कश्यपवंश वर्णन, २०० वसिष्ठ वंशानुकीर्त्तन, २०१ पराशर वंशानुकीर्त्तन, २०२ अगस्त्यवंश कीर्त्तन, २०३ धर्म्मवंशानुकीर्त्तन, २०४ पितृगाथा कीर्त्तन, २०५ धेनुदान, २०६ कृष्णाजिन प्रदान, २०७ वृषलक्षण कीर्त्तन, २०८ सावित्री उपाख्यानमें सावित्रीका वन-प्रवेश, २०९ वनदर्शन, २१० यम और सावित्री संवाद, २११ यम-समीपमें सावित्रीको दूसरा वरलाभ, २१२ सावित्रीको तृतीयवर लाभ; २१३ सत्यवान्‌को जीवन लाभ, २१४ सावित्रीके उपाख्यानकी समाप्ति, २१५ राजनीति प्रमाण, सहाय सम्पत्ति कथन, २१६ अनु-

जीविवर्त्तन, २१७ सञ्चयप्रकरण, २१८ अगदाध्याय, २१९ राजरक्षा, २२० राजालोगोंकी विविध हिताहित कथा, २२१ देव पुरुषकार वर्णन, २२२ सामनिर्देश, २२३ भेदकथन, २२४ दानप्रशंसा, २२५ दण्ड-प्रशंसा, २२६ राजाको लोकपाल साम्यका कारण निर्देश, २२७ दण्डप्रणयन, २२८ अद्भुत शान्ति, २२९ उपसर्ग प्रकारादि कथन, २३० अद्भुत शान्ति विषयमें देवप्रतिमा वैलक्षण्य कीर्त्तन, २३१ अग्निवैकृत्य, २३२ वृक्षोत्पात कथन, २३३ वृष्टि वैकृत्य, २३४ जलाशयवैकृति, २३५ स्त्रीप्रसव वैकृत्य, २३६ उपस्कर वैकृत्य, २३७ मृगपक्षि वैकृत्य, २३८ उत्पात प्रशमन, २३९ ग्रहयज्ञ विधान, २४० यात्राकाल विधान, २४१ शुभाशुभ सूचकभूताङ्गस्पन्दन कथन, २४२ स्वप्नाध्याय, २४३ मङ्गलाध्याय, २४४ वामनप्रादुर्भाव, २४५ वामनोत्पत्ति, २४६ बलिच्छलना, २४७ वराहावतार कथारम्भ, २४८ पृथिवीकृत विष्णुका स्तव, २४९ देवगणके अमरत्व कथन प्रस्तावमें अमृतमन्थन-कथारम्भ, २५० काल-कूटकी उत्पत्ति, २५१ अमृत मन्थन, २५२ वास्तुभूतोद्भव, २५३ इक्यासी पद वास्तु निर्णय, २५४ गृह मान निर्णय, २५५ वेधपारि-वर्ज्जन, २५६ शल्यादि कथन, और दिग् निर्णय, २५७ दार्वाहरण कथा, वास्तु विद्याकथन समाप्ति, २५८ देवार्चनानुकीर्त्तनमें प्रमाण कथन, २५९ प्रतिमा लक्षण, २६० अर्द्धनारीश्वरादि प्रतिमा स्वरूप-कथन, २६१ प्रभाकरादि प्रतिमा कथन, २६२ पीठिका कथन, २६३ लिंगलक्षण कथन, २६४ कुण्डादि प्रमाण कथन, २६५ अधिवासन विधि, २६६ प्रतिष्ठा प्रयोग, २६७ देवतास्नानविधि, २६८ वास्तु-दोषोपशमन, २६९ प्रासाद निर्देश, २७० मण्डपलक्षणादि कथन, २७१ मगधमें इक्ष्वाकुवंशीय भविष्य राजगणका कीर्त्तन, २७२ पुलकादि वंशीयको राजत्व कथन, २७३ अन्ध्र यवन और म्लेच्छगणको राजत्व कीर्त्तन, युगक्षय कथन, २७४ तुलापुरुष दान, २७५ हिरण्यगर्भप्रदान विधि, ब्रह्माण्ड दानविधि, २७६ कल्पवृक्ष प्रदानविधि,

२७७ गोसहस्रदानविधि, २७८ सुवर्ण कामधेनु विधि, २७९ सुवर्णाश्वदान विधि, २८० हिरण्यकामधेनु विधि, २८१ हिरण्याश्वकी प्रदानविधि, २८२ सुवर्ण हस्ति रथप्रदान विधि, २८३ पञ्चलांगलक प्रदान विधि, २८४–२८६ हेमपृथ्वी दान विधि, २८७सप्त सागर प्रदान विधि, २८८ रत्न धेनु प्रदान विधि, २८९ महाभूत घटदान विधि, २९० कल्पकीर्त्तन २९१ मत्स्यपुराणोक्त तीर्थ और फलश्रुति.

नारदपुराणमें मात्स्यकी इसप्रकार अनुक्रमणिका देखी जाती है—

"अथ मात्स्यं पुराणं ते प्रवक्ष्ये द्विजसत्तम ।
यत्रोक्तं सत्यकल्पानां वृत्तं संक्षिप्य भूतले ॥
व्यासेन वेदविदुषा नरसिंहोपवर्णनम् ।
उपक्रम्य तदुद्दिष्टं चतुर्दशसहस्रकम् ॥
मनुमत्स्यसुसंवादो ब्रह्माण्डवर्णनं ततः ।
ब्रह्मदेवासुरोत्पत्तिर्मारुतोत्पत्तिरेव च ॥
मदनद्वादशी तद्वत् लोकपालाभिपूजनम् ।
मन्वन्तरसमुद्देशो वैन्यराज्याभिवर्णनम् ॥
सूर्य्यवैवस्वतोत्पत्तिर्बुधसंगमनं तथा ।
पितृवंशानुकथनं श्राद्धकालस्तथैव च ॥
पितृतीर्थप्रचारश्च सोमोत्पत्तिस्तथैव च ।
कीर्त्तनं सोमवंशस्य ययातिचरितं तथा ॥
कार्तवीर्य्यस्य चरितं सृष्टं वंशानुकीर्तनम् ।
भृगुशापस्तथा विष्णोर्दशधा जन्म च क्षितौ ॥
कीर्तनं पुरुवंशस्य वंशो हौताशनः परः ।
क्रियायोगस्ततः पश्चात् पुराणं परिकीर्तितम् ॥
व्रतं नक्षत्रपुरुषं मार्तण्डशयनं तथा ।
कृष्णाष्टमीव्रतं तद्वद्रोहिणीचन्द्रसंज्ञितम् ॥

तडागविधिमाहात्म्यं पादपोत्सर्ग एव च ।
सौभाग्यशयनं तद्वदगस्त्यव्रतमेव च ॥
तथानन्ततृतीयाया रसकल्याणिनीव्रतम् ।
तथैवानन्दकार्य्याश्च व्रतं सारस्वतं पुनः ॥
उपरागाभिषेकश्च सप्तमीशयनं तथा ।
भीमाख्या द्वादशी तद्वदनंगशयनं तथा ॥
अशून्यशयनं तद्वत् तथैवांगारकव्रतम् ।
सप्तमीसप्तकं तद्वद्विशोकद्वादशीव्रतम् ॥
मेरुप्रदानं दशधा ग्रहशान्तिस्तथैव च ।
ग्रहस्वरूपकथनं तथा शिवचतुर्दशी ॥
तथा सर्वफलत्यागः सूर्य्यवारव्रतं तथा ।
संक्रान्तिस्वपनं तद्वद्विभूतिद्वादशीव्रतम् ॥
षष्टिव्रतानां माहात्म्यं तथा स्नानविधिक्रमः ।
प्रयागस्य तु माहात्म्यं द्वीपलोकानुवर्णनम् ॥
तथान्तरिक्षचारश्च ध्रुवमाहात्म्यमेव च ।
भवनानि सुरेन्द्राणां त्रिपुरोद्योतनं तथा ॥
पितृप्रवरमाहात्म्यं मन्वन्तरविनिर्णयः ।
चतुर्युगस्य सम्भूतिर्युगधर्मनिरूपणम् ॥
वज्रांगस्य तु सम्भूतिस्तारकोत्पत्तिरेव च ।
तारकासुरमाहात्म्यं ब्रह्मदेवाऽनुकीर्त्तनम् ॥
पार्वतीसम्भवस्तद्वत् तथा शिवतपोवनम् ।
अनंगदेहदाहश्च रतिशोकस्तथैव च ॥
गौरीतपोवनं तद्वत् शिवेनाथ प्रसादनम् ।
पार्वतीऋषिसंवादस्तथैवोद्वाहमंगलम् ॥
कुमारसम्भवस्तद्वत्कुमारविजयस्तथा ।
तारकस्य वधो घोरो नरसिंहोपवर्णनम् ॥

पद्मोद्भवविसर्गस्तु तथैवान्धकघातनम् ।
वाराणस्यास्तु माहात्म्यं नर्मदायास्तथैव च ॥
प्रवरानुक्रमस्तद्वत् पितृगाथानुकीर्त्तनम् ।
तथोभयमुखीदानं दानं कृष्णाजिनस्य च ॥
ततः सावित्र्युपाख्यानं राजधर्म्मस्तथैव च ।
विविधोत्पातकथनं ग्रहशान्तिस्तथैव च ॥
यात्रानिमित्तकथनं स्वप्नमंगलकीर्त्तनम् ।
वामनस्य तु माहात्म्यं वाराहस्य ततः परम् ॥
समुद्रमथनं तद्वत् कालकूटाभिशातनम् ।
देवासुरविमर्दश्च वास्तुविद्यास्तथैव च ॥
प्रतिमालक्षणं तद्वद्देवतास्थापनं तथा ।
प्रासादलक्षणं तद्वन्मण्डपानां च लक्षणम् ॥
भविष्यराज्ञामुद्देशो महादानानुकीर्त्तनम् ।
कल्पानुकीर्त्तनं तद्वत पुराणेऽस्मिन् प्रकीर्त्तितम् ॥ "

हे द्विजसत्तम ! अनन्तर मैं तुम्हारे निकट मत्स्यपुराणका कीर्त्तन करता हूं । इस पुराणमें वेदवित् व्यासमुनिने नरसिंहवर्णनोपक्रममें चौदह सहस्र श्लोकद्वारा संक्षेपसे सत्यकल्पका सम्पूर्ण वृत्तान्त कीर्त्तन किया है । इसके प्रथममें मनु और मत्स्यका संवाद, पश्चात् ब्रह्माण्ड वर्णन, ब्रह्मा और देवासुरकी उत्पत्ति, मारुतकी उत्पत्ति; मदनद्वादशी, लोकपालपूजा, मन्वन्तरनिर्द्देश, वैन्यराज्यवर्णन, सूर्य्यवैवस्वतोत्पत्ति, बुधसंगम, पितृवंशानुकथन, श्राद्धकाल, पितृतीर्थ प्रचार, सोमोद्भव, सोमवंशकीर्त्तन, ययातिचरित और वंशानुकीर्त्तन; भृगुशाप, विष्णुके दशावतार, पुरुवंशकीर्त्तन; हुताशनवंश, क्रियायोग, पुराणकीर्त्तन, नक्षत्र; पुरुषव्रत, मार्त्तण्डशयन, कृष्णाष्टमीव्रत, रोहिणीचन्द्रव्रत, तडागविधिमाहात्म्य, पादपोत्सर्ग, सौभाग्यशयन; अगस्त्यव्रत, अनन्ततृतीयाव्रत, रसकल्याणीव्रत, आनन्दकारीव्रत, सारस्वतव्रत, उपरागाभिषेक, सप्तमीशयन, भीमाद्वादशी-

व्रत, अनंगशयनव्रत, अशून्यशयनव्रत, अंगारकव्रत, सप्तमी सप्तकव्रत, विशोकद्वादशीव्रत, मेरुप्रदान, ग्रहशांति ग्रहस्वरूपकथन, शिवचतुर्दशी, सूर्य्यवारव्रत, संक्रांति स्नान, विभूतिद्वादशीव्रत, षष्ठीव्रतमाहात्म्य, स्नान, विधिक्रम, प्रयागमाहात्म्य, द्वीपलोकानुवर्णन, अन्तरिक्ष, ध्रुवमाहात्म्य, सुरेंद्रगणका भवन, त्रिपुरप्रभाव, पितृप्रवरमाहात्म्य, मन्वन्तर निर्णय, चतुर्वर्गकी उत्पत्ति, तारकोत्पत्ति, तारकासुरमाहात्म्य, ब्रह्मदेवानुकीर्त्तन, पार्वतीसम्भव, शिवतपोवन, अनंगदाहन, पार्वती और ऋषिसंवाद, विवाह मंगल, कुमारोत्पत्ति, कुमारविजय, तारकवध, नरसिंहवर्णन, पद्मोद्भव विसर्ग, अन्धकवध, वाराणसी माहात्म्य, नर्म्मदामाहात्म्य, प्रवरानुक्रम, पितृकथानुकीर्त्तन, उभयमुखीदान, कृष्णाजिनदान, सावित्र्युपाख्यान, राजधर्म्म, विविध उत्पातकथन, ग्रहशांति, यात्रानिमित्तकथन, स्वप्नमंगलकीर्त्तन, वामन और वाराह माहात्म्य, समुद्रमन्थन, कालकूटाभिशातन, देवासुर संघर्षण, वास्तुविद्या, प्रतिमालक्षण, देवतास्थापन, प्रासादलक्षण, मण्डपलक्षण, भविष्यराजगणका कथन, महादानकीर्त्तन, और कल्पकीर्त्तन, इस पुराणमें यह सम्पूर्ण विषय कीर्तित हुए हैं ।

मत्स्यपुराणमें भी लिखा है—

" श्रुतीनां यत्र कल्पादौ प्रवृत्त्यर्थं जनार्दनः ।
मत्स्यरूपेण मनवे नरसिंहस्य वर्णनम् ॥
अधिकृत्याब्रवीत् सप्तकल्पवृत्तं मुनीश्वराः ।
तन्मात्स्यमिति जानीध्वं सहस्राणि चतुर्दश ॥ ५३ । ५०

जिस पुराणमें कल्पकी आदिमें जनार्द्दनने मत्स्यरूपसे श्रुत्यर्थ और नरसिंहवर्णन प्रसंगमें सातकल्पका विषय वर्णन किया है, वही चौदह सहस्र श्लोकयुक्त मत्स्यपुराण है.

नारद और मात्स्यमें जो लक्षण निर्दिष्ट हुआ है, प्रचलित मत्स्यपुराणमें उसका कुछ अभाव नहीं है तथापि प्रचलित मत्स्यकी श्लोक-

संख्या १४--१५ सहस्रमात्र है, किन्तु देवीभागवतके मतसे आदि मत्स्यके १९००० श्लोक हैं। ऐसे स्थलमें आदिमत्स्यके अनेक विषयही रह गये हैं ऐसा ज्ञात होता है इसमें फेरफार न्यून है । स्मार्तरघुनन्दनके वृषोत्सर्गतत्त्वमें "स्वल्पमत्स्यपुराण"से श्लोक उद्धृत हुए हैं.

गरुडपुराण १७.

पूर्वखण्डमें--१ सूतनैमिषीय संवादमें सूतकी गरुडपुराण कथन प्रतिज्ञा, २ गरुडपुराणोत्पत्ति कथा, ३ गरुडपुराण वर्णनके निमित्त सूतकर्तृक शौनकको अवधान सम्पादन, ४ रुद्र और विष्णुसम्वादमें सृष्टिकथन, ५ प्रजापतिसर्ग, ६ दक्षकी प्रचेतास्वरूपउत्पत्ति, काश्यपकृत सृष्टि, ७ सूर्यादिकी पूजाकथन, ८ विष्णुपूजा कथन, ९ दीक्षाविधि, १० लक्ष्मीपूजा, ११ नवव्यूहार्चना, १२ पूजाक्रमकथन, १३ विष्णुपञ्जर कथन, १४ संक्षेपसे योगउपदेश, १५ विष्णुके सहस्रनामकथन, १६ विष्णुध्यान और सूर्यकी पूजाकथन, १७ प्रकारान्तरसे सूर्यकी पूजा, १८ मृत्युञ्जयकी पूजा, १९ गारुडविद्या, २० शिवका कथित सर्पमंत्र, २१ पञ्चवक्त्रपूजा, २२ शिवपूजाकथन, २३ प्रकारान्तरसे शिवपूजा कथन, २४ गणपत्यादिकी पूजा, २५ पादुकापूजन, २६ करन्यासादि कथन, २७ विषहरण, २८ गोपालपूजाकथन, २९ श्रीधरादिपूजाका मंत्रकथन, ३० सविस्तार श्रीधरपूजाकथन, ३१ प्रकारान्तरसे विष्णुपूजाकथन, ३२ पञ्चतत्त्वार्चन, ३३ सुदर्शन पूजादि, ३४ हयग्रीवपूजा, ३५ हयग्रीव पूजाविधि, ३६ गायत्री न्यासादि कथन, ३७ गायत्रीमाहात्म्य, ३८ दुर्गादिपूजनविधि, ३९ प्रकारान्तरसे सूर्यपूजा कथन, ४० महेश्वरपूजा, ४१ नानाविद्याकथन, ४२ शिवपवित्रारोहण, ४३ विष्णुपवित्रारोहण, ४४ मूर्त्यमूर्तिध्यान, ४५ शालग्रामलक्षणकथन, ४६ वास्तुनिर्णय; ४७ प्रासाद लक्षण, ४८ देवप्रतिष्ठा कथन, ४९ योगधर्म्मादि कथन, ५० आह्निक निर्णय, ५१ दानधर्म्म कथन, ५२-५३ अष्टनिधि कथन, ५४ प्रियव्रत वंशवर्णनमें सप्तद्वीपादि कथन, ५५

संस्थान कथन, भारत वर्षविवरण, ५६ वृक्ष द्वीपके राजपुत्रोंके नाम-कीर्त्तन; ५७ सप्त पाताल नरककीर्त्तन, ५८ सूर्य्यादिप्रमाण और संस्थान कीर्त्तन, ५९ ज्योतिस्सार कीर्तनारम्भ, नक्षत्राधिपयोगिन्यादिकीर्तन, ६० दशादि विचार, ६१ चन्द्रसूर्य्यादि कथन, ६२ लग्नमानकथन, चरस्थिरादिभेदसे कार्य्यविशेषकी कर्त्तव्यता निर्णय, ६३ संक्षेपसे पुरुषके शुभाशुभसूचक लक्षणकथन, ६४ संक्षेपसे स्त्रियोंके शुभाशुभलक्षण कथन, ६५ सामुद्रिक लक्षण कीर्त्तन, ६६ शालग्रामशिला भेदकथन, तीर्थकथन, प्रभवादिसाठवर्ष कीर्त्तन, ६७ पवनविजयादि, ६८ रत्नपरीक्षामें रत्नोत्पत्ति कथन और रत्नपरीक्षा कथन, ६९ मुक्ताफलपरीक्षा, ७० पद्मरागपरीक्षा, ७१ मरकतपरीक्षा, ७२ इन्द्रनीलपरीक्षा, ७३ वैदूर्य्यपरीक्षा, ७४ पुष्पराग परीक्षा; ७५ कर्केतनपरीक्षा; ७६ भीष्मरत्नपरीक्षा, ७७ पुलकपरीक्षा, ७८रुधिराख्यरत्न परीक्षा, ७९ स्फटिक परीक्षा, ८० विद्रुमपरीक्षा; ८१ संक्षेपसे बहुतीर्थका माहात्म्य कथन; ८२ गयाका माहात्म्य और गयातीर्थकी उत्पत्ति कथा, ८३ गयाके स्थानभेद और कार्य्यभेदसे फलभेदकथन, ८४ फल्गुनदीमें स्नान और रुद्रपदमें पिण्डदानका फलकीर्त्तन और विशालराजाका इतिहास; ८५ प्रेतशिलादिमें पिण्ड-दानका फल, ८६ प्रेतशिलामें श्राद्धकर्त्ताको फलकथन, ८७ चतुर्द्दशमनु, मनुपुत्र, तदन्तरीय सप्तर्षि और देवगणका कथन, ८८ मार्कण्डेय क्रोष्टु-कि सम्वादमें रुच्युपाख्यान, ८९ रुचिकृत पितृस्तव, पितृगणके निक-टसे रुचिको वरप्राप्ति, ९०रुचिपरिणय और रौच्य मनुकी उत्पत्ति वर्णन, ९१ हरिध्यान, ९२ प्रकारान्तरसे हरिका ध्यानवर्णन, ९३ याज्ञवल्क्य कथित धर्म्मादिशादिकथन, ९४ उपनयनकीर्त्तन, ९५ गृहधर्म्मनिर्णय, ९६ संकीर्णजाति; पञ्चमहायज्ञ, सन्ध्या और उपासनादिका कीर्त्तन, गृहधर्म्म और वर्णधर्म्मादिका कथन, ९७ द्रव्यशुद्धिकथन, ९८ दानधर्म्म

९९ श्राद्धविधि, १०० विनायकशांति, १०१ ग्रहशांति १०२ वान-प्रस्थाश्रम विवरण, १०३ यतिधर्म्म, १०४ पापचिह्न कथन, १०५ प्रायश्चित्तविधि, १०६ अशौचादिनिर्णय, १०७ पाराशर धर्म्मशास्त्र, १०८ नीतिसार, १०९ नीतिसारमें धनरक्षणादिका उपदेश, ११० नीतिसारमें ध्रुवपरित्याग, निषेधादिका वर्णन, १११ नीतिसारमें राजलक्षण, ११२ नीतिसारमें भृत्यलक्षण निर्णय, ११३ नीतिसारमें गुणवन्नियोगादिका कीर्त्तन, ११४ नीतिसारमें मित्रा-मित्र विभाग, ११५ नीतिसारमें कुभार्य्यादि परित्यागका उपदेश, ११६ व्रतकथन आरंभ, ११७ अनंगत्रयोदशीव्रत, ११८ अखण्डद्वादशीव्रत, ११९ अगस्त्यार्घ्यव्रत, १२० रम्भातृतीयाव्रत, १२१ चातुर्मास्यव्रत, १२२ मासोपवासव्रत, १२३ भीष्मपञ्चकादिव्रतविधि, १२४ शिवरात्रि व्रत, १२५ एकादशीमाहात्म्य, १२६ विष्णुपूजन, १२७ भीमैकादशी कीर्त्तन, १२८ व्रतनियम, १२९ प्रतिपदादिव्रतकथन, १३० षष्ठी सप्तमीव्रतकथन, १३१ रोहिण्याष्टमीव्रतकथन, १३२ बुधअष्टमीव्रत, १३३ अशोक अष्टमीव्रत, १३४ महानवमीव्रत, १३५ महानवमीव्रत-प्रसंगमें कौशिक मंत्रकथन, १३६ वीर नवमीव्रत, १३७ दमननवमीव्रत, १३८ दिग दशमीव्रत, १३९ एकादशीव्रत, १४० वामनद्वादशीव्रत, १४१ मदनत्रयोदशीव्रत, १४२ सूर्य्यवंशकथन, १४३ श्रवणद्वादशीव्रत, १४४ चन्द्रवंशकथन प्रसंगमें पुरुवंशकीर्त्तन, १४५ जनमेजयवंश कथन, १४६ विष्णुकी अवतारकथा, पतिव्रताका माहात्म्य, १४७ रामायणकथन, १४८ हरिवंशकथन, १४९ भारतकथन, १५० आयुर्वेदकथनमें सर्वरोगनिदान, १५१ ज्वरनिदान, १५२ रक्तपित्तनिदान, १५३ कासनिदान, १५४ श्वास-निदान, १५५ हिक्कारोग निदान १५६ यक्ष्म निदान, १५७ अरोचकनिदान, १५८ हृद्रोगादिनिदान, १५९ मदात्ययादिनिदान, १६० अर्शोनिदान, १६१ अतिसारनिदान, १६२ मूत्राघातनिदान, १६३ प्रमेहनिदान, १६४

योग कथन, २३१ विष्णुभक्ति कथन, २३२ नारायण नमस्कार, २३३ नारायणाराधन, २३४ नारायणध्यान, २३५ विष्णुका माहात्म्य, २३६ नृसिंहस्तव, २३७ ज्ञानामृत कथन, २३८ मार्कण्डेय कथित नारायणका स्तव, २३९ ब्रह्मकथित विष्णुका स्तव, २४० ब्रह्मज्ञान कथन, २४१ आत्मज्ञान कथन, २४२ गीतासार, २४३ अष्टांगयोगका प्रयोजन कथन.

उत्तरखण्ड प्रेतकल्पमें—१ वैकुंठमें नारायणके प्रति गरुडके विधि प्रश्न, २ गरुडके प्रति भगवान्‌की और्ध्वदेहिक विधि कथन, ३ नरकका रूपवर्णन, ४ गर्भावस्थाकीर्त्तन, ५ दशदानादि कथन और पूर्ण नरदाह विधि, ६ अशौच लक्षण, काल निरूपण, ७ वृषोत्सर्ग कथन, ८ पञ्चप्रेतका उपाख्यान, ९ और्ध्वदेहिक कर्म्माधिकारी कीर्त्तन, १० बभ्रुवाहन और प्रेतसंवाद, ११ अनेक प्रकारसे श्राद्धकी तृप्ति जनक विधि, १२ मनुष्यजन्मलाभका कारणादि कथन, १३ मनुष्य तत्त्वकथा, १४ प्रेतत्व नाशक कर्म्म कथन, १५ आतुर और म्रियमाणका दानवर्णन, १६—१८यमनगरका मार्ग निर्णय, १९चित्रगुप्तपुरमें गमनकी कथा, २०प्रेत गणका वासस्थान निर्णय, २१ प्रेतलक्षण और प्रेतत्व मुक्तिका उपाय, २२ प्रकारान्तरसे पंचप्रेतका उपाख्यान, २३ प्रेतगणका रूपनिरूपण, २४ मनुष्योंकी आयु निर्णय, बालकका पिण्डदानादि कथन, २५ शैशवादि विभेद, आकौमारोंके विशेषकर्त्तव्य उपदेश, २६ सपिण्डीकरण विधि, २७ बभ्रुवाहन और प्रेतसम्वाद, २८ विशेषज्ञानके निमित्त नारायणके प्रति गरुडका प्रश्न, २९ और्ध्वदेहिक कृत्यकथन आरम्भ, ३० दानविधि, ३१ दानमाहात्म्य, ३२ जीवकी उत्पत्ति कथा, ३३ यमलोकके विस्तारादिका कथन, ३४ युगभेदसे धर्म्म कार्य्य व्यवस्था, दाहक-गणको सगोत्रके कर्त्तव्यमें उपदेश; अशौचादिनिरूपण, ३५ सपिण्डीकर-णकी विशेषविधि और अविधि कथन, ३६ अनाहारमें मरणका फलकथन, ३७ उदकुम्भदानादि कथन, ३८ अपमृत गणकी गति और उनके उद्धार-

का उपाय, ३९ कार्त्तिक्यादिमें वृषोत्सर्ग विधान, ४० पूर्वकृतकर्म्मका कर्तृअनुबन्धित्व कथन, विशेपदान प्रकार कथन, ४१ जलाग्नि बन्धन भ्रष्टादिका प्रायश्चित्त कथन, ४२ आत्मघाति गणका श्राद्धनिषेध कथन, ४३ वार्षिक श्राद्ध कथन,४४ पापभेदसे चिह्नभेद जन्मभेद आदि कथन, ४५ मृतके निमित्त अनुताप, उसकी मुक्तिका उपाय और गरुडपुराणके पाठका फल कथन.

अब देखना चाहिये कि उक्त गरुडपुराणको हम आदि गरुड कहकर ग्रहण कर सकते हैं या नहीं.

मत्स्य पुराणके मतसे—

"यदा च गारुडे कल्पे विश्वाण्डाद् गरुडोद्भवम् ।
अधिकृत्याऽब्रवीद्विष्णुर्गारुडं तदिहोच्यते ॥
तदष्टादशकं चैव सहस्राणीह पठ्यते"। ५३। ५६।

विष्णुने गारुड कल्पमें गरुडके उद्भवप्रसंगमें विश्वाण्डसे आरम्भ करके जो पुराण वर्णन किया है,उसका नाम गारुड है । इसके १८०००श्लोक हैं।

नारद पुराणके मतसे—

"मरीचे शृणु वक्ष्यद्य पुराणं गारुडं शुभम् ।
गरुडायाब्रवीत् पृष्टो भगवान् गरुडासनः ॥
एकोनविंशसाहस्रं तार्क्ष्यकल्पकथाचितम् ।
पुराणोपक्रमो यत्र सर्गसंक्षेपतस्ततः ॥
सूर्य्यादिपूजनविधिर्दीक्षाविधिरतः परम् ।
श्वादिपूजा ततः पश्चान्नवव्यूहार्चनं द्विज ॥
पूजाविधानं च ततो वैष्णवं पञ्जरं तथा ।
योगाध्यायस्ततो विष्णोर्नामसाहस्रकीर्तनम् ॥
ध्यानं विष्णोस्ततः सूर्य्यपूजामृत्युञ्जयार्चनम् ।
मालामंत्राः शिवार्चाथ गणपूजा ततः परम् ।

गोपालपूजा त्रैलोक्यमोहनं श्रीधरार्चनम् ॥
विष्णवर्चा पञ्चतत्त्वार्चा चक्रार्चा देवपूजनम् ।
न्यासादिसन्ध्योपास्तिश्च दुर्गार्चाथ सुरार्चनम् ॥
पूजा माहेश्वरी चातः पवित्रारोहणार्चनम् ।
मूर्तिध्यानं वास्तुमानं प्रासादानाञ्च लक्षणम् ॥
प्रतिष्ठा सर्वदेवानां पृथक् पूजाविधानतः ।
योगोऽष्टाङ्गो दानधर्म्मः प्रायश्चित्तं निधिक्रिया ॥
द्वीपेशनरकाख्यानं सूर्य्यव्यूहश्च ज्योतिषम् ।
सामुद्रिकं स्वरज्ञानं नवरत्नपरीक्षणम् ॥
माहात्म्यमथ तीर्थानां गयामाहात्म्यमुत्तमम् ।
ततो मन्वन्तराख्यानं पृथक् पृथक् विभागशः ॥
पित्राख्यानं वर्णधर्म्मा द्रव्यशुद्धिसमर्पणम् ॥
श्राद्धं विनायकस्याञ्चा ग्रहयज्ञस्तथाश्रमाः ।
मननाख्या प्रेताशौचं नीतिसारो व्रतोक्तयः ॥
सूर्य्यवंशः सोमवंशोऽवतारकथनं हरेः ।
रामायणं हरिवंशो भारताख्यानकं ततः ॥
आयुर्वेदे निदानं प्राक् चिकित्सा द्रव्यजा गुणाः ।
रोगघ्न कवचं विष्णोर्गारुडं त्रैपुरो मनुः ॥
प्रश्नचूडामणिश्चान्ते हयायुर्वेदकीर्त्तनम् ।
औषधीनामकथनं ततो व्याकरणोहनम् ॥
छन्दःशास्त्रं सदाचारस्ततः स्नानविधिः स्मृतः ।
तर्पणं वैश्वदेवञ्च संध्या पार्वणकर्म्म च ॥
नित्यश्राद्धं सपिण्डाख्यं धर्म्मसारोऽघनिष्कृतिः ।
प्रतिसंक्रम उक्तोऽस्माद् युगधर्म्माः कृतेः फलम् ॥
योगशास्त्रं विष्णुभक्तिर्नमस्कृतिफलं हरेः ।
माहात्म्यं वैष्णवञ्चाथ नारसिंहस्तवोत्तमम् ॥

ज्ञानामृतं गुह्याष्टकं स्तोत्रं विष्ण्वर्चनाह्वयम्।
वेदान्तसांख्यसिद्धान्तं ब्रह्मज्ञानं तथात्मकम्॥
गीतासारफलोत्कीर्त्तिः पूर्वखण्डोऽयमीरितः॥
अथास्यवोत्तरे खण्डे प्रेतकल्पः पुरोदितः॥
यत्र तार्क्ष्येण संपृष्टो भगवानाह वाडवः।
धर्म्मप्रकटनं पूर्वयोनीनां गतिकारणम्॥
दानाधिकं फलञ्चापि प्रोक्तमन्त्रौर्द्ध्वदेहिकम्।
यमलोकस्य मार्गस्य वर्णनञ्च ततः परम्॥
षोडशश्राद्धफलकं वृत्ताणाञ्चात्र वर्णितम्।
निष्कृतिर्यममार्गस्य धर्म्मराजस्य वैभवम्॥
प्रेतपीडाविनिर्देशः प्रेतचिह्ननिरूपणम्।
प्रेतानां चरिताख्यानं कारणं प्रेततां प्रति॥
प्रेतकृत्यविचारश्च सपिण्डकरणोक्तयः।
प्रेतत्वमोक्षणाख्यानं दानानि च विमुक्तये॥
आवश्यकोत्तमं दानं प्रेतसौख्यकरं हितम्।
शारीरकविनिर्देशो यमलोकस्य वर्णनम्॥
प्रेतत्वोद्धारकथनं कर्म्मकर्तृविनिर्णयः।
मृत्योः पूर्वक्रियाख्यानं पश्चात् कर्म्मनिरूपणम्॥
मध्यं षोडशकं श्राद्धं स्वर्गप्राप्तिक्रियोहनम्।
सूतकस्याथ संख्यानं नारायणबलिक्रिया॥
वृषोत्सर्गस्य माहात्म्यं निषिद्धपरिवर्जनम्।
अपमृत्युक्रियोक्तिश्च विपाकः कर्मणां नृणाम्॥
कृत्याकृत्यविचारश्च विष्णुध्यानं विमुक्तये।
स्वर्गतो विहिताख्यानं स्वर्गसौख्यनिरूपणम्॥
भूर्लोकवर्णनं चव सप्तधा लोकवर्णनम्।
पञ्चोर्ध्वलोककथनं ब्रह्माण्डस्थितिकीर्त्तनम्॥

ब्रह्माण्डानेकचरितं ब्रह्मजीवनिरूपणम्।
आत्यन्तिकलयाख्यानं फलस्तुतिनिरूपणम्।
इत्येतद्गारुडं नाम पुराणं भुक्तिमुक्तिदम् ॥"

हे मरीचे! सुनो, मैं तुम्हारे निकट शुभ गरुडपुराणका कीर्त्तन करता हूं। यह पुराण भगवान् श्रीकृष्णने गरुडके निकट कहा है, यह उन्नीस सहस्र श्लोकमें पूर्ण और तार्क्ष्यकल्पीय कथायुक्त है.

(पूर्वखण्ड) इसके प्रथममें सर्गसंक्षेपसे पुराणोपक्रम और पश्चात् सूर्य्यादि पूजाविधि, दीक्षाविधि, श्रीआदि पूजा, नवव्यूहादि अर्चना, पुजा-विधान, वैष्णवपञ्जर, योगाध्याय, विष्णुके सहस्र नाम कीर्त्तन, विष्णुध्यान, सूर्य्यपूजा, मृत्युञ्जय पूजा, मालामन्त्र, शिवार्चन, गणपूजा, गोपालपूजा, श्रीधरार्चन, विष्णुपूजा, पञ्चतत्त्वार्चन, चक्रार्चन, देवपूजा न्यासादि, सन्ध्यो-पासन, दुर्गार्चन, सुरार्चन, माहेश्वरी पूजा, पवित्रारोहणार्चन, मूर्तिध्यान, वास्तुमान, प्रासाद लक्षण, सर्वदेव प्रतिष्ठा, अष्टांग योग, प्रायश्चित्त विधि, द्वीपेश नरकाख्यान, सूर्य्यव्यूह, ज्योतिष, सामुद्रिक, स्वरज्ञान, नवरत्न-परीक्षा, तीर्थ समुदायका माहात्म्य, उत्तम गयामाहात्म्य, पृथक् २ रूपसे मन्वन्तराख्यान, पित्राख्यान, वर्णधर्म्म, द्रव्यशुद्धि, श्राद्ध, विनायकार्चना, ग्रहयज्ञ, आश्रम, प्रेताशौच, नीतिसार, सूर्य्यवंश, सोमवंश, हरि अवतार कथा, रामायण, हरिवंश, भारताख्यान, आयुर्वेद निदान चिकित्सा, द्रव्यगुण, विष्णुकवच, गारुड और त्रैपुर मन्त्र, प्रश्नचूडामणि, हयायुर्वेदकीर्त्तन, औषधी नाम कीर्त्तन, व्याकरण और छन्दःशास्त्र, सदाचार, स्नानविधि, वैश्वदेव तर्पण, सन्ध्या पार्वणकर्म्म, नित्यश्राद्ध, सपिण्डाख्य श्राद्ध, धर्म्मसार, योग-शास्त्र, विष्णुभक्ति, हरिनमस्कार फल, वैष्णव माहात्म्य, नारसिंह स्तव, ज्ञानामृत, गुह्याष्टकस्तोत्र, विष्णुकी अर्चा, वेदान्त और सांख्य सिद्धान्त, ब्रह्मज्ञान और गीतासार फलकीर्त्तन, विष्णुकी अर्चा.

ब्रह्माण्डपुराण १८.

प्रक्रिया पादमें–१ अनुक्रमणिका, २ द्वादश वार्षिक यज्ञ निरूपण, ३ सृष्टि वर्णन, ४–५ प्रति सन्धि वर्णन, वर्त्तमान कल्प विवरण, ६ देवासुरोत्पत्ति कथन, ७ योगधर्म्म, ८ योगोपवर्ग, ९ योगैश्वर्य, १० पाशुपत योग, ११ शौचाचार लक्षण, १२ परमाश्रम प्राप्ति कथन, १३ यति प्रायश्चित्त, १४ अरिष्ट लक्षण, १५ ओंकार प्राप्ति लक्षण, १६ कल्प निरूपण, १७ कल्प संख्या, १८ युगभेदसे माहेश्वरावतार, १९ ब्रह्मोत्पत्ति, २० कुमारोत्पत्ति, २१ विष्णुकर्तृक शिवस्तव, २२ स्वरोत्पत्ति, २३ रुद्रोत्पत्ति, २४ लोकपाल वालखिल्य और सप्तर्षियोंकी उत्पत्ति, २५ अग्निवंश वर्णन, २६ दक्षकन्या और दक्ष शाप वर्णन, २७ दक्षकर्तृक शिवस्तव, २८ ज्वर कथन, २९ देववंश वर्णन, ३० प्रणव निर्णय, ३१ युग निर्णय, ३२ भरतवंश वर्णन, ३३ जम्बूद्वीप वर्णन, ३४ दिग् विभागस्थ सारशैलादि, ३५ जम्बूद्वीपके वर्ष कथन, ३६ वर्षपर्वत कथन, ३७ दक्षिणदिगस्थ द्रोणी कथन, ३८ पर्वतावास वर्णन, ३९ देवकूटादि पर्वत वर्णन, ४० कैलास वर्णन, ४१ निषध पर्वतादि कथन, ४२ सोम और नदी कथन, ४३ भद्राश्व वर्णन, ४४ केतु माल वर्णन, ४५ चन्द्रद्वीप वर्णन ४६ भारत वर्ष वर्णन, ४७ किंपुरुषादि वर्ष वर्णन, ४८ कैलासवर्णन, ४९ गंगावतरण, ५० वर्षपर्वतस्थ नदी वर्णन, ५१ भारत वर्षीय अन्तर्द्वीप कथन, ५२ लक्षद्वीप वर्णन, ५३ शाल्मल द्वीप वर्णन, ५४ कुशद्वीप वर्णन, ५५ क्रौञ्चद्वीप वर्णन, ५६ शाकद्वीप वर्णन, ५७ पुष्कर द्वीप वर्णन, ५८ वर्ष और द्वीपादि निर्णय, ५९ अधः और ऊर्द्धभाग निर्णय, ६० चन्द्र सूर्य्यादि ज्योति निर्णय, ६१ ज्योतिष्कविवरण, ६२ ग्रह नक्षत्र निर्णय, ६३ नीलकण्ठस्तव, ६४ लिंगोत्पत्ति कथन, ६५ पितृ वर्णन, ६६ पर्वनिर्णय, ६७ युग निरूपण, ६८ यज्ञ वर्णन, ६९ द्वापरयुग विधि, ७० कलियुग वर्णन, ७१ देवासुरादिका शरीर परिमाण, ७२ धर्म्माधर्म्म

कथन,७३ मन्त्रकृत ऋषिवंश,७४ वेदविभागादि, ७५ शाकल्य वृत्तान्त, ७६ संहिताकार ऋषिवंश वर्णन, ७७ मन्वन्तर कथन, ७८ पृथुवंशानुकीर्त्तन, ७९ स्वायम्भुवादि सर्ग कथन, ८० वैवस्वत सर्ग कथन.

मध्यभागके उपोद्घात पादमें—१ प्रजापति वंशानुकीर्त्तन, २—५ काश्यपीय प्रजासर्ग, ६ ऋषिवंशानुकीर्त्तन, ७ श्राद्ध प्रक्रिया आरंभ, ८—१३ श्राद्धकल्प, १४ श्राद्धकल्पमें ब्राह्मण परीक्षा, १५ श्राद्धकल्पमें दानफल, १६ तिथि विशेषमें श्राद्धफल,१७नक्षत्रविशेष, श्राद्धफल, १८ भिन्नकालिक तृप्तिसाधन,द्रव्यविशेषमें, गयाश्राद्धादिफल कीर्त्तन,१९वरुणवंश वर्णन, २० इक्ष्वाकु वंश कथन, २१ मिथिला वंश कथन, २२ राजयुद्ध, २३—३३ भार्गव चारित,३४कार्त्तवीर्य्य चारित, ३५ ज्यामघचारित, ३६ वृष्णिवंशानुकीर्त्तन, समर चरित, ३७ भार्गव कथा, ३८ देवासुर कथा, ३९ कृष्णाविर्भाव कथन, ४० इलास्तव, ४१ भविष्य कथा, ४२ वैवस्वत मनुवंश वर्णन, ४३ गन्धर्व मूर्च्छना लक्षण, ४४ गीतालंकार, ४५ वैवस्वत मनुवंश वर्णन,४६ सोम जन्म विवरण, ४७ चन्द्रवंश कीर्त्तन, (ययाति चरित) ४८ विष्णुवंश वर्णन, ४९—५० विष्णुमाहात्म्य कीर्त्तन, ५१ भविष्य राज वंश, उत्तरभागके उपसंहार पादमें, ५२ वैवस्वत मन्वन्तराख्यान, ५३ सप्तम मन्वादि चौदह मनुपर्य्यंत विवरण, ५४ भविष्य मनुओंका वर्णन, ५५ काल मान, ५६ चौदह लोकका वर्णन,५७ नरकवर्णन, ५८ मनोमय पुराख्यान, ५९ प्राकृतिक लयवर्णन, ६० शिवपुरादि वर्णन, ६१ गुणके अनुसार जन्तुओंकी गति, ६२ अन्वयव्यतिरेकानुसार प्रलयादि पुनः सृष्टि वर्णन.

अध्यापक विलसन, राजा राजेन्द्र लाल मित्र, भाण्डारकर आदि पण्डित लोग मूल ब्रह्माण्डपुराणके अस्तित्व सम्बन्धमें सन्देह करते हैं.

अब देखना चाहिये कि उद्धृत विषययुक्त पुराणको हमलोग ब्रह्माण्ड कह सक्ते हैं वा नहीं, इस सम्बन्धमें दूसरे पुराणोंमें

अनन्तर इसके उत्तरखण्डमें प्रेतकल्प वर्णित हुआ है। जिसमें गरुडके पूछनेपर भगवान् द्वारा धर्म्म प्रकटन, सर्वयोनि समुदायका गतिकारण, दानाधिकफल और और्द्धदेहिक क्रिया कही गई है, और यमलोक मार्गका वर्णन, पोडश श्राद्धका फल, यममार्ग निष्कृति, धर्म्मराजका वैभव, प्रेतपीडा निर्देश, प्रेतचिह्न निरूपण, प्रेतगणका चारिताख्यान, प्रेतत्वके प्रति कारण, प्रेतकत्व विचार, सपिण्डकरणोक्ति, प्रेतत्व मोक्ष कथन, मुक्तिके निमित्त दान, प्रेतसौख्यका आवश्यकीय दान, शारीरक निर्देश, यमलोक वर्णन, प्रेतत्व उद्धार, कर्म्मकर्तृक विनिर्णय, मृत्युकी पूर्वक्रिया कथन, कर्म्म निरूपण, पोडश श्राद्ध, सूतक संख्यान, नारायणबलि क्रिया, वृषोत्सर्ग माहात्म्य, निषिक परित्याग, अपमृत्यु क्रिया उक्ति, मनुष्य गणका कर्म्म विपाक, कृत्याकृत्य विचार, विष्णुध्यान, स्वर्गगति सम्बन्धमें विहिताख्यान, स्वर्गसुखनिरूपण, भूलोक वर्णन, सप्तलोक वर्णन, ऊर्ध्वलोक कथन, ब्रह्माण्डस्थिति कीर्तन, ब्रह्माण्डके बहु चारित, ब्रह्म जीव निरूपण, आत्यन्तिक लय कथन और फलस्तुति निरूपण; यह सम्पूर्ण कीर्त्तित हुआ यह गारुड नामक पुराण भुक्ति और मुक्ति देता है.

मात्स्य और नारदीय पुराणके लक्षणानुसार इस गरुडको हम सरलतासे ही मूल पुराण कहकर ग्रहण कर सकते हैं। प्रचलित गरुडपुराणके दूसरे अध्यायमें गरुडकी उत्पत्ति और गरुड पुराणकी नाम निरुक्ति और तीसरे अध्यायमें विष्णुकर्तृक रुद्रसमीपमें अण्डसे जगत् सृष्टि प्रसंगमें पुराणाख्यान पाठ करनेपर इस गरुडको आदि गरुडके लक्षण युक्त कहकर ग्रहण करनेमें कोई आपत्ति नहीं रहती, नारद पुराणमें जो अनुक्रमणिका दीगई है, उसके प्रायः सम्पूर्ण विषय ही प्रचलित गरुड पुराणमें पाये जाते हैं; केवल श्लोक लेकरही गडबड है; आदि गरुडकी श्लोक संख्या. १८००० है, किन्तु प्रचलित गरुड पुराणके संख्यास्थलमें प्रायः सात हजार श्लोक कम होते हैं, फिर भविष्य राजवंशाख्यानका पूर्वांश पाठ करनेपर ज्ञात होता है कि यह पुराण जन-

मेजयके समयमें प्रथम संकलित हुआ था, १४४–४२ पश्चात् भविष्य राजवर्णन स्थलमें राजा शूद्रक पर्य्यन्त नाम होनेसे (१४।८) एवं विष्णु मत्स्य आदि समान अन्ध्रगुप्त आदि राजगण उल्लेखन होनेसे, प्रचलित गरुड हमको प्रचलित विष्णुमत्स्य आदि पुराणकी अपेक्षा अधिक प्राचीन बोध होता है। शूद्रकके समयमें हिन्दू और बौद्ध लोग मिल गये थे, उनके समयके रचित मृच्छकटिक नाटकमें तत्कालीन बौद्ध और हिन्दू समाजकी अवस्था बहुत कुछ पाई जाती है, उस समय बौद्धोंका बहुत कुछ प्रभाव आर बुद्ध देवकी उपासना सर्वत्र प्रचलित थी, (१) इस गरुड पुराणमें भी इसी कारण बुद्धदेव २१ वें अवतार गिने गये हैं (२) और बुद्धके पिता और वंशधरका नाम देखा जाता है (३) गरुड पुराणम अनेक विषयका प्रसंग देखनेसे विलसन साहबने इसकी आधुनिक रचना समझी है किन्तु उसमें आधुनिकत्व प्रमाणित नहीं होता। जो जो विषय गरुड पुराणमें विवृत्त हुआ है, गरुडके अतिरिक्त अनेक प्राचीन ग्रन्थोंमें उनका परिचय पाया जाता है। जो कुछ भी हो, आदि गरुडका सम्पूर्ण अंश न होनेपर भी और वर्त्तमान रूप धारणकालमें स्थान विशेषमें प्रक्षिप्त अंश संयोजित होनेपर भी गया-माहात्म्य छोड यह प्रचलित गरुडपुराण यथायोग्य पाया जाता है.

त्रिवेणी स्तोत्र, पञ्च पर्व माहात्म्य, विष्णु धर्म्मोत्तर, वेंकटगिरि-माहात्म्य, श्रीरंग माहात्म्य, सुन्दरपुर माहात्म्य आदि कई पोथी गरुड-पुराणके अन्तगत कहकर प्रचलित हैं, पर मूलमें नहीं है.

---

(१) गरुड पुराण १। ३२।

(२) "शुद्धोदनो राहुलश्च सेनजित् शूद्रकस्तथा।" १४५।८ .

(३) गयामाहात्म्यका अंश इतना प्राचीन ज्ञात नहीं होता। यह अंश बौद्ध प्रभाव खर्व होनेपर सम्भवतः खृष्टीय ८ म शताब्दीमें रचित हुआ है।

ब्रह्माण्डपुराणके किस प्रकार लक्षणादि निर्दिष्ट हुए हैं ।

मत्स्यपुराणके मतसे—अ० ५३.

"ब्रह्मा ब्रह्माण्डमाहात्म्यमधिकृत्याब्रवीत् पुनः ।
तच्च द्वादशसाहस्रं ब्रह्माण्डं द्विशताधिकम् ॥ ५४ ॥
भविष्याणां च कल्पानां श्रूयते यत्र विस्तरः ।
तद्ब्रह्माण्डपुराणञ्च ब्रह्मणा समुदाहृतम् "॥ ५५ ॥

ब्रह्माण्डका माहात्म्य अवलम्बन करके जो पुराण कहा गया है, वही १२२०० श्लोकयुक्त ब्रह्माण्ड है । जिस पुराणमें ब्रह्माकर्तृक भविष्यकल्प वृत्तान्त विस्तृतरूपसे विवृत हुआ है वही ब्रह्माण्डपुराण है.

शिवपुराणके उत्तरखण्डमें—

"ब्रह्माण्डचरितोक्तत्वाद्ब्रह्माण्डं परिकीर्तितम् ।"

ब्रह्माण्डके चरित अर्थात् ब्रह्माण्डके भूगोल विवरणसे वर्णित होनेके कारण यह ब्रह्माण्डपुराण नामसे प्रसिद्ध है । शिवमहापुराणकी वायुसंहिताके ११ अध्यायमें—

ब्रह्माण्डं चातिपुण्योऽयं पुराणानामनुक्रमः ।

यह ब्रह्माण्ड पुराण अतिपुण्यदायक और समस्त पुराणकी अनुक्रमणिकास्वरूप है । नारद पुराणमें ब्रह्माण्डपुराणकी इस प्रकार अनुक्रमणिका दी गई है—

"शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि ब्रह्माण्डाख्यं पुरातनम् ।
यच्च द्वादशसाहस्रं भाविकल्पकथायुतम् ॥
प्रक्रियाख्योऽनुषङ्गाख्य उपोद्घातस्तृतीयकः ।
चतुर्थ उपसंहारः पादाश्चत्वार एव हि ॥
पूर्वपादद्वयं पूर्वो भागोऽत्र समुदाहृतः ।
तृतीयो मध्यमो भागश्चतुर्थस्तूत्तरो मतः ॥

(तत्र पूर्वभागे प्रक्रियापादे)

आदौ कृतसमुद्देशो नैमिषाख्यानकं ततः ।
हिरण्यगर्भोत्पत्तिश्च लोककल्पनमेव च ॥
एष वै प्रथमः पादो द्वितीयं शृणु मानद ॥

(पूर्वभागे अनुषंगपादे)

कल्पमन्वन्तराख्यानं लोकज्ञानं ततः परम् ।
मानसीसृष्टिकथनं रुद्रप्रसववर्णनम् ॥
महादेवविभूतिश्च ऋषिसर्गस्ततः परम् ।
अग्नीनां विषयश्चाथ कालसद्भाववर्णनम् ॥
प्रियव्रताचयोद्देशः पृथिव्यायामविस्तरः ॥
वर्णनं भारतस्यास्य ततोऽन्येषां निरूपणम् ।
जम्ब्वादिसप्तद्वीपाख्या ततोऽधोलोकवर्णनम् ॥
ऊर्ध्वलोकानुकथनं ग्रहचारस्ततः परम् ॥
आदित्यव्यूहकथनं देवग्रहानुकीर्त्तनम् ।
नीलकण्ठाह्वयाख्यानं महादेवस्य वैभवम् ॥
अमावस्यानुकथनं युगतत्त्वनिरूपणम् ।
यज्ञप्रवर्त्तनं चाथ युगयोरण्डयोः कृतिः ॥
युगप्रजालक्षणञ्च ऋषिप्रवरवर्णनम् ।
वेदानां व्यसनाख्यानं स्वायम्भुवनिरूपणम् ।
शेषमन्वन्तराख्यानं पृथिवीदोहनं ततः ॥
चाक्षुषेऽद्यतनेसर्गो द्वितीयोऽध्रिः पुरोदले ॥
अथोपोद्घातपादे तु सप्तर्षिपरिकीर्त्तनम् ।
प्राजापत्याचयस्तस्माद्देवादीनां समुद्भवम् ॥

ततो जयाभिव्याहारौ मरुदुत्पत्तिकीर्त्तनम् ।
काश्यपेयानुकथनमृषिवंशनिरूपणम् ॥
पितृकल्पानुकथनं श्राद्धकल्पस्ततः परम् ।
वैवस्वतसमुत्पत्तिः सृष्टिस्तस्य ततः परम् ॥
मनुपुत्राचयश्चातो गन्धर्वस्य निरूपणम् ।
इक्ष्वाकुवंशकथनं वंशोऽत्रेः सुमहात्मनः ॥
अमावसोराचयश्च राजेश्चरितमद्भुतम् ।
ययातिचरितश्चाथ यदुवंशनिरूपणम् ॥
कार्त्तवीर्य्यस्य चरितं जामदग्न्यं ततः परम् ।
वृष्णिवंशानुकथनं सगरस्याथ सम्भवः ॥
भार्गवस्याथ चरितं तथा कार्त्तवधाश्रयम् ।
सगरस्याथ चरितं भार्गवस्य कथा पुनः ॥
देवासुराहवकथा कृष्णाविर्भाववर्णने ।
इलस्य च स्तवः पुण्यः शुक्रेण परिकीर्त्तितः ॥
विष्णुमाहात्म्यकथनं बलिवंशनिरूपणम् ।
भविष्यराजचरितं संप्राप्तेऽथ कलौ युगे ॥
एवमुद्घातपादोऽयं तृतीयो मध्यमे दले ।
चतुर्थमुपसंहारं वक्ष्ये खण्डे तथोत्तरे ॥
वैवस्वतान्तराख्यानं विस्तरेण यथातथम् ।
पूर्वमेव समुद्दिष्टं संक्षेपादिह कथ्यते ॥
भविष्याणां मनूनाञ्च चरितं हि ततः परम् ।
कल्पप्रलयनिर्देशः कालमानं ततः परम् ॥
लोकाश्चतुर्दश ततः कथिता मानलक्षणैः ।
वर्णनं नरकानां च विकर्म्माचरणैस्ततः ॥

मनोमयपुराख्यानं लयः प्राकृतिकस्ततः ।
शैवस्याथ पुरस्यापि वर्णनञ्च ततः परम् ॥
त्रिविधाद्गुणसम्बन्धाज्जन्तूनां कीर्त्तिता गतिः ॥
अनिर्देश्याप्रतर्क्यस्य ब्रह्मणः परमात्मनः ॥
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां वर्णनं हि ततः परम् ।
इत्येष उपसंहारः पादो वृत्तः स चोत्तरः ॥
चतुष्पादं पुराणं ते ब्रह्माण्डं समुदाहृतम् ।
अष्टादशमनौपम्यं सारात् सारतरं द्विज ॥
ब्रह्माण्डं च चतुर्लक्षं पुराणत्वेन पठ्यते ।
तदेव चास्य गदितमत्राष्टादशधा पृथक् ॥
पाराशर्य्येण मुनिना सर्वेषामपि मानद ।
वस्तुदृष्टाय तेनैव मुनीनां भावितात्मनाम् ॥
मत्वा श्रुत्वा पुराणानि लोकेभ्यः प्रचकाशिरे ।
मुनयो धर्म्मशीलास्ते दीनानुग्रहकारिणः ॥
यथावेदं पुराणन्तु वसिष्ठाय पुरोदितम् ।
तेन शक्तिसुतायोक्तं जातूकर्ण्याय तेन च ॥
व्यासलब्धं ततश्चैतत् प्रभञ्जनमुखोद्गतम् ।
प्रमाणीकृतलोकेऽस्मिन् प्रावर्त्तयदनुत्तमम् ॥

हे वत्स सुनो! मैं तुम्हारे निकट ब्रह्माण्डनामक पुराणकीर्त्तन करता हूँ, यह बारह सहस्र श्लोक और भाविकल्पकी कथा द्वारा परिपूर्ण है ।

प्रक्रिया अनुषङ्ग उपोद्घात और उपसंहारनामक इस पुराणके चार पाद हैं। दो पाद द्वारा उसका पूर्व भाग है और तीसरे पादका मध्यभाग है और चौथे पाद द्वारा उत्तर भाग कल्पित हुआ है.

(१ प्रक्रिया पाद) इसके प्रथममें कृत समुद्देश,पश्चात् नैमिषाख्यान, हिरण्यगर्भोत्पत्ति और लोककथन इत्यादि विषय वर्णित हैं.

(२ अनुषङ्ग पाद) इसमें कल्प मन्वन्तराख्यान, लोकज्ञान, मानसी सृष्टि कथन, रुद्रप्रसव वर्णन, महादेवविभूति ऋषि सर्ग, अग्निगणका निचय; काल सद्भाव वर्णन, प्रिय व्रताचार निर्देश, पृथिवीका दैर्घ्य और विस्तार, भारतवर्ष वर्णन, जम्ब्वादि सप्तद्वीप वर्णन, अधोलोक-वर्णन, उर्ध्वलोकानुकथन, ग्रहचार आदित्यव्यूहकथन, देव ग्रहानुकीर्त्तन, नीलकण्ठाख्यान, महादेवका वैभव, अवस्था कथन, युगतत्त्व-निरूपण; यज्ञ प्रवर्त्तन, शेष युगका कार्य्य, युग प्रजा लक्षण, ऋषि प्रवर वर्णन, देवगणका व्यसनाख्यान, स्वायम्भुव निरूपण, शेष मन्वन्तराख्यान और पृथिवी दोहन, यह सम्पूर्ण कीर्त्तित हुआ है.

(मध्यम उपोद्घात पाद) इसमें सप्तर्षिकीर्त्तन, प्रजापति समूह और उससे देवादिकी उत्पत्ति, जयाभिव्याहार, मरुदुत्पत्तिकीर्त्तन, काश्यपेयानु-कथन, ऋषिवंश निरूपण, पितृकल्पानुकथन, श्राद्धकल्प, वैवस्वतोत्पत्ति, वैवस्तव सृष्टि, मनुपुत्रसमूह, गान्धर्व निरूपण, इक्ष्वाकुवंश कथन, अत्रि-वंश कथन, रजिरचरित, ययाति चरित, यदुवंश निरूपण, कार्त्तवीर्य्य चरित, जामदग्न्यचरित,वृष्णिवंशानुकथन, सगर संभव, भार्गवचरित,समर चरित, भार्गव कथा, देवासुर संग्राम कथा, कृष्णाविर्भाव वर्णन; सुष्प स्तव, विष्णु माहात्म्य, बलिवंश निरूपण और कलियुग उपस्थित होनेपर भविष्य राजचरित.

(उत्तरभाग उपसंहार पाद) अनन्तर उपसंहार नामक चौथा खण्ड कहता हूँ. इसके पूर्वमें वैवस्वतान्तराख्यान विस्तृत रूपसे उक्त होनेपर भी इस स्थानमें संक्षेपसे कहा है और इसके पश्चात् भविष्य मनुगणका चरित,

कल्प प्रलय निर्देश, कल्पमान, चतुर्दश लोक कथन, नरक समुदायका वर्णन, मनोमयपुराख्यान, प्राकृतिक लय, शैवपुरका वर्णन, तीन प्रकारके गुण सम्पर्कमें प्राणियोंकी गति कीर्तन और अनिर्देश्य तथा अप्रतर्क्य, परमात्मा ब्रह्मका अन्वयव्यतिरेक वर्णित हुआ है, यह उपसंहार नामक उत्तर भाग सम्पन्न हुआ, यह चारपाद युक्त ब्रह्माण्ड पुराण तुम्हारे निकट वर्णन किया, यह अष्टादशवां पुराण सारसे भी सार पुराण कहा गया है.

हे द्विज ! यह पुराण चार लाख श्लोकरूपमें भी पढा जाता है। पराशरात्मज व्यासने उसीको अठारह प्रकारसे विभक्त करके प्रकाशित किया है। हे मानद ! वस्तुद्रष्टा उस व्यासमुनिने मेरे निकटसे सम्पूर्ण पुराण सुनकर लोकमें प्रकाश किये हैं। मैंने यह पुराण पहिले वसिष्ठजीके निकट कहा था। पश्चात् उन्होंने शक्तिसुत और जातूकर्ण्यके निकट प्रकाश किया, अनन्तर व्यासने प्रभंजनमुखोच्चारित इस ब्रह्माण्डपुराणको प्राप्तकर इस लोकमें प्रमाणीकृत करके प्रचार किया है।

उद्धृत वचनसे ब्रह्माण्डपुराणके लक्षणादि और वर्णित विवरणादि विषय एक प्रकारसे जाने जाते हैं। ब्रह्माण्ड पुराणकी एकमात्र अनुक्रमणिका पाठ करनेसे ही साधारणका सन्देह भञ्जन हो सकता है,इस अनुक्रमणिकामेंही ब्रह्माण्डपुराणके वर्णनीय विषयसमूहकी एक प्रकारसे सूची दी गई है। इस अनुक्रमणिकाके साथ नारदीय पुराणोक्त ब्रह्माण्डपुराणाख्यानकी सम्पूर्ण एकता है। इसके अतिरिक्त मत्स्यपुराणके मतके साथ भी इसका अनैक्य नहीं होता। मत्स्यपुराण कहता है कि ब्रह्माण्डपुराण पूर्वकालमें ब्रह्मा द्वारा कहा गया था। हमारे आलोच्य ब्रह्माण्डपुराणके प्रथम अध्यायमें स्पष्ट ही उल्लिखित हुआ है—

" पुराणं संप्रवक्ष्यामि ब्रह्मोक्तं वेदसम्मितम् ।"

मत्स्यके मतसे-जिसमें भविष्य कल्प वृत्तान्त वर्णित हुआ है, वही ब्रह्माण्ड-पुराण है, हमारे इस ब्रह्माण्डपुराणके सोलहवें, सतरहवें और अठारहवें अध्यायमें भविष्य कल्प वृत्तान्त विस्तारित रूपसे वर्णित हुआ है, ऐसा विस्तृत कल्पविवरण और किसी पुराणमें नहीं पाया जाता, शिव उपपुराणके मतसे ब्रह्माण्डका चरित वर्णित होनेके कारण इस पुराणका नाम ब्रह्माण्ड हुआ है। वास्तविक इस ब्रह्मांडपुराणके ३३से ५८ अध्यायमें जिस भावसे ब्रह्माण्डके नानास्थानका भूगोल विवरण दिया गया है, ऐसा किसी दूसरे पुराणमें नहीं, इस कारण इस ब्रह्माण्डपुराणके अस्तित्व, मौलिकत्व और महापुराणत्व सम्बन्धमें कोई सन्देह नहीं रहता। तथापि बात यह है कि, अध्यापक विलसन, राजा राजेंद्र लाल आदि विचक्षण पंडितगण ब्रह्मांडपुराणके अस्तित्व सम्बन्धमें किस कारणसे संदिग्ध हुए हैं। किसी २ ब्रह्माण्डपुराणकी पोथीमें प्रत्येक अध्यायकी पुष्पिकामें " वायुप्रोक्तसंहितायां " ऐसा लिखा है, केवल इस पुष्पिकाके ऊपर निर्भर करके कोई २ महात्मा ब्रह्माण्डपुराणको वायुपुराण प्रकाश करके शेषमें ब्रह्माण्ड पुराण छोडकर इस मूल महापुराणके अस्तित्वमें सन्देह कर गये हैं । वास्तविक उनका महाभ्रम कहना चाहिये. नारदीय पुराणमें स्पष्ट ही लिखा है—

व्यासो लब्ध्वा ततश्चैतत्प्रभञ्जनमुखोद्गतम् ।
प्रमाणीकृत्य लोकेऽस्मिन् प्रावर्तयदनुत्तमम् ॥

इस वचनद्वारा ब्रह्माण्डपुराण जब वायुप्रोक्त होता है तब हस्तलिखित पोथीमें जो "वायुप्रोक्तसंहितायां" ऐसी पुष्पिका गृहीत हुई है वह भ्रमपूर्ण नहीं है। वरन जो लोग वायुप्रोक्त नाम पढते ही इसको वायुः

पुराण कहकर स्वीकार करते हैं उनका ही महाभ्रम कहना चाहिये । राजा राजेंद्रलाल मित्रने एसियाटिक सोसाइटीके एक वायुपुराण प्रकाशित किया है उसमें भी इस प्रकारका महाभ्रम दीखता है.

राजा अपने प्रकाशित वायुपुराणके मुखबन्धमें लिख गये हैं कि मैंने छः हस्तलिखित पोथी मिलाकर वायुपुराण प्रकाश किया है । इन छः पोथियोंमें भारत गवर्नमेंट कर्तृक संगृहीत ९७५ नं. पोथी ही उनका आदर्श है,दूसरी पोथीमें प्रायः असम्पूर्ण और भ्रमपूर्ण होनेसे पाठ मिलनेके निमित्त बीच २ में आलोचित हुई हैं । इस समय हम उनकी वह आदर्श पोथी लेकर ही दो एक बातें कहेंगे, उस पोथीका लिखित विवरण पाठ करनेसे सहजमें ही धारणा होती है कि वह वायुपुराण नहीं है, हमारा आलोच्य ब्रह्माण्डपुराण है । राजेन्द्र लालकी आदर्श पोथीके ८१ । २ पृष्ठमें लिखा है.

"कृते वै प्रक्रियापादश्चतुःसाहस्रमुच्यते ।
तस्माच्चतुःशती सन्ध्या सन्ध्यांशश्च तथाविधः ॥
त्रेतादीनि सहस्राणि संख्यया मुनिभिः सह ।
तस्यापि त्रिशतीसन्ध्या संन्ध्यांशस्त्रिशतः स्मृतः ॥
अनुषङ्गपादस्त्रेतायास्त्रिसाहस्रन्तु संख्यया ।
द्वापरे द्वे सहस्रे तु वर्षाणां सम्प्रकीर्तितम् ॥
तस्यापि द्विशती सन्ध्या सन्ध्यांशो द्विशतस्तथा ।
उपोद्घातस्तृतीयस्तु द्वापरे पाद उच्यते ॥
कलेर्वर्षसहस्रन्तु प्राहुः संख्याविदो जनाः ।
तस्यापि शतिका सन्ध्या सन्ध्यांशः शतमेव च ॥
संहारपादसंख्यातश्चतुर्थो वै कलौ मृगे ।
ससन्ध्यानि महांशानि चत्वारि तु युगानि वै ॥

एतद्द्वादशसाहस्रं चतुर्युगमिति स्मृतम् ।
एवं पादैः सहस्राणि श्लोकानां पञ्च पञ्च च ॥
सन्ध्यासन्ध्यांशकैरेव द्विसहस्रे तथा परे ।
एवं द्वादशसाहस्रं पुराणं कवयो विदुः ॥
तथा वेदश्चतुष्पादश्चतुष्पादं तथा युगम् ।
यथा युगश्चतुष्पादं विधात्रा विहितं स्वयम् ।
चतुष्पादं पुराणन्तु ब्रह्मणा विहितं पुरा ॥"

इसमें पहिले नारदपुराणके वचनद्वारा जाना गया है, ब्रह्माण्डपुराण चार भागमें विभक्त है—प्रक्रियापाद, अनुषङ्गपाद, उपोद्घात पाद और उपसंहार पाद, तथा बारह सहस्र श्लोकयुक्त है । अतएव राजेन्द्रलालकी आदर्श पोथी वर्णित—

"एवं द्वादशसाहस्रं पुराणं कवयो विदुः ।
चतुष्पादं पुराणन्तु ब्रह्मणा विहितं पुरा ॥

श्लोक ब्रह्माण्डपुराणका ही परिचय देता है । इसके अतिरिक्त सोसाइटीसे वायुपुराणके पूर्वभागमें चतुर्थ अध्यायोक्त—

"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितञ्चेति पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ १० ॥
कल्पेभ्योऽपि हि यः कल्पः शुचिभ्यो नियतः शुचिः ।
पुराणं संप्रवक्ष्यमि मारुतं वेदसम्मितम् ॥ ११ ॥
प्रक्रिया प्रथमः पादः कथ्यवस्तुपरिग्रहः ।
उपोद्घातोऽनुषङ्गश्च उपसंहार एव च ।
धर्म्यं यशस्यमायुष्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥"

इन कई श्लोकोंसे चतुष्पादयुक्त ब्रह्माण्डपुराणकाही आभास पाया जाता है यद्यपि उक्तवचनमें "मारुतं वेदसम्मितम्" ऐसा पाठ होनेसे उसको वायुपुराण

कहकर यथार्थमें ही साधारणलोगोंकी धारणा हो सकती है किन्तु उसको असङ्गत पाठ कहकर छोडना ही उचित है, क्योंकि हमारी संगृहीत चार ब्रह्माण्डपुराणकी पोथियोंमें " ब्रह्माण्डं वेदसम्मितम् " ऐसा ब्रह्माण्डपुराण परिचायक यथार्थ पाठ देखा जाता है। विशेषतः राजेन्द्रलालकी आदर्श पोथीकी समाप्ति पुष्पिकामें—" इति महापुराणे वायुप्रोक्ते द्वादशसाहस्र्यां संहितायां ब्रह्माख्यं समाप्तम् " ऐसा ब्रह्माण्ड पुराणकी समाप्ति ज्ञापक पाठ दीखता है। यह आदर्श पोथी १६८८ संवत्में नागराक्षरमें लिखी गई है। इसके शेषपत्रमें पुराणकी श्लोकसंख्या भी निरूपित हुई है। यथा—

प्रक्रियापादमें श्लोकसंख्या	४८००
अनुषंग पादमें "	३६००
उपोद्घात पादमें "	२४००
उपसंहार पादमें "	१२००

सब १२००० श्लोक (१)

प्रायः अधिकांश पुराणोंके मतसे ही ब्रह्माण्डपुराणकी श्लोकसंख्या १२००० है, अतएव राजा राजेन्द्रलाल द्वादशसहस्र श्लोकात्मक ब्रह्माण्डपुराणको वायुपुराण नामसे प्रकाश करके महाभ्रममें गिरे हैं.

पहिले ही लिख चुके हैं कि श्वेतकल्पप्रसङ्गमें वायुने इस पुराणको वर्णन किया था किन्तु सोसाइटीके मुद्रित वायुपुराणके प्रथममें श्वेतकल्पका प्रसंग पहिले तो है ही नहीं; वरन् बंगवासीके स्वत्वाधिकारी द्वारा प्रकाशित शिवपुराणकी वायुसंहितामें श्वेतकल्पका भलीभांति परिचय पाया जाता है। उक्त संहिताके उत्तरभागके प्रथमाध्यायमें स्पष्ट लिखा है—

---

(१) डाक्टर एग्लि साहबने विलायतके इण्डिया आफिसके पुस्तकालयस्थ पोथियोंकी जो विस्तृत तालिका प्रकाशित की है, उससे भी राजेन्द्रलालका मत भ्रमपूर्ण दीखता है।

" वक्ष्यामि परमं पुण्यं पुराणं ब्रह्मसम्मितम् ।
शिवज्ञानार्णवं साक्षाद्भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥ २३ ॥
शब्दार्थन्यायसंयुक्तैरागमार्थैर्विभूषितम् ।
श्वेतकल्पप्रसंगेन वायुना कथितं पुरा ॥ "

अतएव स्वीकार करना होगा, श्वेतकल्पाश्रयी वायुपुराण सोसाइटीसे प्रकाशित नहीं हुआ । अन्यान्यस्मृति संग्रहादि प्राचीन संस्कृतग्रन्थोंमें वायुपुराणोद्धृत जो वचन हम देखते हैं वह सोसाइटीके वायुपुराणमें नहीं हैं । इस स्थानमें एक प्रसिद्ध श्लोककी बात कहते है । विख्यात टीकाकार श्रीधरस्वामीने भागवतकी टीकामें नैमिष शब्दकी नाम निरुक्तिके समय वायुपुराणसे एकवचन उद्धृत किया है । वह यह है—तथाच वायवीये

" एतन्मनोरमं चक्रं मया सृष्टं विसृज्यते ।
यत्रास्य शीर्य्यते नेमिः सदेशस्तपसः शुभः ॥ "

सोसाइटीकी मुद्रित पुस्तकमें यह श्लोक भी नहीं है । इसके स्थानमें ऐसा है—

" भ्रमतो धर्म्मचक्रस्य यत्र नेमिरशीर्यत ।
कर्मणा तेन विख्यातं नैमिषं मुनिपूजितम् ॥

सोसाइटी मुद्रित वायु २ अ ७ श्लोक ।

श्रीधरस्वामिकृत वायुपुराणका श्लोक यद्यपि सोसाइटी मुद्रित पुस्तकमें नहीं है, किन्तु बंगवासी कार्य्यालयसे प्रकाशित शिवपुराणकी वायुसंहितामें स्पष्ट ही है.

" एतन्मनोरमं चक्रं मयासृष्टं विसृज्यते ।
यत्रास्य शीर्य्यते नेमिः सदेशस्तपसः शुभः ॥ "

वायुसंहिता पूर्वभाग २ अ० ८८ श्लोक.

इससे भी जाना जाता है कि सोसाइटी प्रकाशित वायु पुराण ही नहीं है ब्रह्माण्ड पुराणका अङ्गमात्र है और उस मुद्रित पुस्तकमें गयामाहात्म्य एकत्र प्रकाशित होनेसे यह पुस्तक एक अद्भुत पदार्थ बन गई है। इसको एक बातमें वायुपुराण वा ब्रह्माण्ड पुराण कुछ ही नहीं कहा जा सका.

इससे पहिले उपक्रममें कह आये हैं जो ब्रह्माण्ड पुराण खृष्टीय ५ म शताब्दीमें यवद्वीपमें गया था, अब भी वह ब्रह्माण्डपुराण वालिद्वीपमें कवि भाषामें अनुवाद सहित पाया जाता है। प्रचलित ब्रह्माण्ड पुराणके साथ भविष्यराजवंश वर्णन प्रसंग छोड और सम्पूर्ण अंशमेंही वालि द्वीपीय ब्रह्माण्डका मेल है यह पुराण यथार्थमें पञ्चलक्षणयुक्त है इसमें भविष्याख्यानके अतिरिक्त वही आदि ब्रह्माण्ड पुराणका प्राचीन रूप दीखता है। अठारह पुराणोंमें गिना जानेपर भी इसको प्रचलित पुराणोंकी अपेक्षा प्राचीनतम कहकर ग्रहण कर सकते हैं.

स्कन्दपुराणकी समान बहुतसे माहात्म्य इस ब्रह्माण्डपुराणके नामसे प्रचलित देखे जाते हैं, तथा—

अग्नीश्वर, अञ्जनाद्रि, अनन्तशयन, अर्जुनपुर, अष्टनेत्र स्थान, आदिपुर, आनन्द निलय, ऋषि पञ्चमी, कठोर गिरि, काल हस्ती, कामाक्षी, बिलास, कार्त्तिक, कावेरी, कुम्भकोण, क्षीरसागर, गोदावरी, गोपुरी, गोमुक्ति, चम्पकारण्य, ज्ञानमण्डप, तञ्जापुरी, तारक, ब्रह्ममंत्र, तुङ्गभद्रा, तुलसी, दक्षिणामूर्ति, देवदारु वन, नन्दिगिरि, नाचिकेत, नरसिंह, पश्चिमरंग, पापविनाश, पारिजाताचल, पिनाकिनी, पुन्नागवन, पुराणश्रवण, पुरुषोत्तम, प्रतिष्ठान, बदरिकाश्रम, बुद्धिपुर, ब्रह्मपुरी, मन्दारवन, मयूरस्थल, मल्लापुर मल्लारि, मायापुरी, रामायण, लक्षपूजा लक्ष्मीपुर, वल्कक्षेत्र, विरजाक्षेत्र, वेंकट गिरि, वेंकटेश, वेदगर्भापुरी, वेदारण्य, शिवकांची, शिवगंगा, श्रीगोष्ठी, श्रीनिवास, श्रीमुष्ण, श्रीरंग, सुगन्धवन,

सुन्दरपुर, सुन्दरारण्य, हस्तिगिरि, हेरम्बकानन इत्यादि माहात्म्य, गणेशकवच, तुलसीकवच, वेंकटेशकवच, हनुमत्कवच इत्यादि कवच, दत्तात्रय स्तोत्र, नदीस्तोत्र, पश्चिम रंगनाथ स्तोत्र, वन्दि स्तोत्र ब्रह्मपराग स्तोत्र, युगल किशोर स्तोत्र, ललितासहस्रनाम स्तोत्र, वेंकटेश सहस्रनाम, सरस्वती स्तोत्र, सिद्धलक्ष्मी स्तोत्र, सीता स्तोत्र, इसके अतिरिक्त उत्तरखंड, क्षेत्र खंड, तुंगभद्राखंड, पद्मक्षेत्र, देवांगचरित्र, ललितोपाख्यान, वारिजाक्ष चरित्र, विष्णुपञ्जर और अध्यात्मरामायण.

इनमें अधिकांशही आधुनिक कालमें रचित हुए हैं । ब्रह्माण्ड महापुराणके अन्तर्गत न धरके, ब्रह्मांड उपपुराणके अन्तर्गत कहनेमे कुछ बखेडा नहीं रहता.

१८ पुराणके समान अन्यान्य मुनि रचित १९ उपपुराणभी प्रचलित हैं । अनेकोंका विश्वास है कि उप पुराण वैसे प्राचीन नहीं हैं, किन्तु उपपुराणोंमें अनेक प्रक्षित वचन होनेपर भी मूल उपपुराण अति प्राचीन कालमें संगृहीत हुए थे इसमें सन्देह नहीं । खृष्टीय १३ शताब्दीके शेषभागमें षड् गुरु शिष्यने अपनी वेदार्थदीपिकामें नृसिंह उपपुराणसे श्लोक उद्धृत किये हैं और उससे पहिले मुसल्मान पंडित अल्वेरुणीने नन्दा, आदित्य, सोम, साम्ब और नरसिंह इत्यादि उपपुराणोंका उल्लेख किया है । पूर्वोक्त १८पुराणके अतिरिक्त हम और भी उपपुराण और अति पुराण नाम ग्रन्थोंका सन्धान पाते हैं यथा—

१ सनत्कुमार, २ नरसिंह, ३ बृहन्नारदीय, ४ शिव वा शिवधर्म, ५ दुर्वासस्, ६ कापिल, ७ मानव, ८ औशनस, ९ वारुण, १० कालिका ११ साम्ब, १२ नंदिकेश्वर १३ सौर, १४ पाराशर, १५ आदित्य, १६ ब्रह्मांड, १७ माहेश्वर, १८ भागवत, १९ वासिष्ठ, २० कौर्म्म, २१ भार्गव, २२ आदि, २३ मुद्गल, २४ कल्कि,

२५ देवीपुराण, २६ महाभागवत, २७ बृहद्धर्म्म, २८ परानन्द, २९ पशुपति पुराण.

अठारह प्राचीन महापुराणोंसे भारतीय हिन्दुसमाजकी रीति, नीति, आचार, व्यवहार, धर्म्म मत, विश्वास और अनेक प्राचीन कहानी जान सकते हैं, पुराणको हम प्राचीन मौलिक ग्रन्थ कहकर स्वीकार कर सकते हैं या नहीं ? पुराण श्रुतिमूलक हैं वा अवैदिक ? पुराणका यथार्थ उद्देश्य क्या है ? इस सम्बंधमें सुप्रसिद्ध कुमारिल भट्ट विशेष आलोचना कर गये है । वह उनका ग्रंथ देखनेसे विदित होगा, हम थोडा अंश यहां अनुवाद करके लिखते हैं । जो बौद्धगण और इस समयके दयानन्दी पुराणोंपर आक्षेप करते हैं उनका उत्तर वे दे गये है कि "जो सदाचारी कहकर प्रसिद्ध हैं उन्होंने भी धर्मको उल्लंघनकर शास्त्रको दूषित किया है । प्रजापति, इन्द्र, वसिष्ठ, विश्वामित्र, युधिष्ठिर, कृष्णद्वैपायन, भीष्म, धृतराष्ट्र, वासुदेव, अर्जुन इत्यादि प्राचीन माहात्माओंने धर्मको उल्लंघन किया है । ब्रह्माजी कन्याके पीछे धावमान हुए, वसिष्ठजीने पुत्र-मरणसे शोकित होकर आत्महत्याके निमित्त जलमें प्रवेश किया, चन्द्रने गुरुपत्नीसे गमन किया, नहुषने इन्द्रपदपर परदारा गमनकी इच्छा की, विश्वामित्रने चाण्डालसे यज्ञ कराया, वसिष्ठके समान पुरूरवाका भी व्यवहार हुआ, कृष्णद्वैपायनने विचित्रवीर्यकी भार्यामें पुत्र उत्पन्न किया, भीष्मजीने धर्म त्यागा, अंधे धृतराष्ट्रने यज्ञ किया, द्रोणवधके निमित्त युधिष्ठिरका मिथ्या व्यवहार, छोटे भाई अर्जुनद्वारा लाई द्रौपदीके साथ परिणय, कृष्ण और अर्जुनका मातुलकन्या रुक्मिणी और सुभद्राका-विवाह और सुरापान, यह शास्त्र निषिद्ध है ।" इन्द्रने अहल्यासे गमन किया इत्यादि । उसका उत्तर कुमारिल इस प्रकार देते हैः—

प्रजापतिस्तावत् प्रजापालनाधिकारादादित्य एवोच्यते सा चारुणोदयवेलायामुषः समुद्यपन्नभ्येति स तदागमनादेवोप्र-

जायत इति दुहितृत्वेन व्यपदिश्यते तस्यां चारुणकिरणाख्य वीजनिक्षेपात् स्त्रीपुरुषसंयोगवदुपचारः एवं समस्ततेजः परमेश्वरत्वनिमित्तेन्द्रशब्दवाच्यं सवितैव ह निलीयमानतया रात्रेरहल्याशब्दवाच्यतया क्षयात्मकजरणहेतुत्वाज्जीर्यत्यस्मादनेन वोदितेन वेत्यहल्याजार इत्युच्यते न परस्त्रीत्यभिचारात् ।

प्रजापालनमें अधिकार है इसीसे प्रजापतिशब्दसे आदित्य जानना वह अरुणोदयके समय दिनके आरंभमें उदय होकर क्रमशः गमन करते हैं उनके आगमनका समय क्रमशः बढता जाता है इसी कारण उस कालको उनकी पुत्री कहा है । उसी वेलामें अरुणका किरणस्वरूप वीज डाला गया इसीसे स्त्रीपुरुषके संयोगका वर्णन किया है ऐसाही वेदमें है सम्पूर्ण तेजस्वी पदार्थोंमें ऐश्वर्य है इस कारण तेजपुञ्जको इन्द्रनामसे उल्लेख किया है दिनमें लीन होनेके कारण अहल्या शब्दका अर्थ रात्रि है सूर्यही रात्रिके क्षयस्वरूप जरणका कारण है अहल्यारात्रि जिसमें जीर्णहुई वा जिसके उदय हुई होनेसे अहल्याजीर्ण उसीको अहल्या जार कहते हैं अर्थात् अहल्या जारका शब्द सूर्य्य है इसमें परस्त्री व्यभिचारकी बात नहीं है यह दोनों कथा अलंकार संयुक्त हैं.

नहुषेण पुनः परस्त्री प्रार्थननिमित्तानन्तकालाजगरत्वप्राप्त्ये वात्मना प्रख्यापितं दुराचारत्वम्.

वसिष्ठस्यापि यत्पुत्रशोकव्यामोहचेष्टितम् ।
तस्याप्यन्ननिमित्तत्वं नैव धर्मत्वसंशयः ॥

यो हि सदाचारः पुण्यबुद्ध्या क्रियते स धर्मादर्शत्वं प्रतिपद्येत । यस्तु यामक्रोधलोभमोहशोकादिहेतुत्वेनोपलभ्यते स यथाविधि प्रतिषेधं वर्तिष्यते ÷÷ द्वैपायनस्यापि गुरुनियोगात् ' अपतिरपत्यलिप्सुर्देवरात गुरुप्रेरितादृतुमती

यात इत्येवमागमान्मातृसम्बन्धभ्रातृजायापुत्रजननम्। रामभीष्मयोस्तु स्नेहपितृभक्तिवशात् धृतराष्ट्रोऽपि व्यासानुग्रहादाश्चर्यपर्वणि पुत्रदर्शनवत् ऋतुकालेऽपि दृष्टवान्।

या चोक्ता पाडुपुत्राणामेकपत्नीविरुद्धता।
सापि द्वैपायनेनैव व्युत्पाद्य प्रतिपादिता॥
यौवनस्था तथा कृष्णा वेदिमध्यात्समुत्थिता।
सा च श्रीः श्रीश्च भूयोभिर्भुज्यमाना न दुष्यति॥

द्रोणवधांगभूतानृतवादप्रायश्चित्तमन्तेऽपि अश्वमेधः प्रायश्चित्तत्वेन कृत एवेति न तस्य सदाचारत्वाभ्युपगमः। यस्तु वासुदेवार्जुनयोर्मद्यपानमातुलदुहितृगमनं स्मृतिविरुद्धं तत्रान्नविकारसुरामात्रस्यैव त्रैवर्णिकानां निषेधः,मधुसीध्वोस्तु वैश्यक्षत्रिययोर्न प्रतिषेधः।

वसुदेवाङ्गजाता च कौन्तेयस्य विरुध्यते।
नतु व्यपेतसम्बन्धं प्रभवेत्तद्विरुद्धता॥
एतेन रुक्मिणीपरिणयनं व्याख्यातम्।

अर्थ—नहुष परस्त्री व्यभिचारकी इच्छासे बहुत समय तक अजगर होकर रहा यही उसके पापका फल था इसीसे वह दुराचार कहाया, वसिष्ठने पुत्रशोकसे जिस कर्मका अनुष्ठान किया था उसका कारण मोह है इसीसे वह धर्म नहीं कहा गया। जिस सदाचारमें मनमें पुण्यकी भावनासे जोअनुष्ठान होता है-वही धर्म आदर्शस्वरूप है, काम क्रोध लोभ मोह शोक इत्यादिके कारणसे जो कार्य किया जाय वह सदाचारमें ग्रहण नहीं होसकता। यदि वह शास्त्रविहित हो तो अनुष्ठेय है कलिके अतिरिक्त

पतिहीना पुत्रकी अभिलाषावाली स्त्री ऋतुमती होनेपर गुरुसे आज्ञा पाकर देवरसे पुत्र ग्रहण कर सकती है । आगमकी इस विधिके अनुसार गुरुकी आज्ञासे द्वैपायनने अपने मानसिक बलसे भ्रातृजायामें पुत्र प्रगट किये, मानसिक इच्छा न होती तो अन्धे और पाण्डुवर्ण कैसे होते ? राम और भीष्मने स्नेह और पिताकी भक्तिवशसे वे वे आचरण किये इससे वे सदाचार नहीं हैं । धृतराष्ट्रने व्यासजीकी कृपासे यज्ञको देख लियाथा । जैसे उन्होंने आश्चर्य पर्वाध्यायमें अपने मृत पुत्रोंको व्यासजीकी कृपासे देख लिया था.

पांच पांडवोंकी एकस्त्रीके विषयमें जो शंका हुई है व्यासजीने स्वयं उसका पूर्वजन्मकी कथा कहकर पहिहार किया है । पूर्ण यौवना कृष्णा वेदीसे प्रगट हुई तीन अग्निमय है । वह मानुषीमें किसी भांतिसे संभव नहीं; वह मूर्त्तिमती लक्ष्मी है । लक्ष्मीको अनेक पुरुषोंके भोगनेमें दोष नहीं । मार्कण्डय पुराणमें जब इन्द्रको ब्रह्महत्या लगी तब उस देवेन्द्रके पांच अंश धर्म, पवन, अश्विनीकुमारोंमें गये एक अंश देवराजमें रहा वही इन्द्रके अंश यह पांचों युधिष्ठिरादि हुए इससे यह पांचों एक ही हैं । न द्रौपदी मानुषी है इससे मनुष्यकी बात उसमें नहीं लग सकती युधिष्ठिरने द्रोणवधके निमित्त जो अनृत व्यवहार किया था उसका प्रायश्चित्त उसी समय किया और पीछे अश्वमेधका अनुष्ठान किया । अन्नविकारकी सुरापानका तीनों वर्णोंको निषेध है मधु और सीधुका वैश्य क्षत्रियोंको निषेध नहीं है वसुदेवके अंगसे प्रगट होकरे सम्बन्ध रहनेसे सुभद्राके व्याहमें विरुद्धता होसक्ती पर सम्बन्ध छूट जानेपर दोष नहीं लगता इसी प्रकार रुक्मिणी परिणयमें जानना, गुरु चन्द्रकी कथा भी अध्यात्म ब्रह्मविद्याको कहती है इत्यादि बहुत कुछ

उन्होंने लिखा है बुद्धिमानोंको यही बहुत है ग्रन्थ बढ जानेके कारण विराम करते हैं.

इस प्रकार जहां कहीं पुराणोंमें विरोध प्रतीत हो या जहां कहीं कथाओंमें भेद दीखे या एक पुराण दो भांतिके विदित हों तो उसका यह उत्तर है कि, भिन्न व्यासों द्वारा प्रत्येक द्वापर युगमें पुराण संकलित हुए हैं इससे कथाओंमें कहीं २ भेद पड गया और कोई पुराण पहले द्वापर युगका भी रह गया है। इससे सूचीमें भेद है। शंका त्यागकर पुराणोंके कर्तव्य धर्मोंको ग्रहण करनेसे मनुष्योंका मंगल होगा, इसमें सन्देह नहीं। अब इस विषयका विस्तार नहीं करते बुद्धिमान् थोडेमें ही समझ लेंगे.

दोहा—अश्विभुवन ऋतुअंक विधु, संवत सरलविचार।
कृष्णाषाढत्रयोदशी, मंगलप्रद भृगुवार ॥ १ ॥
पूरण कीनो ग्रंथ यह, हरिको शीश नवाय।
पढैं प्रेमकर सत्पुरुष, लहैं पुण्य अधिकाय ॥ २ ॥
श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराजजगजान।
वेंकटेश्वरयंत्रपति, विद्यामयगुणखान ॥ ३ ॥
तिनको दीनो ग्रंथ यह, प्रेमरूप उपहार।
सुखपावैं हरिको भजें, नित नव मंगलचार ॥ ४ ॥
वसत रामगंगानिकट, नगर मुरादाबाद।
भजन करत हरिको तहां, द्विज ज्वालापरसाद ॥ ५ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, 'लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर' स्टीम्-प्रेस, कल्याण-बम्बई.